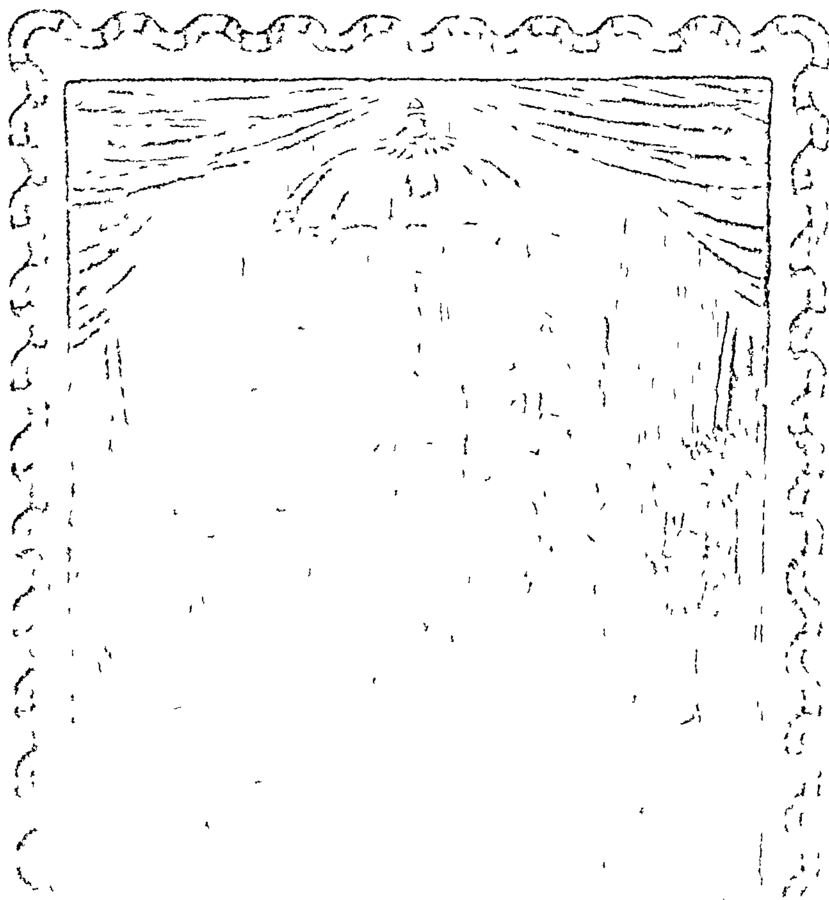
श्रीरामानन्दाय नमः ।



भूमिका।

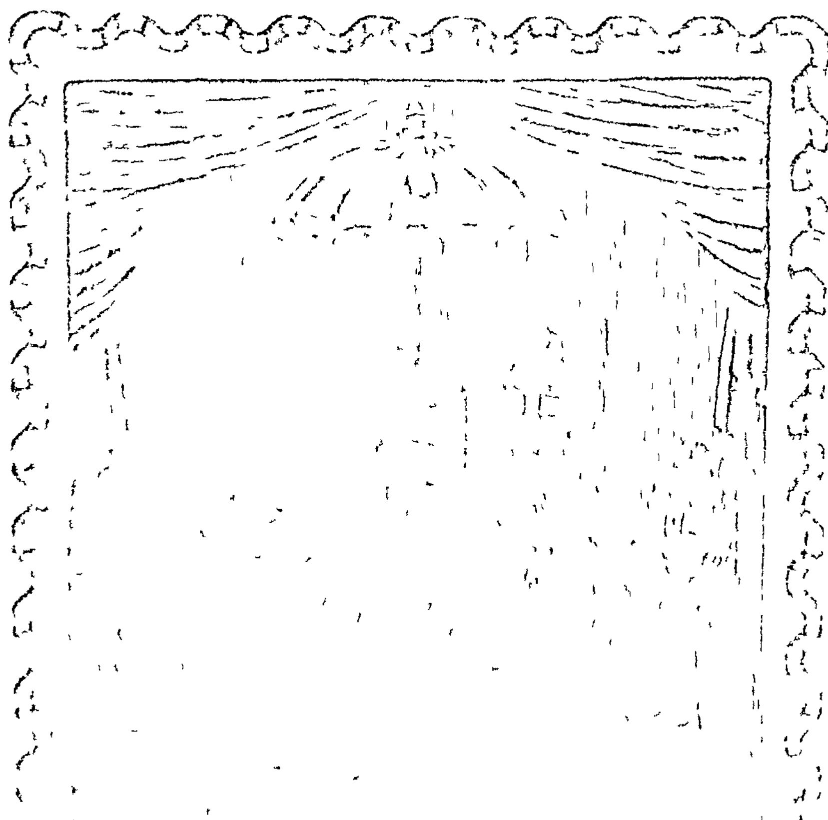
जैसे कि, हिन्दी रसिक हरिभक्तिपरायण सुजन जन रामायणादि रामचरित्र पढ़कर अपार आनंद भोगते है वैसेही यह रामचन्द्रिकाभी हरिचरित्रका अपार समुद्र रत्नाकर है इसकी एकही लहर लेनेसे आनंदही नहीं वरन भुक्ति और मुक्तिभी मिलती है, रामचरणमें अनुराग बढ़कर पुरुष अतुल कीर्तिका भागी होता है यद्यपि केशवदासकी कविता बहुत कठिन और ललित है (जैसे कि—देखो न चाहै बिदाई नरेश तो पूछत केशवकी कविताई) तथापि इनकी टीका ऐसी मनोविलास बुद्धिप्रकाश लोक रंजनार्थ परम उत्कृष्ट हुई है कि, बारहखडी जाननेवालाभी उत्तम रीतिसे पठनका फल प्राप्त कर सकताहै इसमें रामचन्द्रजीका अपूर्व चरित्र सर्वत्र यथाक्रम वर्णितहै इसके सिवाय काव्यनिरूपणभी ऐसा उत्तमहै कि, लोक देखनेसेही सन्तुष्ट होंगे अधिक प्रशंसा व्यर्थ है. आशा है कि, सूर्य्यकी किरणों सदृश इसकी प्रतियेंभी सारे संसारमें गुणग्राहकोंके पास शीघ्र फैल जायँगी और वे अपने विशालनेत्रोंसे इसका अवलोकन पठन स्वाद सदासर्वदा हृदयकमलमें धारण करैंगे.

आपका कृपापात्र—

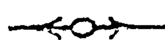
खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयंत्रालय—**मुंबई.**

श्री[illegible]नन्दाय नमः ।



भूमिका।



जैसे कि, हिन्दी रसिक हरिभक्तिपरायण सुजन जन रामायणादि रामचरित्र पढ़कर अपार आनंद भोगते हैं वैसेही यह रामचन्द्रिकाभी हरिचरित्रका अपार समुद्र लहरारहा है इसकी एकही लहर लेनेसे आनंदही नहीं बरन् भुक्ति और मुक्तिभी मिलती है, रामचरणमें अनुराग बढ़कर पुरुष अतुल कीर्तिका भागी होता है यद्यपि केशवदासकी कविता बहुत कठिन और ललित है (जैसे कि—देनो न चाहै विदाई नरेश तो पूछत केशवकी कविताई) तथापि इसकी टीका ऐसी मनोविलास बुद्धिप्रकाश लोक रंजनार्थ परम उत्कृष्ट हुई है कि, बारहखडी जाननेवालाभी उत्तम रीतिसे पठनका फल प्राप्त कर सकताहै इसमें रामचन्द्रजीका अपूर्व चरित्र सर्वत्र यथाक्रम वर्णितहै इसके सिवाय काव्यनिरूपणभी ऐसा उत्तमहै कि, लोक देखनेसेही सन्तुष्ट होंगे अधिक प्रशंसा व्यर्थ है. आशा है कि, सूर्य्यकी किरणों सदृश इसकी प्रतियेंभी सारे संसारमें गुणग्राहकोंके पास शीघ्र फैल जायँगी और वे अपने विशालनेत्रोंसे इसका अवलोकन पठन स्वाद सदासर्वदा हृदयकमलमें धारण करेंगे.

आपका कृपापात्र—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणयंत्रालय—**मुंबई.**

॥ श्रीः ॥

अथ रामचन्द्रिका-सटीककी-

विषयानुक्रमणिका।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगणेशाय नमः।

कवि केशवदासकृत—

रामचन्द्रिका—सटीक।

जानकीप्रसाद टीकाकारकृत मंगलाचरण।

कवित्त ॥ कुंडलित शुंडगण्ड गुंजत मलिंद झुंड वंदन विराजै मुंड अदभुत गतिको। बालशशि भाल तीनि लोचन विशाल राजैं फणिगणमाल शुभ सदनै सुमतिको ॥ ध्यावत विनाही श्रम लावत न बार नर पावत अपार मोदभार धन पतिको। पाप गण मंदनकों विघन निकंदनकों आठों यामै वंदन करत गण-पतिको ॥ १ ॥ सवैया ॥ जिनको अवलोकतहां मन रंजन कंजनैकी रुचि दूरि वहैये। मधुपालिन मालिनकी द्युतिशालिन आलिन दासनके मन ठैये। निधि-सिद्धि अशेषके धाम सदा सुख पूरन पूरन पुण्यन पैये। पगवंदनकै गिरिजा-पतिके रघुनन्दन रामकि कीरति गैये ॥ २ ॥ कवित्त ॥ तीन्योंरूप तेरेई प्रभाव-नि त्रिदेव उतपाति प्रतिपाल प्रलै निजमति कीजिये। नारद गणेश व्यास वालमीकि शेषआदि तव कृत पूरो लोक लोक यश लीजिये। सागर अपार हौं चहत पैरि पार जायो जग उपहासके प्रकाश भयभीजिये। शारदा भवानी कहौं जोरि युगपानी जन जानकीप्रसाद पै कृपाकि कोर दीजिये ॥ ३ ॥ दोहा ॥ उत वर्णन रघुवर सुयश, इत ममप्रण प्रतिपाल ॥ ताते पवनकुमारको, करौं भरोस विशाल ॥ ४ ॥ वारवार वंदन करौं, गुरुचरणन सुखपाइ ॥ निजशिक्षा अंजनहृदय, दियो अदृष्ट दिखाइ ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ दामिनीसी दमकति पीतपट भाँति हीराहार वक पाँतिको प्रकाश धरियतुहै। जुगुनूसे भूपण जवाहिर जगत सुनि शब्दमयूरहु साधुमोद भरियतु है। जानकीप्रसाद जग हरित करन मीठे वैनरस वैरीज्यों जवासे जरियतु है। राजसभा विपद विराजैं छविधाभ नित राम-घनश्यामको प्रणाम करियतुहै ॥ ६ ॥ षट्पद—परम प्रीति सिय जासुसंगदा-

---

१ सिन्दूर। २ घर। ३ प्रहर। ४ कमल। ५ ब्रह्म।

इति अयोध्याकाण्ड कथा ॥ औ पङ्क ज्यों कहे पङ्कके सदृश नीच ऐसा जो विराध है ताको पेलिकै पातालको पठावत भये वाल्मीकीय रामायणमें लिख्यो है कि काहूअस्त्रशस्त्रसों न मरै तब रामचंद्रजीवतही गाडि लियो ताही प्रकार कलुष पापरूप जे खर दूषणादिहैं तिनहुँनको मार्‍यो ॥ इति आरण्यकाण्ड कथा ॥ औ कलङ्कको है अङ्क चिह्नजाके ऐसा जो बंधुपत्नी भोगी वालि है ताको दूरि करत मारत भये औ दास जो सुग्रीव है ताको भव महादेवके शीशके शशिके सम राखत भये जैसे भवशीश शशिको राहुको भय नहीं रहत तैसे शत्रुभय रहित सुग्रीवको कियो अथवा महादेवके माथेमें द्वितीयाको चन्द्रमा है यासों या जनायो कि भवसंसारको राज्य पाइ सुग्रीव की और बढती ह्वैहै ॥ इति किष्किन्धाकाण्ड कथा ॥ तथा याही पदमें सुन्दरौकाण्ड है ॥ केशव जे रामचंद्र हैं तिनके दासजे सुग्रीवहैं तिनके दासजे हनुमान हैं ताके वपुष शरीरको भवशीश शशिसम राखत भये कि लङ्कामें प्रकाशित करते भये कलङ्क रूपजे सिंहिका अक्षकुमारादिहैं तिनको दूरि करिकै कहे मारिकै ॥ इति सुन्दरकाण्ड कथा ॥ औ रामचन्द्रके सन्मुख होत ही विभीषणके सॉकर कष्टकी जो सॉकर जंजीर रही सो न कहे न रहत भई रामचंद्रके दर्शनहीं सो विभीषणको दुःख दूरिभयो तब दशमुख जो ब्रह्मा विष्णु महेश हैं ते विभीषणको मुख जोवत भये कि धन्य है विभीषण जाको रामचन्द्र अंगीकार कर्‍यो औ गजमुखजे गणेश हैं तिन मुख कहे आदि दै और देवता हैं ते को कहे कहाँ हैं अर्थ यह गणेशादि देवता तो जोवतही भये औ सॉकर जे यमादिक हैं तिनको सॉकर कहे कष्ट देवैया ऐसा जो रावण है सो रामचन्द्रके सन्मुख होतही न रहत भयो गजमुख जे गणेश हैं तिनको मुख कहे श्रेष्ठ ऐसे जे रामचंद्र हैं तिनके मुखको जोवत भयो अर्थ यह उनके लोकको प्राप्त भयो अथवा मुख जो वै कहे मुखमें लीन होत भयो तुलसीकृत रामायणमें लिख्यो है कि "तासुतेजप्रभुवदनसमाना । सुरनरमुनिअचम्भौमाना" ॥ इति युद्धकाण्ड कथा ॥ औ सॉकर जो रावण है ताके सॉकर जो रामचन्द्र हैं तिन्हैं अयोध्याके सन्मुख होत ही दशमुख जे ब्रह्मा विष्णु महेश हैं ते मुख कहे मुख्य औ गजमुख जे गणेश हैं ते रामचन्द्रको मुख जोवै कहे स्तुति करतेहैं अथवा दशमुख कहे दशौदिशाके मुख औ गजमुख मुख कहे द्वारिनमें मुख्य ते मुख जोवै कहे रामचन्द्रको मुख निहारतेहैं ॥ इति उत्तरकाण्ड कथा ॥ कोऊ कहै कि एक पदमें कथा फेरि अर्थ कियो सो संक्षेपकथा है तासों दूषण नहीं है याही विधि रामायणादिक तिलककारमे

अर्थ कियो है याहूपर कोऊ हठकरै ताकारण द्वितीय प्रकारसों अर्थ बालक जो है शिशु सो जैसे बालखेलमें मृणालनको विनही श्रम तोरिडारे कहे तोरिडारतहै इहाँ बालक पदमें जातिमें एक वचन है त्यों कहे ताहीविधि कठिन अतिकठोर औ भयानक ऐसा जो शंभु धनुष है ताको बाल अवस्थामें बालखेल सम रामचन्द्र तोरचो त्यहीमुख कहे आदिदै ताडकावधादि सीय विवाहादिजे बालकांडकी संपूर्ण कथा हैं तिनको इहाँ मुखपदक्रमकी आदि मों नहीं है श्रेष्ठतामो है औ अकाल कहे कुसमयको जो दीह दुःख है अर्थ रामराज्याभिषेकमें कैकेयीको वर मांगिवो राम वनगमन दशरथ मरण भरतको व्रतकरि नंदिग्राममें वसन या प्रकारको जो अकाल दुःख है त्यहि मुख जे चित्रकूट गमनादि अयोध्याकांड कथा है तिनको औ विराध खर दूषणादि राक्षसनको मारिकै ऋषि लोगनकी विपत्तिको सहजही पद्मिनीके पातसम हरत कहे दूरिकरत पंकरत पंक जे पापहैं तिनको जैसे पेलिकै पतालको पठवै कहै पठै देत हैं अर्थ अपने दासनके जैसे पातक नाश करतहैं ताहीविधि कलुषकहे पापरूप बंधुपत्नी भोगी जो वालिहै ताको पठायो अर्थ मारचो तिनमुख जे आरण्यकांड औ किष्किन्धाकाण्डकी कथाहैं तिनको ऋषिनकी विपत्ति हरणादि आरण्यकाण्ड कथा जानो आदिपदते सीयहरणादि जानो औ वालिवधादि किष्किन्धाकाण्ड कथा जानो आदि पदते सप्तताल वेधन सुग्रीव राज्याभिषेकादि जानो औक जो है अग्नि तासों लंकके जे अंककहे ध्वजादि चिह्नहैं तिन्हैं दूरिकै कहे विध्वंस कारिकै जारिकै इति अर्थ हनुमानके करसों लंकाजारिकै दास जो बिभीषण है ताके वपुषको आजु पर्यंत राखतहैं रक्षाकरतहैं अर्थ रावणादिको मारि जो विभीषणको लंकाको राज्यदियो तामें आजुलों रक्षा करत हैं तिनमुखकथनको हनुमानूके करसों लंकादाहादि सुन्दरकाण्डकी कथा जानो औ रावणादिको बधकारि विभीषणको राज्यदानादि लंकाकाण्ड कथाजानौ औ भरतको जो साँकर कहे नंदिग्राममें यतीवेष वसिवे को कष्ट है ताहीकी जो साँकर कहे बंधन जंजीर है ताको जो नशन कहे नाश करिवोहै अर्थ रामचन्द्र आइकै भरत यतीवेषको क्लेश दूरि करचो है तेहिमुखकस है आदिदै औज कहे यज्ञ मुख कहे आदिदै अर्थ अश्वमेधादि जे मुख कहे मुख्य कथा हैं तिनको योग कहे गीत है अर्थ कथन है ताको जे जोवै कहे देखत हैं. अर्थ इन कथनसों युक्त रामचंद्रिकाको जे पढतहैं तेही कहे निश्चय करिकै दशमुख मुख होत हैं अर्थ वक्तृत्व करिकै दशमुखके

सदृश जिनको एक मुख होतहै अर्थ बडे वक्ता होतहैं " मयूरेब्रौचपुंसिस्यात्सुख-शीर्षजलेपुकम् " इति मेदिनी ॥ " गंगीतंगातुगीताचगौश्चधेनुःसरस्वतीत्येका-क्षरी यजनेयः समाख्यातः " इत्येकाक्षरी ॥ १ ॥

मू०-बानी जगरानीकी उदारताबखानी जाइ ऐसीमति कहौधौं उदार कौनकी भई । देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषि राज तपवृद्ध कहिकहि हारेसब कहिन कहूँलई ॥ भावी भूत वर्त्तमान जगत बखानतहै केशोदास केहूं न बखानी काहूपै गई ॥ वर्णपति चारिमुख पूतवर्णै पाँच मुख नाती बर्णै षट मुख तदपि नईनई ॥ २ ॥

टीका-जगरानी कहे जगमें श्रेष्ठ ऐसी जेवाणी सरस्वती हैं तिनकी उदारता बडाई जासों बखानी जाइ कहौ ऐसी मति बुद्धि उदारबडी कौने प्राणी की भई है अर्थ काहूकी नहीं भई देवता बृहस्पति आदि औ प्रसिद्ध जे सिद्ध देव-योनि विशेष हैं अथवा भृगु आदि ऋषिराज वाल्मीकादि अथवा सिद्ध जे ऋषि-राज हैं तप वृद्ध लोमश मार्कंडेय आदि जाकी उदारताको कहि कहि कहे वर्णि वर्णिके सब हारे हैं कहिके सब उदारता काहू न लई कहे न पायी अर्थ उदार-ताको अन्त न पायो हारि यासों कह्यो कि अब नहीं बखानत औ भावी कहे जे ह्वैहैं औ भूत जे ह्वैगये वर्तमान जेहैं जगत् कहे जगत्के प्राणी ते बखानत हैं सो केशवदास कहते हैं कि केहूं कहे काहू प्रकार सों काहू प्राणीसों उदारता न बखानी गई औ पति जे ब्रह्मा हैं ते चारि मुखसों औ पूत महादेव पांचमुखसों नाती स्वामिकार्त्तिक षण्मुख सों वर्णतहैं ताहू पर नई नई कहे नवीन नवीन रहति है अर्थ यह कि यहि प्रकार मुख वृद्धि सों वर्णत हैं परंतु इनको वर्णन जाकी उदारताको होइ नहीं सकत अथवा ज्यहिवाणीके पति चारिमुख औ पूतके पांच मुख नातीको षण्मुख वर्णन करत हैं यासों या जनायो कि चारिमुख सों संपूर्ण जगत उत्पत्तिके कर्ता पंचमुखसों नाशकर्ता षण्मुखसों देवननके रक्षक ऐसे पति पुत्र नाती हैं ताके यासों बडी बडाई जनायो औ ताहूपर नवीन नवीन होति जाति है और अर्थ [illegible] वाणी जो सरस्वती है तासों जगरानी सीता हू की उदारता बखानी जाइ ऐसी मति वाणीकी कौनकी कौनहीं भई है अर्थ कौने

ऐसी मति वाणीको दीन्हीं औजवाणी के पति पुत्रादि चतुरादि मुखसों वर्णत हैं और अर्थ एकही है अथवा सरस्वती की उक्ति है कि वाणी जो मैंहों तासों जगरानी सीताजूकी उदारता वखानी जाइ कहे जाति हैं कोहसों अर्थ यह कि मोसों नहीं वखानी जाती काहे ते कि ऐसी कौनकी उदारमति भई है कि जो वखाने काहेते कि देवतादि औ मेरे पति पुत्रादि सब वखानत हैं ताहू पर नई नई रहति है ऐसी सरस्वती को अथवा सीताजूको नमस्कार करत हों इति शेषः यामें नमस्कारात्मक मंगल है ॥ २ ॥

मू०—अन्यच्च ॥ पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परिपूरण बतावैं न बतावैं और उक्तिको ॥ दरशन देत जिन्हें दरशन समुझै न नेति नेति कहै वेद छाँडि भेद युक्तिको ॥ योनि यह केशोदास अनुदिन राम राम रटत रहत न डरत पुन-रुक्तिको । रूप देहि अणिमाहि गुणदेहि गरिमाहि भक्तिदेहि महिमाहि नाम देहि मुक्तिको ॥ ३ ॥

टी०—जिन रामचंद्र को पूर्णकहे संपूर्ण अठारहौं पुराण अथवा पूरण कहे जे कछु वस्तु चाहत नहीं शुकादि पुराण स्कंदादि औ पुरुषपुराण लोमश मार्कं-डेय आदि ते परिपूर्ण कहे सर्वत्र व्याप्त बतावत हैं और उक्ति कहे कथाको नहीं बतावत अर्थ कि और तर्क नहीं करत श्रीरामचंद्रजी जाकोदर्शन देतहैं ताको फेरि दर्शनकी समुझ ज्ञान नहीं रहति अर्थ जाको रामचंद्र को दर्शन होतहै सो तिनमें लीन है जात हैं सायुज्य मुक्तिको प्राप्त होतहै अथवा और दर्शन स्त्री पुत्रादिकी समुझ नहीं रहति अर्थ संसार को बंधन मोह छूटिजात है रामरूपही ध्यानमें निरखत हैं औ वेद जिनको अनेक भेदसों गान करि नेति नेति कहे ना इति ना इति कहे याही प्रकारको है सो न कहे नहीं हम जानत या प्रकार सबभेदकी युक्तिको छोडि कहत है अर्थ यह कि जिनको प्रमाण वेदऊ नहीं जानत रूप जो रामचंद्र को है सो अणिमा सिद्धिको देतहै औ गुण जेहैं ते गरिमा सिद्धिको देतहैं औ भुक्तिमहिमा सिद्धिको देतिहै औ नाम मुक्तिको देतहै यह जानिकै काव्यरीतिमें एकई वस्तु को द्वै वारकहौं तौ पुनरुक्ति दूषण होतहै ताको भय छोडिकै मुक्ति की इच्छा करि अनुदिन रोज रोज राम

नामको रटनहीं ॥ "अर्थी दोषं नपश्यतीतिप्रमाणात्" ॥ और अर्थ रामनामको पुराणादि पारिपूर्ण कहे भुक्ति मुक्त्यादि सब वस्तुसों पूरित अथवा सर्वत्र व्याप्त बखानत हैं सर्वत्र रहतहैं जहां चाहिये तहाँ लीजिये सब स्थानमें मिलत हैं औ जिन-नको दर्शन कहे षट्शास्त्र तिनकी समुझ नहीं है तिनको रामचंद्र दर्शन देतहैं अति मूर्ख वालमीकादि नामहींके जपसों रामचन्द्रको दर्शन पायो अथवा दर्शन ज्ञान देतहैं नेति नेति कहे नाइति नाइति कि संपूर्णार्थ इनहीं से कहे की वाल्मीकि से हीन गणिका यमनादि अनेकन पतितनको राम नामै सिद्धताको प्राप्त कीनहै जाति कुल विद्याके भेदकी युक्तिको छोंडिकै कछू जाति कुल विद्या परनहीं है जोई नामोच्चारण करै सोई सिद्धहोइ या प्रकार वेदकहतहैं अथवा प्रथमहीं को अर्थ जानो जा नामके माहात्म्यको वेद नहीं जानत फेरि नाम कैसोहै रूपसौंदर्य औ अणिमासिद्धि औ अनेक गुण औ गरिमा सिद्धि औ महिमा सिद्धि औ नाम कहे यश औ मुक्ति को देतहै तौ सौन्दर्य्यादि जे दृष्टफल हैं ते जहाँ देखिये तहाँ राम नामहीके प्रभाव सों जानियो औ मुक्ति अदृष्ट फल है ताके अर्थ अंत्य अवस्था में सब राम नाम कहावतहै यह सनातन रीति चली आवतिहै तासों जानि यतहै कि मुक्तिका दाता रामनाम छोडि दूसरो नहीं है अथवा रूप जो है वेष तामें अणिमादि सिद्धि देतहैं जैसा सूक्ष्म रूप चाहै तैसो धरैं औ गुणन में गरिमा सिद्धि देतहैं राम नामके जप प्रभावते सत्वगुण विद्यादि गरू होतहैं औ भक्तिमें महिमा सिद्धि बडाई देतहै जो रामनाम जपतहै सो वडो भक्त कहावत है औ नाममें मुक्तिको देत है अर्थ राम भक्तन प्राणिन की मुक्ति जीवन में सब नाम गणतहैं अथवा नाम यश औ मुक्तिको देतहै सो यह कहे ऐसो प्रभाव जानिकै केशवदास जो है सो पुनरुक्ति भय छॉडिकै अनुदिन रामनामको रटत है या ग्रंथमें रामनाम वस्तु है ताका निर्देश कथनमात्र है तासों वस्तु निर्देशात्मक मंगलहै ॥ ३ ॥

मू०—सुगीतछंद ॥ सनाढ्य जाति गुनाढ्य हैं जग सिद्ध शुद्धस्वभाव । कृष्णदत्त प्रसिद्ध हैं महिमिश्र पंडितराव ॥ गणेशसो सुत पाइयो बुधकाशिनाथअगाध । अशेषशास्त्र विचारिकै जिनजानियो मतसाध ॥ ४ ॥ दोहा ॥ उपज्यो त्यहि कुल मंदमति, शठकवि केशवदास ॥ रामचन्द्रकी चन्द्रिका,

भाषाकरी प्रकाश ॥५॥ सोरहसै अट्ठावन, कार्तिकशुदि बुध वार ॥ रामचन्द्रकी चन्द्रिका, तब लीन्हों अवतार ॥६॥ बालमीकि मुनि स्वप्नमें, दीन्हों दरशन चारु ॥ केशव तिनसों यों कह्यो, क्यों पाऊं सुखसारु ॥७॥ मुनिश्रीछंद सिद्धिऋद्धिः॥८॥ सारछंद ॥ रामनाम सत्यधाम ॥९॥ और नामकोन काम १०॥

टीका—गुनाढ्यगुणन सों पूरित औ साधु मत उत्तम मत छंद उपजाति है जा छंदमें और और द्वै आदि छंदके चरण होइ सो छंद उपजाति कहावति है ॥४॥ ॥५॥ जो मैं तिथि नहीं कह्यो सो वार पदते सात वार हैं तासों सप्तमी तिथि सब कहतेहैं परंतु ज्योतिषके ग्रंथ ग्रहलाघवादिके मतसों कल्पांत अहर्गण किये बुधवार पंचमी और द्वादशी को आवत है सो द्वादशी भद्रा तिथी है और बुधे भद्रा सिद्धियोग होतहै और कार्तिक शुदी एकादशीको विष्णु जागतेहैं विष्णुके जागे-के उपरांत ग्रंथारम्भ करयो तौ चैत्रादि मास गणनासों कार्तिक पर्यंत आठ औ रविवारादि वार गणना सों बुध पर्यंत चारिजोरि द्वादशी तिथि जानो ॥६॥ सुखसार मुक्ति चौवीसयें प्रकाश में रामचंद्र कह्यो है कि जगछूटे सुखयोग तासों जानो ॥ ७ ॥ तीनि छंदकी अन्वय एकहै सिद्धि जो आठ अणिमादिक हैं और सिद्धि संपत औ सत्यको धाम ऐसो जो रामनाम है तासों सुखसार पै हौ सुखसार देवे को और नामको काम नहीं है तौ सिद्धिको धामकहि ऐहिक सुख-प्रद जनायो औ सत्तको धामकहि सत्यही ब्रह्महै तासों ब्रह्मरूप प्रद जनायो अर्थ जीवत में या लोकमें सुखद है औ अंतमें ब्रह्मपदप्रदहै ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०केशव—रमणछंद ॥ दुखक्यौंटरिहैं ॥ मुनि-हरिजुहरिहैं ॥ ११ ॥ मुनि—तरनिजाछंद ॥ बरणिबेबरणसो ॥ जगत को शरणसो ॥ १२ ॥ प्रियाछंद ॥ सुखकंद है रघुनंदजू॥जग यों कहै जगबंदजू ॥ १३ ॥ सोमराजीछंद ॥ गुनो एकरूपी सुनो वेदगावैं ॥ महादेव जाको सदा चित्तलावैं ॥ १४ ॥ कुमारललिताछंद ॥ विरंचि गुणदेखै ॥ गिरागुननिलेखै ॥ अनंतमुखगावै विशेहीनपावै ॥ १५ ॥

टीका-केशव पूंछ्यो कि लोभ मोहादि कृत जो दुःख हैं सो कैसे टरिहैं तब मुनि कह्यो कि, जब तू रामनाम ग्रहण करिहै तब रामचन्द्र हरि हैं छोडाइ हैं इहां हरिशब्द यासों कह्यो कि 'हरतिदुःखमिति' हरिः अर्थ दुःख हरिबो उनके नामहींको अर्थ है ॥ ११ ॥ दुःख छोडाई रामचंद्र मुक्ति देहैं या निश्चय के अर्थ रामचंद्रको ईश्वरत्व केशवको मुंनि चारिछंदमें देखावत हैं जो जगत्को शरण रक्षक है सो वरण रूप राम रूप अथवा रामनामांक तुम करिकै वर्णिवे है अर्थ रामचंद्र को रूप अथवा राम नाम वर्णन करो ॥ १२ ॥ सब जग कहत है कि रघुनन्दन जे रामचन्द्र हैं ते सुखके कंद कहे मूलहैं इनहीं के आश्रित सब सुख हैं औ जग वंद्यहै सब जग जिनको वंदना करत है सुखकंद कहि या जनायो कि सुखसार रामचंद्रही सों पाइ है और देव देवेको समर्थ नहीं हैं ॥ १३ ॥ जिन रामचंद्रको वेद जो हैं सो एकरूपी कहे जो सदा एकरूप रहतहैं ब्रह्मज्योति जासों गुन्यो कहे ठहरायोहै सो गान करत हैं सो हम वेद वाक्य सों सुन्यो है अथवा एककहे जिन सम दूसरो नहींहै औ रूपीकहे अनेक रूपसों सर्वत्र व्याप्त हैं फिरि कैसे हैं जिनको महादेव सदा ध्यावते हैं ॥ १४ ॥ यामें रामचंद्रके गुणनको माहात्म्य है अनंत शेप विशेप निर्णय ॥ १५ ॥

मू०—नगस्वरूपिणीछंद ॥ भलोबुरोनतूगुनै। वृथाकथाकहै-सुनै॥ नरामदेवगाइहै। न देवलोकपाइहै ॥ १६ ॥ पटपद॥ बोलिनबोल्यो बोल दयो फिर ताहि न दीन्हों। मारिनमारयो-शत्रुक्रोधमनवृथानकीन्हों ॥ जुरिन मुरे संग्राम लोककीलीक न लोपी। दान सत्य सन्मान सुयश दिशि विदिशा ओपी॥ मनलोभ मोहमदकामवश भये न केशवदास भणि। सोइ परब्रह्म श्रीरामहै अवतारी अवतार मणि ॥ १७ ॥ दोहा ॥ मुनिपति यहउपदेशदै, जबहीं भयो अदृष्ट ॥ केशवदास तहीं कर्‌यो, रामचन्द्र जू इष्ट ॥ १८ ॥

टी०—तू अनेक कथा वृथा कह्यो सुनै करत है आपनो भलो बुरो नहीं गुनको बिचारयो जबतें ऐसो पूर्व कहि आये एसे रामदेव को न गावत है तबलौं अनेक कल्पन लों देवलोक न पैहै इहां देवलोक वैकुंठ जानो वैकुंठ देवेको शक्ति

रामचन्द्रही में है और देव नहीं देसकत कहूं न रामलोक पाइ है पाठ है तौ रामलोक वैकुंठ ॥ १६ ॥ प्रथम ईशत्व वर्णन करयो अब यामें रामचंद्रको स्वभाव गुण वरण्यो है रामचन्द्रजू जो बोले सो फेरि नहीं बोले अर्थ जो एक बात कह्यो सोई करयो है फेरि बदलि कै और बातनहीं कह्यो वन गमनादि वचन ते जानो औ जाको दान दियो ताको फेरि वही दीन्हों अर्थ एकही वार ऐसो दियो जामें वाके फेरि माँगिबेकी इच्छा नहीं रही विभीषणादि को लंका-दानादि ते जानो और शत्रुको एकही वार ऐसा मारिकै नाश कियो जामें फेरि नहीं मारिबे परयो खरदूषणादि वधते जानो औ संग्राम में जुरिकै नहीं मुरे खरदूषण रावणादि के युद्धते जानो औ लोक की लीक मर्यादा को लोप नहीं कियो रावण के वधसों ब्रह्मदोष मानि अश्वमेध करणादि सों जानो औ दान औ सत्य औ सन्मान के सुयश करिकै दिशा औ विदिशा ओपी हैं अर्थ जिनको सुयश दिशि विदिशन में छाइ रह्यो है औ जिनको मन लोभ औ मोह औ मद औ काम के वश नहीं भयो राज्य त्यागादि सों लोभ विवशजानी माता पिताको दुःखितहुए देखि वन गमन करनादि सो मोह विवश जानो औ अगस्त्यादि ऋषिनके यथोचित सत्कार सों मद विवश जानी एक पत्नी व्रतसों काम विवश जानो जाके ऐसे स्वभाव गुणहैं सोई श्रीराम वाराहादि अवतारन में मुनिश्रेष्ठ अवतारी कहे अवतारको धरे साक्षात्परब्रह्म है अथवा श्रीराम अवतारी कहे अनेक अवतारन को धरत हैं औ परब्रह्म हैं ॥ १७ ॥ अदृष्ट अंतर्द्धान इष्ट-पूज्य देवता ॥ १८ ॥

मू०—गाहाछंद॥ रामचन्द्र पदपद्मं वृन्दारक वंदाभिवृंदनीयं॥ केशवमतिभूतनया लोचनंचंचरीकायते ॥ १९ ॥ चतुष्पदीः छंद॥ जिनको यशहंसा जगत प्रशंसा मुनिजन मानसरंता। लोचन अनुरूपनि श्याम स्वरूपनि अंजन अंजित संता॥ कालत्रयदर्शी निर्गुणपर्शी होत विलम्ब न लागै। तिनके गुण कहिहौं सब सुख लहिहौं पाप पुरातन भागै॥ २० ॥

टी०—वृंदारक जे देवताहैं तिनके वृंदसमूह तिन करिकै अभिवंदनीय अर्थ जिनको अनेक देवता वन्दना करतहैं ऐसे जे रामचंद्र के पदपद्म पदकमल हैं तिन प्रति केशवदास की मतिरूपी जो भूतनया सीता हैं ताके लोचन चंचरीकाय ते कहे चंचरीक भ्रमरके ऐसे आचरण करत हैं अर्थ जब मुनि की आज्ञा सों राम-

चंद्र को इष्टदेवता करचो तव सीता सम सदा रामनिकट वर्तिनी हमारी मति के लोचन कमलमें भ्रमर सदृश रामचन्द्र चरण में अनेक कौतुक करने लगे ॥१९॥ मानस मानसर औ मन आय आपने लोचननके अनुरूप कहे योग्य और के लोचनके योग्य कज्जलादि अंजन है संतन के लोचननके योग्य रामरूपही है ऐसे जे जिन रामचंद्र के अनेक प्रतिबिंब श्यामस्वरूप रूपी अंजन हैं तिनकरि जे संत अंजित हैं अर्थ रामचन्द्र के प्रतिबिंब रूपनको जे संत जन ध्यानमें आनत हैं अथवा श्याम स्वरूपनि कहे श्यामरूपता रूपी जो अंजन है ता करिकै जे संत अंजित हैं तिन संतानको त्रिकालदर्शी औ निर्गुण पर्शी नेत्रन करि ज्योति स्पर्श करै या अर्थ ब्रह्मज्योति के द्रष्टा होत बेर नहीं लागति जे रामचंद्रको ध्यान करत हैं ते त्रिकालदर्शी होत हैं औ ब्रह्मज्योति को देखत हैं इति भावार्थः॥ अथवा निर्गुणपर्शी होत कहे निर्गुणज्योति में मिलिजात बेर नहीं लागति अथवा निर्गुणते पर अन्य विष्णुकी श्रीशोभा होत बेर नहीं लागति पुरातन पूर्व कृत ॥ २० ॥

मू०-दो०-जागति जाकी ज्योति जग; एकरूपस्वच्छंद ॥ रामचंद्रकी चन्द्रिका, वरणतहों बहुछंद ॥२१॥ रोलाछंद ॥ शुभ सूरजकुल कलशनृपति दशरथ भये भूपति ॥ तिनके सुतभये चारि चतुर चितचारु चारुमति ॥ रामचन्द्र भुवचन्द्र भरत भारत भुवभूषण । लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न दीहदानव दलदूषण ॥ २२ ॥ धत्ताछन्द ॥ सरयूसरितातट नगर वसै अवध नाम यश धामवर ॥ अघओघ विनाशी सब पुरवासी अमरलोक मानहु नगर ॥ २३ ॥

टी०—ज्योति ब्रह्मज्योति अथवा अंगछबि औ बहु छंद कहे अनेक रंगतौ जा रामरूपी चन्द्रकी ज्योति तौ एक रूप है ताकी चन्द्रिका अनेक रंगहै यो आश्चर्य है यह युक्ति है औ अर्थ यह कि बहुत छंद जे दोहादि हैं तिनसों युक्त ॥ २१ ॥ सूर्य कुलके कलश जे नृपति अजादि हैं तिनमें दशरथ भूपति राजा भये भारत भरतखंड ॥ २२ ॥ यश को धाम कहे घर ० वरा पृथ्वी तार्की अयोध्यापुरी के वासी देवतन सरिस अघपापन के ओघ समूहन के विनाशी हैं मानों देवलोक सम है ॥ २३ ॥

मू०–छप्पै ॥ गाधिराजको पुत्र साधिसव मित्र शत्रुबल। दान कृपान विधान वश्य कीन्हों भुवमन्डल॥ कैमन अपने हाथ जीति जग इन्द्रियगन अति। तपबल याही देह भये क्षत्रिय ते ऋषि पति ॥ तेहि पुर प्रसिद्ध केशव सुमति काल अतीतागतनिगुनि। तहँ अद्भुत गति पगु धारियो विश्वामित्र पुनि॥ २४ ॥ प्रज्झटिकाछन्द ॥ पुनि आये सरयू सरित तीर तहँ देखे उज्ज्वल अमलनीर। नव निरखि निरखि द्युति गति गँभीर। कछु बरणन लागे सुमति धीर ॥ २५ ॥ अति निपट कुटिल गति यदपि आय। वह देत शुद्ध गति छुवत आय॥ कछु आपुन अध अध गति चलन्ति। झलपति तन को ऊरध फलन्ति॥ २६ ॥ मदमत्त यदपि मातंग संग। अति तदपि पतित पावन तरंग बहु न्हाइ न्हाइ जेहि जल सनेह॥ सब जात स्वर्ग शूकर सुदेह॥ २७॥

टी०–त्रिकाल दरशीत्व ते जेतो कालबीते रामचन्द्रको अवतार होनो रहै सो कालअतीतकहे बीतो गुनिकै औ जा कालमें रामचन्द्रजू यज्ञरक्षा करनलायक भये सो काल आगत आयो गुनिकै ॥ २४ ॥ २५ ॥ दुवौछंदन में विरोधाभास है आप कहे अपना औ आप कहे जल के छुवतहीं शुद्धगति मुक्ति देत है अथवा जाके जलको कहूँ अनतहूँ छुवौ तौ शुद्धगति देतहै ऊरधपदते स्वर्ग जानों ॥ २६ ॥ मद मदिरा सों मत्त यद्यपि मातंग चाण्डालनको संग है विरुद्धार्थः॥ "मातंगःश्वपचीहस्तीत्यभिधानचिंतामणिः"॥ औ मत्तगज जामें स्नान करते हैं इत्यविरोधः पतितपावन कहे पतितन को पवित्र कर्ता स्नेह सों ताके जलमें न्हाइन्हाइकै शूकरपर्यंत वहु प्राणी सुंदर देह को धरि सव स्वर्ग जातेहैं अथवा सनेह कहे अप्सरादिकनके इति शेषः ॥ स्नेहसहित अर्थ अप्सरादि स्नेह सहित ताको स्वर्ग लैजाती है अथवा तेहिके जलके स्नेहहूँ सों कहूं होइ सरयू जलमें स्नेह करै स्वर्ग जाइ कहूं सदेहपात है देह सहित स्वर्ग जाइ अर्थ याही

देहमें देवरूप ताको प्राप्त ह्वै जातहै जिनको देहत्यागहू को कष्ट नहीं होत इति भावार्थः अथवा शूकर देह सहित जे जीव हैं ते स्वर्ग जातहै और देहधारी तौ जातेही हैं ॥ २७ ॥

मू०-नवपदीछंद ॥ जहँ तहँ लसत महामदमत्त । वर वारन वारन दलदत्त । अंग अंग चरचे अति चंदन । मुंडन भुरके देखिय वंदन ॥ २८ ॥ दोहा ॥ दीह दीह दिग्गजन के, केशव मनहुँ कुमार ॥ दीन्हीं राजा दशरथहि, दिगपाल न उपहार ॥ २९ ॥ अरिल्लछंद ॥ देखि बाग अनुराग उपजिय । बोलत कलध्वनि कोकिल सज्जिय ॥ राजति रतिकी सखी सुवेषनि । मनहुँ बहति मनमथ संदेशनि ॥ ३० ॥

टी०-ग्रामबाहर जहाँ तहाँ महावत हाथिनको फेरतहैं तिन का वर्णन है सुभावोक्ति है अथवा स्थान पर बँधे हैं वारन हाथी तिनके दल चमू को अके लेई दलि डारत हैं यासों अतिवली जानो अथवा वार कहे वेर नहीं लागति शत्रुदलको दलि डारत हैं भुरके लगाये चन्दन रोरी ॥२८ ॥ दिकपाल इन्द्रादि उपाहार भेंट ॥ २९ ॥ कल अव्यक्त मधुर ॥ ३० ॥

मू०-फूलि फूलि तरु फूल बढ़ावत । मोदत महामोद उपजावत । उड़त परागन चित्त उठावत । भ्रमर भ्रमत नहिं जीव भ्रमावत ॥ ३१ ॥ पादाकुलकछंद ॥ शुभ सर शोभै मुनिमन लोभै । सरसिज फूले अलि रस भूले ॥ जलचर डोलैं बहुखग बोलैं । बरणि न जाहीं उर अरु झाहीं ॥ ॥ ३२ ॥ चतुष्पदीछंद ॥ देखीवनवारी चंचलभारी तदपि तपोधन मानी । अति तपमय लेखी गृहथितपेखी जगत दिगंबर जानी ॥ जग यदपि दिगंबरपुष्पवती नर निरखि निरखि मन मोहै । पुनि पुष्पवती तन अति अति पावनगर्भ सहित सब सोहै ॥ ३३ ॥

टी०—मोदतकहे सुगंधको पसारत ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ द्वैछंदको अन्वय एक है वनवारी कहे उपवन औ श्लेषते वनकी वारी कुमारी कुमारीपक्ष विरोध है वाटिका पक्ष शुद्धार्थ है विरोधाभास अलंकार है चंचल स्वभाव चंचल औ वायु योगसों चंचलहै पत्तजाभारी कहे गरूहै देह जाकी और दीर्घवृक्षयुक्त तपोधन तपस्विनी औ तपस्वी सम शीत घाम तोय दुःख सहतिहै गृहघर और परिखाछार दिवालीति दिगंवर वस्त्र रहित दुवौ पक्ष में पुष्पवती रजो धर्मिणी औ प्रफुल्लित तन अति कहे स्थूलकाय औ वहुत भूमि में विस्तार है जाको अति पावन पवित्र अति दुवौ पक्ष में गर्व सहित गुर्विनी औ फलगर्भ सहित यासों सदा फलोत्पत्ति जनायो रति रस सुरत औ प्रीति जग जन लीना अनेक पुरुष भोगिनी परकीयाइतिं । औ जगके जनन करिकै युक्त अर्थ अति सुख पाइ जग जन बैठत हैं जामें प्रवीना दोष रहित औ सर्वोत्तमा नवीनापाठ होइ तौ नवोढा औ नूतनयनि आपनो पुरुष औ राजा सौंपीपति की औ स्त्री औ राजपत्नी ॥ ३३ ॥

मू०—पुनिगर्भ संयोगी रति रस भोगी जगजनलीन कहावै। गुणि जग जललीना नगरप्रवीना अति पतिके चित भावै। अति पतिहि रमावै चित्त भ्रमावै सौतिन प्रेम बढ़ावै। अब यौंदिनरातिन अद्भुतभाँतिन कविकुल कीरतिगावै ॥ ३४ ॥ हाकलिकाछंद ॥ संग लिये ऋषि शिष्यन घने पावक सेतपतेजानिसने ॥ देखत सरिता उपवनभले। देखन अवधिपुरी कहँ चले ॥ ३५ ॥ मधुभारछंद ॥ ऊंचे अवास। बहु ध्वज प्रकाश ॥ शोभा विलास । शोभै प्रकाश ॥ ३६ ॥ आभीरछन्द ॥ अति सुन्दर अति साधु। थिर न रहत पल आधु । परम तपोमय मानि । दण्ड धारिनी जानि ॥ ३७ ॥ हरिगीत छन्द ॥ शुभद्रोण गिरिगण शिखर ऊपर उदित औषधिसी गनौ । बहु वायु वश वारिद बहोरहि अरुझि दामिनि द्युतिमनौ ॥ अति किधौं रुचिर प्रताप पावक

प्रगट सुरपुर की चली। यह किधौं सरित सुदेश मेरी करो दिवि खेलित भली ॥ ३८ ॥

टी०-उपवन वाटिका ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ अवास पर ॥ ३६ ॥ दंडधारिणी हैं दंडिन के व्रत को धरे हैं दंडी दंड धरे रहते हैं ये दंड कहे ध्वजदंड धरे हैं कैसो है ध्वजा औ दंडी अति सुंदर हैं सुवस्त्र रचित औ तपतेज करि: भव्यरूपहै साधु-राग द्वेपरहित दुवौहैं थिरनरहत वायुयोगसों चंचलरहती हैं औ अनेक तीर्थनमें फिरयो करतहै औ परमतपोमय है सदा शीत घाम तोयसहती हैं औ प्राणायामादि अनेकतप करत हैं औ अर्थ विरोधाभास है विरोधार्थ अतिसाधु हैं औ पल आधु थिर नहीं रहती तौ साधुविषे चंचलता विरोध है औ परम तपोमय कहे बडे तपको करती हैं औ दंडधारिणी हैं दंडकहे राजदंड डांड इति धारण करता है लेता है तो तपस्वीको दंडलेवो विरोधहै अविरुद्धार्थ प्रथमको ते जानो ॥३७॥ द्रोणगिरि सदृश मंदिर है शिखर अग्रभाग औषधि सारिस करयो तासों अरुण पताका वर्णन जानो औ की दामिनी विजुलीकी द्युतिहै अरुझि रही है तिनको बारिदके वश्यहै अर्थ बारिद की आज्ञासों वायुवह कहे अनेक प्रकाररसों बहोरत है मेघनके पास लैजायो चहतहै यासों मंदिरनकी अति उच्चता जनायो प्रताप पावक रघुवंशिन को इतिशेषः ॥ या प्रकार अरुणपताका पंक्तिको वर्णन करि यह पदसों दूसरी श्वेतपताका पंक्तिको अवलोकि वर्णन लगे सो जानो मेरीकरी कहे बनाई विश्वामित्र सृष्टिकरन लागे हैं तब नदी बनायोहै सो आकाशमें हैं पुराणोक्त है कवि प्रियाहूमें कह्योहै कि, ऊँचे ऊँचे अटनिपताका अति ऊँची जनु कौशिक की कीन्हीं गंगा खलैये तरल तर। अथवा मेरीकहेहमारी 'भगिनीभगिनीतिशेषः'। दिवि कहे दिव्यरूप कहे खेलतिहै आकाशमें कौशिकी नदीहै सो विश्वामित्रकी भगिनीहै ॥ ३८ ॥

दोहा ॥ जातिजीतिकीरतिलई, शत्रुनकी बहुभाँति ॥ पुर पर बाँधी शोभिजै, मानो तिनकी पाँति ॥ ३९ ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ सम सब घर शोभैं मुनि मन लोभैं रिपुगण छोभैं देखि सबै। बहु दुंदुभि बाजैं जनु घन गाजैं दिग्गज लाजैं सुनत जबै ॥ जहँतहँ श्रुति पढ़हीं बिघन न बढ़हीं जैजस

मढहीं सकल दिशा । सबई सब विधि छम बसत यथा
क्रम देवपुरी सम दिवस निशा ॥ ४० ॥

टी०—ताहीश्वेतपताका पंक्तिमें फेरि तर्क है ॥ ३९ ॥ द्वै छंदको अन्वय एकहै
शोभैंहैं डरतहैं हम समर्थ रातिउ दिन देवपुरी सम है यामें श्लेषार्थ हूहै कैसी देव-
पुरी औ अयोध्या है सम बराबरि है दिनराति जामें घटत बढत नहीं
छह महीना उत्तरायण दिन रहत है दक्षिणायन राति रहति है औ समहै
तुल्य आनंद दायक है रातिउ दिन जामें रात्रिहूको चौरादिको भय नाहीं होत
और अर्थ दुवोपक्षएकही है ॥ ४० ॥

मू०—कविकुल विद्याधर सकल कलाधर राजराजबरवेष
बने । गणपति सुखदायक पशुपति लायक शूर सहायक
कौन गने ॥ सेनापति बुधजन मंगल गुरु गण धर्मराज मन
बुद्धि घनी । बहु शुभ मनसाकर करुणामय अरु सुरतरं-
गिनी शोभसनी ॥ ४१ ॥

टी०—फेरि कैसी है देवपुरी कवि शुक औ कुल कहे समूह विद्याधरनके
विद्याधर देवयोनि विशेष हैं औ सकल कलाधर चंद्रमा औ राजराज कुबेर ये
सब पवरद कहे सुंदरवप कहे रूपसों बनेंहैं औ सुखदायक जो गणपति गणेश हैं
औ लायक कहे श्रेष्ठ पशुपति महादेव हैं औ सूर कहे सूर्य्य और जे इन्द्र
सहायक कामादि हैं तिन्हें को गने अर्थ की अनेक हैं सेनापति स्वामिकार्तिक
औ बुधजन चन्द्र पुत्रजन पद इहाँ स्वरूपको वाची है औ मंगल भौम औ
गुरु बृहस्पति औ गणकहै गणदेवता ॥ "आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरा-
निलाः । महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः । इत्यमरः" औ मनमें बुद्धिहै
घनी जिनके ऐसे धर्मराज कहे यमराज हैं बहु शुभयुक्त हैं मनसाकर कहे
कल्पवृक्ष औ करुणामय कहे विष्णु औ सुरतरंगिनी आकाशगंगा इन सबकी
शोभा सों सनीहै अर्थ ये सब बसत है यामें अयोध्या कैसी है कवि काव्यकर्त्ता
वाल्मीकि सदृश औ विद्या चतुर्दश ॥ "अंगानि वेदाश्चत्वारो मीमांसान्याय-
विस्तरः ।ः पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्याश्चैताश्चतुर्दशः" इति । मनुः ॥ अथवा
धनुर्विद्यादि तिनके धर्ता औ सकल कहे चौंसठिहू कलानके धर्ता औ राजराज
कहे बडे राजा ते वरवेषसों बनेंहैं अनेक राजा राजादशरथकी सेवामें हाजिर

पुरीमें वसे रहतेहैं औ सुखदायक गणपति कहे यूथप औ लायक श्रेष्ठ पशुपति गोपालादि अथवा गजादि औ सहायक कहे जे सबकी सहाय करत हैं ऐसे जे शूर योद्धा हैं तिन्हैं को गनै बहुत हैं औ सेनापति चमूनाथ बुधजन पंडित औ मंगल पाठी औ गुरुगण वसिष्ठादि अथवा मंगल कर्ता जे गुरुगण वसिष्ठादिहैं औ मनमें बुद्धि है घनी जाके ऐसो धर्मराज कहे न्यायदर्शी है कोतवालेति औ बहुत प्राणी शुभ जो मनसा मनोभिलाष है ताके करनहार हैं अर्थ मनोरथके दाता हैं औ बहुत करुणामय कहे दयाशील हैं: औ सुरतरंगिनी सरयू इनकी शोभा सों सनी है अर्थ इन सबसों युक्त है ॥ ४१ ॥

सू०—हीरकछन्द ॥ पंडितगण मंडितगुण दंडित मति देखिये । क्षत्रिय वर धर्म प्रवर क्रुद्ध समर लेखिये ॥ वैश्य सहित सत्य रहित पाप प्रगट मानिये । शूद्र सकति विप्र भगति जीव जगत जानिये ॥ ४२ ॥

टी०—पंडित पदते ब्राह्मण जानो ते अनेक गुण जे शास्त्रादि हैं तिनसों पंडित युक्त हैं औ दंडित हैं रक्षितहै मति जिनकी अर्थ सत् मति सों युक्तहैं औ क्षत्रिय क्षत्र धर्म करिकै प्रवर बली हैं औ समरहीमें क्रोधकरत हैं औ वैश्य बनिया सत्य सों युक्त हैं औ पापसों रहित हैं औ शूद्रन के जीवमें ब्राह्मण की भक्तिरूप गति है ताही में तिनकी शक्तिबल जानियतहैं अर्थ शूद्र-भक्ति युक्त ब्राह्मणकी सेवा करत हैं अथवा शूद्रनके जीवमें शक्ति कहे देवी औ विप्रकी भक्ति जगतिहै शूद्रनको देवी औ ब्राह्मणनकी उपासना उचितहै या प्रकार आपने अपने धर्म सों युक्त चारों वर्ण वसत हैं यामें ॥ ४२ ॥

सू०—सिंहविलोकित छंद ॥ अति मुनितन मन तहँ मोहि रह्यो । कछु बुधिबल बचन न जाइ कह्यो ॥ पशु पक्षि नारि नर निरखि तबै । दिन रामचन्द्र गुण गनत सबै ॥ ४३ ॥ त्रिभंगीछन्द ॥ अतिउच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिन्तामणि नारि । बहुशत मख धूपनिधूपित अंगनि हरिकीसी अनुहारि । चित्रीबहु चित्रनि परम विचित्रनि

पुरीमें वसे रहतेहैं औ सुखदायक गणपति कहे यूथप औ लायक श्रेष्ठ पशुपाति गोपालादि अथवा गजादि औ सहायक कहे जे सबकी सहाय करत हैं ऐसे जे शूर योद्धा हैं तिन्हैं को गनै वहुत हैं औ सेनापति चमूनाथ बुधजन पंडित औ मंगल पाठी औ गुरुगण वसिष्ठादि अथवा मंगल कर्ता जे गुरुगण वसिष्ठादिहैं औ मनमें बुद्धि है घनी जाके ऐसो धर्मराज कहे न्यायदर्शी है कोतवालेति औ बहुत प्राणी शुभ जो मनसा मनोभिलाष है ताके करनहार हैं अर्थ मनोरथके दाता हैं औ बहुत करुणामय कहे दयाशील हैं: औ सुरतरंगिनी सरयू इनकी शोभा सों सनी है अर्थ इन सबसों युक्त है ॥ ४१ ॥

मू०-हीरकछन्द ॥ पंडितगण मंडितगुण दंडित मति देखिये । क्षत्रिय बर धर्म प्रवर क्रुद्ध समर लेखिये ॥ वैश्य सहित सत्य रहित पाप प्रगट मानिये । शूद्र सकति विप्र भगति जीव जगत जानिये ॥ ४२ ॥

टी०-पंडित पदते ब्राह्मण जानौ ते अनेक गुण जे शास्त्रादि हैं तिनसों पंडित युक्त हैं औ दंडित हैं सक्षितहै मति जिनकी अर्थ सत् मति सों युक्तहैं औ क्षत्रिय क्षत्र धर्म करिकै प्रवर बली हैं औ समरहीमें क्रोधकरत हैं औ वैश्य बनिया सत्य सों युक्त हैं औ पापसों रहित हैं औ शूद्रन के जीवमें ब्राह्मण की भक्तिरूप गति है ताही में तिनकी शक्तिबल जानियतहैं अर्थ शूद्र-भक्ति युक्त ब्राह्मणकी सेवा करत है अथवा शूद्रनके जीवमें शक्ति कहे देवी औ विप्रकी भक्ति जगतिहै शूद्रनको देवी औ ब्राह्मणनकी उपासना उचितहै या प्रकार आपने अपने धर्म सों युक्त चारौं वर्ण बसत हैं यामें ॥ ४२ ॥

मू०-सिंहविलोकित छंद ॥ अति मुनितन मन तहँ मोहि रह्यो । कछु बुधिबल वचन न जाइ कह्यो ॥ पशु पक्षि नारि नर निरखि तबै । दिन रामचन्द्र गुण गनत सबै ॥ ४३ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ अतिउच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिंतामणि नारि । बहुशत मख धूपनिधूपित अंगनि हरिकीसी अनुहारि । चित्रीबहु चित्रनि परम विचित्रनि

केशवदास निहारि । जनु विश्वरूप को अमल आरसी रची विरंचि विचारि ॥ ४४ ॥ सोरठा ॥ जगयशवन्तविशाल, राजादशरथकी पुरी ॥ चंद्रसहित सबकाल, भालथली जनु ईशकी ॥ ४५ ॥

टी०-दिनकहे दिनप्रति ॥ ४३ ॥ बहुत जे अतिउच्च अपार वरहैं बहु पदको संबंध सर्वत्र है तिनकी जे बनी पगार परिखा हैं छार देवालीति कहूं शिरबंदी कहतहैं तिनमें लगी अनेक पुर कौतुक देखिबेको चिंतामणि सदृश नारी स्त्री ठाढी हैं चिंतामणि सदृश जिनको देखि मनोभिलाष पूरे होत हैं या प्रकारके स्त्रीभवन हैं औ बहुत घरसत कहे उत्तम जे मख यज्ञहैं तिनके धूपन कहे धुमन करिकै धूपित अंगनिसों युक्त हैं ते हरिविष्णुके अनुहारि हैं अर्थ श्यामरूप हैं ऐसे यज्ञशाला हैं औ बहुत घर परम विचित्र कहे अद्भुत चित्रनिसों चित्रित हैं तिन्हें मानो विरश्चि ब्रह्मा विचारि एकाग्र चित्त करिकै विश्वरूप जो संसार है अथवा विराट्रूप ताकी आरसी ऐना बनायो है जैसे ऐनामें बिम्ब सदृश प्रतिबिम्ब देखि परतहै तैसे संसारमें जो वस्तु हैं सो सब मंदिरनमें चित्रित हैं ऐसे चित्रशाला हैं पुरीमें पैठि तिन्हैं विश्वामित्र निहारि कहे देखत भये ॥ ४४॥ जगमें विशाल सुंदर औ यशवंत कहें यशयुक्त जो राजा दशरथकी पुरी है सो सबकाल चन्द्रमा सहित मानो ईश महादेवकी भालथली है चन्द्र सरिस यश है विशाल हुवौ हैं यासों सदा निष्कलंक यश युक्त पुरीको जनायो ॥ ४५ ॥

मू०-कुंडलिया ॥ पंडितअति सिगरीपुरी, मनहु गिराग ति गूढ़ । सिंहनि युत जनु चंडिका, मोहति मूढ अमूढ़ ॥ मोहति मूढ अमूढ़, देव सँग दितिसों सोहै । सब शृंगार सदेह, मनोरति मन्मथ मोहै ॥ सब शृंगार सदेह, सकल सुख सुखमा मंडित । मनो शची विधिरची विविधि विधि वरणत पंडित ॥ ४६ ॥

टी०-सिगरी पुरी अति पंडित है अर्थ पुरीके निवासी जनसब पंडित हैं यासों मानों गति कहे दशा है गूढ जाकी अर्थरूप पुरी है आपनी दशाको छपाये मानो गिरा सरस्वतीहैं गिराहूके आसनजन अतिपंडित होतहैं अथवा

मनहूँको औ गिराकहें वचननहूँकी गति है गूढजाकी कथ जाकीदशाको अंत-मन वचन नहीं पावत चंडिकाको सिंहवाहन है औ विकराल रूपदेखि मूढ औ अमूढके भयसे मोह होत है पुरी पुरुष सिंहन सों युक्त है औ अति विचित्र शोभा निरखि मूढ अमूढ के आनंदसे मोह होत है अदितिके देवता पुत्र हैं तासों संगमें देव रहत हैं इहाँ अदिति पदकी अकार को लोपहै भाषाके कविन को नियम है कहूं अकारादि पदकी अकारको लोपकरि डारत हैं यथा बिहारी कृतसप्तशतिकायां। "अधिकअँधेरो जगकरैं, मिलिमावस रविचंद" अथवा दिति दैत्यमाता सम है जैसे दितिसों बडेवीर दैत्यभये हैं तैसे अयोध्याहूमें अनेक वीर उत्पन्न होतहैं रतिमन्मथ कामकी स्त्रीहै तासों मनको मोहति है पुरी शोभा-सों कामहूको मन मोहति है तासों अति शोभा युक्त जानो शची इन्द्राणिहूं राज्यादि सबसुख औ सब सुखमा शोभासों मंडित है औ अनेक विधिसों पंडित वर्णन करत है ऐसी पुरीहू है अथवा सुखमासों मंडित युक्त सकल जे सुख हैं तिनसों शची कहे संचित पूँजी भूत मानो विधातें रच्यो है अर्थ पूर्ण सुख औ पूर्ण शोभा एकत्र करि ताहीको पुरी बनायो है ॥ ४६ ॥

मू०–काव्यछंद ॥ मूलनहींकोजहांअधोगतिकेशवगाइय। होमहुताशनधूमनगरएकैमलिनाइय ॥ दुर्गतिदुर्गनहीं जोकुटिलगतिसरितनहीमें। श्रीफलकोअभिलाषप्रगटकवि कलके जीमें ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ अतिचंचलजहँचलदलै, विधवाबनी न नारि ॥ मनमोह्योऋषिराजको, अद्भुतनगर निहारि ॥ ४८ ॥ सोरठा ॥ नागरनगरअपार, महामोहतम मित्रसे। तृष्णालताकुठार, लोभसमुद्रअगस्त्यसे ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ विश्वामित्रपवित्रमुनि, केशवबुद्धिउदार ॥ देखत शोभानगरकी, गये राजदरबार ॥ ५० ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्र
चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांविश्वामित्रस्याऽयो-
ध्यागमनंनामप्रथमःप्रकाशः ॥ १ ॥

टी०-मूलजर अधोगति नर्क औ नीचको गति गमन हुताशन अग्नि दुर्गति नर्क औ दुष्कारि कहेगति जिनमें कुटिलता इति श्री फलद्रव्य औ बिल्वफल कुचनकी उपमा देवेको परिसंख्यालंकार है ॥ ४७ ॥ चलदल पीपर वृक्षवनी वाटिका सोइ विधवाहै याहूमें परिसंख्या है ॥ ४८ ॥ नागर प्रवीण मित्र सूर्य जो सदा सब वस्तु पाइवेकी इच्छाहै सो तृष्णा जानो औ जो कछू वस्तु देखि सुनिके इच्छा चलै सो लोभ जानो ॥ ४९ ॥ ५० ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां प्रथमःप्रकाशः ॥ १ ॥

मू०-दोहा ॥ या द्वितीय प्रकाशमें, मुनि आगमन प्रकाश ॥ राजासों रचना वचन, राघव चलन विलास ॥ १ ॥ हंस छंद ॥ आवत जात राजके लोग । मूरति धारी मानहुँ भोग ॥ २ ॥ मालतीछंद ॥ तहँदरबारी । सबसुखकारी ॥ कृतयुग कैसे । जनुजन वैसे ॥ ३ ॥ दोहा ॥ महिष मेष मृग वृषभ कहुँ, भिरत मल्ल गजराज ॥ लरत कहूँ, पायक नटत, बहु नर्त्तक नटराज ॥ ४ ॥ समानिका छंद ॥ देखि देखिकै सभा । विप्र मोहियो प्रभा ॥ राजमंडली लसै । देवलोकको हँसै ॥ ५ ॥ मल्लिकाछंद ॥ देशदेशके नरेश । शोभिजैसबैसुवेश ॥ जानियेनआदिअंत । कौनदासकौन संत ॥ ६ ॥ दोहा ॥ शोभितबैठे तेहिसभा, सातद्वीपके भूप ॥ तहँराजादशरथलसै, देवदेव अनुरूप ॥ ७ ॥ देखि तिन्हैंतबदूरिते, गुदरानो प्रतिहार ॥ आयेविश्वामित्रजू, जनु दूजोकरतार ॥ ८ ॥ उठिदौरेनृपसुनतहीं, जाइगहेतबपाइ ॥ लै आयेभीतरभवन, ज्योंसुरगुरुसुरराइ ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ सभामध्यबैताल, ताहिसमयसोपढ़िउठयो ॥ केशवबुद्धिविशाल, सुंदरसूरोभूपसो ॥ १० ॥

टी०–॥ १ ॥ २ ॥ कृतयुग सत्ययुग ॥ ३ ॥ मल्ल बाहु युद्धकर पायक पटेवाज नटतकहे नाचत हैं नर्तक नृत्यकारी ॥ ४ ॥ ५ ॥ जहाँ सिंहासनमें राजा दशरथ बैठे हैं सो आदिहै तहाँते जहाँ पर्यंत दरवारी बैठे हैं सो अंत है सो आदिते अंततक दरबारिनमें कौन दास कहे सेवकहै औ कौन संतकहे स्वामीहै यह नहीं जानियत अर्थ सब दरवारी राजसाज सँवारे हैं। "सद्विद्यमाने सत्ये च प्रशस्तार्चितसाधुपु" इत्यभिधानचिंतामणिः ॥ इहाँ अर्चितपदको पर्य्याय स्वामीजानो ॥ ६ ॥ देवदेव इंद्र ॥ ७ ॥ गुदरानो जाहिर कियो करतार ब्रह्मा ॥ ८ ॥ ९ ॥ वेताल भाट ॥ १० ॥

मू०–बैतालघनाक्षरी ॥ विधके समानहैंविमानीकृतराजहंस, विविधविबुधयुतमेरुसो अचलहै। दीपतिदीपतिअतिसातौंदीपदीपियतु, दूसरोदिलीपसोसुदक्षिणाकोवलहै। सागरउजागरकीबहुवाहिनीकोपति, छनदानप्रियकिधौंसूरजअमलहै। सबविधिसमरथराजैराजादशरथ भगीरथपथगामीगंगाकैसोजलहै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ यद्यपिईंधनजारिगये, अरिगणकेशवदास ॥ तदपिप्रतापानलनके, पलपल बढ़त प्रकाश ॥ १२ ॥ तोमरछन्द ॥ बहुभाँतिपूजिसुराई। करजोरिकैपरपाई ॥ हँसिकैकरचोऋषिमित्र। अबबैठराजपवित्र ॥ १३ ॥ सुनिसुनिदानमानसहंस। रघुवंशके अवतंस ॥ मनमाँहजोअतिनेहु। यकबातमाँगेदेहु ॥ १४ ॥

टीका–विमानी कृत कहे वाहनी कृतहैं राजहंस जिन करिके ब्रह्माको हंसवाहन है और राजा विमानीकृत कहे मानरहित कियेहैं राजनकेहंस जीवजिनकरिकै अथवा विमानीकृत वाहनीकृतहैं राजनके हंराजीव जिन करिकै अर्थ–शत्रु भयसों मित्र प्रेम सों मनमें चढाये रहत है विबुध देवता औ पंडित दिलीप की स्त्रीको सुदक्षिणा नाम रह्यो ताके पातिव्रत को बल रह्यो औ सुष्ठु जो दक्षिणा दानद्रव्यहै वाहिनी नदी औ चमूक्षण दारा त्रिनहौ हे प्रिय! जाको सूरजके अनलमें अर्थ सूर्यके प्रकाशमें रात्रिको नाश होत है अथवा क्षणनदान कहे जलांजलि

दान औ क्षणक्षण प्रतिहै दानही प्रिय जिनको क्षणक्षण में दानदीबो करत हैं गंगाजल सगर के सुतन के तारिबेको भागीरथके पीछे पीछे आयो है औ राजा कुल पंथ गामी हैं श्लेष धर्मोपमा हैं कोउ परंपरित रूपक कहत हैं ॥ ११॥ १२॥ ऋषिनमें मित्र सूर्यसम हैं ॥ १३ ॥ दानरूपी जो मानस मानसर है ताके तुम हंस हौ अर्थ दानहीं में है विहार जिनको बडेदाता हौ अवतंस कर्ण-भूषण ॥ १४ ॥

मू०-राजा-अमृतगतिछंद ॥ सुमितमहामुनिसुनिये । तनमनधनसबगुनियें ॥ मनमहँहोइसोकहिये । धनिसोजोअ पुनलहिये ॥ १५ ॥ ऋषिदोधकछंद ॥ रामभयेजवनेवन माहीं । राक्षसवैरकरैंबहुधाहीं ॥ रामकुमारहमैंनृपदीजै । तौ परिपूरणयज्ञकरीजै ॥१६॥ तोटकछंद ॥ यहबातसुनीनृपनाथ जवै । शरसेलगेआखरचित्तसबै ॥ मुखतेकछुबातनजाइक ही । अपराधविनाऋषिदेहदही ॥ १७ ॥ राजा-अतिकोम लकैसबबालकता ॥ बहुदुष्कर राक्षसघालकता ॥ हमहींच लिहैंऋषिसंगअबै । सजिसैनचलैचतुरंगसबै ॥ १८ ॥ वि-श्वामित्र-षट्पद ॥ जिनहाथनहठिहरषि हनतहरिणी-रिपुनन्दनि ॥ तिननकरतसंहारकहाँमदमत्तगयन्दनि॥जिनबे धतसुशलक्षलक्षनृपकुँवरकुँवरमनि । तिनबाणनिबाराहवा घमारतनहिंसिंहनि । नृपनाथनाथदशरथसुनियअकथक थायहमानिये । मृगराजराजकुलकलशअबबालकबृद्धन जानिये ॥ १९ ॥

टीका--जो वस्तु आप लहिये लीजिये सो धन्यहै ॥ १५ ॥ रामपरशुराम ॥ ॥ १६ ॥ १७ ॥ हाथी घोडा रथ पियादा चारों सैनाके अंग हैं ॥ १८ ॥ हरिणीके साहचर्यते रिपुपद ते हरिणी रिपु कहे सिंहजानौ जिन हाथन सिंह हरिणी मारत हैं तिन सों कहा गजनको नहीं मारत अर्थ गजहू मारत है औ कुँवरन में मणिश्रेष्ठ ऐसे नृपकुँवर जिन बाणनि सुख कहे सहजेही लक्ष कहे

लाखन लक्ष निशाना बेधत हैं तिनसों वाराह वाघसिंहनहूंको नहीं मारत अर्थ मारत हैं हे नृपनाथ ! यह कथा अकथ कहे अतर्क मानौ निश्चय इति । अथवा अकथकहे अद्भुत जो यह कथा है ताकी मानिवेकहे निश्चय मानो आशय यह रामचन्द्र राक्षसनको वध करिहैं यामें संदेह ना करौ ॥ १९ ॥

सुंदरीछंद ॥ राजनमें तुमराजबड़ेअति । मैंमुखमाँगों सोदेहुमहामति ॥ देवसहायकहौंनृपनायक । हैयहकारज रामहिंलायक ॥ २० ॥ राजा—मैंजोकह्योऋपिदेनसोलीजि य । काजकरोहठभूलिनकीजिय ॥ प्राणदियेधनजाहिंदि येसब । केशवरामनजाहिंदियेअब ॥ २१ ॥ ऋपिराजतज्यों धनधामतज्योंसब । नारितजी सुतशोचतज्योंतब ॥ आपन-पौजोतज्यौंजगवंदहैं । सत्यनएकतज्यौहरिचंदहैं ॥ २२ ॥

टी०—॥ २० ॥ २१ ॥ एकसमय इन्द्र नारदसों हरिश्चन्द्रके सत्यप्रतापादिको माहात्म्य सुनि इंद्रासन लेबेको भयमानि दुःखितभयेहैं तब ब्रह्मादि देवन इंद्रको धीरजदैकै हरिश्चंद्रके सत्वभंगकरिवेकेलिये नारदको विश्वामित्रकेपासपठायो विश्वामित्र नारद मुखसों देवनकी आज्ञासुनि काहूकामरूपी राक्षसको बोलाइ कह्यो कि तू शूकर रूपह्वै अयोध्या में जाइ राजा हरिश्चंद्र को मृगया मिष हमारे आश्रम में ल्याउ राक्षस गोकियो विश्वामित्रके आश्रममें राजाको ल्याइ लुप्त भयो आश्चर्य युक्त ह्वै राजा आश्रम नदी में न्हाइ कपट द्विजरूपधारि विश्वामित्र को सब पृथिवी औ सर्वस्वदान करयो है फेरि विश्वामित्र कह्यो है कि शतभार सुवर्ण दक्षिणा देउ तौ सर्वस्वलेउ नाहिं तौ सत्यको छोडो तब काशीमें जाइकै मदना नामस्त्री औ रोहिताश्व नामा पुत्रको देवशर्मा ब्राह्म-णके हाथ साठिभार सुवण को बेंच्यो है औ चालिस भार सुवर्ण को कालसेन चांडाल के हाथ अपना बिकाई सौभार सुवर्ण विश्वामित्र को दियो फेरि चांडालकी आज्ञाते श्मशान घाटपर उचित द्रव्यलेवेको बैठेहैं कछू दिनमें पुष्प तोरत में रोहिताश्व को सर्प काटयो मरयौ ताको लै मदना वहाइबे को गई तहाँ चांडालको उचित पंचमुद्रा लैहि कै बहावन दियोहै या प्रकार सुतको शोच छोंडयौ सत्यपाल्यो यह संक्षेप कथा लिख्यो है विशेष सो हरिश्चंद्रो-पाख्यान पुराणनमें प्रसिद्ध है ॥ २२ ॥

मू०-राजवहैवहसाजवहैपुर । नामवहैवहधामवहैगुर ॥ झूँठेसोंझूँठई बांधतहौमन । छोंड़तहौनृपसत्यसनातन ॥२३॥ ॥ दोहा ॥ जान्योविश्वामित्रके, कोपबढ्योउरआइ । राजा- दशरथसों कह्यो, वचनवशिष्ठ बनाइ ॥ २४ ॥ षटपद ॥ इनहींकेतपतेजयज्ञकीरक्षाकरिहैं । इनहींकेतपतेज सकलरा- क्षसबलहरिहैं ॥ इनहींकेतपतेजबढिहै तनतूरण । इनहीकेतप तेज होहिंगेमंगलपूरण । कहिकेशवजैयुतआइहैंइनहींकेतपते- ज घर । नृपवेगिराम लक्ष्मण दुवौसौंपौविश्वामित्रकर ॥२५॥

टी०-साजछत्र चामर चमू आदि नाम यश गुरु वशिष्ठ झूँठे जे पुत्रादि हैं तिनसों झूँठई कहे वृथाही मनको बांधतहौ लगावतहौ अथवा झूँठेसों कहे झूँठे न सहित ह्वै अर्थ पुत्रादि झूँठे माया के प्रपंच हैं तिनसों मिलिकै झूठइ जो झुठाई है तासों मनको बांधत हौ अर्थ की ना बांधौ अथवा झूँठेकी सो कहें झूठेकी तरह जैसे झूँठाप्राणी झूठाइम मनलगावतहै तैसे तुमहूं लगावतहौ औ सनातन कहे परंपराको सत्य छोंडत हौ देनकहि अब नहीं देत सो ना चाहिये ॥ २३ ॥ २४ ॥ तेजप्रताप तूरन जलदी मंगल विवाहादि ॥ २५ ॥

मू०-सोरठा ॥ ॥राजाऔरनमित्र, जानहुँ विश्वामित्रसे ॥ जिनकोअमितचरित्र, रामचन्द्रमय मानिये ॥२६॥ दोहा ॥ नृपपैवचनवशिष्ठको, कैसेमेटचोजाइ ॥ सोंप्यो विश्वामित्र कर, रामचन्द्रअकुलाइ ॥ २७ ॥ पंकजवाटिकाछंद ॥ राम- चलत नृपके युगलोचन । वारिभरितभये वारिदरोचन ॥ पायनपरिऋषिकेसजिमौनहिं । केशवउठिगयेभीतरभौनहिं ॥ ॥ २८ ॥ चामरछन्द ॥ वेदमंत्रतंत्रशोधिअस्त्रशस्त्रदैभले ॥ रामचन्द्रलक्ष्मणैसोविप्रक्षिप्रलैचले ॥ लोभक्षोभमोहगर्वका मकामनाहई । नींदभूखप्यासत्रासवासनासवेगई ॥ २९ ॥

टी०--राक्षसवधमें अमित कहे संपूर्ण जो चरित्र हैं सो राम-चन्द्रमय कहे रामचन्द्रचरित्र मय रामचन्द्र चरित स्वरूपति जिनको विश्वामित्रहीको चरित्र-

मानौ अर्थ जो राक्षसवधमें वा वेधनादिकृत रामचन्द्र करि हैं सो कृत रामचन्द्र द्वार है विश्वामित्रही करि हैं आशय यह कि यामें कछू श्रम रामचन्द्र को नहीं है ये केवल तुम्हारे पुत्रको यश दियो चाहत हैं याते इन सम मित्र दूसरो न जानौ अथवा रामचन्द्रमय कहे रामचन्द्र प्रति समर्पित मानिये अर्थ जो करत है सो रामचन्द्र को समर्पण करत हैं ॥ २६ ॥ २७ ॥ वारि जलमों भरित रोचनको वारिद मेघ भये अरुण रंग ह्वै आंशुनकी वर्षा करन लागे ॥ २८ ॥ वेदके मंत्र औ तन्त्र शास्त्र के मन्त्र शोधि शोधि कै दियो अथवा वेदके मंत्र दिये वलातिवला विद्या दियो है सो वाल्मीकीयरामायणमें लिख्यौ है औ तंत्रशास्त्रके मंत्रनसों शोधिकै मंत्रि करिकै अस्त्रशस्त्र दिये क्षिप्र कहे जल्दी तिन विद्यानके प्रभाव सों लोभादिक वासना दूरि भई यथा। रघुवंशे। " तौ वलातिवलयोः प्रभावतो विद्ययोः पथि मुनिप्रदिष्टयोः। मम्लतुर्न मणिकुट्टिमोचितौ मातृपार्श्वपरिवर्त्तिनाविव " ॥ २९॥

मू०-निशिपालिकाछन्द ॥ कामवनरामसबवासतरुदेखियो। नैनसुखदैनमनमैनमलैलेखियो। ईशजहँकामतनुकैअतनुडारियो। छोडिवहयज्ञथलकेशवनिहारियो॥३०॥

दोहा ॥ रामचंद्रलक्ष्मणसहित, तनमन अतिसुखपाइ ॥ देख्यो विश्वामित्रको, परमतपोवनजाइ ॥ ३१ ॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि-श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां रामचन्द्रलक्ष्मणयोर्विश्वामित्रतपोवनगमनं नाम द्वितीयः प्रकाशः ॥ २ ॥

टी०-जा वनमें महादेव कामको जारयो है ताको कामवन नाम है अथवा कामवन कहे अभिलाषको दाता वनतवनमें रामचन्द्र सब वास कहे ऋषिन के वास कुटीति औ तरुवृक्ष देख्यो अथवा वासतरु सुगंधयुक्त तरुमैनमय कहे कामस्वरूपता वनम ईश महादेव जहाँ जा स्थान में काम को जारयो है ता स्थानको देखि छोडिकै विश्वामित्र को यज्ञ थल जाइकै देख्यो ॥ ३० ॥ ३१ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकाया द्वितीयःप्रकाशः ॥ २ ॥

मू०-॥ दोहा ॥ कथातृतीयप्रकाशमें, वनवर्णनशु-
भजानि ॥ रक्षणयज्ञमुनीशको, श्रवणस्वयंवरमानि ॥ १ ॥
षट्पद ॥ तरुतालीसतमालतालहिंतालमनोहर । मंजुलबंजु
लतिलककलकुचकुलनारिकेरवर ॥ एलाललितलवंगसंगपुं
गीफलसोहैं । सारीशुककुलकलितचित्तकोकिलअलिमोहैं ॥
शुभराजहंसकलहंसकुलनाचतमत्तमयूरगन । अतिप्रफु-
लितफलितसदारहैकेशवदासविचित्रवन॥२॥सुप्रियाछंद ॥ क
हुँद्विजगणमिलिसुखश्रुतिपढहीं । कहुँहरिहरिहरहररटरटहीं ॥
कहुँमृगपतिमृगशिशुपयपियहीं । कहुँमुनिगणचितवतहरि
हियहीं॥३॥नराचछंद ॥ बिचारमानब्रह्मदेवअर्चमानमानिये ।
अदीयमानदुःखसुःखदीयमानजानिये ॥ अदंडमानदीनगर्व
दंडमानभेदवै । अपठ्यमानपापग्रन्थपठ्यमानवेदवै ॥ ४ ॥

टी०-तालीश वृक्ष विशेष हिंताल खजुरिबंजुल अशोक लकुच बडहर ॥ १ ॥
मृगपति पदते सिंहकी स्त्री पुरुष जातिमात्र जानौ अर्थ सिंहिनीन को पय दूध
मृग बालक पियत हैं यासों या जनायो कि जहाँ सहजहू वैर नहीं है कृत्रिमकी
कहावतहै औ कहूतेई मृग शिशु मुनिन के हियको हरिकै मुनिन की ओर चित-
वत हैं यासों मृग बालकन की अति सुन्दरता जानो ॥ २ ॥ ३ ॥ जहाँ सदा ब्रह्म
जो वेद है सोई विचार्यमान है विचारचो जात है अथवा परब्रह्म देव पदते यहां
विष्णु जानौ अथवा सदेवयासों या जनायो कि सुदेव सेवामें सब रहत हैं कोऊ
कुदेव यक्षिणी आदि की सेवा नहीं करत औ दुःख अदीयमान है कोऊ काहू को
दुःख नहा देत सुख दीयमान है दीन अदंडमान है दीन को कोऊ दंड ताडन
नहीं करत औ वे कहे निश्चय करत औ वै कहे निश्चय करि गर्व औ भेददंड-
मान है पाप ग्रंथ मारन मोहनादिके ग्रंथ अपठ्यमान हैं कोऊ नहीं पढत ॥ ४ ॥

मू०-निशेपकछंद ॥ साधुकथाकथियेतहँकेशवदासजहां ।
विग्रहकेवलहैमनकोदिनमानतहां ॥ पावनवाससदाऋषिको
सुखकोबरषै । कोबरनैकविताहिविलोकतजीहरषै ॥ ५ ॥

चंचला ॥ रक्षिवेकोयज्ञकुलवैठेवीरसावधान । होंनलागेहोमकेजहांतहांसबैविधान ॥ भीमभाँतिताडुकासोभंगलागिकर्नआइ । वाननानिरामपैननारिजानिछाँडिजाइ ॥ ६ ॥ ऋषि-सोरठा ॥ कर्मकरतियहघोर, विप्रनकोदशहूदिशा । मत्तसहसगजजोर, नारीजानिनछाँडिये ॥ ७ ॥ राम-शशिवदना ॥ सुनुमुनिराई जगसुखदाई । कहिअबसोई । जेहि यशहोई ॥ ८ ॥ ऋषि-कुंडलिया ॥ सुताविरोचनकीहुतीदीरघजिह्वानाम । सुरनायकहैसंहरीपरमपापिनीवाम ॥ परमपापिनीबामबहुरिउपजीकविमाता । नारायणसोहतीचक्रचिंतामणिदाता ॥ नारायणसोहतीसकलद्विजदूषणसंयुत । त्योंअबत्रिभुवननाथताडुकातारहुसहसुत ॥ ९ ॥

टीका-साधु कथा उत्तम कथा विष्णुविषयकीनी आदि अथवा साधु जे संतजन हैं नारदादि तिनकी कथा तहाँ तेहि आश्रम में मुनि जनन करि कै कथिये कथन करियतहैं औ जहाँ केवल मनही को निग्रहहै मनइंद्रिन को राजा है मनके निग्रहसों सब इन्द्रिनको निग्रह जानो औ तहां मानदिनहीं के हैं और काहूके नाहीं है दिनपक्ष में मानप्रमाण दिन मान केतो है यह पूछिवे की रीति लोकमें प्रसिद्ध है अन्यत्र मानगर्व परिसंख्यालंकार है अथवा दिनही को मान आदर है यज्ञादिसत्कर्म दिनही में होत हैं तासों ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ विरोचन वलिके पिताकी सुता दीरघजिह्वानामा पापिनी रही ताको सुरनायक इंद्र मारयो है औ फेरि अति पापिनी कविजे शुक्र हैं तिनकी माता भई ताको नारायण मारयो है एक समय देवनके युद्ध में हारिकै दैत्य ब्राह्मणके शरणमें बचिवो जानिकै शुक्र माताके शरण जाइ लुकाने तहां शत्रुको रक्षक जानि इंद्रकी आज्ञा सों विष्णु शुक्र माता को शिर चक्रसे खंडन करि दैत्यनको मारयो है ताही कोपसों भृगुमुनि जाइ विष्णुके उरमें लात मारयो है औ आपने पुत्र शुक्र को दैत्यगुरु कियो है यह कथा पुराणनमें प्रसिद्धहै कैसे हैं नारायण चिन्तामणि के दाता हैं अथवा चिंतामणि सरिस दाताहैं सकल द्विज दूषण संयुत ताडुका को विशेषण है औ सहसुत कहे मारीच सहित यासों या जनायो इन्द्र विष्णुहू दुष्टस्त्री वध कियो है ॥ ९ ॥

मू०-॥ दोहा ॥ द्विजदोषीनविचारिये, कहापुरुषकह नारि ॥ रामविरामनकीजिये, वामताडुकातारि ॥ १० ॥ मरहट्टाछंद ॥ यहसुनिगुरुवानीधनुगुनतानीजानीद्विजदुख दानि । ताडुकासँहारीदारुणभारीनारीअतिबलजानि ॥ मारीचबिडारयोजलधिउतारयो मारयोसबलसुबाहु ॥ देव निगुनपर्य्योंपुष्पनिवर्ष्योंहर्ष्योंअतिसुरनाहु ॥ ११ ॥ दोहा ॥ पूरणयज्ञभयोजहीं, जान्योविश्वामित्र ॥ धनुषयज्ञकीशुभ कथा, लागेसुननविचित्र ॥ १२ ॥

टीका-विराम कहे बेर ॥ १० ॥ ताडुकादि वध सों गुणनकी परीक्षा कियो कि ये गुण विष्णुही में हैं तासों विष्णु को अवतार भयो अब रावण वध ह्वै है यह जानि इंद्र हर्षित भये ॥ ११ ॥ १२ ॥

मू०-॥ चंचरीछंद ॥ आइयोंतेहिकालब्राह्मणयज्ञको थलदेखिकै । ताहिपूंछतबोलिकैऋषिभाँतिभाँतिविशेषिकै ॥ संगसुंदररामलक्ष्मणदेखिदेखिसोहर्षई । बैठिकैसोइराज मंडलवर्णईसुखवर्षई ॥ १३ ॥ ब्राह्मण ॥ शार्दूलविक्रीडि-तछंद ॥ सीताशोभनव्याहउत्सवसभासंभारसंभावना तत्त-त्कार्यसमग्रव्यग्रमिथिलावासीजनाशोभना ॥ राजाराजपुरो-हितादिसुहृदोमंत्रीमहामंत्रदानानादेशसमागतानृपगणा पू-जापराःसर्वदा ॥ १४ ॥

टीका-जनकपुरको ब्राह्मण सीयस्वयंवर के अर्थ काहू राजाको निमंत्रण लिये जात रह्यो सो यज्ञ की स्थान देखिवे को सुभावही आयो अथवा ऋषिही-को निमंत्रण ल्यायो है अथवा कोउ साधारण पथिक ब्राह्मणहै ताको निकट बोलिकहे बोलाइके विश्वामित्र भाँति भाँति विशेषसों जनकपुरकी कथा पूंछत हैं सो ब्राह्मण ऋषिकेसंग रामलक्ष्मणको देखि ऋषिकी स्त्रीके वचन सत्य जानि अब सीताको व्याह ह्वै है यह निश्चय करि हर्षित आनंदित होतहै काहेते

पंचमप्रकाशके तृतीयछंदमें ब्राह्मणकहि है कि काहू ऋषिकी स्त्री चित्रमें सीताका ऐसो कोऊ बरुलिखिल्याई जैसो रामचन्द्रको देखियत है ॥ १३ ॥ सीताको जो शोभन कहे सुंदर व्याह है ताको जो उत्सव सभा कहे कौतुक सभा है स्वयंवर सभा इति। ताके जे अनेक संभार सामग्री हैं अनेक राज सत्कारादि वस्तु तिनकी जो संभावना विचार है तासों राजा जनक औ राजपुरोहित सतानंद तिन्हें आदि दै और जे सुहृद मित्र हैं औ महामंत्रके देनहार जे मंत्री हैं औ समग्र कहे सम्पूर्ण मिथिलावासी जे शोभन कहे सुबुद्धिजनहैं ते सब तत्तत्कार्य कहे अपने अपने उचित कार्य में व्यग्रकहे आसक्त हैं। संलग्न इति अथवा आकुल हैं "व्यग्रो व्यासक्त आकुले इति मेदिनी" औ सर्वदापूज्य औ पर कहे उत्कृष्ट ऐसे नाना देश अनेकदेशके नृपगण समागत कहे आये हैं ॥ १४ ॥

मू०–दोहा ॥ खण्डपरसकोशोभिजै, सभामध्यकोदंड। मानहुँशेषअशेषधर, धरनहारबरिबंड ॥ १५ ॥ सवैया ॥ शोभितिमंचनकीअवलीगजदंतमईछबिउज्ज्वलछाई। ईशमनौ-वसुधामेंसुधारिसुधाधरमंडलमंडिजोन्हाई। तामहँकेशवदा-सविराजतराजकुमारसबैसुखदाई। देवनसोंजनुदेवसभाशुभ सीयस्वयम्बरदेखनआई ॥ १६ ॥ दोहा ॥ नवतिसंचपंचालि का, करसंकलितअपार। नाचतिहैजनुनृपतिकी, चित्तवृ-त्तिसुकुमार ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ सभामध्यगुणग्राम, बंदीसु-तद्वैशोभहीं ॥ सुमतिविमतियहनाम, राजनकोवर्णनकरैं ॥ ॥ १८ ॥ सुमति–दोहा ॥ कोयहनिरखतआपनी, पुलकित बाहुविशाल ॥ सुरभिस्वयंवरजनुकरो, मुकुलितशाखरसाल ॥ १९ ॥

टी०–जामें देशांतरनके राजा लोग आय आय बैठत हैं ऐसे स्वयंवर सभामें चारों ओर मंच कहे मचाननकी अवली पंक्तिबनतिहै ॥ १५ ॥ सोमंचावली सीयस्वयंवरमें गजदंत हाथी दाँतन की बनी है तामें ब्राह्मण उत्प्रेक्षा करते

१ महादेव.

हैं कि, ईश जे विधाता हैं ते मानो जुन्हाई सों मंडिकै युक्त करिकै वसुधा पृथ्वीमें सुधाधर चंद्रमा को मंडल कहे परिवेष सुधारि कहे सुधारयो बनायो है जोत्स्नायुक्त चंद्रपरिवेष सम कहे मंचावली की अति श्वेतता जनायो ईश बनायो सन कहे अति रुचिर रचना जनायो औ देव सरिस राजकुमार हैं देवसमामरिसमंचावलीजानो ॥ १६ ॥ पंचालिका नृत्यकी जातिविशेष है अपार कर कहे हस्तक भेदसों संकलित युक्त ॥ १७ ॥ १८ ॥ सुरभि कहे वसंतरूपी जो स्वंयवर है त्यहि मानो रसाल आँब की शाखा को मुकुलित बौरयुक्त करयो है जैसे वसंतमें आँबकी शाखा बौरति है तैसे धनुष उठाइबे को मोद कारि बाहु रोमाञ्चित भयो अथवा सुरभिरूपी जो है स्वयं कहे अपना त्यहि वर कहे सुंदर रसाल शाख को मुकुलित किये हैं ॥ १९ ॥

मू०–विमति–सोरठा । ज्यहियशपरिमलमत्त, चंचरीकचारणफिरत ॥ दिशिविदिशनअनुरक्त, सोतौमल्लिकापीडनृप ॥२०॥ सुमति–दोहा॥ जाकेसुखमुखवासते, वासितहोतदिगंत। सोपुनिकहयहकौन नृप, शोभितशोभअनंत ॥ २१ ॥ विमति–सोरठा ॥ राजराजदिगबाम । भाललाललोभीसदा ॥ अति प्रसिद्धजगनाम । काशमीरकोतिलकयह ॥ २२ ॥

टी०–पांचछंदनमें विमतिके पांचप्रश्नोंकोश्लेषसों उत्तरदियो है मल्लिक नामा जो पर्वत है ताको आपीड कहे शिखा भूषण है अर्थ मल्लिक पर्वतको राजा है । यथाचपद्मपुराणे ।" मल्लिकाख्यो महाशैलो मोक्षदः पश्यतां नृणाम् । यत्रांगेषु नृणांतोयं श्यामं वा निर्मलम्भवेत् । पातकस्यापहारीदं मया दृष्टं तु तीर्थकम्" ॥ ४ ॥ औ मल्लिका जो चँवेलीहै ताको आपीड शिखा भूषण बेनी मालादि "शिखास्वापीडशेखरौ । इत्यमरः" कैसो है राजा औ मालती माला ज्यहि के यशरूपी जो परिमल सुगंध है तासों मत्त चंचरीक भ्रमर सदृश जे चारण भाट हैं ते दिशि विदिशन में अनुरक्त संलग्न फिरत हैं अर्थ जाको यश दिशि विदिशन में भाट गावत फिरत हैं औ यश अर्थ सदृश जो परिमल सुगंध है तामें मत्त चारण सदृश जे चंचरीक भ्रमर हैं ते दिशि विदिशन में अनुरक्त फिरत हैं ॥ अर्थ जाके सुगंधमें मत्त ह्वै भ्रमर दिशि विदिशन में उडत फिरत हैं ॥ २० ॥ सुख कहे सहज मुख के वास सुगंध ते ॥ २१ ॥

काश्मीर को तिलक कहे काश्मीर देशको राजा औ काश्मीर कहे केशरिको तिलक कैसोहै राजा औ तिलकराज जे कुबेर हैं तिनकी दिशा उत्तर दिशारूपी जो वाम स्त्री है ताके भालको लाल रक्त जो सुमेरु है सो है लोभी सदा ज्यहि राजाको अर्थ सुमेरु के यह इच्छा रहति है कि इन्द्रको राज छोडि या राजाको राज हमपर होय यासों या जनायो कि राजा रूपगुण करि इन्द्र हू सों अधिक है अथवा यह राज सुमेरु को सदा लोभीहै इन्द्र को जीति सुमेरु पर राज्य करिवे की इच्छा राखत है औ राजराज दिग सदृश जे वाम स्त्री हैं राजराज दिक सदृश कहे या जनायो जैसे द्रव्यरूप लक्ष्मीसों युक्त उत्तर दिशा है तैसे शोभा-रूप लक्ष्मी सों युक्त स्त्री हैं तिनके भाल को जो लाल रत्न है शोभा है सदा जातिलकको अर्थ जो तिलक लाल हू की शोभा बढावत है तासों तिलकके निकट रहिबे की भाल लाल के इच्छा रहतिहै आशय यह कि अति भूषणनसों भूषित औ अति सुंदरीहू स्त्रीनके शोभा बढावत है साधारण नहीं है और अर्थ राजराज कहे राजनको राजा है और दिशारूपी जो वाम स्त्री है ताको भाल को लाल है औ लोभी है सदा कहे याचकनकी याचकता को याचकन को याचिबो सर्वदा जाको भावत है अर्थ बडो दाता है सदा पर सो मैं याचकताकी कहत हैं औ अर्थराजदिग जो उत्तर दिशा है ताके वाम भाग जो पूरब दिशा है ताके भाल को लाल सूर्य ताको सदा लोभी ऐसा जो काश्मीर देश है ताको राजा है अति जाडे सों जा देश वासिन के सदा सूर्योदय की इच्छा रहति है ॥ २२ ॥

मूल ॥ सुमति-दोहा ॥ निजप्रतापदिनचरकरत,लोचनकमलप्रकाश॥ पानखातमुसुकातमृदु, कोयहकेशवदास॥२३॥

टी०-अर्थ यह जाके अंगनमें प्रताप कांतिकी झलक सब लोचन पसारिकै निहारत हैं ॥ २३ ॥

मूल-बिमति-सोरठा ॥ नृपमाणिक्यसुदेश, दक्षिणतियजियभावती । कटितटसुपटसुवेश, कलकाचीशुभमण्डई ॥ ॥ २४ ॥ सुमति-दोहा ॥ कुण्डलपरसतमिसकहत, कहौ कौनयहराज ॥ शंभुशरासनगुनकरो, करनालम्बितआज ॥ ॥ २५ ॥ बिमतिसोरठा ॥ जानहिं बुद्धिनिधान, मत्स्यराज यहिराजको॥समरसमुद्रसमान, जानतसबअवगाहिकै॥२६॥

सुमति-दोहा ॥ अंगरागरंजितरुचिर, भूषणभूषितदेह ॥
कहतबिदूषकसोंकछू, सोपुनिकोमछनृपयेह ॥ २७ ॥

टी०-नृपमाणिक्य नृपश्रेष्ठ औ उत्तम माणिक्य राजा कैसो है कि सुन्दर है देश द्रविडादि जामें ऐसी जो दक्षिण दिशा रूपी तिय है ताको अति भावत है जा दक्षिण दिशाके कटितट में कहे मध्यभाग में सुन्दरहै पटपद्धति जाको औ कल कहे दुःख रहित ऐसी जो कांची नामा पुरी है ताको मंडत है भूषित करत अर्थ कि याके देश में मध्यभाग में विष्णुकांची शिवकांची पुरी हैं तामें जाको वास है माणिक्य कैसो है कि सुदेश कहे सुंदरी दक्षिण कहे प्रवीण जे तिय स्त्री हैं तिनको अति भावती है फेरि कैसोहै कि सुठु पट वस्त्र युक्त जो कटितट है तामें कल कहे अव्यक्त मधुर स्वरयुक्त जो कांची क्षुद्रघण्टिका है ताको मण्डई कहे भूषित शोभित करै है ॥ २४ ॥ कर्णालंबित करो कर्ण पर्यंत खैंचो ॥२५॥ मत्स्य नामा जो देश विशेष है मछरीवन्दर करि प्रसिद्ध है ताको यह राजा है औ मत्स्यराज राघव मत्स्य सो जैसे समुद्रको अवगाहि मॅझाइकै सब जानत है ऐसे राजा समररूपी समुद्रको मॅझाइ कै सब समर भेदको जानतहै अर्थ कि वडो शूर है 'मत्स्योमीनेपुमान्भूम्निदेशे' इति मेदिनी ॥२६॥ विदूषक मसखरा,"हास्य कारी विदूषक इत्यमरः" ॥ २७ ॥

मूल बिमति--सोरठा ॥ चन्दनचित्रतरंग, सिंधुराजय-हजानिये ॥ बहुतबाहिनीसंग, मुक्तामालविशालउर ॥ २८॥
दोहा ॥ सिगरेराजसमाजके, कहेगोत्रगुणग्राम ॥ देशसुभा-वप्रभावअरु, कुलबल विक्रमनाम ॥ २९ ॥ घनाक्षरी ॥
पावकपवनमणिपन्नगपतंगपितृजेते ज्योतिवंतजगज्योति-षिनगायेहैं । असुरप्रसिद्धसिद्धतीरथसहित सिंधु के-शवचराचरजेवेदनबतायेहैं । अजरअमर अजअंगीऔ अनंगीसबबरणिसुनावै ऐसेकोनेगुणपायेहैं । सीताकेस्व-यंवरकोरूपअवलोकिबेको भूपनकोरूपधरिबिश्वरूपआये हैं ॥ ३० ॥ सोरठा ॥ कह्यो विमतिवहटेरि, सकलसभाहिसु नाइकै ॥ चहूओरकरफेरि, सबहीकोसमुझाइकै ॥ ३१ ॥

गीतिकाछंद ॥ कोइआजुराजसमाजमेंबलशंभुकोधनुकर्षि है ॥ पुनिश्रवणकेपरिमाणतानिसोचित्तमेंअति हर्षि है ॥ वहराजहोइकरंककेशवदाससोसुखपाइहै । नृपकन्यका यह तासुके उर पुष्पमालहिनाइहै ॥ ३२ ॥

टी०–सिंधुराज सिन्धुदेश लहावरकोराजा औ समुद्रचन्दनके चित्रकीतरंगहैं अंगनमें जाके अर्थ चित्रविचित्रचन्दनअंगनमें लाये हैं औ चन्दन वृक्षनसों चित्र-विचित्र हैं तरंगजाकी अनेक चन्दन वृक्ष जाकी तरंगन में वहत हैं ॥ वाहिनी चमू औ नदी मुक्तन की माला पहिरे हैं औ मुक्तनकी माल पंगति समूहेति सो है उरमें वदनमें जाके ॥ " सिंधुर्वा मधुदेशाब्धिनदे नासरिति स्त्रियाम् " ॥इति मेदिनी ॥ २८ ॥ बलअंग बल विक्रम बुद्धिबल ॥ २९ ॥ पन्नग सर्प शेषादि पतंग पक्षी गरुडादि असुर दैत्य राक्षस बाणासुर रावणादि सिद्धदेवजाति विशेष । अथवा तपस्वी अजर कहे जराबुढाई सो रहित देवता अमर हनुमानादि अजब्र-ह्मादि अंगी अंगधारी अनंगी कामादि विश्वरूप संसारभरके रूपप्राणी ॥३०॥ ॥ ३१ कर्षि है उठाई है ॥ ३२ ॥

दोहा ॥ नेकशरासनआसनै, तज्यौनकेशवदास ॥ उद्यमके थाक्योसबै, राजसमाजप्रकास ॥ ३३ ॥ बिसति–सुन्दरी छंद ॥ शक्तिकरीनहिंभक्तिकरीअब । सोननयेपलशीशनयेसब ॥ देख्यो मैं राजकुमारनकेवर । चापचढयोनहिंआप चढेस्वर॥३४॥विजय॥दिक्पालनकीभुवपालनकीलोकपालनकीकिनमातुगईच्वैकै । भांडभयेउठि आसनतेकहिकेशव शम्भुशरासनकोछ्वै । काहूचढायोनकाहूनवायोनकाहूउठायोनआंगुरहूद्वै । स्वारथ भोनभयोपरमारथआयेहै वीरचले वनिता ह्वै ॥ ३५ ॥

इति श्रीमतसकललोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांस्वयंवरसभावर्णनंनामतृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

टी०--जो या धनुषको उठाइ है ताको नृपकन्या व्याहार्थ पुष्पमाला पहिराइ है ऐसे विमतिके वचन सुनि सब राजसमाज समूह धनुष उठाईवेमें उद्यमकहे उपायकरत भये परन्तु शरासन नेकु आसनकोहू न छोडत भयो अर्थ रंचकहूं ना उठ्यो ॥ ३३ ॥ जब धनुष कांहूसों न उठ्यो तब क्रोधयुक्त ह्वै विमति कह्यो धनुष उठाइवे में राजकुमारन शक्तिबल नहीं कियो धनुष की भक्ति कियो है काहेकी धनुष बनायो औ पलमात्र सबके शीशनवत भये तौ जाकी जो भक्ति करत है ताको शीश नवावत प्रणाम करत हैं तासों आप खर गर्दभमें चढे अर्थ-गर्दभमें चढेप्राणी सब निन्दित भये ॥ ३४ ॥ किनि च्वै गई कहे गर्भ पतन काहे ना भयो ॥ ३५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननी जनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्ति प्रकाशिकाया तृतीयः प्रकाशः ॥ ३ ॥

दोहा ॥ कथाचतुर्थप्रकाशमें, बाणासुरसम्बाद ॥ रावणसों अरुधनुपसों; दशमुखबाणविषाद ॥ १ ॥ सबहीकोसमुझे उसबन, बलविक्रमपरिमाण ॥ सभामध्यताहीसमय; आये रावणबाण ॥ २ ॥ डिल्लाछंद ॥ नरनारिसबै । भयभीत तबै ॥ अचरिज्जुयहै ॥ सबदेखिकहै ॥ ३ ॥ दोहा ॥ हैरा कसदशशीशको, दैयतबाहुहजार ॥ कियोसबनिकेचित्त रस, अद्भुतभयसंसार ॥ ४ ॥ रावण-विजोहाछंद ॥ शंभु कोदंडदै राजपुत्रीकितै ॥ टूकद्वैतीनिकै जाहुँलंकाहिलै ॥ ५ ॥ विमति-शशिवदनाछंद ॥ दशशिरआवो । धनुषउठावो ॥ कछुबलकीजै । जगयशलीजै ॥ ६ ॥ बाण-गीतिका छंद ॥ दशकंठरेशठछाँड़िदेहठबारबारनबोलिये । अब आशुराजसमाजसेंपलसाजचित्तनडोलिये॥गिरिराजतेगुरुजानियेसुरराजकोधनुहाथले । सुखपायताहिचढ़ायकैवरजाहिरे यश साथलै ॥ ७ ॥

टी०-रावण सों बाणासुर को संवाद है ना उठ्यो तासों दशमुख औ बाणको धनुष सों विषाददुख है ॥ १ ॥ २ ॥ बाण रावण को देखि सब प्राणी आश्चर्य है शब्द कहत भये ॥ ३ ॥ दशशीशको राक्षस औ हजारबाहुको दैत्य सबनके चित्तमें अद्भुत औ भयरसको संसार रच्यो अर्थ अतिआश्चर्य औ भयसों युक्त कियो दशशिरहजारबाहुदेखि अद्भुतरस भयो भयानकरूप देखि भय रस-भयो ॥ ४ ॥ रावण विमतिसोंकह्यो की शंभु को दंड हमको दे कहे दीजिये औ राजपुत्री कहां है ताको बतावो धनुष तोरि राजपुत्री लै लंकहि जाऊं ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ विमति सों कहत ऐसे सबनके गर्व वचन सुनि रोषकरि बाण बोलत भये राज सभामें बलको साज पराक्रम करु चित्त करिके नाडोलु अर्थ मनोरथ ना करु अथवा बलको साज सों अथवा बल औ साज सैन्यादि सों चित्त ना डोलावो मनोरथ ना करौ अर्थ इहां तुम्हारो बल ना चलि है सुरराज महादेव-के गिरिराज ते कैलाश ते सुरराज को धनुष गुरू गरु जानो सुरराजपदको संबंध गिरिराजहू में है ॥ ७ ॥

मू०-मंथनाछंद ॥ बाणीकहीबान । कीन्हीनसोकान ॥ अद्यापि आनीन । रेबन्दिकानीन ॥ ८ ॥ बान-मालतीछंद ॥ जोपैजियजोर । तजौसबशोर ॥ शरासनतोरि । लहौसुखकोरि ॥ ९ ॥ रावण--दंडक ॥ वज्रकोअखर्वगर्वगंज्योजेहिपर्वतारि जीत्योहैसुपर्वसर्वभाजेलैलैअंगना । खंडितअखंडआशुकीन्होहैजलेशपाशचन्दनसीचन्द्रिकासोंकीन्हीचंदबंदना ॥ दंडकमेंकीन्होकालकालहूकोमानखंड मानौकोहूकालहीकी कालखंडखंडना । केशवकोदंडवीशदंडऐसेखंडेअबमेरेभुज दंडन की बड़ीहै बिडंबना ॥ १० ॥

टी०-आति गर्वसों बाणकी बाणी कानमें ना कह्यो अर्थ ना सुन्यौ फेरि विमति सों कह्यो कि रे कानीन छुद्रबंदि अद्यापि राजपुत्री को ना ल्यायो ॥ ८ ॥ अर्थ राजपुत्री प्राप्तिरूपी सुख शरासन तोरे विना न पैहे ॥ ९ ॥ जिन भुजदंडन वज्रको जो अखर्व बडो गर्व है ताको गंज्यौ विदारचो अर्थ-इंद्रकी रक्षा औ शत्रुवध करिबे में वज्रके अमोघता को गर्वरह्यो सो इनमें निष्फल भयो पर्वतारि

इन्द्रको इन जीत्यौ तब सर्व सुपर्व देवता अपनी अपनी स्त्रीलैलै भागत भये फेरि अखंड काहूके खंडिबे योग नहीं ऐसो जो जलेश वरुणको पाश फांसहै ताको आश जलदी जिनखंड काहू के खंडिबे योग नहीं ऐसो जो जलेश वरुणको पास फांस है ताको आशु जलदी जिन खंडन कियो तोरचो औ जिनकी वंदना पूजा चन्दनसी चन्द्रिका सों चन्द्र कह्यो अर्थ अति भय मानी चन्द्रमा जिनको सुखद चांदनी सों सुखदियो युद्ध ना कियो औ कालदण्ड यमराजकी आयुधताके यमराज रक्षा शत्रुवध करिवेको मानगर्व रह्यो ताको खंडनाकियो औ काल जे यमराज हैं तिनहीं की खंड खंडना इन ऐसी कियो मानो काल कहे यमके काल ईश्वर कीन्हों अर्थ जैसे यमको काल निर्भय है यमको खंडन करत है तैसे कह्यो यासों या जनायो कि मैं इन भुज दंडन सों इन सबको जीत्यौ है केशवकवि को दंड धनुष विसरचो नारी विडंबना निंदा ॥ १० ॥

मू०--बान--तुरंगमछंद ॥ बहुतबदनजाके ॥ बिबिधिबचन ताके ॥ रावण ॥ बहुभुजयुतजोई । सबलकहियसोई ॥ ॥ ११ ॥ रावण-दोहा ॥ अतिअसारभुजभारहीं,बलीहोहुगे बान ॥ ममबाहुनकोजगतमें, सुनिदशकंठविधान ॥ १२ ॥ सवैया ॥ हौंजबहींजबपूजनजातपितापदपावनपापप्रणासी । देखिफिरोंतबहींतबरावणसातौंरसातलकेजेबिलासी । लैअपनेभुजदंडअखंडकरौंछितिमंडलछत्रप्रभासी । जानैकोकेशवकेतिकबारमैंशेषकेशीशनदीनउसासी ॥ १३ ॥ रावण कमलछंद ॥ तुमप्रबलजोहुते । भुजबलनिसंयुते । पितहिभुवल्यावते । जगतयशपावते ॥ १४ ॥ बान--तोमरछंद ॥ पितुआनिएकेहिओक । दियदक्षिणासबलोक ॥ यहजानिएँ ब नदीन । पितुब्रह्मकेरसलीन ॥ १५ ॥

टी०--रावण के वचन में काकोक्ति है ॥ ११ ॥ असार वल रहित ॥ १२ ॥ अखंड संपूर्ण ॥ १३ ॥ १४ ॥ हे रावण ! दीन हमारो पिता ब्रह्म परब्रह्मके रस स्वादमें लीन है तू यह जानि कहे जानु ॥ १५ ॥

सवैया ॥ कैटभसोंनरकासुरसोंपलमेंमधुसोंमुरसोंज्यहि मारचो । लोकचतुर्दशरक्षककेशवपूरणवेदपुराणविचारचो । सोक श्रीकमलाकुचकुंकुममंडितपंडितदेवअदेवनिहारचो । रमाँगनकोबलिपै करतारहुनेकरतारपसारचो ॥ १६ ॥

रावण-दोहा ॥ हमैंतुम्हैंनहिंबूझिये, बिक्रमवादअखंड । अबजोयहकहिदेहिंगो, मदनकदनकोदंड ॥ १७ ॥ संयुत-तछंद ॥ ब्रतबाणरावणकीसुन्यो । शिरराजमंडलमेंधुन्यो ॥ बिमति ॥ जगदीशअबरक्षाकरो । विपरीतबातसवैहरो ॥ १८ ॥ दोहा ॥ रावणबाणमहाबली । जानतसबसंसार । जोदोऊधनुकर्षिहैं, ताकोकहाविचार ॥ १९ ॥ बाण-सवैया । केशवऔरतेऔरभईगतिजानिनजाइकछूकरतारी । शूरनकेमिलिबेकहँआयमिल्योदशकंठसदाअविचारी । चापच बाढ़िगयोबकवादवृथायहभूलिनभाटसुनावहिंगारी । ढायेकिकीरतिकोयहराजकरैतेरीराजकुमारी ॥ २० ॥

टी०-जा कर ने कैटभादि बली दैत्यनको मारचो फेरि चौदहौ लोकको रक्षा करतहैं यों कहि कर कि बडी शक्ति जनायो फेरि श्रीकमलालक्ष्मी के कुचन में कुंकुम केशरि के मंडित में भूषित करै सो अर्थ मकरिका पत्र बनावै में पण्डित है यासों या जनायो कि जिन विष्णुके लक्ष्मी स्त्री हैं तासों सबसब पदार्थ सों पूरण जानौ जामेंती शक्ति है शारद कर हाथ करता करतार जे ब्रह्मा हैं तिनहुन के करतार जे विष्णु हैं तिन बलिपै मांगिवे को पसारचो ऐसे बली विष्णु बलिपैं भिक्षाही मांगि पायो जीतिकै न पाई तासों विष्णु हू सों अधिक बलि औ दाता जानौ इति भावार्थ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ब्रत धनुष उठाइबेकी प्रतिज्ञा ॥ १८ ॥ १९ ॥ विमति के ऐसे विकल वचन सुनि बाण कह्यो कि हे भाट ! सीताके व्याहिबेको बाणधनुष उठावत है ऐसी जो गारी है ताको भूलिहू ना सुनाउ सीता हमारी माता हैं उनतिसयें दोहा में कह्यो है कि सीता मेरी माई है ॥ २० ॥

मू०—रावण-मधुछंद ॥ मोकहँरोकिसकेकहिकोरे । धुद्धजुरेयमहूंकरजोरे ॥ राजसभातिनुकाकरिलेखों । देखिकैं राजसुताधनुदेखों ॥ २१ ॥ सवैया ॥ बानकह्योतबरावणसों अबवेगिचढाउशरासनको । बातेबनाइबनाइकहाकहछोडि देआसनबासनको । जानतहैकिधौंजानतनाहिंनतूअपनेमद नाशनको । ऐसेहिकैसेमनोरथपूजतपूजेबिनानृपशासनको ॥ २२ ॥ रावण—बंधुछन्द ॥ बाननबाततुम्हैंकहिआवै॥बान॥ सोईकहौंजियतोहिंजोभावै ॥ रावण ॥ काकरिहौहमयोंहीं बरैंगे ॥ बान ॥ हैहयराजकरीसोकरैंगे ॥ २३ ॥ रावण—दंडक ॥ भौंरज्यौंभवतभूतवासुकीगणेशयुतमानोमकरन्द बुन्दमालगंगाजलकी । उडतपरागपटनालसीविशालबाहुक हाकहौंकेशोदासशोभापलपलकी । आयुधसघनसर्वमंगला समेतिसर्वपर्वतउठाइगतिकीन्हीहैकमलकी । जानतसकललो कलोकपालदिगपालजानतनबानबातमेरेबाहुबलकी॥ २४ ॥

टी०—॥ २१ ॥ आसन बिछावने औ बासन वस्त्रनको छोडिदे अर्थ मल्लरूप काचिधनुष उठावोआइ अथवा सीताके लेवेकी जे आशा है तिनकी वासना स्मरण छोडिदे अपने मदनाशनको मोको तू जानतहै कि नहीं जानत जो ऐसी बात कहत हैं कि सीताको विना धनुष तोरेही वरिहौं अथवा अपने मदनाशनको धनुपको अर्थ यह धनुष तुम्हारे मदको नाश करिहै नृपशासन धनुष उठाइवो ॥२२॥ हैहय राजा सहस्रार्जुन ॥ २३ ॥ वासुकी सर्प औ गणेश सहित भूतगण जा पर्वत में कमला-के भौंरसम भंवत भये औ महादेवके शीशको जो गंगाजल गिरचो ताकी माल मकरंद पुष्परस भयो औ उडत ये पार्वती आदि के पटवस्त्र हैं तेई पराग पुष्प-धूलि औ मेरो बाहु जो हैं सो नाल कमलदंड भयो एते में या जनायो कि जव मैं कैलास उठायो तव अतिशीघ्र उठायो तासों शंभूशीश को गंगाजल गिरचो औ वस्त्र उडत भये औ आयुध सवन कहि या जनायो कि तुम एक शंभु धनुप उठाइवो कठिन मानत हो वा पर्वतमें ऐसे अनेक आयुध रहे सर्व मंगला पार्वती ॥ २४ ॥

मू०–मधुभारछंद ॥ तजिकैसुरारि । रिसचित्तमारि ॥ दश कंठआनि । धनुछुयोपानि ॥ २५ ॥ विमति ॥ तुमबलनिधान । धनुअतिपुरान ॥ पीसजहुअंग । नहिंहोहिभंग॥२६॥ सवैया ॥ खंडितमानुभयोसबकोनृपमंडलहारिरह्योजगतीको ॥व्याकुलबाहुनिराकुलबुद्धिथक्योबलविक्रमलंकपतीको कोटिउपायकियेकहिकेशवकेहूनछाँडतभूमिरतीको । भूरिबिभूतिप्रभावसुभावहिज्योंनचलैचितयोगयतीको ॥ २७ ॥ पद्धटिका ॥ धनुअतिपुरानलंकेशजानि । यहबातबानसोंकहीआनि॥हौंपलकमाहँलेहौंचढाइ।कछुतुमहूँतोदेखोउठाइ॥२८॥

टी०–सुकहे सोरारि बाग्विवाद अथवा सुरारि । वाणासुर ॥ २५ ॥ २६ ॥ निराकुल शिथिल बलदेह बल विक्रम उपाय विभूति ऐश्वर्य सुवर्ण रत्न गजादि योग यती योगी ॥ २७ ॥ धनुष मोसों उठन लायक नहीं है यह जानिकै लंकेशरावण अपनो भ्रमर राखि धनुष छोडि कै वाण सो यह वात कह्यो कि धनुष अति पुरान है ॥ २८ ॥

मू०–वाण०–दोहा ॥ मेरेगुरुकोधनुषयह, सीतामेरीमाइ ॥ दुहूँभाँतिअसमंजसै, बाणचलेसुखपाइ ॥ २९ ॥ रावण–तोटकछन्द ॥ अबसीयलियेबिनहौंनटरौं । कहुँ जाहुँनतौलगिनेमधरौं ॥ जबलोंनसुनौंअपनेजनको । अति आरतशब्दहतेतनको ॥ ३० ॥ ब्राह्मण–मोदकछंद ॥ काहूकहूँशरआशरमारिय । आरतशब्दअकाशपुकारिय ॥ रावणकेवहकानपरयोजब ॥ छोंडिस्वयंवरजातभयोतब ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ जबजान्योसबकोभयो, सबहीविधिव्रतभंग ॥ धनुपधरचोलैभवनमें, राजाजनकअनंग ॥ ३२ ॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांवाणरावणयोर्वाग्विवादवर्णनं नामचतुर्थः प्रकाशः ॥ ४ ॥

टीका-॥ २९ ॥ हतेकहेबाणादि सों बेधे अर्थ-मेरे दास इहां उहां यज्ञादि विघ्नकरत फिरत हैं तिनको जो कोऊ सताइहै तो तिनकी रक्षाको जैहौं ॥ ३० ॥ जब मारीचादिको रामचन्द्र मारयो है तब तिनको आरत पीडित दुःखितेति शब्द सुनि रावण स्वयंवर सभाते गयो सो भेद कछू ब्राह्मण तौ जानत नहीं तासों संदेह विशिष्टह्वै कहतहै कि कहूँ वली कहूँ कौन्यौ स्थानमें शर बाणसों आशर कहे काहू राक्षसको मारयो "क्रव्यादोऽस्रप आसर इत्यमरः" । सुदभासुर मारिय कहूं यह पाठ है तौ सुद नामा राक्षसते भा कहे उत्पन्न जो असुर राक्षस है मारीच ताको सुद नाम राक्षसकी स्त्री ताड़का है ताको पुत्रमारीच है औ कहूँ शरमारीच मारिय पाठ है तौ शरसों मारीच नामा राक्षसको मारयो ॥ ३१ ॥ अनंग विदेह ॥ ३२ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिकीप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायांचतुर्थःप्रकाशः ॥ ४ ॥

सू०--दोहा ॥ यहप्रकाशपंचमकथा, रामगवनमिथिलाहि ॥ उद्धारणगौतमघरनि, स्तुतिअरुणोदयआहि ॥ १ ॥ मिथिलापतिकेवचनअरु, धनुभंजनउरधार ॥ जैमालादुंदुभिअमर, वर्षनफूलअपार ॥ २ ॥ ब्राह्मण-तारकछंद ॥ जब आनिभईसबकोदुचिताई । कहिकेशवकाहूपैमेटिनजाई । सियसंगलियेऋषिकीतियआई।इकराजकुमारमहासुखदाई३॥ मोहनछंद।सुंदरवपुअतिश्यामलसोहै ।देखतसुरनरकोमनमोहै आनिलखीसियकोबरुऐसो । रामकुमारहिदेखियजैसो ॥४॥ तोटकछंद ॥ ऋषिराजसुनीयहबातजहीं । सुखपायचलेमिथिलाहितहीं ॥ बनरामशिलादरशीजबहीं । तियसुन्दररूप भईतबहीं ॥ ५ ॥ विश्वामित्र-सोरठा ॥ गौतमकीयहनारि, इन्द्रदोषदुर्गतिभई ॥ देखितुम्हैंनरकारि, परमपतितपावनभइ ॥ ६ ॥ कुसुमवि-चित्राछन्द ॥ तेहिअतिरूरेरघुपतिदेख्यो । सबगुणपूरेतनमनलेख्यो ॥ यहबरमाँग्योदियोनका

हू । तुमममनतेकहूंनजाहू ॥ ७ ॥ कलहंसछन्द ॥ तहँता-हिदैबरुकोचलेरघुनाथजू । अतिशूरसुन्दरयोंलसैंऋपिसाथ जू ॥ जनुसिंहकेसुतदोउसिद्धिश्रीरये । बनजीवदेखतयोंसबै मिथिलागये ॥ ८ ॥

टीका- ॥ १ ॥ २ ॥ जबधनुपकाहुसों नाउठचो तब सबके जनकादिके मनमें दुचिताई भई कि सीताको व्याह अब ना ह्वै है तादुचिताई मेटिबेके लिये त्रिकालदर्शिनी काहू ऋषिकी स्त्री एक राजकुमार सीताके संग चित्रमें लिखिकै ल्याई कि सीताको या प्रकारको बरु मिलि है आशय कि जब या प्रकारको राजकुमार आवै तब शम्भु धनुष चढाइकै सीताको व्याहै ॥ ३ ॥ सो हे ऋषि ! जैसो इन रामकुमारको देखियतहै तैसोई बरु ऋषिकी स्त्री सीताको लिखिल्याई ॥ ४ ॥ ५ ॥ दुर्गति दुर्दशाको गई कहे प्राप्त भई ॥ ६ ॥ रूरेसुंदर ॥ ७ ॥ अति शूर औ सुंदर दुवौ राम लक्ष्मण ऋषिके साथमें ऐसे शोभित भये मानो सिद्धि जो तप सिद्धिहै ताकी श्रीशोभा में रगे कहे अनुराग सिंहके सुत पुत्र हैं सिंहादि बन जीव तपस्विनके वश्य होत हैं यह प्रसिद्ध है औ सिद्ध है श्रीरये पाठ होइ तौ सिद्ध स्वाभाविक श्रीशोभा सों रये युक्त ॥ ८ ॥

मू०-दोहा ॥ काहूकोनभयोकहूं, ऐसोसगुननहोत । पुर पैठतश्रीरामके भयोमित्रउद्दोत ॥ ९ ॥ राम-चौपाई ॥ कछुराजतसूरयअरुनषरे । जनुलक्ष्मणकेअनुरागभरे ॥ चितवतचित्तकुमुदिनीत्रसै । चोरचकोरचितासोलसै ॥ १० ॥ लक्ष्मण-षट्पद ॥ अरुणगातअतिप्रातपद्मिनीप्राणनाथ भय । मानहुँकेशवदासकोकनदकोकप्रेममय ॥ परिपूरण सिंदूरपूरकैधौंमंगलघट । किधौंशक्रकोछत्रमढचोमानिक-मयूषपट ॥ कैश्रोणितकलितकपालयह किलकपा लिकाकालको । यहललितलालकैधौंलसतदिग्भामिनिके भालको ॥ ११ ॥

टी०-अति अनुराग करि पुरमें पैठतही लक्ष्मणके सगुनार्थ उदित भये ताही अनुराग प्रेमसों मानो भरेकहे पूरित हैं अथवा लक्ष्मणको व्याज करि सगुन

समय उदयसों आपने ऊपर सूर्यको प्रेम जनायो यह कहनूति लोकरीति है ॥ १० ॥ पद्मिनी प्राणनाथ सूर्य अरुण तामें तर्कहै कोकनद कमलनको फुलावत हैं कोक चक्रवानको संयोगी करत हैं तासों मानो तिनके प्रेममयीहै अर्थ तिन प्रति जो प्रेम है सो ऊपर छाइ रह्यो है सिंदूरकी पूर प्रवाह जलेति अर्थ– सिंदूर मिश्रित जलसों भर्यो अथवा परिपूर्ण सिंदूरसों पूर कहे पूरित अर्थ सिंदूरहीसों भर्यो अथवा सिंदूर सों रँग्योकै मंगल विवाहादिको घट पूजन कलशहै मानिक रत्नकी मयूष किरणि तिनको बीन्यो पटवस्त्र औ कोकिलकहे निश्चयकरि यह कपालिकाकाली पै श्रोणितरुधिर कलितकालको कपालशीश है अथवा कपालिकाको व कालको श्रोणित कलितकपाल है कालीको रुधिर मांसभक्षकतासों कालको सर्वभक्षक तासों 'कालो जगद्भक्षकः' इति प्रमाणात् ॥ ११ ॥

मू०--तोटकछन्द ॥ पसरेकरकुमुदिनिकाजमनो । कि धौंपद्मिनिकोसुखदेनघनो ॥ जनुऋक्षसबैयहित्रासभगे । जियजानिचकोरफंदानठगे ॥ १२ ॥रामचन्द्र–चंचरीछन्द ॥ व्योममेंमुनिदेखियेअतिलालश्रीमुखसाजहीं । सिंधुमेंवड्वाग्निकीजनुज्वालमालबिराजहीं । पद्मरागनिकीकिधौंदिविधूरिपूरितसोभई । शुरवाजिनकीखुरीअतितिक्षतातिनकी हई ॥ १३ ॥ विश्वामित्र--सोरठा ॥ चढ्योगगनतरुधाइ, दिनकर बानरअरुणमुख ॥ कीन्हींझुकिझहराइ, सकलतार काकुसुमबिन ॥ १४ ॥

टी०–कुमुदिनि कोई कै काजकहे गहिवेको कुमुदिनि भयसों संकोचको प्राप्त होती है तासों ऋक्ष नक्षत्र यहि त्रास कहे फंदाभ्रमके त्रास ॥ १२ ॥ यामें आकाशमें सूर्यकी लाली छाई रही है ताको वर्णन है मुनि विश्वामित्र को संबोधन है ॥ १३ ॥ सूर्योदय सों नक्षत्रास्त भये तामें विश्वामित्रने तर्ककर्यो दिनकर सूर्यरूपी जो अरुणमुख वानरहै सो गगन आकाशरूपी तरुवृक्षमें धाइकै चढ्यो है सो झुकि कहे रिसायकै झहराइकहे हलाइकै सकल तारका नक्षत्ररूपी जे कुसुम फूले हैं तिनै विन कीन्ही सकल नक्षत्रास्तभयो तासों झुकि पद कर्यो ॥ १४ ॥

मू०--लक्ष्मण-दोहा ॥ जहींबारुणीकीकरी, रंचकरुचिद्विजराज ॥ तहींकियोभगवन्तबिन, संपतिशोभासाज ॥ १५॥ तोमरछन्द ॥ चहुँभागबागतडाग । अवदेखियेबडभाग ॥ फलफूलसोंसंयुक्त । अलियोंरमैजनमुक्त ॥ १६ ॥राम-दोहा॥ तिननगरीतिननागरी, प्रतिपदहंसकहीन॥जलजहारशोभितन जहँ, प्रगटपयोधरपीन ॥ १७ ॥

टी०--वारुणी पश्चिमदिशा औमदिरा द्विजराज चन्द्रमा औ ब्राह्मण भगवंत सूर्य औ ईश्वर संपत्ति चांदनी औ द्रव्यशोभा अंग छविदुवौमें जानो सूर्योदयसों पश्चिम दिशामें शोभारहित चंद्रबिंब देखि श्लेषोक्तिसों वर्णन कर्यो जो ब्राह्मण मदिराकी रुचि इच्छा करतहै ताको ईश्वर संपत्त्यादि सों हीन करत हैं ॥ १५ ॥ चहुँ भागचारौंवीरमुक्त साधुजन ॥ १६ ॥ जा जनकदेशगेते नगरी पुरी औ तेनागरी स्त्री नहीं हैं जे प्रतिपदस्थान स्थान प्रति औ चरण चरण प्रति हंसपक्षी ओक कहे जल औ हंसक बिछुवन सों हीन है औ जहां कहे जिनमें पीन वडे पयोधर वापी कूपतडागादि औ कुचनमें जलज कमल औ मोतिनके हार समूह औ माला नहीं शोभित अर्थ सब नगरिनमें जलाशय जल युक्त हैं तिनमें कमल फूलेहैं औ हंस बसत हैं औ स्त्री मोतिनके माला औ बिछुवा पहिरे हैं यासों या जनायो कि विधवा नहीं है और अथ--जो देश तिन नगरिन औ तिन नागरिन सों युक्त है युक्तेतिशेषः। जिनके प्रतिपद कहे मग राजमार्गेति औ पग चिह्न जे धूरिमें अंकित होत हैं तेई हंसपक्षी औकजल औ बिछुवन करिहीन हैं अर्थ नगरीमें राजमार्ग छोंडि अन्यत्र हंसयुक्त जल शोभितहै औ स्त्रिनके पग चिह्नहीमें बिछुवा नहीं हैं औ पगनमें सब बिछुवा पहिरेहैं ओप जहां कहे जिन नगरिनमें औ स्त्रिनमें शोभितन जलज हारन कमल समूहन औ मोतीमालनसों युक्त पीन वडे पयोधर तडागादि औ कुचहैं ॥ १७ ॥

मू०--सवैया ॥ सातहुदीपनकेअवनीपतिहारिरहेजियमें जबजाने । बीसबिसेब्रतभंगभयोसोकहौ अबकेशवकोधनुताने । शोककिआगिलगीपरिपूरणआइगयेघनश्यामबिहाने । जानकिकेजनकादिककेसबफूलिउठेतरुपुण्यपुराने ॥ १८ ॥

दोधकछन्द ॥ आइगयेऋषिराजहिलीने ॥ मुख्यसतानँदविप्रप्रवीने । देखिदुवौभयेपांयनिलीने । आशिषशीरषवासुलै दीने ॥ १९ ॥ विश्वामित्र--सवैया ॥ केशवयेमिथिलाधिपहैंजगमेंजिनकीरतिबेलिबईहै । दानकृपानविधानसोंसिगरीवसुधाजिनहाथलईहै । अंगछतासकआठकसोंभवतीनिहुलोकमेंसिद्धिभईहै । वेदत्रयीअरुराजसिरी परिपूरणताशुभयोगमईहै ॥ २० ॥

टी०—घनश्याम रामचन्द्र औ सजलमेघ जैसे सजल मेघनके आगमनसों वृक्षनकी दावाग्नि बुझातीहै औ हरित ह्वै जात हैं तैसे धनुष काहूसों ना उठ्यो अब सीताको व्याह ना ह्वैहै ऐसे गाढ समयमें हम कछु सहाय ना कियो यह जासों कहै ताको आगि जनकादिके पुण्य वृक्षनमें लगीरहे सो रामागमन सों धनुष उठिवो निश्चय करि बुझानी औ फूलि उठे प्रफुल्लित ह्वै उठे हरित ह्वै उठे इति ॥ १८ ॥ मुख्य जे सतानन्द प्रवीने विप्र ऋषि हैं ते राजा जनकको लीन्हें विश्वामित्रको आगे ह्वै लेवेको आइ गये विश्वामित्रको देखि दुवौ सतानन्द औ जनक पांयनमें लीनभये विश्वामित्र शीश सूंघी आशिष दयो ॥ १९ ॥ विश्वामित्र रामादिसों जनककी वडाई करत हैं वेदत्रयी कहे तीनोंवेद ऋग्वेद, सामवेद यजुर्वेद, तिनके अंगसों औ राजश्रीके सात अंग सों औ योगके आठ अंग सों भव जो संसार है तामें तीनिहुँ लोकमें जनककी सिद्धि काज सिद्धि भई है यासों या जनायो षडंग युक्त वेद सप्तांग युक्तराज्य अष्टांग युक्त योग साधन करत हैं वेदांगानि यथाशिक्षा १ कल्प २ व्याकरण ३ निरुक्त ४ ज्योतिष ५ छंद ६ यथोक्तंषट्पंचाशिकायां भट्टोत्पलटीकायां शिक्षा कल्पोव्याकरणं निरुक्तंछंदो ज्योतिषमिति । राज्यांगानि यथा–राज १ मंत्री २ मित्र ३ खजाना ४ देश ५ कोष ६ सैन्य ७ " स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशं राष्ट्रदुर्गबलानिच । राजांगानीत्यमरः " योगांगानियथा । यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ ध्यान ६ धारणा ७ समाधि ८ यथोक्तं प्रबोधचंद्रोदये । यम नियमासन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यानधारणा समाधयश्च ॥ २० ॥

मू०—जनक—सोरठा ॥ जिनअपनोतनस्वर्ण, मेलितपोमयअग्निमें ॥ कीन्हों उत्तमवर्ण, तेईविश्वामित्रये ॥ २१ ॥ लक्ष्मणमो

इनछंद ॥ जनराजवंत जगयोगवंत । तिनकोउदोत । केहि भाँतिहोत ॥ २२ ॥ श्रीराम--विजय ॥ सबछत्रिनआदिदै काहूछुईनछुयेबिजनादिकबातडगै । न घटैनबढैनिशिवासरकेशवलोकनकोतमतेजभगै । भवभूषणभूषितहोतनहींमदमत्तगजादिमसीनलगै । जलहूंथलहूंपरिपूरणश्रीनिमिकेकुलअद्भुतज्योतिजगै ॥ २३ ॥

टी०--जब विश्वामित्र जनककी स्तुति करचुके तब जनक अपने मंत्री आदि सों विश्वामित्रकी बडाई करत हैं उत्तमवर्ण ब्राह्मण औ अरुणरंग अर्थ-तपस्याकारि क्षत्रिय सों ब्राह्मण भये ॥ २१ ॥ जब विश्वामित्र जनकके राज्य औ योगकी स्तुति कियो तब संदेह युक्त ह्वै लक्ष्मण पूछ्यो कि, जे जन जगतमें राज्य औ योग दुवौ साधत हैं ते कैसे उदयको प्राप्त होत हैं काहेते राज्य औ योग परस्पर कर्म विरुद्ध हैं ॥ २२ ॥ लक्ष्मण पूछ्यो कि जेजन राजवंत योगवंत हैं तिनको उदोत कैसे होत है सो सुनिकै कहिबेकी अद्भुत युक्ति मनमें प्राप्त भई तासों विश्वामित्र सों प्रथमहीं रामचंद्रही उदोतके हेतुकहन लगे उदोत ज्योतिको होत है तालिये ज्योतिरूप कारि कहत हैं कि निमि जे जनकके पुरिखा हैं तिनके कुलकी जो ज्योतिप्रकाशकी शिखा है सो अद्भुत जगै कहे जगति है दीप्पित है है इति अर्थ और दीप ज्योतिके सम नहीं है सो अद्भुतता कहत हैं कि, दीप ज्योति को और दीप ज्योति छ्वै सकति है अर्थ समता कारि सकति है अर्थ जैसे एक दीपकी ज्योति होति है तैसी सजातीय औरहू दीप की होती है औ या निमिकुलकी ज्योतिको आदि दै कहे आदिही सों जबसों प्रगट भई है. अर्थ-जबसों निमिवंश भयो तब सों काहू क्षत्रिन नहीं छुयो अर्थ-समता कर्यो फेरि कैसी है कि और ज्योति व्यजनादि बातसों डगमगाती है यह ज्योति व्यजनादि बातसों नहीं डगति आदि पदते चामरादि जानौ अर्थ व्यजनादि बात भोगादिको सुख जामें लिप्त नहीं ह्वैसकत फेरि कैसी है कि और दीप ज्योति दिनमें घटतिहै औ यह निशिवासर कहे रात्योंदिन घटति बढति नहीं है अर्थ-सबप्राणी जा वंशमें बराबर होत जात हैं तासों घटति नहीं औ पूर्णताको प्राप्त है तासों बढति नहीं औ और दीप ज्योतिसों थल मात्रहीको तम अंधकार दूरि होत है यासों कनकोतिम तेज कहे अज्ञानको तेज दूरि होत है अर्थ-जिनके उप-

देश सों अथवा गानकरे सों अथवा कथा सुनिकै लोकन के प्राणिन को अज्ञान दूरि होत है । ज्ञानी होत हैं फेरि कैसी है कि दीप ज्योति भवभूषण जो भस्म है तासों अर्थ गुलसों भूषित होति है औ यह भव जो संसार है ताके जे भुवन कुंडलादि हैं तिनसों नहीं भूषित होती अर्थ कुंडलादि धारण सुखमें नहीं लिप्त होती औ दीप ज्योतिमें मषी जो मसी है कज्जल रति सों लागति है अरु यामें गजादिरूपी जो मषी है सो नहीं लागति अर्थ गजादि आरोहण सुखभोगमें लिप्त नहीं होती आदि पदते रथाश्वादि जानो औ दीप ज्योति थलहीमें पूरण रहति है औ यह जलहू थलमें परिपूरण है अर्थ--जल थलमें प्रसिद्ध है योगसों जीवन्मुक्त है तासों राज्यसुखमें लिप्त नहीं होत इतिभावार्थः ॥ २३ ॥

मू०--जनक--तारक ॥ यहकीरतिऔरनदेशनसोहै । सुनिदेवअदेवनकोमनमोहै ॥ हमकोबपुराखुनियेऋषिराई । सबगांउंछसातककीठकुराई ॥ २४ ॥ विश्वामित्र--बिजय ॥ आपने आपनेगैरानितौभुवपालसबैभुवपालैंसदाई । केवल नामहिकेभुवपालकहावतहैंभुवपालिनजाई । भूपनिकीतुमहीं धरिदेहबिदेहनमें कलकीरतिगाई ॥ केशवभूषणकीभवभूषण भूतनतैंतनयाउपजाई ॥ २५ ॥

टीका--जा प्रकार तुम बरण्यो यह कीरति और बडे राजनमें सोहति है या लायक हम नहीं हैं ॥ २४ ॥ पतिको धर्म है स्त्रीसों पुत्र कन्या उपजाइबो सो भूमिरूपी स्त्री है तासों और काहू भूपति नहीं उपजायो तासों केवल नामहीके भूपाल भूपतिकी देह कोऊ नहीं धरे औ तुम भव संसार में भूषणनहूं को भूषण अर्थ जाते भूषण शोभा पावत हैं अति सुन्दरी ऐसी तनया पुत्री भूतन पृथ्वीके तन देह ते उपजायो तासों भूपन की देह केवल तुमहीं धरे हो औ ताहू पर तुम्हारी कल कहे निर्दोप कीरति विदेहन में गाई है कहावत विदेह हौ यासों या जनायो कि भोग राज्यको करत हौ यश जीवनयुक्त तपस्विनमें गायो है याते तुमसम कोऊ राजा नहीं हैं ॥ २५ ॥

मू०--जनक--दोहा ॥ इहिंविधिकीचितचातुरी, तिनको कहाअकत्थ ॥ लोकनकीरचनारुचिर, रचिबेकोसमरत्थ ॥

॥ २६ ॥ सवैया ॥ लोकनकीरचनारचिवेकोजहींपरिपूरणबुद्धिविचारी । ह्वैगइकेशवदासतहींसबभूमिअकाशप्रकाशितभारी । शुद्धसलाकसमानलसी अतिरोपमईदृगदीठितिहारी । होतभयेतवसूरसुधाधर पावकशुभ्रसुधारँगधारी ॥ ॥ २७ ॥ दोहा ॥ केशवविश्वामित्रके, रोपमईदृगजानि ॥ संध्यासीतिहुँलोकमें; किहिनिउपासीआनि ॥ २८ ॥ जनकदोधकछंद ॥ एसुतकोनकेशोभहिसाजे । सुंदरश्यामलगौरविराजे ॥ जानतहौंजियसोदरदोऊ । कैकमलाविमलापतिकोऊ ॥ २९ ॥

टी०-जिनके लोक रचना रचिवेकी सामर्थ्य है तिनको वचन रचना करिवो कहा है ॥ २६ ॥ परिपूरण बुद्धि कहे निश्चयबुद्धि सों बुद्धि भूमि औ आकाशमें प्रकाशित भई अर्थ-फैलत भई अथवा भूमिअकाश सहित प्रकाशित भयो प्रगट भई अर्थ सब विषय हस्तामलकवत् देखि परचो तासमय शुद्ध कहे तीक्ष्ण शलाक बाण समान तिहारी रोषमयी दृष्टि लसी तासों सूर सूर्य सुधाकर चंद्रमा सरिस भयो औ अग्नि अमृतके रंगभये अर्थ अति भयसों तेजहीन श्वेतभये "शलाका शल्य मदन शारिका शल्यकीषुच ॥ छत्रादि काष्ठो शरयोरिति मेदिनी" ॥ २७ ॥ संध्यासम अरुणनेत्र भये तट जैसे तीनों लोकमें सब दोष निवारणार्थ संध्याकी उपासना करतहैं तैसे रोष निवारणार्थ ब्रह्मादि सब उपासना करतभये अर्थ सब आधीनहै स्तुति करतभये ॥ २८ ॥ दुहुनको सम सौंदर्यादि देखि यह मैं जीमें जानत हौं कि ए दूनों सहोदर सगे भाई हैं औ कै कोऊ कहे कौनों रूपधारी कमलापति विष्णु विमलापति ब्रह्मा हैं आशय यह कि इनमें विष्णु ब्रह्मासम सौंदर्यादि गुण हैं ॥ २९ ॥

मू०-विश्वामित्र ॥ चौ०-सुंदरश्यामलरामसुजानों । गौरसुलक्ष्मणनामबखानों ॥ आशिषदेहुइन्हेंसबकोऊ । सूरजकेकुलमंडनदोऊ ॥ ३० ॥ दोहा ॥ नृपमणिदशरथनृपतिके, प्रगटेचारिकुमार ॥ रामभरतलक्ष्मणललित, अरु शत्रुघ्नउदार ॥ ३१ ॥ घनाक्षरी ॥ दानिनकेशीलपरदानकेप्र

हारी दीनदानवारिज्योनिदानदेखियेसुभायके ॥ दीपदीपहू-
केअवनीपनकेअवनीपपृथुसमकेशोदासदासद्विजगायके ।
आनँदकेकंदसुरपालकसेबालकयेपरदारप्रियसाधुमनवचका-
यके । देहधर्मधारीपैविदेहराजजूसेराजराजतकुमारऐसेदश
रथरायके ॥ ३२ ॥

टीका—॥ ३० ॥ ३१ ॥ यामें विरोधाभास है दानी जे हरिश्चंद्रादि राजा हैं तिनके ऐसे शील सुभाव हैं जिनके अपर जे शत्रु हैं तिनसों दान दंडके प्रहारो लेवैया हैं औ दिन प्रति दान वारि विष्णुके जैसे सुभाय हैं ऐसे सुभायनके निदान कहे आदिकारण है अर्थ विष्णुके ऐसे शौर्यादि सुभायनको प्रगट करत हैं औ दीपक हैं प्रकाश कहँ दीपकहू के अर्थ अति कांति युक्त हैं औ अवनीपनके अवनीप राजा हैं अथवा दीप दीपके अवनीपन के अवनीप राजा हैं अर्थ सातौं द्वीपनके राजनके राजा हैं औ राजा पृथुके समान हैं औ गो ब्राह्मणके दासहैं तौ एते बडे राजाको अतिदीन गो ब्राह्मणकी सेवा विरोध है अविरोध यह गो ब्राह्मणकी सेवा क्षत्रीको उचित है परदार लक्ष्मी अथवा पृथ्वी विदेह राजकाम अथवा जन वा राजाजनकको संबोधन है दानवारि सम सुभाव कहि औ लक्ष्मी प्रियकहि जनकको जनायो कि ये विष्णु अवतार हैं अथवा ऐसे जे दशरथ राय हैं तिनके ए कुमार राजत हैं सुरपाल कैसे हैं बालकही ते ये दशरथ राय जिनको वर्णन करियत हैं ॥ ३२ ॥

मू०—सोरठा ॥ जबतेबैठेराज, राजादशरथभूमिमें । सुखसोयेसुरराज, तादिनतेसुरलोकमें ॥ ३३ ॥ स्वाग-ताछंद ॥ राजराजदशरत्थतनैजू । रामचन्द्रभुवचन्द्रबनै जू ॥ त्योंविदेहतुमहूंअरुसीता ॥ ज्योंचकोरतनयाशुभगीता ॥ ३४ ॥ तारकछंद ॥ रघुनाथशरासनचाहतदेख्यो । अतिदुष्करराजसमाजनिलेख्यो ॥ जनक ॥ ऋषिहैवहम-न्दिरमांझमगाऊं । गहिल्यावहिंहौंजनयूथबुलाऊं ॥ ३५ ॥ पद्धटिकाछन्द ॥ अवलोगकहाकरिबेअपार । ऋषिराजक-

हीयहबारबार ॥ इनराजकुमारहिदेहुजान । सबजानतहैं बलकेनिधान ॥ ३६ ॥ जनकदंडक ॥ वज्रते कठोरहै कैलासते विशाल कालदंडते कराल सब काल कालगावई । केशवत्रिलोकके बिलोकिहारे देवसबछोडचंद्रचूड़एकऔरकोचढावई ॥ पन्नगप्रचंडपतिप्रभुकीपनचपीनपर्व तारिपर्वतप्रमानमानपावई ॥ विनायकएकहूपैआवैनपिनाकताहिकोमलकमलपाणिरामकैसेल्यावई ॥ ३७ ॥

टी०-यासों या जनायो कि इंद्रकी सहाय करत हैं ॥ ३३ ॥ राजा दशरथके तनय पुत्र श्रीरामचन्द्र जैसे भूतलके चन्द्रमा वने हैं अर्थ राजनका राजा ऐसो तौ जाको पिता है आपु चन्द्रमा सरिस सबको सुखदहैं औ चांदनी सम यशप्रकाशक है याते बडे भाग्यवान हैं इति भावार्थः ॥ तैसे हे विदेह ! तुमहूं औ सीता हौ अर्थ तुम राजनके राजा हौ औ सीता तनया सरिस शुभगीता हैं तौ जाको तुमसो पिता है आपु ऐसे यशको प्राप्त हैं तैसो सीता हू बडी भाग्यवती हैं इति भावार्थः ॥ औ चकोरी को औ चंद्रहीको प्रेम उचित है तैसे सीताको औ श्रीरामचन्द्र को ह्वै है इति व्यंग्यार्थः ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ इनको बलके निधान अर्थ बडे बलवान सब जानत हैं औ विधान पाठ होइ तौ विधान कहे विधि जहां जा प्रकार चाहिये तहां ता प्रकार बल करबो ॥ ३६ ॥ या प्रकार जाको सब प्राणी काल कालमें कहे समय समय मो गावत हैं अथवा काल जे यम हैं तिनहूं को काल नाश कर्त्ता चन्द्रचूड महादेव प्रचण्ड जे पन्नग सर्पनके पति हैं बडे सर्प तिनहुँम के जे प्रभु वासुकी हैं तिनहींकी पीन कहे मोटी पनच रोदा है अथवा पन्नग प्रचंड पति जे वासुकी हैं तेई प्रभुकी महादेवकी पनच हैं आशय यह और रोदा जाको बल नहीं सहि सकत औ पर्वतादि इंद्र और जे पर्वतन के प्रभा सदृश हैं दैत्यादि ते जाके गरुवाई के मान प्रमानको नहीं पावत औ ए कहे अकेले जो विनायक गणेश हू ल्यायो चहै तौ नाहीं आइ सकत ॥ ३७ ॥

मू०-मुनि-दोहा ॥ रामहत्योमारीचज्याहि, अरुताडुका सुबाहु ॥ लक्ष्मणकोयहधनुपदै, तुमपिनाककोजाहु ॥ ३८ ॥ जनक-त्रिभंगीछन्द ॥ सिगरेनरनायकअसुरविनायकराक्ष-

सपतिहियहारिगये । काहूनउठायोथलनछुडायोटरचोनटा-रचोभीतभये ॥ इनराजकुमारनिअतिसुकुमारनिलैआयोहौंपैजकरे ॥ व्रतभंगहमारोभयोतुम्हारोऋषितपतेजनजानिपरे ॥ ३९ ॥ विश्वामित्र—तोमर ॥ सुनिरामचन्द्रकुमार-धनुआनियेयहिबार ॥ पुनिवेगताहिचढ़ाव ॥ यशलोकलोक बढ़ाव ॥ ४० ॥

टी०—जनक कोमलपाणि कहेउ ताल ए मारीचादि को वध सुनाइ कठोर पाणि जनायो ॥ ३८ ॥ असुर बाणासुरादि विनायक गणेश अथवा असुरनमें विनायक श्रेष्ठबाणासुर औ राक्षस पति रावण पैज कहे धनुष उठाइवेमें पराक्रम करिवेको लै आये हैं अथवा पैजकहे श्रमको करिकै तुम इन्हें ल्याये हौ अथवा पैज प्रतिज्ञा ॥ ३९ ॥ ४० ॥

मू०—दोहा ॥ ऋषिहिदेखिहरषैहियो, रामदेखिकुम्हिलाइ ॥ धनुषदेखिडरपैमहा, चिन्ताचित्तडोलाइ ॥ ४१ ॥ स्वागताछन्द ॥ रामचन्द्रकटिसोंपटुबांध्यो । लीलयैवहरको धनुसाध्यो ॥ नेकुताहिकरपल्लवसोंछै ॥ फूलमूलजिमिटूक करचोद्वै ॥ ४२ ॥ सवैया ॥ उत्तमगाथसनातजबै धनुश्री रघुनाथजुहाथकैलीनो । निर्गुणतेगुणवंतकियो सुखकेशव संतअनंतनदीनो । ऐंचोजहींतबहींकियोसंयुत तिच्छकटाक्ष नराच नवीनो । राजकुमारनिहारिसनेहसोशंभुकोसांचोश रासनकीन्हो ॥ ४३ ॥ प्रथमटंकोर झुकिझारिसंसारमदचंड कोदंडरह्योमंडिनवखंडको । चालिअचलाअचलघालिदि-गपालवलपालिऋषिराजकेवचनपरचंडको । सोधुदैईशको बोधुजगदीशकोक्रोधउपजाइभृगुनंदबरिबंडको । बांधिवरस्वर्ग कोसाधिअपवर्गधनुभंगकोशब्दगयोभेदिब्रह्मंडको ॥ ४४ ॥

टी०— ॥ ४१ ॥ कटिसों कहे कटिमेंफूल मूलपोनारी लीलहि सों हरको धनु साध्यो यहौ पाठ है ॥ ४२ ॥ उत्तम गाथकहे गान जिनको औ सनाथ

विश्वामित्र सहित गुणवन्त रोदायुक्त औ धनुष खैंचत में तिरछी दृष्टि परतिहै सोई नराच बाण हैं तासों संयुत कियो राजकुमार जे रामचन्द्र हैं ते स्नेह सहित निहारिकै शंभुको शरासन सांचो " कीन्हो शरान् अस्याति क्षिपतीति शरासनः" अर्थ धन्वी शरन्का चलावत है जासों तासों शरासन कहावत है सो कटाक्षरूपी शरयुक्त करि सत्य कियो ॥ ४३ ॥ धनुभंगको जो शब्द है सो चण्ड कहे प्रचण्ड जो कोदण्ड धनुष है ताको जो प्रथम टङ्कोर खैंचिवेको शब्द है ताके साथ ही इति शेषः ॥ यासों प्रथम टंकोरहीके संग धनुषटूटिबो जनायो झुकि कहे क्रुद्धह्वै अर्थ क्रूरताको मार्तंड कै संसारकोमदझारिकै अर्थ संसार के सब प्राणिनको कादर करिकै नौहूखंडमें मंडिकहे छाइरह्यो औ फेरि अचला जो पृथ्वी है औ अचल पर्वतनको चालि कहे चलाइकै औ दिगपाल इंद्रादिकनके बलको घालिकै अर्थ विह्वल करिकै औ रामचंद्र धनुष उठाइ हैं यह वचन विश्वामित्रको जनक प्रति रह्यो ताको पालिकै औ ईश महादेवको सोधु कहे खोज संदेश इति दैकै औ क्षीरसागरमें सोवत जे जगदीश विष्णु हैं तिन्हें बोधि कहे जगाइ कै औ भृगुनंदन परशुराम के क्रोध उपजाय कै औ स्वर्गको बांधि कै कहैं स्वर्ग भरेमां व्याप्त ह्वैकै औ बाँधि पाठ होइ तौ स्वर्ग को बाधा करिकै अर्थ-की बेधि कै अथवा स्वर्ग के प्राणिनको विह्वल करिकै या प्रकार ब्रह्मांड को वेधिकै मुक्तिको साधि साधन करिकै गयो अर्थ ब्रह्मांड फोरि विष्णुलोक को प्राप्त भयो ऐसो उच्च शब्दभयो इति भावार्थः ॥ औ रामचन्द्र के करस्पर्श सों याही विधि सबको मुक्ति मिलति है इति व्यंग्यार्थः ॥ ४४ ॥

मू०-जनक-दोहा ॥ सतानंदआनंदमति, तुमजोहुतेउन साथ ॥ बरज्योकाह्नधनुषजब, तोरयोश्रीरघुनाथ ॥४५॥ सतानंद-तोमर ॥ सुनुराजराजाविदेह । जबहौंगयोवहिगेह ॥ कहुमैंनजानीबात । कबतोरियोधनुतात ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ सीताजूरघुनाथको, अमलकमलकीमाल ॥ पहिराईजनुसबनकी, हृदयावलिभूपाल ॥ ४७ ॥

टी०-॥ ४५ ॥ ४६ ॥ सीतामें सब भूपालनके हृदय लगे रहैं तिनको वेधि माल बनाइ मानों रामचन्द्र को पहिरायो हृदयको कमल सदृश वर्णन है तासों ॥ ४७ ॥

मू०-चित्रपदाछंद ॥ सीयजहींपहिराई । रामहिमाल सुहाई ॥ दुंदुभिदेवबजाये । फूलतहींबरसाये ॥ ४८ ॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-मिन्द्रजिद्विरचितायांधनुर्भंगवर्णनंनामपंचमःप्रकाशः ॥ ५ ॥

टी०-॥ ४८ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकाया पंचमःप्रकाशः ॥ ५ ॥

मू०-दोहा ॥ छठैप्रकाशकथारुचिर, दशरथआगमजानि ॥ लगनोत्सवश्रीरामको, व्याहविधानबखानि ॥ १ ॥ सतानंद-तोटकछंद ॥ विनतीऋषिराजकिचित्तधरौ । चहुँभैयनकेअबव्याहकरौ ॥ अबबोलहुबेगिबरातसबै । दुहितासमदौसुखपाइअबै ॥ २ ॥ दोहा ॥ पठईतबहींलगनलिखि-अवधपुरीसबबात ॥ राजादशरथसुनतहीं, चार्योचलीबरात ॥ ३ ॥ मोटक-छंद ॥ आयेदशरत्थबरातसजे । दिगपालगयंदनिदेखिलजे ॥ चारयोंदलदूलहचारुबने । मोहेसुरऔरनिकोनगनै ॥ ४ ॥

टी०-॥ १ ॥ दशरथ की प्रभुता सुनि औ रामचन्द्रको पराक्रम देखि जनक चारौं सुतनके व्याह करिबेको विश्वामित्रसों विनती कीन्ही सो सतानंद विश्वामित्रको समुझावत हैं कि, हे ऋषिराज ! जनककी विनती चित्तमें धरौ समदौ। विवाहौ ॥ २ ॥ राजा दशरथके लगनपत्री सुनतही चारौंवरातैंचलीं अर्थ चारौं बरातैं साजि राजादशरथ व्याहिवेको चले ॥ ३ ॥ ४ ॥

मू०-तारकछंद ॥ बनिचारिबरातचहूँदिशिआई । नृप चारिचमूअगवानपठाई ॥ जनुसागरकोसरितापगुधारी । तिनकेमिलिबेकहँबाहँपसारी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ बारोठेकोचारकरि, कहिकेशवअनुरूप । द्विजदूलहपहिराइयो, पहिराये

सबभूप ॥ ६ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ दशरत्थसंघातीसकलबरातीबनिबनिमंडपमाहँगये । आकाशविलासीप्रभाप्रकाशी जलजगुच्छजनुनखतनये ॥ अतिसुंदरनारीसवसुखकारीमंगल गारीदेनलगीं । बाजेबहुबाजतजनुघनगाजतजहांतहांशुभ शोभजगीं ॥ ७ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रसीतासहित, शोभतहैं त्यहिठौर । सुवरणमयमणिमयखचित, शुभसुंदरशिर मौर ॥ ८ ॥

टीका-एकही दिशासों चारौं बरातें आवतीं तौ एक एक बरातकी अगवानीमें वेर होती व्याहकी लगन टरिजाती तासों एकही बार अगवानी होवेके लिये चारौं बरातैं चारों दिशाह्वै आईं सागर सरिस राजा जनक हैं सरिता सरिस चारों बरातैं हैं बाहँ सरिस अगवानी की चारोंचमू हैं ॥ ९ ॥ बारोठे को चारकहे द्वारपूजा अनुरूप यथोचित पहिराइयो पदते भूषण वस्त्र पहिराइयो जानों ॥ ६ ॥ बारोठेको चारकरि जनवासमंदिरको गये इति कथाशेपः जनवास मंदिर ते भांवरि करिबेके लिये मंडपकहे मॉडवमें गये सो मंडप कैसो है आकाश विलासी कहे आकाश को ऐसो है विलास कौतुक जाको अर्थ अति दीर्घ अति उच्च है औ आकाश में नक्षत्र हैं इहां झालरन में लगे प्रभा प्रकाशी कहे अति शोभायुक्त जे जलजमोतिनके गुच्छ हैं तेई नये नवीन नक्षत्र हैं ॥ ७ ॥ खचित कहे चित्रित ॥ ८ ॥

मू०-षट्पद ॥ बैठेमागधसूतविविधविद्याधरचारण । केशवदासप्रसिद्धसिद्धशुभअशुभनिवारण ॥ भरद्वाजजाबालिअत्रिगौतमकश्यपमुनि । विश्वामित्रपवित्रचित्रमतिवामदेव पुनि ॥ सबभांतिप्रतिष्ठितनिष्ठमतितहँवाशिष्ठपूजतकलश । शुभसतानंदमिलिउच्चरतशाखोच्चारसबैसरस ॥ ९ ॥ अनुकूलछंद ॥ पावकपूज्योसमिधसुधारी । आहुतिदीनीसबसुखकारी ॥ दैतबकन्याबहुधनदीन्हों । भाँवरिपारिजगतयश लीन्हों ॥ १० ॥ स्वागताछन्द ॥ राजपुत्रकनिसोंछविछा-

ये । राजराजसबडेरहिआये ॥ हीरचीरगजबाजिलुटाये । सुंदरीन बहुमंगलगाये ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ वासरचौथेयाम, सतानंदआगूदिये ॥ दशरथनृपकेधाम । आयेसकलविदेहब- नि ॥ १२ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ कहूँशोभनादुंदुभीदीहबा जैं । कहूँभीमभंकारकर्नालसाजैं ॥ कहूँसुंदरीबेनुबीनाबजा- वैं । कहूँकिन्नरीकिन्नरीलैसुगावैं ॥ १३ ॥ कहूँनृत्यकारीनचैं शोभसाजैं । कहूँभांडबोलैंकहूँमल्लगाजैं ॥ कहूँभाटभाख्यो करैंमानपावैं । कहूँलोलिनीबेडिनीगीतगावैं ॥ १४ ॥ कहूँ बैलभैंसाभिरैंभीमभारे । कहूँएणएणीनकेहेतकारे ॥ कहूँबोक बाँकेकहूँमेपशूरे । कहूंमत्तदंतीलरैंलोहपूरे ॥ १५ ॥

टीका—मागध वंशावली वर्णन करैया सूत स्तुति करैया चारण प्रेष्य ए भाट- की जाति हैं शुभ अशुभ निवारण कहे शुभमें अशुभ के निवारण मेटनहार निष्ठ- मति कहे उत्तम मति ॥ ९ ॥ समिध होमकी लकरी ॥ १० ॥ ११ ॥ वासर के चौथे याम कहे तीनि पहर दिनबीतेके उपरांत दशरथ के धामकहे जनवास- मंदिरमें विदेह कहे जनकके गोत्री ॥ १२ ॥ तीनि छंदको अन्वय एक हैं राजा दशरथके फौजमें ऐसो कौतुक देखत भये किन्नरी सारंगी ऐनी हरिणीनसों हेत करियत हरिण परस्पर भिरतहैं भिरत पदको अनुषंग एतहू में है मेष भेडा लोह पूरे जंजीरहू कौ पहिरे अथवा वीरतासों युक्त ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०--दोहा ॥ आगेह्वैदशरथलियो, भूपतिआवतदेखि ॥ राजराजमिलिबैठियो, ब्रह्मब्रह्मऋषिलेखि ॥ १६ ॥ सता- नंद-शोभनाछंद ॥ मुनिभरद्वाजवशिष्ठअरुजाबालिविश्वामि- त्र । सबैहौतुमब्रह्मऋषिसंसारशुद्धचरित्र ॥ कीन्होंजोतुमया वंशपैकहिएकअंशनजाइ । स्वादकहिबेकोसमर्थनगूँगज्योंगु रखाइ ॥ १७ ॥ अन्यच्च—सुखदाछंद ॥ ज्योंअतिप्यासोपा- वैमगमेंगंगाजलु ॥ प्यासनएकबुझाईबुझैत्रैतापबलु ॥ त्यों

तुमतेहमकोनभयोअबएकसुख ॥ पूजेंमनकेकामजोदेख्यो रामसुख ॥ १८ ॥

टी०-राजर्षि दशरथादि राजर्षि जनकादिकन सों मिलिके बैठे ब्रह्मर्षि वशिष्ठादि ब्रह्मर्षि सतानन्दादिकन सों मिलिकै बैठे ऋषिपद की अनुषंगराजपद हम है ॥ १६ ॥ संसार में शुद्ध है चरित्र जिनको अथवा संसारको शुद्ध कर्त्ता है चरित्र जिनको अर्थ जिनके चरित्र कहि सुनि संसारके प्राणी शुद्ध होतेहैं ॥ १७ ॥ जैसे मगमें अति प्यासो प्राणी जलमात्रको चाहत है औ वह भाग्ययोग तें गंगाजलपावै तौ वाकी एक प्यासही नहीं बुझाति दैहिक दैविक भौतिक जे तीनों ताप हैं तिनको बल बुझात है अर्थ त्रयताप दूरिहोत हैं तैसे केवल धनुष चढावै ताही को व्याह करिये हमारी इतनी प्रतिज्ञा पूर्वक इच्छा रही सो तुमते हमको केवल व्याह इच्छा पूर्ण रूपही सुख नहीं भयो रामचन्द्रको मुखदेखि रूपबल विद्या कुलादिके काम अभिलाष पूजे पूर्ण भये ॥ १८ ॥

मू०-जनक-सवैया ॥ सिद्धसमाजसजैंअजहूँनकहूंजगयोगिनदेखनपाई । रुद्रकेचित्तसमुद्रबसैनितब्रह्महुपैबरणीजोनजाई॥रूपनरङ्गनरेषविशेषअनादिअनन्तजोवेदनगाई।केशवगाधिकेनन्दहमैंवहज्योतिसोमूरतिवंतदेखाई ॥ १९ ॥ अन्यच्च-तारकछंद ॥जिनकेपुरिषाभुवगंगाहिल्याये । नगरीशुभस्वर्गसदेहसिधाये ॥ जिनकेसुतपाहनतेतियकीनी । हरकोधनुभंगप्रभेंपुरतीनी ॥ २० ॥ जिनआपुअदेवअनेकसँहारे । सबकालपुरन्दरकेरखवारे ॥ जिनकीमहिमाहिअनंतनपायो । हमकोबपुरायशवेदनिगायो ॥ २१ ॥ बिनतीकरियेजनजोजियलेखो । दुखदेख्योजोकाल्हितयोंआजहुदेखो । यहजानिहियेढिठईमुखभाषी । हमहैंचरणोदकके अभिलाषी ॥ २२ ॥

टी०-रुद्र महादेव के चित्तरूपी समुद्र में जो बसति है अर्थ जाको महादेव आराधन करते हैं ॥ १९ ॥ तीनि छंद को अन्वय एक है भगीरथ सगरके सुत

नके तारिबेको गंगाकोल्याये हैं औ हरिश्चन्द्र नगरी अयोध्या सहित स्वर्गको गये
हुवो कथा प्रसिद्ध हैं औ जिनके सुत रामचन्द्र गौतिमीको पाहन सों त्री कीन्हों
औ हरका धनुष भंग कीन्हों जा धनुष मं तीनिपुर कहे तीनिलोक भ्रमें अर्थ जा
धनुषको तीनों लोक के प्राणिन उठायो ना उठ्यो तव भ्रमें कहे संदेहको प्राप्त भये
अथवा ऐसी अवस्था मं ऐसो धनुष तोरचो यासों तीनहु लोक भ्रमें औ आपु कैसे
हैं कि जिन अनेक अदेव दैत्यनको मारचो है औ सदापुरन्दर इन्द्रकी रक्षा करतहौ
यासों या जनायो कि ऐसे उद्धत कर्म करिबे को तुम्हारे घरकी परम्परा की रीति है
अनंतशेष औ जिनकी महिमा महि अंत न पायो पाठहोई तौ महीभरे के प्राणिन
जिनकी महिमाको अंत नहीं पायो यह विनती करियत है हमको अपने जन
सेवकके समान जिय मं लेखो कहे जानों औ जैसे कालिह हमारे इहांत्रास करि
दुःख देख्यो है तैसे आजहूं देखो अर्थ आजहू त्रास करौ हम चरणोदक कहे चरण
जल के अभिलाषी हैं तासों एती ढिठाई मुखसों भाख्यो है यह तुम जीमें
जानिकहेजानौं चरणोदकके अभिलाषी कहि या जनायो कि हमारे घरमें चलि
भोजन करौ जाते हम चरण धोइ चरणोदकलेईं जाते हमारे गृहादि पवित्र होईं
या भांति निमंत्रण दियो ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०-तामरसछन्द ॥ जबऋषिराजबिनयकरिलीनों । सुनिसबकेकरुणारसभीनों ॥ दशरथराययहैजियजानी । यह वहएकभईरजधानी ॥ २३ ॥ दशरथ-दोहा ॥ हमकोतुम सेनृपतिकी, दासीदुर्लभराज । पुनितुमदीनीकन्यका, त्रिभुवनकीशिरताज ॥ २४ ॥ भारद्वाज-तामरसछंद ॥ सुखदुख आदिसबैतुमजीते । सुरनरकीबपुराबलरीते ॥ कुलमहँहो-हिंबडोलघुकोई । प्रतिपुरुषनिबडोसोबडोई ॥ २५ ॥

टी०-ऋषि सतानन्द राजा जनक ॥ २३ ॥ २४ ॥ अतिबली जे दुःख
सुखादि हैं आदि पदने काम क्रोधादिहू जानौं तिनहींको तुम जीते हौ अर्थ
दुःख सुखादि के वश्य नहीं हौ तौ बल करिकै रीते कहे खाली बपुरा कहे
दीन जे सुर औ नर हैं ते तुमको जीतिबेको कहा है औ कुलमें चाहौ प्रतापादि
करि बडो होइ चाहै छोटोई जो प्रति पुरुषन बडो होत है सो बडोई रहत है

यासों या जनायो कि जो प्रति पुरुष वडो है ताके कुलमें लघुहु होइ तौ वडो है औ तुमप्रति पुरुषानहू वडे हौ औ तुम्हारे दुःख सुखादि जीतिवेकी सामर्थ्य है तासों तुमसमान कोऊ नहीं है अथवा और कोई अपने कुलमें वडो लघु होत है अर्थ कोऊ प्राणी वडो भयो कोऊ छोटो भयो औ ई कहे जनक प्रति पुरुषान वडो सो वडोकहे वडेते वडे हैं अर्थ इनके कुलमें क्रमसों एक ते एक वडे होत आवत हैं ॥ २५ ॥

मू०-वशिष्ठ-विजयछंद ॥ एकसुखीयहिलोकविलोकि येहैंवहिलोकनिरैपगुधारी । एकइहांदुखदेखतकेशवहोतवहां सुरलोकविहारी ॥ एकइहांऊउहांअतिदीनसोदेतदुहूंदिशि-केजनगारी । एकहिभाँतिसदासवलोकनिहैप्रभुतामिथिले-शतिहारी ॥ २६ ॥ जाबालि--विजयछंद ॥ ज्योंमणिमय अतिज्योतिहुतीरवितेकछुऔरमहाछबिछाई । चंद्रहिबंदत हैंसबकेशवईशतेवंदनताअतिपाई ॥ भागीरथीहुतिपै अ-तिपावनबावनतेअतिपावनताई । त्योंनिमिवंशबडोईहतो भइसीयसँयोगबडीयबडाई ॥ २७ ॥ विश्वामित्र--मालिनीछ-न्द ॥ गुणगणमणिमाला । चित्तचातूर्यशाला ॥ जनकसुखद गीता । पुत्रिकापाइसीता ॥ अखिलभुवनभर्त्ता । ब्रह्मरुद्रादि कर्त्ता ॥ थिरचरअभिरामी । कीयजामातुनामी ॥ २८ ॥
॥ दोहा ॥ पूजिराजऋषिब्रह्मऋषि, दुंदुभिदीन्हिबजाइ । जनककनकमन्दिरगये, गुरुसमेतसुखपाइ ॥ २९ ॥

टी०- ॥ २६ ॥ ईशमहादेव ॥ २७ ॥ जनक संबोधन है गुणगणरूपी जे मणि-मुक्तादिहैं तिनकी माला है अर्थ अनेक गुणनसों युक्त है औ चित्तको जो चातुर्य चातुरी है ताकी शालादार है अथवा चित्तहै चातुर्य्यको शाला जाको अथवा चित्त की चातुर्य्यसे शाला कहे गृहो है औ सुखद है गीतागानजाको अर्थ जाको गानकरे सुने सबके सुख होत हैं ऐसी सीता नामा पुत्रिकाको पाइकै अथवा ये तीनों लक्ष्मीके विशेषण हैं विशेषण नहीं सो लक्ष्मी जनायो कि ऐसी

जो लक्ष्मी हैं ताको सीता नामा पुत्रिका पाइकै अखिल सम्पूर्ण भुवन कहे चौदहों भुवनके भर्त्ता पोषक औ ब्रह्म रुद्रादि के कर्त्ता औ थिर वृक्षादि चर मनुष्यादि सबमें अभिरामी कहे वास कर्त्ता अथवा शोभा कर्त्ता औ नामी कहे यशी ऐसो जामातु तुमकीय कहे कर्यो जैसे तीनों विशेषणन सों लक्ष्मी जनायो तैसे चारयों विशेषणन सों विष्णु जानो तो लक्ष्मीजाकी पुत्रिका भई औ विष्णु जामातु भये तासों अति भाग्यवान् हौ इतिभावार्थः अथवा विश्वामित्र कहत हैं कि जनक सुखद जे ईश्वर हैं जिन कारिके गीताकहे गाई अर्थ जाको विष्णुहू गान करत हैं यासों लक्ष्मी जनायो और अर्थ एकहि है ऐसी जो सीता नामा तुम्हारी पुत्रिका है ताको हमपायो औ सो जामातु तुमकीय कहे कर्यो यासों या जनायो कि दोनों तरफ बडा लाभ भयो ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०—चामरछंद ॥ आसमुद्रकेक्षितीशऔरजातिकोगने । राजभौमभोजकोसबैजनेगयेबने ॥ भाँतिभाँतिअन्नपान व्यंजनादिजेंवहीं । देतनारिगारिपूरिभूरिभूरिभेवहीं ॥ ३० ॥ हरिगीतछंद ॥ अबगारितुमकहदेहिंहमकाहिकहादूलहरामजू । कछुबापप्रियपरदारसुनियतकरी कहतकुवामजू । कोगनैकेतनेपुरुषकीन्हेंकहतसबसंसारजू । सुनिकुँवरचितदैवरणिताको कहियसबव्योहारजू ॥ ३१ ॥

टी०—औ समुद्रके कहे समुद्र पर्यंतके अर्थ पृथ्वीभरेके भूरि भूरि भेवहीं कहे अनेक भेदसों ॥ ३० ॥ सात हरिगीतछंदको अन्वय एक है यामें श्लेष सों आशीर्वादात्मक व्याजस्तुति है परदार कहे परस्त्री उत्कृष्टदार कुवाम कुत्सित वाम औ कु कहे पृथ्वीरूपवाम व्योहार कहे संबन्ध मित्रता इति कुवाम पक्ष रत्नाकर कहे अनेक रत्नयुक्त पृथ्वी ये छः समुद्र शीश पश्चिम कारिकै औ पांय पूरुव कारिके प्रलयकाल के उपरांत जव शेषके फणिकहे फणनि की मणिमाला मणिसमूहकी पलिका अथवा शेषजे फणिकहे सर्प्प हैं तिनकी मणिमालाकी पलिकामें परति पौढति है तब अनेक पुरुषन को युद्धादि कराई ग्रहण त्यागरूप प्रबन्ध कियो करतिहै गातहैं सहजेही सुगंध युक्त जाके 'गंधवती पृथ्वीतिन्यायशास्त्रोक्तत्वात्' ॥ ज्या प्रबंधसों हिरण्याक्षादि जो पुरुषकर्यो सो क्रमही गनायो सरवस कहे सबसार कहे रसस्वादेति औ द्रव्यभ्रमि कहे

भूलिहूकै ज्यों कहेजाते और पति को मुख न निरखै त्यों कहे ता प्रकारसों तुम ताको राखियो जा स्त्रीको दशरथ राख्यो ताको तुम राखियो यह परिहास है औ ताही पृथ्वीकी रक्षा तुम करियो यह आशीर्वाद है ॥ ३१ ॥

सू०—बहुरूपसोंबनयोबना बहुरत्नमयवपुमानिये । पुनि वंशरत्नाकरबन्योअतिचित्तचंचलजानिये ॥ शुभशेषफणि मणिमालपलिकापरतिकरतिप्रबंधजू । करिशीशपश्चिमपाँयपूरबगातसहजसुगंधजू ॥ ३२ ॥ वहहरीहठिहरिनाक्षदैयत देखिसुंदरदेहसों । बरबीरयज्ञबराहबरहीलईछीनिसनेहसों ॥ ह्वैगईविहवलअंगपृथुफिरिसजेसकलशृंगारजू । पुनिकछुक दिनवशभईताकेलियोसरबससारजू ॥ ३३ ॥ वहगयोप्रभुपरलोककीन्होंहिरणकश्यपनाथजू । तेहिभाँतिभाँतिनभोग योभ्रमिपलनछोंड्योसाथजू ॥ वहअसुरश्रीनरसिंहमारयोलई प्रबलछड़ाइकै । लैदईहरिहरिचंदराजहिंबहुतजोसुखपाइकै ॥ ३४ ॥ हरिचन्द्रविश्वामित्रकोदइदुष्टताजियजानिकै । तेहिबरोबलिबारिबंडबरहींविप्रतपसीजानिकै । बलिबांधिछल बललईबावनदईइंद्रहिआनिकै । तेहिइन्द्रतजिपतिकरयोअर्जुनसहसभुजकोजानिकै॥३५॥तबतासुमदछ्बिछयो अर्जुनहत्योऋषिजमदग्निजू । परशुरामसोसकुलजारयोप्रबलबलकी अग्निजू । तेहिबेरतबहींसकलक्षात्रिनमारिमारिबनाइकै । इक बीसबेरादईविप्रनरुधिरजलअन्हवाइकै ॥ ३६ ॥ वहरावरेपितुकरोपत्नीतजीविप्रनथूंकिकै । अरुकहतहैंसबरावणादिक रहेताकहँढूँढिकै ॥ यहिलाजमरियतताहितुमसोंभयोनातोनाथजू । अबऔरमुखनिरखैंनज्योंत्योंराखियोरघुनाथजू ॥३७॥ सोरठा ॥ प्रातभयेसबभूप, बनिबनिमंडपमेंगये ॥ जहाँरूपअनुरूप, ठौरठौरसबशोभिजैं ॥ ३८ ॥ नाराचछन्द ॥ रचीबि-

रंचिवासंसी निथम्बराजिकाभली । जहाँतहाँबिछावनेबनेघ-
नेथलीथली ॥ वितानश्वेतश्यामपीतलालनीलकारँगे । मनो
हूँदिशानकेसमानबिम्बसेजगे ॥ ३९ ॥

टी०—३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ रूपजो सौंदर्य्य है ताके अनुरूप सदृश अर्थ अति सुंदर ॥ ३८ ॥ जा मंडपमें विरञ्चि जे ब्रह्मा हैं तिनके वासगृहकी ऐसीनिथंभ कहे थंभनकी राजिका पंगतिरचीहै अर्थ ब्रह्माके मंदिर सदृशमंडपबन्योहै विचित्रवाससीनि पाठ होइ तौ विचित्र वाससीनि कहे विचित्र वस्त्रन करिकै अर्थ परदान करिकै थंभराजिका रचीहै बनीहै अर्थ अनेक रंग के परदा लगे हैं वितान चँदोवा श्याम कहे बैंजनी नीलिका जो लीलहै तासों रंगे हरिण जानो मानो भू आकाश जे दूनो दिशा हैं तिनके परस्पर समान विंव कहे प्रतिविंव से जने हैं अर्थ भूमें जे बिछावने हैं तिनके प्रतिविंव आकाश में जगे हैं औ आकाश में वितानहैं तिनके प्रतिबिम्ब भूमे जगेहैं यासों या जानो जहां जारंग को वितान तन्योहै तहां ताही रंगके बिछा-वने हैं "विंवन्तुप्रतिबिम्बेपीतिमेदिनी" ॥ ३९ ॥

मू०—पद्धटिकाछन्द ॥ गजमोतिनकीअवलीअपार ।
तहँकलशनपरउरमातिसुढार । शुभपूरितरतिजनुरुचिरधार ।
जहँतहँअकाशगंगाउदार ॥ ४० ॥ गजदन्तनकीअवलीसुदे-
श । तहँकुसुमराजराजतसुवेश ॥ शुभनृपकुमारिकाकर-
तिगान । जनुदेविनकेपुष्पकबिमान ॥ ४१ ॥ तामरसछन्द ॥
इतउतशोभितसुन्दरिडोलैं । अर्थअनेकनिबोलनिबोलैं ॥
सुखमुखमंडलचित्तनिमोहैं । मनहुँअनेककलानिधिसो
हैं ॥ ४२ ॥ भ्रुकुटिविलासप्रकाशितदेखे । धनुषमनोज
मनोमयलेखे ॥ चरचितहासचन्द्रिकनिमानो । सुखमु-
खवासनिवासितजानो ॥ ४३ ॥

टी०—मण्डपकी रति कहे प्रीति सों पूरित मानों रुचिर धार कहे प्रवाहन करिकै मण्डपमें जहां तहां उदार सुन्दर आकाश गंगा है अर्थ गजमोतिन की

माला हैं ते मानो अनेक धारा ह्वै मण्डपमें आकाशगंगा राजती हैं ॥ ४० ॥ गजदन्त जे टोडा हैं तिनकी अवली सुदेश कहे सुन्दर रौसयुक्त बनी हैं आकाश में वर्त्तमान विमान सदृश गजदन्त के रौसहैं देवी सरिस नृपकुमारिका ह ॥ "नागदन्तोहस्तिदन्ते गेहान्निःसृतदारुणी" त्यभिधानचिन्तामणिः ॥ ४१ ॥ कलानिधि चन्द्रमा। ॥ ४२ ॥ मानो मनोजमय कहे मनोज प्रधान मनोज जो कन्दर्प है सोई है प्रधान देवता जिनके ऐसे धनुषहैं अर्थ मानो कामके धनुष हैं यह लेखे कहे ठहरायो है अथवा मनोमय कहे अनेक मनन करिकै युक्त अर्थ सुन्दरतासों जिनमें अनेक मन वसे हैं ऐसे मनोजके धनुषहैं चर्चितपूजितयुक्तेतिसुखकहे स्वाभाविक ॥ ४३ ॥

मू०–दोहा ॥ अमलकपोलैआरसी, बाहूचम्पकमार ॥ अवलोकनैविलोकियें, मृगमदमयघनसार ॥ ४४ ॥ गतिको मारमहावरे, अंगअंगकोभार ॥ केशवनखशिखशोभिजै, शोभाई शृंगार ॥ ४५ ॥ सवैया ॥ बैठेजरायजरेपलिका पररामसियासबकोमनमोहै । ज्योतिसमूहरहेमढिकैसुरभूलि रहेबपुरोनरकोहै । केशवतीनिहुँलोकनकीअवलोकिवृथा उपमाकविटोहै । शोभनसूरजमंडलमांझमनोकमलाकमला पतिसोहै ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ गंगाजलकीपागशिर, सोहत श्रीरघुनाथ ॥ शिवशिरगङ्गाजलकिधौं, चन्द्रचन्द्रिका साथ ॥ ४७ ॥ तोमरछन्द ॥ कछुभ्रुकुटिकुटिलसुवेश । अतिअमलसुनिलसुदेश ॥ विधिलिख्योशोधिसुतंत्र । जनु-जयाजयकेमंत्र ॥ ४८ ॥

टी०–॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ टोहैं कहे खोजत हैं ॥ ४६ ॥ गंगाजल कपरा पश्चिम में प्रसिद्ध है तो वडे लोग व्याह समयही में पीतपाग बांधत हैं औ यह विदा के रोजको वर्णन है तासों श्वेतपाग कह्यो अथवा चौदहवें प्रकाशमें कह्योहै कि ॥ "समुझै नसूरप्रकाश । आकाशवलितविलाश ॥ पुनिऋक्षलक्ष निसंग । जनुजलधिगंनतरंग" ॥ औ पन्द्रहवें प्रकाशमें कह्योहै कि, "वीचबीचहैं कपीश वीचवीचऋक्षजाल । लंक कन्यका गरे कि पीतनीलकण्ठमाल" ॥ तौ

पीत बानरनको गंग तरंगसम कह्यो तैसे ह्याँऊ पीतपागको गंगाजल सम कह्यो तासों श्वेतपीतकी औ हरित श्यामकी कहूं समता करतहैं यह कविनियम है ॥ ४७ ॥ सुमिल चिक्कण सुदेश सुन्दर सुतंत्र कहे स्वच्छंद जे विधि हैं तिन लिख्यो है अथवा सुष्ट जो तंत्रशास्त्रहै तासों शोधिकै ढूंढिकै अथवा शुद्ध करिकै मानो विधातैं जाके पास होइ ताके जयको शत्रुके अजयको मंत्र लिख्यो है अथवा जायके अर्थ अजय कहे काहूके जीतिवे योग्य नाहीं ऐसे जे श्रीराम चन्द्र हैं तिनको जय कहे जीतिको मंत्रविधि लिखि दियो है जासों रामचन्द्र सबको जीतत हैं वश्य करत हैं अथवा जया जो पार्वती हैं तिनहूंके जयको जीतिवेको मंत्र लिख्यो है यासों या जनायो पतिव्रतमें अग्रगणनीय जे पार्वती हैं तेऊ जिनको देखि वश्यहोयँ तो और स्त्री पुरुषकी कहाँ बातहै आशय कि अति सुन्दर हैं " जयाजयन्तीतिथिमित्यथोमातत्सखीषु च " । इति-मेदिनी ॥ ४८ ॥

मू०-दोहा ॥ यदपिभ्रुकुटिरघुनाथकी, कुटिलदेखियत ज्योति ॥ तदपिसुरासुरनरनकी, निरखिशुद्धगतिहोति॥४९॥ श्रवणमकरकुण्डललसत, मुखसुखमाएकत्र ॥ शशिसमी-पसोहतमनो, श्रवणमकरनक्षत्र ॥ ५० ॥ पद्धटिका छन्द ॥ अतिवदनशोभसरसीसुरंग । तहँकमलनयननासा तरंग ॥ जनुयुवतिचित्तविभ्रमविलास । तेइभ्रमरभँवतरस रूपआस ॥ ५१ ॥

टी०-मानो शशिके समीप कहे दोनों और निकट उदित द्वै श्रवण नक्ष-त्रमें द्वै मकरराशि शोभित हैं नक्षत्र पदको सम्बन्ध श्रवण मोंहै अथवा श्रवणमो मकरराशि स्वरूपके नक्षत्र कहे तारा मकरराशि स्वरूपेति शोभितहैं युक्ति यह कि, उत्तराषाढ श्रवण धनिष्ठा तीनि नक्षत्रनमें मकरराशि को बास है सो मानो श्रवणही में वर्त्तमान द्वै शशिके दुवौ ओर शोभित है श्रवण नक्षत्रकी औ कर्णकी शब्दसाम्यहै औ मकरराशिकी औ कुण्डलको रूप साम्यहै शशि सदृश मुखहै ॥ ४९ ॥ ५० ॥ सरसीतडाग सुरंगनिर्मलरामचन्द्रकेनेत्रशोभामें भ्रमतेहैं विलास कौतुक जिनको ऐसे जे युवतिनके चित्तहैं तेई भ्रमर भँवतहैं रस मकर-

न्दरूपी जो रूपशोभा है ताकी आशा सों अर्थ जैसे मकरन्दकी आश करि तडागमें भँवर भँवतहैं तैसे रूपकी आश करि रामचन्द्रके मुखपर सीनके चित्त भ्रमत हैं ॥ ५१ ॥

मू०--निशिपालिका छन्द ॥ शोभिजातिदन्तरुचिशुभ्र उरआनिये । सत्यजनुरूपअनुरूपकवखानिये ओंठरुचिरेखसविशेषशुभश्रीरये । शोधिजनुईशशुभलक्षणसबैदये ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ ग्रीवाश्रीरघुनाथकी, लसतिकम्बुवरवेप ॥ साधुमनोवचकायकी, मानोलिखीत्रिरेप ॥ ५३ ॥ सुन्दरीछन्द ॥ शोभनदीरघबाहुविराजत । देवसिहातअदेवतेलाजत ॥ बैरिनकोअहिराजबखानहुँ ॥ हैहितकारिनकीध्वजमानहुँ ॥ ५४ ॥ यौंउरमैंभृगुलातबखानहुँ । श्रीकरकोसरसीरुहमानहुँ ॥ सोहतिहैउरमेंमणियोजनु । जानकीकोअनुरागरह्योमनु ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ सोहतजनरतरामउर, देखतजिनकोभाग ॥ आइगयोऊपरमनो, अन्तरकोअनुराग ॥ ५६ ॥

टीका—शुभ्रश्वेतसत्यकहेनिश्चयजानो रूपसुन्दरताकेअनुरूपक कहे प्रतिमा वखानियतहै अथवा. जानो सत्य जो पदार्थ है ताके रूपकेअनुरूपकप्रतिमाहै सत्यकोरूपश्वेतहै ॥ ५२ ॥ कंबुशंखमनसावाचा कर्मणा करिकै जो रामचन्द्र साधु हैं तिन तीन्योंकी मानों विधातैं तीनि रेखा लिखिदियो है निश्चयबातको रेखा खींचि कहिवेकी रीति लोकमें प्रसिद्ध है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ रामचन्द्रके उरमें लक्ष्मी वास कियेहैं ताके करको मानो कमल है मणि कौस्तुभ मणि अनुरागकी मन सदृशकह्यो तासों अरुण जानों ॥ ५५ ॥ वाही मणिकी फेरि उत्प्रेक्षा करत हैं जन जे दासहैं तिनमें रतकहे संलग्न जो अनुराग रामचन्द्रके उरमें शोभित है सो बाढिकै उर अन्तर ते मानो ऊपर आइगयो है ताको जे देखत हैं तिनको बडो भागहै ॥ ५६ ॥

मू०—पद्धटिकाछन्द ॥ शुभमोतिनकीदुलरीसुदेश । जनुवेदनके अक्षासुवेश ॥ गजमोतिनकीमालाविशाल । मन्मानहुँसन्तनकेमराल ॥ ५७ ॥ विशेषकछन्द ॥ श्यामदुवौपगलाललसैद्युतियोंतलकी । मानहुंसेवतिज्योतिगिरायसुनाजलकी ॥ पाटजटीअतिश्वेतसोंहीरनकीअवली । देवनदीकनमानहुँ सेवतभाँतिभली ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ कोबरणै रघुनाथछबि, केशवबुद्धिउदार ॥ जाकीकिरपाशोभिजाति, शोभासबसंसार ॥ ५९ ॥ दण्डक ॥ कोहैदमयन्तीइन्दुमतीरति रातिदिन होहिनछबीलीछबिइनजोशृंगारिये । केशवलजातजलजातवेद ओपजातरूपबापुरेविरूपसीताजोनिहारिये ।मदननिरूपमनिरूपननिरूपभयो चन्दबहुरूपअनुरूपकैविचारिये । सीताजूकेरूपपरदेवताकुरूपकोहैं रूपहीकेरूपकतौ वारिवारिडारिये ॥ ६० ॥

टीका—मरालहंस ॥ ५७ ॥ या प्रकार मानो त्रिवेणीरामचन्द्रके चरण सेवित है पाठ पदक्षेव है रेशम औ दुवौ कूलको अंतर ॥ ५८ ॥ बुद्धितुसार पाठ होइ तौ बुद्धिहै तुसार हेवार समक्षणभंगुरजाकी ॥ ५९ ॥ दमयन्ती नलकी स्त्री इन्दुमती अज की स्त्री रति काम की स्त्री इनको राति दिन शृंगारिये तौ सीताकी छवि समान इनकी छवि ना होइ जातवेद अग्नि जातरूप सुवर्ण निरूपम कहे जाके ऊपमा कोऊ नहीं अर्थ अति सुन्दर जो मदन है सो सीता जू के रूप समताके निरूपण में निर्णयमें लाजसों निरूप कहे निःस्वरूप निर्देहेति भयो औ बाटि बढिकै अनेक रूपको धर्ता जो चन्द्रहै ताको अनुरूपकै कहे असदृशै विचारियत है रूप जो सौंदर्य है ताहीके रूपक कहे साम्यको वारिवारि डारियत है ॥ ६० ॥

मू०—गीतिका छन्द ॥ श्रीशोभिजैसखिसुन्दरीजनुदामिनीवपुमंडिकै । घनश्यामकोजनुसेवहीं जडमेघओघनछंडि-

के ॥ यकुअंगचर्चितचारुनन्दनचन्द्रिकातजिचन्दको । जनु राहुकेभयसेवही रघुनाथ आनँदकंदको ॥ ६१ ॥ मुखएक हैंनतलोकलोचन लोललोचनकीहरे । जनुजानकीसँगशोभि जै शुभलाज देहनकोवरे ॥ तहँएकफूलनकेविभूषण एक मोतिनकेकिये । जनुक्षीरसागरदेवतातन क्षीरछीटनिकोछिये ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ पहिरेवसनसुरंग, पावकयुतस्वाहामनो ॥ सहजसुगन्धितअंग, मानोदेवीमलयकी ॥ ६३ ॥ चामर छंद ॥ मत्तदन्तिराजराजिबाजिराजराजिकै । हेमहीरमुक्त चीर चारुसाजसाजिकै ॥ वेषवेषबाहिनी अशेषवस्तुसोधि यो । दाइजोविदेहराज भाँतिभाँतिकोदियो ॥ ६४ ॥ वस्त्र भौनस्योंवितान आसनेविछावने । अस्त्रशस्त्रअंग त्रान भाजनादिकोगने ॥ दासिदासवासिबासरोमपाटकेकियो । दाइ जो विदेहराज भांतिभांतिकोदियो ॥ ६५ ॥

टी०-वपुमंडिक यह चंद्रिकाहू में जानौ ॥ ६१ ॥ एकन के मुख नत कहे लाजसों नीचेको नये हैं ते लोल लोचन करिकै लोक लोचनन को हरति हैं ॥ ६२ ॥ स्वाहा अग्नि की स्त्री पावक सम वस्त्र है स्वाहा सम स्त्री है ॥ ६३ ॥ मत्त जे दंतिराज गजराजहैं तिनकी राजि कहे समूह औ वाजिराज घोडेनकी राजिका कहे समूह और जे देवे के उचित वस्तु हैं तिन्हैं शोधियो कहे दीबे के लिये ढूँढ़ि ढूँढि मँगाइयो ॥ ६४ ॥ वितान कहे चँदोवा तामियानेति आसन भूपालन गद्दीति विछावने फरसरयो कहे सहित वस्त्र भौन कहे पाल डेरा इति दियो अंगत्राण वख्तर भाजन सुवर्णादिके पात्रवासि सुगंधसों युक्तकरिकै रोमवसी उत्तम कंबलादि पाठ वास पीतांवरादि दियो ॥ ६५ ॥

मू०-दोहा ॥ जनकराजपहिराइयो, राजादशरथसाथ ॥ छत्रचमरगजबाजिदै, आलसुत्रक्षितिनाथ ॥ ६६ ॥ निशि

पालिकाछन्द ॥ दानदियराजदशरथसुखपाइकै । शोधिऋ-षिऋष्यऋषिराजनिबोलाइकै ॥ तोषियाचकसल दादुरमयू-रसे । मेघजिमिवर्षिगजवाजियमयूरसे ॥ ६७ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-मिन्द्रजिद्विरचितायां सीताराम विवाहवर्णनंनामषष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

टी०–राजा दशरथ के साथ जे आसमुद्र के क्षितिनाथ रहे तिन्हैं राजा दश-रथके साथ जनकराज वरतौनीपहिरायो बिदा समयकी पहिरावनि वरतौनी नामकरि पश्चिमसों प्रसिद्ध है ॥ ६६ ॥ वरतौनीकी पहिरावनिके बादि जनकपुर-वासिनको राजा दशरथ यथोचितदानदियो ऋषिराजतपस्वी ब्रह्म ऋषिराज ब्राह्मणराज पदको अनुषंगऋषिहूमोंहै ॥ ६७ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सीतारामविवाहवर्णनंनामषष्ठः प्रकाशः ॥ ६ ॥

सू०–दोहा ॥ यहप्रकाशसप्तमकथा, परशुरामसंवाद ॥ रघुवरसोंअरुरोपत्यहि, भंजनमानविषाद ॥ १ ॥ विश्वामि-त्रविदासये, जनकफिरेपहुँचाइ ॥ मिलेआगिलीफौजको, परशुराम अकुलाइ ॥ २ ॥ चंचरीछन्द ॥ मत्तदन्तिअमत्त होगये देखि देखिनगज्जहीं । ठौर ठौरसुदेशकेशव दुन्दुभी नहिंवज्जहीं । डारिडारिहथ्यारशूरजजीवलैलैभज्जहीं ॥ का-टिकैतनत्राणएकैनारिवेषतलज्जहीं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ वामदेव ऋषिसोंकह्यो, परशुरामरणधीर । महादेवकोधनुषयह, को तोरेउबलवीर ॥ ४ ॥ वामदेव ॥ महादेवकोधनुषयह, पर-शुरामऋषिराज । तोरेउरायहकहतहीं, समुझेउरावणराज ॥ ॥ ५ ॥ परशुराम ॥ अतिकोमलनृपसुतनकी, ग्रीवादलीअ-पार ॥ अबकटोरदशकंठके, काटहुँकंठकुठार ॥ ६ ॥ परशु

राम–विजयछन्द ॥ बाँधिकैबाँध्योजोबालिबली पलनापरलै सुतकोहितठाढ़े । हैयहराजलियोगहिकेशवआयोहोक्षुद्रजो छिद्रनिडाढ़े । वाहेरकाढ़िदियोवलिदासिन जाइपरेउजोप-तालकेबाढ़े । तोकोकुठारबडाईकहा कहितादशकंठकेकंठ नकाढ़े ॥ ७ ॥

टी०–या प्रकाशमें परशुराम सो औ रघुवर सों सम्वाद है ताहीं रघुवरके रोष करिकै परशुरामके मानको औ आपने सैन्यके विषाद के दुःखको भंजन है ॥ १ ॥ २ ॥ यामें परशुरामके तेजको वर्णन है कि जिन परशुराम को देखि भयसों दशरथ चमूमें या दशा भई सूरय कहे शूरनके पुत्र अर्थ परम्पराके शूर अथवा सूरय सूर्यवंशी ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ बाध्यो कहे मारयो सुत जो अंगद है ताको पलना परसों अंकमें लैकै ताको हित कौतुक रावण मे ठाढ्यो अर्थ रावण को बालखेल बनायो सो कथा प्रसिद्ध है वालको अंक में लैकै कौ-तुक देखाइवो लोकरीति है क्षिद्रनिको डाढेकहे देखे अर्थ समय बिचारिकै है हयराज सहस्रार्जुनपैं युद्ध करिबेको आयोहो आयो रहे अथवा जाको हैहयराजा गहि लियो सो क्षुद्र क्षिद्रनिको डाढे अर्थ या समय जनकपुरमें परशुराम नहींहैं ऐसे अवसरको बिचारि कै आयो रहे ताके कण्ठ जो तू न काटै तौ तो को कहा बडाई है अथवा ताके कण्ठनको जो तू काटै तौ तोकों कहा बडाई है जाकी वालि आदि ऐसी दुर्दशा करी ताको कण्ठ काटिवो सहजहै इति भावार्थः ॥ ७ ॥

मू०–सोरठा ॥ यद्यपिहैअतिदीन, मोहितऊखलमारने ॥ गुरुअपराधहिलीन, केशवक्योंकरिछाँडिये ॥ ८ ॥ चन्द्रकलाछन्द ॥ वरवाणशिखीनअशेषसमुद्रहि सोखिसखासु-खहीतरिहौं । पुनिलंकहिऔटिकलंकितकै फिरिपंककतंकहिकीभरिहौं । भलभूजिकैनकसखाकसकै दुखदीरघदेवन कोहरिहौं । शितकंठकेकंठनकोकठुला दशकंठकेकंठनका करिहौं ॥ ९ ॥ परशुराम–संयुताछन्द ॥ यहकौनकोदल देखिये । बामदेव ॥ यहरामकोप्रभुलेखिये ॥ परशुराम ॥

कहिकौनरामनजानियो ॥ वामदेव ॥ शरताड़काजिनमारि-
यो ॥ १० ॥ परशुराम—विनयछन्द ॥ ताड़कासंहारी तिय
नविचारीकौनबडाईताहिहने ॥ वामदेव ॥ मारीचहुतेसंगप्र-
बलसकलखलअरुसुबाहुकाहूनगने ॥ करिक्रतुरखवारीगुरु
सुखकारी गौतमकीतियशुद्धकरी । जिनरघुकुलमंड्योहरध-
नुखंड्योसीयस्वयम्बरमांझबरी ॥ ११ ॥

टी०—जो ऐसो दीनहै ताकोमारिवो अनुचित है ता लिये कहतहैं ॥ ८ ॥
शिखीन कहे अग्नि सो सखा कुथारको सम्बोधन है सुखही कहे सहजही ॥ ९ ॥
॥ १० ॥ गुरुजे विश्वामित्र हैं तिनको सुखकारी क्रतु जो यज्ञहै ताको रखवारी
करिके ॥ ११ ॥

मू०—दोहा ॥ हरहूहोतोदंडद्वै, धनुषचढ़ावतकष्ट ॥
देखोमहिमाकालकी, कियोसोनरशिशुनष्ट॥ १२ ॥ विजय ॥
बोरोंसबैरघुवंशकुठारकी धारमेंबारनबाजिसरत्थहि । बा-
णकीवायुउडाइकैलक्षन लक्षिकरौअरिहासमरत्थहि । रामहिं
वामसमेतपठैबन कोपकेभारमेंभूंजोंभरत्थहि । जोधनुहाथ
धरैरघुनाथतौआजुअनाथकरौंदशरत्थहि ॥ १३ ॥

टी०—सरस्वती उक्तार्थ- स कहे सहित वै कहे निश्चय अर्थ निश्चयकरि
रघुवंशके जे कुठारशत्रुहैं तिन्हैं वारन बाजिरथ सहितकीकहे समुद्रादि जलाश-
यकी धारप्रवाहमें बोरों 'कंजलमस्मिन्नस्तीति' की अर्थ जामें जल रहै सो की
कहावै वंशपद श्लेष है बांसहू को नामहै ताकुठारपदकह्यो बारनबाजि सरथ कहि
या जनायो कि जामें उनको चिह्नऊ न रहै औ लक्षण कहे लाखन जे रघुवंश-
के शत्रु तिन्हैं वाण की वायुसों उडाइकै हा कहे हाइहाइ जो शब्द है ताहीमें
समरत्थलक्ष कहे निशाना करों अर्थ ऐसी वाणवृष्टि करों जामें केवल हाइहाइ-
कै और पराक्रम करिवे लायक ना रहै औ जयरामहि कहे केवल रामचन्द्रहीसों
वामकहे कुटिलता समेति है अर्थ जे रामहीके शत्रु हैं तिन्हैं वनको पठै देउँ
औ जे भरत्थहि वाम समेति हैं अर्थ भरत के शत्रु हैं तिन्हैं शोकके भारमें
भूंजों औ जो धनुष को रघुनाथ हाथमें लियो कहे उठायो तौ आजु दशरथ को

अनाथ कहे जाकोनाथ कोऊ नहीं अर्थ सबको नाथकर्गे कहे करिनाना तौ सबके नाथ जे विष्णु हैं तिनहीं के शंभु धनुपतोरिबे की सामर्थ्यहै तातें तेई विष्णु रामरूपहै दशरथके पुत्र भये यह निश्चय करि दशरथको सर्वोपरि मानो इतिभावार्थः ॥ १२ ॥ १३ ॥

मू०-सोरठा ॥ रामदेखिरघुनाथ, रथतेउतरेवेगिहै ॥ गहे-भरतकोहात, आवतरामविलोकियो ॥ १४ ॥ परशुराम-दंडक ॥ अमलसजलघनश्यामवपुकेशवदास चंद्रहूतेचारु मुखसुखमाकोग्रामहै ॥ कोमलकमलदलदीरघविलोचननि सोदरसमानरूपन्यारोन्यारोनामहै । बालकविलोकियतपूरण पुरुषगुण मेरोमतमोहियतऐसोएकयामहै ॥ वैरमानिवामदेव-कोधनुषतोरोइन जानतहौंबीसविशेरामवेपकामहै ॥ १५ ॥ भरत-गीतिकाछन्द ॥ कुशमुद्रिकासमिधैंस्रुवाकुशऔकमं-डलकोलिये । करमूलशरधनतर्कसी भृगुलातसीदरशैहिये ॥ धनुबाणतिक्षकुठारकेशव मेखलामृगचर्मसों । रघुवीरको यहदेखियेरसवीरसात्त्विकधर्मसों ॥ १६ ॥ राम-नाराचछ-न्द ॥ प्रचंडहैहयाधिराजदंडमानजानिये । अखंडकीर्तिले यभूमि देयमानमानिये ॥ अदेवदेवजेअभीतरक्षमानलेखिये । अमेयतेजभर्गभक्त भार्गवेशदेखिये ॥ १७ ॥

टी०-राम परशुराम ॥ १४ ॥ पूरण पुरुष विष्णु याम पहर वामदेव महादेव ॥ १५ ॥ कुश मुद्रिका कहे पैंतीसमिधें होम की लकडी करमूल कहे कांधा में है शरधन घने बान सों पूरित तरकस जाके मेखला कटिभूषण धनुर्बाण धारणादि वीररसको धर्म है औ कुश मुद्रिका धारणादि सात्त्विक प्राणीको धर्म है ॥ १६ ॥ प्रचंड जे हैहयादि सहस्रार्जुनादि राजा हैं तिनके दंडकर्त्ता हैं अर्थ सहस्राजुनादिकनको नाश इनहिंन कियो है औ अखण्ड कहे पूर्ण कीर्तिके लेयमान लेवैयाहैं औ अखंड भूमिके देयमान कहे देवैया हैं अखण्ड पदको संबंध भूमिहूंमहे अदेव दैत्य औ देवनके जेयमान जीतनहार हैं मानपदको संबंध लेय जेयहू में है औ भीत जे भय युक्त हैं तिनके रक्षमान रक्षक हैं अमेय

कहे अपरिमान वडो द्युति है तेज जिनको औ भर्ग महादेवके भक्तहैं औ भार्गव जे भृगुवंशीहैं तिनके ईशहैं अर्थ भृगुवंशमें ये वडे ऐश्वर्य युक्त हैं ॥ १७ ॥

मू०—तोमरछन्द ॥ सहभरतलक्ष्मणराम ॥ चहुँकियेआनिप्रणाम ॥ भृगुनन्दआशिषदीन । रणहोहुअजयप्रवीन ॥ ॥ १८ ॥ परशुराम ॥ सुनिरामचन्द्रकुमार । मनवचनकीर्तिउदार ॥ राम ॥ भृगुवंशकेअवतंश । मनवृत्तिहैकेहिअंश ॥ १९ ॥ परशुराम ॥ मदिराछन्द ॥ तोरिशरासनशंकरको शुभसीयस्वयंबरमांझबरी ॥ तातेबढ्योअभिमानमहामन मेरीयोनेकनशंककरी ॥ राम ॥ सोअपराधपरोहमसों अबक्योंसुधरैतुमहूंधौंकहो ॥ बाहुदैदोउकुठारहिकेशव आपनेधामकोपंथगहो ॥ २० ॥

टी०—अजय कहे जाको कोऊ न जीति सके ॥ १८ ॥ हमारे वचन सुनो औ उदार कीर्ति सुनो अथवा कीर्ति है उदार जिनकी ऐसे हमारे वचन सुनो अथवा कीर्ति उदार रामचंद्रको संबोधन है तुम्हारो मन वृत्ति के केहि अंश कहे भाग मोहै अर्थ मनोभिलाष कहाहै जो होइ सो कहो ॥ १९ ॥ सरस्वती उक्तार्थः अनेक राजा जामें हारि गये ताशरासनको तोरयो स्वयम्बरके मध्यमें सीताको वर्यो तासों तुम्हारे वडो अभिमान वाढ्यो है सो उचितही है जो एतो पराक्रम करै ताके अभिमान वढचौईचाहै औ सकल क्षत्रिन को नाशकर्ता जो मैं हौं ताहू की शंका तुम ना करी तासों तुम्हारे बलको समुझि हमारे भय भयो है तासों सकल क्षत्रिनके नाशको हमारो दोष क्षमा करि हमारे दोऊ बाहु औ हमारो कुठार आपनो करि हमको देकै आपने घरको जाव इनहीं कारणसों याही कुठार सों क्षत्रिन को क्षयकह्यो है तासों तुम करिकै वाहु कुठार खंडिवेकी शंका है सो तुम वचन करि हमको दैकै निर्भय करौ इतिभावार्थः ॥ अथवा या कुठार को दोऊ बाहैं देकै आपने धामको जाउ बाहैं बीर देवेकी रीति लोकमें प्रसिद्ध है कुठार को वडो दोष है तासों दोऊ बाहैं देवे कह्यो ॥ २० ॥

मू०—राम—कुंडलिया ॥ टूटैटूटनहारतरु वायुहिदीजतदोष । त्योंअबहरकेधनुषकोहमपरकीजतरोष ॥ हमपरकीज-

तरोषकालगतिजानिनजाई । होनहारह्वैरहैमिटैमेटीनमिटाई ॥ होनहारह्वैरहैमोहमदसबकोछूटै ॥ होइतिनूकावज्रवज्रतिनुकाह्वैटूटै ॥ २१ ॥ परशुराम-विजयछन्द ॥ केवशहैहयराजकोमाससहलाहलकौरनखाइलियोरे । तालगिमेदमहीपनको घृत घोरिदियोनसिरानोहियोरे । खीरषडाननकोमदकेशवसोपलमेंकरिपानलियोरे । तौलौंनहींसुखजौलहुंतूरघुवंशकोशोनसुधानपियोरे ॥ २२ ॥

टी०-हैहयराजको मासरूपी जो हलाहल विष है मेद चरबी खीर दूध षडाननस्वामिकार्तिक यायुक्तिसों आपनो सकलबल कृत सुनाय भयदेखायो सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे कुठार ! यद्यपि तू ऐसे क्रतु करयो है परंतु जबलग स्ववश जे रामचंद्रहैं तिनको सो कहे तिनको ऐसो न कहे स्तुत्य मधुर इति सुधासरिस वचन नहींपियो तौलौं तोको सुख नहीं है इहां सुधा जो उपमानहै ताके उच्चारसों मधुर वचन उपमेयको ग्रहण कियो तू सकल क्षत्रिनको क्षयकरयौ है औ ये आत बलवान क्षत्रवंशमें उत्पन्न भये सो वैर समुझि तेरो नाशकरिबेको समर्थ हैं ताते ये जबलौं मधुर वचनसों तेरो दोषक्षमानहींकरत तौलौं तोको सुखनहीं है इतिभावार्थः । "नः पुमान्सुगते वंधेद्विरण्डप्रस्तुते पिचेतिमेदिनी" ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०-भरत-तंत्रीछन्द ॥ बोलतकैसेभृगुपतिसुनियेसोकहियेतनमनबनिआवै ॥ आदिबड़ेहौबडपनराखौ जातेतुमसब जगयशपावौ ॥ चन्दनहूंमेंअतितनघरियेआगिउठैयहगुण सबलीजै । हैहयमारेनृपतिसंहारेसोयशलैकिनयुगयुगजीजै ॥ २३ ॥ परशुराम-नाराचछंद ॥ भलीकहीभरत्थतैंउठाय आगिअंगतैं । चढाउचोपिचापआपबाणलैनिषंगतैं ॥ प्रभाउआपनोदेखाउछोडिबालभाइकै । रिझाउराजपुत्रमोहिंराम लैछुडाइकै ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ लियोचापजबहाथ, तीनिहुभैयनरोपकरि बरज्योश्रीरघुनाथ,तुमबालकजानतकहा ॥२५॥

रा०—दोहा ॥ भगवन्तनसोंजीतिये, कबहुँनकीनेशक्ति ॥ जीतीएकैबातमें,केवलकीनेभक्ति ॥ २६ ॥ हरिगीतछंद ॥ जबहथोहैहयराजइनबिनक्षत्रक्षितिमण्डलकरचो । गिरिवेध षण्मुखजीतितारक नंदकोजबज्योंहरचो ॥ सुतमैनजायोराम सों यह कह्योपर्वतनंदिनी । वहरेणुकातियधन्यधरणीमेंभ-ईजगवंदिनी ॥ २७ ॥

टी०—सो बात कहौ जो तनमनसों बनिआवै अर्थ करत बनि परै यासों या जनायो कि जो कहत हौ सो तुमका मनहू सों करिबे को दुर्लभ है ॥ २३ ॥ भरत कह्यो है कि घसत घसत चंदनहूमें आगि उठति हैं तासों परशुरामकह्यो कि अंगसों आगि उठावो सरस्वतीउक्तार्थः॥ कि हमारेसंगपरशुराम सों रामचन्द्र लरि हैं यह जो रामचन्द्र प्रति तुम्हारो लै कहे चोप है ताको छिडाइ कहे त्यागि कै तुम हमका आपनी कृत देखाय कै रिझाउ कहे प्रसन्न करो अथ रामचन्द्रको भरोसो छोडि हमसों तुम लरौ तौ हम लरैं रामचन्द्र सों लरिबे लायक हम नहीं हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ क्रौंचनामाजोगिरि है ताके वेधन हार जे षण्मुख कहे स्वामिकार्तिक हैं तिनको जीति कै तारकासुर को जो नंदनपुत्र है ताको ज्यों हत्यो मारचो ऐसे ऐसे इनके कृत्य देखि कै पार्वती कह्यो कि ऐसो पुत्र हमारे न भयो तब रेणुका परशुरामकी माता जगवंदिनी भई औ धन्य भई ऐसो परा-क्रम परशुराम देखिकै रेणुकाको सब जगवंदना करिकै कह्यो धन्य है रेणुका जाके ऐसो पुत्र भयो या प्रकार रामचन्द्र परशुरामकी स्तुति कियो ॥ २७ ॥

मू०—परशुराम—तोमरछन्द ॥ सुनुरामशीलसमुद्र । तवबंधु हैंअतिक्षुद्र ॥ ममबाडवानलकोप । अबुकियोचाहतलोप- ॥ २८ ॥ शत्रुघ्न—दोधक ॥ हौभृगुनंदबलीजगमाहीं, राम विदाकरियेघरजाहीं, हौंतुमसोंफिरियुद्धहिमाडौं ॥ क्षत्रिय वंशकोवैरलैछांडौं ॥ २९ ॥ तोटकछंद ॥ यहबातसुनीभृ-गनाथजबै । कहिरामहिंलैघरजाहुअबै ॥ इनपैजगजीवतजो बचिहौ । रणहौंतुमसोंफिरिकैरचिहौ ॥ ३० ॥ दोहा ॥ नि

जअपराधीक्योंहतौं, गुरुअपराधीछांडि । तातेकठिनकुठार अब, रामहिंसारणमांडि ॥ ३१ ॥

टीका०-बडवानलरूपीजो हमारे कोप है सो इनको लोग भस्म कियो चाहत है ॥ २८ ॥ २९ शत्रुघ्नजीकी यह बात सुनि भृगुराम कह्यो कि तुम रामचन्द्रको लैकै घर जाहु इनपै शत्रुघ्नपै युद्ध करि जो जीवित बचि है तब तुमसों रण करि हों ॥ ३० ॥ गुरु अपराधी रामचन्द्र निज अपराधी शत्रुघ्न सरस्वती उक्तार्थः- निज ते अपनाते हमते इति है अपरा कहे अन्य अधिक इति है बुद्धि जिनकी इहां बुद्धिउपलक्षणमात्र है बुद्धि पदते बुद्धिबल विद्यादि जानो ऐसे जे रामचन्द्र हैं तिनको कैसे मारौं अर्थ इनके मारिबे को समर्थ नहीं हों फेरि कैसे हैं गुरु जे शिव हैं तिनहूंनते अपराधी कहे बल विद्यादि करि अधिक हैं जिनको शिवहू ध्यान करत हैं ताते मारिबे की आशा करि छांडिकै हे कठिन कुठार रामचन्द्र हीको सो रनकहे स्तुतिसों रनसों मांडि कहे युक्तकरौ अर्थरामचन्द्रकी स्तुति करो जो कहो कुठार तौ बोलत नहीं कैसे स्तुति करि है तो सबमें अभिमानी देवतारहत है ता करिकै स्तुति करिबे को समथ है जैसे समुद्रको अभिमानी देवता रामचंद्रकी स्तुति करचो है औ लंका हनूमानको रोक्यो है ॥ ३१ ॥

मू०-परशुराम-विजयछंद ॥ भूतलकेसबभूपनकोमद भोजनतावहुभांतिकियोई । मोदसोंतारकनंदकोमेदपछ्याचरिपानसिरायोहियोई । खीरपडाननकोमदकेशवसोपलमें करिपान लियोई ॥ रामतिहारेइकंठकोश्रोणितपानको चाहैकुठार कियोई ॥ ३२ ॥ लक्ष्मण-तोटक ॥ जिनको अनुग्रहवृद्धिकरै । तिनकोकिमिनिग्रहचित्तपरै ॥ जिनको जगअच्छतशीशधरै । तिनकोतनसक्षतकौनकरै ॥ ३३ ॥ राम-मदिराछन्द ॥ कंठकुठारयशैअबहार किफूलअशोकसशोकसमूरे ॥ कैचित्रसारिचढैकिचितातनचन्दनचित्र किपावककूरे ॥ लोकमलोकबडोअपलोकसुकेशवदासजो

होउसोहोऊ । विप्रनके कुलकोभृगुनन्दनसूरजकेकुल शूरनकोऊ ॥ ३४ ॥

टी०–पछचावरि शिखरनि को भेद है खीर दूध सरस्वती उक्तार्थः हे राम ! तिहारे कंठ को कहे शब्द को अर्थ मधुर वचन पानि कै सो कुठार नितहीं पियो पान कऱ्यो चाहतहै अर्थ सुन्यो चाहत है ॥ "कंठोगलेसन्निधौनिध्वनौ मदनपादपे" इति मेदिनी ॥ ३२ ॥ जिन ब्राह्मणनको अनुग्रह कृपा सब को वृद्धि करत है तिनको निग्रह दंड हमारे चित्तमें कैसे परै कहे आवै औ जिनके शीशमें जग अक्षत धरत है अर्थ पूजन करत है तिनको तन साक्षात कहे खंडित को करे या जनायो ब्राह्मण अवध्य है तासों तुम को नहीं मारते ॥ ३३ ॥ चहै अशोक सुख चहै शोक दुख फूलो होइ लोक यश अपलोक अयश ॥ ३४ ॥

मू०–परशुराम–विशेषकछन्द ॥ हाथधरेहथियारसबैतुम शोभतहौ । मारनहारहिदेखिकहामनक्षोभतहौ ॥ क्षत्रियके कुलह्वैकिमिबैननदीनरचौ । कोटिकरोउपचारनकैसेहुमीचबचौ ॥ ३५ ॥ लक्ष्मण ॥ क्षत्रियह्वैगुरुलोगनके प्रतिपालकरैं । भूलिहुतौतिनकेगुणऔगुणजीनधरैं । तौहमकोगुरुदोषनहीं अबएकरती । जोअपनीजननी तुमहींसुख पाइहती ॥ ३६ ॥

टी०– लक्ष्मण औ रामचंद्र के नम्र वचन सुनिकै भय युक्त जानि परशुराम कह्यो कि, मारन हार जो मैं हूं ताको देखि कै कहा क्षोभत डरात हौ सरस्वती उक्तार्थः सबै कहे चारों भाई तुम हाथन में हथियार धरे ऐसे शोभत हौ कि, मारनहार जे यमराज हैं तिनहुन को देखिकै कहा क्षोभत डेरात हौ अर्थ तुम यमराजहूको नहीं डरात हौ औ क्षत्रिय के कुलमें ह्वैके किमि कहे काहे दीन बैन हम सों ना रचौ ब्राह्मणसों क्षत्रिय को अधीन रहिबोई उचित धर्महै कछू नयसों तुम दीनवचन नहीं कहत काहेते कि कोटि उपचार यत्न करौ कहे करै अर्थ ब्रह्मादिहू की शरण में जाइ औ तुम मीच को मारो चाहौ तो कैसेहू न बचौ कहे बचै ॥ ३५ ॥ जो तुमही अपनी जननी माता को सुख पाइकै माऱ्यो तुमको कछु गुरु दोष ना भयो तौ तुम्हारे मारे सों हमहूं को गतिहू भरि गुरुदोष-

नहीं है जननीको वधजनाइ या जनायो कि तुमने ऐसे स्त्रीवधादि पराक्रम करयोहै अथवा गुरुद्रोपीजनायो ॥ ३६ ॥

मू०—परशुराम—विजयछन्द ॥ लक्ष्मणकेपुरिषान कियो पुरुपारथसोनकह्योपरई । वेपबनाइकियोबनितानकोदेखत केशव ह्योहरई । क्रूरकुठारनिहारितजैफलताकीयहैजो हियोजरई । आजुतेकेवलतोकोमहाधिकक्षत्रिनपैजोदयाकरई ॥ ३७ ॥ गीतिकाछन्द ॥ तबएकविंशतिबेरमैंबिनक्षत्रकी पृथिवीरची। बहुकुंडश्रोणित सोंभरेपितृतर्पणादिक्रियासची ॥ उबरेजेक्षत्रियक्षुद्रभूतलशोधिशोधिसंहारिहौं । अबबालवृद्धन ज्वानछाँड़हुँधर्मनिर्दय पारि हौं ॥ ३८ ॥

टी०—सरस्वतीउक्तार्थः लक्ष्मण के पुरिखान वडेन जो पुरुषारथ कियो है सो कह्यो नहीं परत कहा पुरुषारथ करचो जिन वनितन को वेष वनायो अर्थ वनिता रच्यो गौतम की स्त्रीको पाथर सों स्त्री बनायो जाको देखत हियो हरिजात है अर्थ अति सुंदरी बनायो तौ या जनायो सृष्टि करिवे को समर्थ है याही विधि दशरथ भगीरथादि के कृत गंगा ल्याइबो आदि जानो सो हेक्रूरकुठार ! तिनको निहारि कै तजै कहे छोडै अर्थ इनके समीपते अन्यत्र जाइ तौ ताको इनके बियोग को यहै फल है जो हृदयजरई कहे जरतहै अर्थ अति सुंदररूप जे येहैं तिनके वियोग सों हृदयजरत है इनके योगको यहै फल है तासों जो तेरो इनको वियोग ह्वै है ता तैसे हियोजरिहै सोआजकेवल कहे एक तोको महा अधिक कहे महाउत्तम है जो क्षत्रिन के ऊपर दया करु आजुतक क्षत्रिनको वध करचो ता क्षत्र वर्णनमें ये ऐसे रूप गुण बलादि पूरित भये तासों अब क्षत्र वर्णकी रक्षा करिबो तोहिं उचितहै तिनके निकट रहि सहायता करि क्षत्रीवर्ण तोको रक्षणीय है ॥ ३७ ॥ सची कहे करी ॥ ३८ ॥

मू०—राम—दोहा ॥ भृगुकुलकमलदिनेशसुनि, ज्योति सकलसंसार ॥ क्योंचलिहैइनशिशुनपै, डारतहौयशभार ॥ ३९ ॥ परशुराम—सोरठा ॥ रामसुबन्धुसँभारि, छोडत हौंशरप्राणहर ॥ देहुहथ्यारनडारि, हाथसमेतिनबेगिदै ॥ ४० ॥

राम-पद्धटिकाछंद ॥ सुनिसकललोकगुरुजामदग्नि । तपविशिषअशेषनकीजोअग्नि ॥ सबविशिषछाँड़िसहिहौंअखंड । हरधनुषकरचोजिनखंडखंड ॥ ४१ ॥ परशुराम-सवैया ॥ बाणहमारेनकेतनत्राणविचारिबिचारिविरंचिकरेहैं । गोकुलब्राह्मणनारिनपुंसकजेजगदीनसुभावभरेहैं ॥ रामकहा करिहौतिनकोतुमबालकदेवअदेवधरेहैं । गाधिकेनंदतिहारेगुरूजिनतेऋषिवेषकियेउबरेहैं ॥ ४२ ॥

टी०-सकलसंसारको जीतिकै जो यश एकत्र करचो है सो इनसों लरिकै हारिकै ता यशको बोझ इनबालनपै डारत हौ इनसों कैसे चलिहै इनसों लरिहौ तौ हारिजैहौ इति भावार्थः ॥ ॥ ३९ ॥ रामचन्द्र के सतर्क वचन सुनि परशुराम कोप करि बोले सो अर्थ खुलो है सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे हर महादेव! इनके शर करिकै मैं प्राण छोडतहौं अर्थ ये बाण सों मेरे प्राण हरचो चाहतहैं तासों बन्धुसहित जो कोपयुत रामचन्द्र हैं तिनको तुम सँभारि कहे सम्हारौ ये अब तुम्हारेई सँभारन लायक हैं जासों ये हाथन सों समेतन कहे सबन हथ्यारन को डारि देहिं जब तक ये हाथ में हथ्यारधरे रहिहैं तबतक हमारे भय बन्यो है तासों तुम इनको कोप शांत करि हथ्यार उतरावो आगे महादेव आयऊबे भये हैं ॥ ४० ॥ तपके जे अशेष विशिष बाण हैं विशिष पदते शाप जानौ तिनकी अग्नि औ और सब बाणनको छाँडौ ते अखंड कहे निर्विघ्न सहिहौं अर्थ हमारे ऊपर शाप औ बाण दुवो चलाओ हम सहि हैं ॥ ४१ ॥ सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे राम! तिन बाणन को तुम कहा करिहौ अर्थ कहा कियो चाहत हौ अर्थ इनको प्रभाव लोप कियो चाहतहौ तुम कैसेहौ बालकताही में देव औ अदेव तुम को डरे हैं ॥ ४२ ॥

मू०-श्रीराम-षट्पद ॥ भगनभयोहरधनुषशालतुमको अवशालै । वृथाहोइविधिसृष्टिईशआसनतेचालै ॥ सकललोकसंहरहुशेषशिरतेधरडारैं । सप्तसिंधुमिलिजाहिहोहिंसबहीतमभारैं ॥ अतिअमलज्योतिनारायणीकहिंकेशवबुडि

जाहिबरु । भृगुनंदसँभारुकुठारमैंकियोशरासनयुक्तशरु ॥ ॥ ४३ ॥ स्वागताछंद ॥ रामरामजवकोपकरयोजू ॥ लोक लोकभयेभूरिभरयोजू ॥ वामदेवतवआयुनआये । रामदेव दोउसमुझाये ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ महादेवकोदेखिकै, दोउरा-मविशेष ॥ कीन्होंपरमप्रणामउन, आशिपदियोअशेष ॥ ॥ ४५ ॥ महादेव--चतुष्पदी ॥ भृगुनंदनसुनियेमनमहँगुनि-येरघुनंदन निर्दोषी । निजयेअविकारीसबसुखकारीसबहीविधि संतोषी ॥ एकैतुमदोऊऔरनकोऊएकैनामकहायो । आयु-बलखूट्योधनुषजोटूट्योमैंननमनसुखपायो ॥ ४६ ॥ महा-देव--पद्धटिका छंद ॥ तुमअमलअनंतअनादिदेव । नहिंवे-दबखानतसकलभेव ॥ सबकोसमाननहिंवैरनेह । सबभक्त-नकारनधरतदेह ॥ ४७ ॥

टी०—जब गुरुजे विश्वामित्रहैं तिनकी निंदा करचो तब रामचन्द्र कोप करिकै बोले ईश महादेव आसन योगासनते चालै कहे चले सबही कहे सर्वत्र अर्थ चौदहों लोकमें ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ निर्दोषी हैं अर्थ धनुप तोरनेमें इनको कछू दोप नहींहै औ अविकारी कहे माया कृत विकार रहित हैं यासों या जनायो कछू द्रोहादिसों धनुप नहीं तोरचो औ संतोषी कहि या जनायो कि इनके कछू इच्छा नहीं है दुवो गुणनसों या जनायो ईश्वर हैं ॥ ४६ ॥ द्वै छंदको अन्वय एक है महादेव परशुरामसों कहतहैं कि तुम अमल कहे माया विकार रहित औ अनंत जाको अन्त नहीं है कि ये तो है औ अनादि कहे जाकी आदि नहीं कोऊ जान। कि कबसों है ऐसे देव हौ अर्थ परब्रह्म हौ औ तुम्हारो सब भेद कहे भेद वेद नहीं बखानि सकत अर्थ वेदहू नहीं जाको प्रमाण यावत् सब प्राणिनको समानहौ काहू को स्वाभाविक वैर औ स्नेह तुम्हारे नहींहै केवल प्रह्लादादि जे भक्त हैं तिनके हेतु देह धरि दुःख दूरि करत हौ यानों भक्तवत्स-लता जनायो आपनपौ पहिंचानि कै कि हम औ ये एकही हैं यह जानिकै इनके हाथ सों होनहार जो रावणादि वध आगिलो काज है ताको कौ तब महा

देवके वचनसों जानिकै ये नारायण हैं यह जानिकै नारायणको धनुष परशुराम पै रह्यो सो रामचंद्रको दियो ॥ ४७ ॥

मूल—अबआपनपौपाहिंचानिविप्र । सबकरहुआगिलो काजक्षिप्र ॥ तबनारायणकोधनुपजानि ॥ भृगुनाथदियोरघुनाथपानि ॥ ४८ ॥ मोटनकछंद ॥ नारायणकोधनुबाण लियो । ऐंच्योहँसिदेवनमोदकियो ॥ रघुनाथकहेउअबकाहि हनो । त्रैलोक्यकँप्योभयमानिघनो ॥ ४९ ॥ दिग्देवदहेबहुबातबहे । भूकम्पभयेगिरिराजढहे ॥ आकाशविमानअमानछये । हाहासबहींयहशब्दरये ॥ ५० ॥ परशुराम—शशिवदनाछंद ॥ जगगुरुजान्यो । त्रिभुवनमान्यो ॥ ममगति मारौ । हृदयविचारौ ॥ ५१ ॥

टी०—॥ ४८ ॥ द्वै छंदको अन्वय एक है ॥ ४९ ॥ ५० ॥ त्रिभुवनमें मान्यो अर्थ जाको तीनों भुवनजानतहैं पूजतहैं औ जगतके गुरु जो ईश्वर हैं सो हम तुमको जान्यो अर्थ तुम ईश्वर हौ ताते और सबको निर्दोष हमको सदोष विचारि हमारी सुर पुरकी गति मारो ॥ ५१ ॥

मूल—दोहा ॥ विपरीतीकीज्योंपुष्पशर, गतिकोंहनतअनंग । रामदेवत्योंहींकियो, परशुरामगतिभंग ॥ ५२ ॥ चतुष्पदीछंद ॥ सुरपुरगतिभानी शासनमानी भृगुपतिको सुखभारो । आशिषरसभीने सबसुखदीने अबदशकंठहिमारो ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ सोवतसीतानाथके, भृगुमुनिदीन्हीं लात । भृगुकुलपतिकीगतिहरी, मनोसुमिरिवहबात ॥ ५४ ॥ मधुभारछन्द ॥ दशरथजगाइ । संभ्रमभगाइ । चलिरामराइ । दुंदुभिनजाइ ॥ ५५ ॥ सवैया ॥ ताडकातारिसुबाहुसँहारिकै गौतमनारिकेपातकटारे । चापहत्योहरकोहँसिकै सबदेवअदेव

हुतेसपहारसीतहिव्याहिअभीतचल्योगिरिगर्वचढ्भृगुनंदउतारे। श्रीगरुडध्वजकोधनुलैरघुनन्दनऔधपुरीपगुधारे ॥ ५६ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि-श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-मिंद्रजिद्विरचितायां परशुरामसंवादवर्णनं नाम सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

टीका--॥ ५२ ॥ सब जे देवऋषि आदिहैं तिनको सुख दीन अबदशकंठको मारौ ऐसी जो परशुराम कृत आशिष है ताके रसमें भीने ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ परशुरामके भयसों मूर्च्छाको प्राप्त जे दशरथ हैं तिनको जगाइकै औ परशुराम हारिकै गये यह कहि संभ्रम भगाइकै ॥ ५५ ॥ गर्वके गिरिपरचढे रहे तासों उतारयो अथवा गर्वको गिरि सोई परशुराम पर चढो रहै सो उतारो ॥ ५६ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सप्तम प्रकाश ॥ ७ ॥

मू०-दोहा ॥ यहप्रकाशअष्टमकथा, अवधप्रवेशबखानि। सीतावरण्योदशरथहि, औरबंधुजनमानि ॥ १ ॥ सुमुखीछंद ॥ सबनगरीबहुशोभरये। जहँतहँमंगलचारठये ॥ बरणतहैंकविराजबने। तनमनबुद्धिविवेकसने ॥ २ ॥ मोटनकछंद ॥ ऊंचीबहुवर्णपताकलसैं। मानोपुरदीपतिसोंदरसैं ॥ देवीगणव्योमविमानलसैं। शोभैतिनकेमुखअंचलसैं ॥ ॥ ३ ॥ दोहा ॥ कलभनलीनेकोटपर, खेलतशिशुचहुँवोर। अमलकमलऊपरमनो, चंचरीकचितचोर ॥ ४ ॥ कलहंस छंद ॥ पुरआठआठदरबारविराजैं। युतआठआठसैनापतिराजैं ॥ रहैंचारिचारिघटिकापरिमानै। घरजाहिंऔरजबआवतजानै ॥ ५ ॥

टी०-मंगलाचार वंदनवारादि ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ कलभ छोटे हाथी कमल सदृश कह्यो तासों पद्माख्य कोट जानो ताको भेद आगे कहिहैं ॥ ४ ॥ पुर

कहे अग्रभाग जे पुरीके आठहैं ॥ तिनमें आठ दरबार कहे सभा विराजत हैं अर्थ आठ प्रकारके कोट होतहैं यथा नरपतौ। "अतिदुर्गं कालवर्मं चक्रावर्तं च डिंडुरम्। तटावर्तंच पद्माख्यं यक्षभेदं च सार्वरम्। कोटचक्रं प्रवक्ष्यामिविशेषादष्टधा-च तत्" ॥ सो जैसे एक और पद्माख्य कोटदेख्यो तैसे पुरीके आठहू ओर शहर पनाहमें आठहू प्रकार के कोटबनेहैं तिनमें राजाके आठ मंत्रीहैं। यथा वाल्मीकीये- "धृष्टिर्जयंती विजयः सिद्धार्थोत्यर्थसाधकः। अशोको मंत्रपालश्च सुमंतश्चाष्टमो महान्"। ते मंत्री तिन कोटनमें आठहू दिशनके प्रजान संग सभा करतहैं अथ तिनमें बैठि आठहू दिशन को मामलो करतहैं अथवा दरबार कहे मुख्यद्वार पुरद्वार इति अर्थ—पुरीके शहरपनाह में आठहू दिशन में आठद्वार बनेहैं यथा कविप्रियायां। "नीके कै केवार देहौं द्वारद्वार दरबार केशोदास आस पास शूर जौन छावैगो" ॥ ५ ॥

मू०—दोहा ॥ आठोंदिशिकेशीलगुण, भाषावेषविचार ॥ वाहनवसनविलोकिये, केशवएकहि बार ॥ ६ ॥ कुसुमविचित्राछंद ॥ अतिशुभबीथीरजपरिहरे। चंदनलीपीपुष्पनिधरे ॥ दुहुँदिशिदीसतसुवरणमये। कलशविराजतमणिमयनये ॥ ७ ॥ तामरसछंद ॥ घरघरघंटनकेरवबाजैं। बिचबिचशंखजुझालरिसाजैं। पटहपखाउजआवझसोहैं। मिलिसहनाइनसोंमनमोहैं ॥ ८ ॥ हीरकछंद ॥ सुंदरिसबसुंदरप्रतिमंदिरपरसोहनी। सोहनगिरिशृंगनपरमानहुँमहिमोहनी ॥ भूपनगनभूपिततनभूरिचितनचोरहीं। देखतिजनुरेखातितनुबाननयचकोरहीं ॥ ९ ॥ सुंदरीछंद ॥ शंकरशैलचढीमनमोहति। सिद्धनकीतनयाजनुसोहति ॥ पद्मनऊपरपद्मिनिमानहुँ। रूपनऊपरदीपतिजानहुँ ॥ १० ॥

टी०—॥ ६ ॥ यामें चौकीदार सेनापतिनकी रीति कहतहैं कि आठों दिशिके चौकीदारन के शील कहे स्वभाव गुण शूरता आदि औ भाषा कहे बोली सो।। समयकी चौकीदारन की बोली विनहि औ वेष कहे देहकी उचना

स्थूलता आदि औ विचार औ वाहन गज अश्वरथादि वसन श्याम श्वेत पीतादि एकहि बार कहे एकहि तरह बिलोकियत हैं जा नगरमें जा पहरकी चौकी जैसे सनापतिनकीहै तैसी आठहू ओर की है इति भावार्थः॥अथवा जा पुरीमें आठों दिशिके शील आदि एकही बार एकही समय बिलोकियतहैं यासों या जनायो कि आठों दिशिके राजा जा पुरमें हाजिर रहत हैं औ आठों दिशिके प्राणी जापुर में वसत हैं वीथी गली ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रतिमंदिर कहे अपने अपने मंदिरन पर नगर को कौतुक देखिबेकों सुंदरी कहे स्त्री चढ़ीहैं मोहनारि सदृश कहि अति सुंदर मंदिर जनायो जब देखती हैं तब बाणसम जे नयन कोर हैं तिनसों मानों तनको देखती हैं कहे बेधती हैं ॥ ९ ॥ सिद्धनैन योनि विशेष हैं पद्मिनी कमलिनी रूपसौंदर्य कैलास औ पद्म औ रूप राम गेह हैं सिद्धतनया कमलिनी दीपति सम स्त्री हैं॥ १० ॥

मूल-कीरतिश्रीजयसंयुतसोहति । श्रीपतिमंदिरकोमन मोहति ॥ ऊपरमेरुमनोमनरोचन । स्वर्णलताजनरोचतिलोचन ॥ ११ ॥ विशेषकछंद ॥ एकलियेकरदर्पणचंदनचित्र करे । मोहतिहैमनमानहुँचांदनिचंद्रधरे ॥ नैनविशालनिअंबरलालनिज्योतिजगी ॥ मानहुँरागनिराजतिहैअनुरागरँगी ॥ १२ ॥ नीलनिचोलनकोपहिरेयकचित्तहरे । मेघनकीद्युतिमानहुँदामिनिदेहधरे ॥ एकनकेतनसूक्षमसारिजरायजरी । सूरककानलिसीजनुपद्मिनिदेहधरी ॥ १३ ॥ तोटकछंद ॥ धरेकुसुमावलिएकघनी । शुभशोभनकामलतासिबनी ॥ करपैफलफूलनलायककी । जनुहैंतरुणीरतिनायककी ॥ १४॥

टी०-कि जय संयुत कीर्ति है जयसम गेहहै कीर्ति राम स्त्री है कि पतिके विष्णु के मंदिर में श्रीलक्ष्मी है कि मन रोचन कहे सुंदर अनेक मेरु सुमेरु पर स्वर्णलता हैं रोचति कहे नीकी लागति हैं लोचननि की ॥ ११ ॥ मानो चन्द्रमाके मन को चांदनी मोहती है चंद्र सरिस दर्पणहै चांदनी सरिस चंदन चर्चित स्त्रीहैं नयन हैं विशाल जिनके ऐसी जे स्त्रीहैं तिनके अंबर वस्त्र लालनकी शोभा

जगीहै रागिनी सम स्त्री हैं अनुराग प्रेम सम वस्त्र हैं प्रेमको रंग अरुण है॥ १२॥ मेघ द्युति सम श्यामवस्त्र हैं दामिनी सम स्त्री हैं पद्मिनी कमलिनी सम स्त्रीहैं सूरकरावलि सम जरायजरी सारीहैं ॥ १३ ॥ फलपूगी फलादि ॥ १४ ॥

मू०-दोहा ॥ भीरभयेगजपरचढ़े, श्रीरघुनाथविचारि ॥ तिनहिंदेखिबरणतसबै, नगरनागरीनारि ॥ १५ ॥ तोटक छंद ॥ तमपुंजलियोगहिभानुमनो । गिरिअंजनऊपरशोमभनो ॥ मनमत्थ विराजतशोभतरे । जनुभासतलोभहिदान करे ॥ १६ ॥ मरहट्टाछंद ॥ आनंदप्रकासीसबपुरबासीकरत तेदौरादौरी । आरतीउतारैंसरवसवारैंअपनीअपनीपौरी ॥ पढिमंत्रअशेषनि करिअभिषेकनिआशिषदैसविशेष । कुंकुमकर्पूरनिमृगमदचूरनिवर्षतिवर्षावेष ॥ १७ ॥ आभीरछंद । यहिविधिश्रीरघुनाथ । गहेभरतकोहाथ ॥ पूजत लोग अपार । गयेराजदरबार ॥ १८ ॥ गयेएकहीबार । चारोंराजकुमार ॥ सहितवधूनिसनेह ॥ कौशल्याकेगेह ॥ ॥ १९ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ बाजेबहुबाजैंतारनिसाजैंसुनिसुरलाजैं दुखभाजैं। नाचैंनवनारीसुमनशृंगारीगतिमनुहारीसुखसाजैं॥ बीनानिबजावैंगीतनिगावैंमुनिनरिझावैंमनभावैं । भूषणपट दीजैसबरसभीजैदेखतजीजैछबिछावैं ॥ २० ॥

टीका-ताही क्षण गजपर चढे राम ऐसे शोभित भये तमपुंज मानो भानु सूर्यको गहि लियो अथवा तम पुंजही को मानो भानु गहि लियो जानो लोभहि तरेकरे दान भासत है तरे पदको संबंध याहूमें हैं औ कहूं यह पाठहै जनु राजत काम शृंगार तरे तौ शृंगार है तरेजाके ऐसो मानो काम राजत है भानु औ चंद्रमा औ शोभा औ दान सम रामचन्द्रहैं तम पुंज औ अंजनगिरि औ मनमथ औ लोभसम गजहैं ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ तार कहे उच्च स्वरको बाजतहैं ॥ "तारो निर्मलमौक्तिके शुक्तायुद्धा शुद्धनादे" इत्यभिधानचिंतामणिः ॥

रसकहे प्रेम में भीजे जे सब पुरवासीहैं तिन करिकै भूषण पट दीजे कहे दीजियत है अर्थ प्रेमसों युक्त सब भूषण पटदान करत हैं ॥ २० ॥

मू०–सोरठा ॥ रघुपतिपूरणचंद, देखिदेखिसबसुखमढैं ॥ दिनदूनेआनंद, तादिनितेतेहिपुरबढ़ैं ॥ २१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यायोध्यानगरप्रवेशोनामाष्टमः प्रकाशः ॥ ८ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकायामष्टमःप्रकाशः ॥ ८ ॥

मू०–दोहा ॥ यहप्रकाशनवमेंकथा, रामगमनबनजानि ॥ जनकनंदिनीको सुकृत, वर्णन रूप बखानि ॥ १ ॥ रामचंद्र लक्ष्मणसहित, घररारवेदशरत्थ ॥ बिदाकियोननसारको,सँग शत्रुघ्नभरत्थ ॥ २ ॥ तोटकछंद ॥ दशरत्थमहामनमोदरये । तिनबोलिवशिष्ठहिंमंत्रलये ॥ दिनएककहोशुभशोभरयो । हमचाहत रामहिंराजदयो ॥ ३ ॥ यहबातभरत्थकीमातसुनी। पठऊंबनरामहिंबुद्धिगुनी ॥ तेहिमंदिरमेंनृपसोंबिनयो । वरदेहुहतोहमकोजोदयो ॥ ४ ॥ नृपबातकहीहँसिहेरिहियो । बर मांगिसुलोचनिमैंजोदियो ॥ कैकेयी ॥ नृपतासुविशेशिभरत्थ लहैं । बरषैबनचौदहरामरहैं ॥ ५ ॥

टीका–॥ १ ॥ २ ॥ शोभरयो राजाको बिशेषणहै ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मू०–पद्धटिकाछंद ॥ यहबातलगीउरवज्रतूल । हियफाट्योज्योंजीरणदुकूल ॥ उठिचलेविपिनकहँसुनतराम । तजि तातमाततियबंधुधाम ॥ ६ ॥ हरिलीलाछंद ॥ छूटेसबै सबनिकेसुखक्षुत्पिपास । विद्वद्विनोदगुणगीतविधानवास ॥

ब्रह्मादिअंत्यजनअंतअनंतलोग । भूलेअशेपसविशेषनिराग भोग ॥ ७ ॥ मौक्तिकदामछंद ॥ गयेतहँरामजहाँनिजमात । कहीयहबातकिहौंबनजात। कछूजनिजोदुखपावहुमाइ । सोदेहुअशीषमिलौंफिरिआइ ॥ ८ ॥ कौशल्या ॥ रहौचुपव्हैसुत क्योंबनजाहु । नदेखिसकैतिनकेउरदाहु ॥ लगीअबबापतुम्हारेहिवाइ। करैंउलटीविधिक्योंकहिजाइ ॥९॥ राम-ब्रह्मरूपकछंद ॥ अन्नदेइसीखदेइराखिलेइप्राणजात । राजबापमोललैकरैजोदीहपोषिगात ॥ दासहोइपुत्रहोइशिष्यहोइकोइमाइ । शासना न मानई तौ कोटिजन्मनर्कजाइ ॥ १० ॥

टी०--जीर्णकहे पुरानीतजिचले पदते इहां मानसिक त्याग जानो ॥ ६ ॥ क्षुत्कहे क्षुधा विद्वद्विनोद कहे शास्त्रार्थ गुणशास्त्र विद्यादि गीतविधान गाइबो वाउवर अथवा वस्त्रब्रह्महिआदि दैऔ अंत्यज जे चांडालहैं तिन पर्यन्त जे अनंत लोगहैं तिनको अशेपराग प्रेम औ भोग सविशेषण भूले अर्थ अत्यन्त भूले यद्यपि रामवन गमन सों ब्रह्मादि देवन को रावण वधादि हित कार्य ह्वै है परंतु अनवसर विलोकि तिनहूंको दुःख भयो ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ अन्नदाता औ शिषदाता औ कहूं प्राण जात होइ ता भय सों रक्षक औ राजा औ बाप औ जो मोल लैकै पोषिकै गात्रकहे वडे करै अर्थ जो मोललै पालन करै ई जे छः हैं तिनके दास औ पुत्र औ शिष्य औ कोहू कहे औरहै कोऊ होइ अर्थ अन्नग्राहक प्राण रक्षित औ प्रजा जे छःहैं ते आज्ञा को नामानैं तो कोटि जन्म तक नरक जाइँ या जनायो कि एक तौ राजा हैं दूसर पिताहैं तासों विशेषि कै आज्ञामानि हमको वन जैबो उचित है ॥ १० ॥

मूल—कौशल्या—हरनीछंद ॥ मोहिचलौवनसंगलियैं । पुत्र तुम्हैंहमदेखिजियैं ॥ अवधपुरीमहँगाजपरै । कैअबराजभरत्थकरै ॥ ११ ॥ राम-तोमरछंद ॥ तुमक्योंचलोवनआजु । जिनशीशराजतराजु ॥ जियजानियेपतिदेव । करिसर्वभाँति

नसेव ॥ १२ ॥ पतिदेइजोअतिदुःख। मनमानिलीजैसुःख ॥ सबजक्कजानिअमित्र। पतिजानिकेवलमित्र ॥ १३ ॥ अमृतगतिछंद ॥ नितपतिपंथहिचलिये। दुखसुखकोदलुदलिये तनमनसेवहुपतिको। तबलहियेशुभगतिको ॥ १४ ॥ स्वागताछंद ॥ योगयागव्रतआदिजोकीजै। न्हानगानगनदान जो दीजै ॥ धर्म कर्मसबनिष्फलदेवा। होहिंएकफलकैपति सेवा ॥ १५ ॥

टी०—तुम क्यों चलौ बन इत्यादि दश छंदनमें पातिव्रत धर्म सुनाइ रामचन्द्र माता को बोध करत हैं राजकहे राजा दशरथ अथवा राजश्रिन करिकै केवल पतिही को देवजानिये कहे जानो चाहिये ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ पतिही स्त्रिन करिकै नित्यप्रति पथ कहे सुराहशास्त्रोक्तपातिव्रतनकी रीति इति तामें चलिये या प्रकार सुख औ दुःख के दल कहे समूह को दलिये कहे बिताइये औ तन औ मन सों केवल पतिही को सेवहु कहे सेवन करिये तब शुभगति को पाइये कछु सुख दुख परै तामें स्त्रीको पतिही की सेवा करिवो उचित है और उपाय करिवो उचित नहीं है इति भावार्थः ॥ १४ ॥ देव कहे देवता अर्थ देवपूजा ॥ १५ ॥

मू०—तातमातुजनसोदरजानौं। देवरजेठसगे सो बखानौं ॥ पुत्रपुत्रसुतश्रीछबिछाई। है बिहीनभरतादुखदाई ॥ १६ ॥ कुंडलिया ॥ नारीतजैनआपनो, सपनेहूंभरतार ॥ पंगुगुंगुबौराबधिर, अंधअनाथअपार ॥ अंधअनाथअपारवृद्धबावनअतिरोगी बालकपंडुकुरूपसदाकुवचनजडयोगी ॥ कलहीकोढीभीरुचोरज्वारी व्यभिचारी। अधमअभागीकुटिलकुपतिपतितजैननारी ॥ १७ ॥ पंकजवाटिकाछंद ॥ नारितजैनमरेभरतारहि। तासंगसहतिधनंजयझारहिं ॥ जीकेहुंकरतारजिआवत। तौताकोयहबातसुनावत ॥ १८ ॥ निशिपालिकाछंद ॥ गानविनमानविनहासविनजीवहीं। तत

नहिंखाइजलशीतलनपीवहीं । तेलतजिखेलतजिखाटतजि सोवहीं । शीतजलन्हाइनहिंउष्णजलजोवहीं ॥ १९ ॥

टी०–पुत्र सुत पौत्र ॥ १६ ॥ पंडु पिंडरोगी योगी विरक्त भीरु कादर कुपति निर्लज्ज अथवा नपुंसक ॥ १७ ॥ धनंजय कहे अग्नि की झार सहतिहै अर्थ सती होति है जो काहू प्रकार कर्तार जिआवै अर्थ पतिके संग ना जर्यो जाइ तौ तिन तिनके लिये यह बात है सो हम तुमको सुनावत हैं सो गान बिन इत्यादि द्वैछंदमों आगे कहत हैं ॥ १८ ॥ द्वैछंद को अन्वय एक है जल शीतल न पीवहीं अर्थ सीरो करिके जल न पीवैं जैसो होइ तैसो पीवैं शीत जलमें न्हाइ या जनायो कि गरम जल करि स्नान ना करै जा समय जैसे पीवैं तैसे मैं स्नान करै काय मन वाचा सब धर्म करिबो करै अर्थ ये जे सब धर्म हैं तिनको मनसा वाचा कर्मणासे करैं अथवा और जे सब धर्मदानादि हैं तिनहुंन को करे कृच्छ्र उपवास कृच्छ्रचांद्रायणादिसों जबलौं तनको अतीत कहे छोडैं अर्थ मरे तबलों पुत्रकी शिष में लीन रहै पुत्र की आज्ञामें रहै यामें त्रिकाल दर्शी जे रामचंद्र हैं तिन अपने वियोग सों पिताको मरण निश्चय करि पति ब्रतन को धर्म सुनाय माताको बोध करि युक्ति सों विधवा स्त्री को उचित धर्म सिखायो ॥ १९ ॥

मू०–खायँमधुगन्ननहिंपायपनहींधरैं । कायमनवाचसबधर्मकरिबोकरैं॥कृच्छ्रउपवाससबइंद्रियनिजीतहीं ॥ पुत्रशिषलीनतनजौलगिअतीतहीं ॥ २० ॥ दोहा ॥ पतिहितपितुपरतनु तज्यो, सतीसाखिदैदेव ॥ लोकलोकपूजितभई, तुलसीपतिकी सेव ॥ २१ ॥ मनसावाचाकर्मणा, हमसोंछाँडोनेहु । राजाको विपदापरी, तुमतिनकीसुधिलेहु ॥ २२ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ उठिरामचन्द्रलक्ष्मणसमेत । तबगयेजनकतनयानिकेत ॥ सुनुराजपुत्रिकेएकबात । हमबनपठयेहैंनृपतितात ॥ २३ ॥ तुमजननिसेवकहँरहहुबाम । कैजाहुआजुहीजनकधाम॥सुनि चन्द्रवदनिगजगमनिएनि ।मनरुचैसोकीजैजलजनैनि॥२४॥

सीताजू-नाराचछंद ॥ नहौंरहौंनजाहुजूविदेहधामकोअबै।कही जोबातमातुपैसोआजुमैंसुनीसबै॥लगैक्षुधाहिमाभलीविपत्तिमांझनारिये। पियासत्रासनीरबीरयुद्धमेंसम्हारिये ॥ २५ ॥

टी०-॥ २० ॥ सती की औ तुलसी की कथा प्रसिद्ध है ॥ २१ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ जननि कौशल्या ऐंनि कहे हे सुन्दरि ॥ २४ ॥ कि स्त्रीको पतिहि कि सेवा उचित है यह बात जो माता सों तुमकह्यो है सो हम सब सुन्यो है यासों या जनायो कि तुम्हारी सेवा छाँडि हम कैसे घर में रहैं क्षुधामें माता भली लगतिहै पोषण करिबो मुख्य धर्म माताकोहै तासों यथाकवि प्रियायां माता जिमि पोषति पिता जिमि प्रतिपाल करैं औ विपत्तिमें नारियै कहे स्त्रीही भली लागति है जो अनेक प्रकारसों शुश्रूषा करि मन को वहरावतिहै औ पियास की त्रास समय नीर भलो लागतहै औ युद्धमें वीर जो योद्धा है तिन को सँभारिये यहै भलो लागत है अर्थ अनेक वीरनको संभारिबो एकत्र करिबो अथवा सावधान करिबोई भलो लागत है यह कहि या जनायो कि यह तुम्हारो विपत्तिको समय है तासों तुम्हारे संग हमको चलिबो विशेषि है ॥ २५ ॥

मू०--लक्ष्मण--सुप्रियाछंद ॥ वनमहँविकटविविधदुखसुनि-ये। गिरिगहवरमगअगमकेगुनिये॥ कहुँअहिहरिकहुँनिशिच-रचरहीं। कहुँदवदहनदुसहदुखदहहीं॥२६॥सीताजू-दंडक॥ केशोदासनींदभूखप्यासउपहासत्रासदुखकोनिवासविषमुखहू गह्योपरै।वायुकोबहनदिनदावाकोदहनबडोबाडवाअनलज्वा-लजालमेंरह्योपरै। जीरनजनमजातजोरजुरघोरपरिपूरणप्रकट परितापक्योंकह्योपरै। सहिहौंतपनतापपतिकेप्रतापरघुवीरको बिरहबीरमोसोंनसह्योपरै ॥ २७ ॥

टी०--दवदहन कहेदावाग्नि-॥ २६ ॥ दुखको निवास जो विष है सो मुखमें गह्यो परत है अर्थ विष खायो जात है जीर्ण कहे जर्जर अर्थ थोडी है मर्यादा जाकी ऐसो जो जन्म है सो जातु कहे जाउ अर्थ कि मृत्यु होय औ घोर जो ज्वरहै औ परिपूर्ण कहे दैहिक दैविक भौतिक तीनों प्रकार की जो

परितापहै कैसो परिताप कि क्यों कह्यो परै अर्थ जो काहू विधि सों नहीं कह्यो जात अति बडो इति ये सब पतिके प्रतापसों सहिहो जो परके प्रताप पाठ होय तौ पर जे शत्रु हैं तिनकेप्रतापसहिहौ अर्थ शत्रुकृत दुःख सहिहौं ॥ २७ ॥

मू०--रामविशेषक--छंद ॥ धाम रहौ तुमलक्ष्मण राजकि सेव करौ। मातनिके सुनि तातसो दीरघ दुःखहरौ॥आइ भरत्थ कहाधौं करै जियभायगुनौ। जोदुखदेइँतोलैउरगौयहबात सुनौं ॥२८॥ लक्ष्मण--दोहा ॥ शासनमेटीजायक्यों, जीवन मेरे हाथ॥ऐसीकैसेबूझिये, घरसेवकबननाथ ॥२९॥ द्रुतविलंबितछंद ॥ विपिनमारगरामविराजहीं। सुखदसुन्दरिसोदरभ्राजहीं ॥ विविधश्रीफलसिद्धिमनोफल्यो। सकलसाधनसिद्धिहिलैचल्यो ॥ ३० ॥ दोहा ॥ रामचलतसबपरचल्यो, जहँ तहँसहितउछाह ॥ मनोभगीरथपथचल्यो, भागीरथीप्रवाह ॥ ३१ ॥ चंचलाछंद ॥ रामचन्द्रधामतेचलेसुनेजबैनृपाल। बातकोकहैसुनेसोह्वैगयेमहाविहाल॥ ब्रह्मरंध्रफोरिजीवयोंमिल्योविलोकिजाइ। गेहचूरिज्योंचकोरचंद्रमेंमिलेउडाइ॥३२॥

टी०--उरगौ कहै वितावो अथवा हे भाइ। जो भरत तुमको दुःख देहै तौ लै कहे अंगीकारकरिकै उरगै गुनौं अर्थ समय पाय ताको फलदेवेके लिये समुझि राखौगी यह बात सुनौ अर्थ गौकी जो यह बात है सो सुनो ॥ २८ ॥ यामें या जनायो कि जो मैं इहां रहिवोऊकरौं तो जीव तुम्हारे संग जैहै॥२९॥ विपिन कहे वन भ्राजहीं कहे शोभहीं विविध कहे अनेक प्रकार की श्रीफल कहे शोभा फलकी जो सिद्धि कहे वृद्धि है "सिद्धिः स्त्रीयोगनिष्पत्तिपादुकांतर्द्धिवृद्धिषु"। इति मेदिनी ॥ तासों फल्यो जो सिध्यहै सिद्धति शेषः सकल साधन कहे ध्याना दि औ सकल सिद्धिः कहे अणिमादिकनको लैकै चल्योहै तो जप योग ते वडी शोभा को प्राप्ते सिद्धरूप रामचंद्र है सकल साधनरूप लक्ष्मण हैं अष्टसिद्धि रूप

सीताहैं औ कहूं सिद्धि मनो फल्योपाठ है सो अर्थ खुल्यो है ॥ ३० ॥ उछाह जो आनंदहै तेहिते सबपुर चल्यो कहे सब पुरवासी चले तो या जानो पुरीमें उछाहहू रामहीं के साथ चलो गयो ॥ ३१ ॥ गेडु कहे पिंजरा ॥ ३२ ॥

मू०–चित्रपदाछंद ॥ रूपहिदेखतमोहैं । ईशकहौनरकोहैं ॥ संभ्रमचित्तअरूझै । रामहियोंसबबूझै ॥ ३३ ॥ चंचरीछंद ॥ कौनहौकिततेचलेकितजातहौकेहिकामजू । कौनकीदुहिताब- हूकहिकौनकीयहवामजू ॥ एकगाँवउरहौकिसाजनमित्रबंधुव- खानिये । देशकेपरदेशकेकिधौंपंथकीपहिचानिये ॥ ३४ ॥ जगमोहनदंडक ॥ किधौंयहराजपुत्रीवरहींवर्योहैकिधौंउपधि- बर्योहै यहिशोभाअभिरतहौ । किधौंरतिरतिनाथजससाथके- शोदासजाततपोवनशिववैरसुमिरतहौ । किधौंमुनिशापहत- किधौंब्रह्मदोषरत किधौंसिद्धियुतसिद्धपरमविरतहौ । किधौं- कोऊठग हौठगोरीलीन्हेकिधौंतुमहरिहरश्रीहौशिवाचाहत- फिरतहौ ॥ ३५ ॥

टी०–सब मगके प्राणी तिनहुनकी सुंदरता देखि कै मोहत हैं सो मनमें कहत हैं कि हे ईश ! हे भगवन् ! ये कोहैं या प्रकार संभ्रममें सबके चित्त अरुझत हैं तब रामहीं सों या प्रकार सब बूझैं कहे पूंछत हैं सो आगे कहत हैं ॥ ३३ ॥ बहू पुत्रवधू साजन कहे स्वामी ॥ ३४ ॥ कि यह जो स्त्री है सो राजपुत्री है ताको वरहीं कहे जबरईसों बर्यो है कहे विवाह्यो है अथवा यह जो राजपुत्री है ताहीं माता पिताकी आज्ञा मेटिकै अपनी इच्छासों तुमको जबरई- बर्यो है कि तुम याको उपधि कहे छलसों बर्यो है ॥ "कपटोऽस्त्री व्याजदम्भो पधयश्छद्मकैतवे" इत्यमरः ॥ ऐसी शोभासों अभिरत कहे युक्त हौ काहे ते कि जो तुमको तपस्वी जानि राजा अपनी इच्छासों विवाहदे तौ तुम्हारे आश्रम- पर्यन्त आपने लोग संग करिदेते सोनहीं हैं तासों यह जानि परत है कि ताहीं राजाके भयसों बनको भागे जात हौ इति भावार्थः ॥ जग संसार जीत्यो है ताको यश रूप लक्ष्मणहैं शिवजी नयनकी आगिसों जार्यो ता वैरको सुमिरत- को शिवसे लरिवेको जात हौ अथवा शिवके वैर को सुमिरत हौ तासों तपोवन-

में तप करिबेको जात हौ जासों बडो तप करि तपोबलसों शिवको जीतै कि सिद्धि तप सिद्ध अथवा मुक्ति तासों युक्त तुम परम विरत सिद्ध हौ परम विरत कहि या जनायो कि संसारसों अति विरक्त ह्वै अति बडो तप करचो है यासों देह धरि सिद्धि तुम्हारे संगसंग फिरतिहै ॥ " सिद्धिस्तुमोक्षेनिष्पत्तियोगयोरि-त्यभिधानचिन्तामणौ " ॥ कि हरि औ हर औ श्रीलक्ष्मी हौ शिवा जो पार्वती हैं तिन्हैं चाहत कहे ढूँढत फिरत हौ ॥ ३५ ॥

मू०—मत्तमातंगलीलाकरनदंडक । मेघमंदाकिनीचारुसौदा-मिनीरूपरूरेलसैंदेहधारीमनो । भूरिभागीरथीभारतीहंसजाअं शकेहैंमनोभागभारेमनो ॥ देवराजालियेदेवरातीमनोपुत्रसंयु-क्तभूलोकमेंसोहिये । पक्षदूसंधिसंध्यासधीहैमनोलक्षियेस्वच्छ प्रत्यक्षहीमोहिये ॥ ३६ ॥

टी०—मेघ औ मंदाकिनीआकाशगंगा औ सौदामिनीकहेबिजुली ये तीनौं देहधारी मानो रूरेकहे सुंदर रूपकहे वेषसों लसत हैं अथवा रूरेकहे विमल जो रूपसौंदर्यहै तेहिकरिकै देहधारी लसै कहे शोभितहैं यासों या जनायो कि मेघा-दिक तीनों जब सुंदरतासों मिलिकै रूप धरैं तब रामादिकनके रूपसम होइ कि मानो भागीरथी गंगा औ भारती सरस्वती औ हंसजा यमुना तिनके जे हैं भूरि कहे संपूर्ण अंश कहे भाग तिनहिंनके भारे भाग कहे भाग्य मनौ कहे कहियत है अर्थ भागीरथी भारती हंसजाके अंशनके बडे भाग हैं जिन ऐसे सुंदर रूप पाये हैं भागीरथीके पूर्णांशावतार रूप लक्ष्मण हैं भारतीके पूर्णांशावतार रूप सीता हैं यमुनाके पूर्णांशावतार रूप रामचन्द्र हैं देवराजको पुत्र जयंत औ की दू कहे दूनो कृष्णपक्ष तिनकी संधिमें स्वच्छ संध्या सधी है स्थित है जाको प्रत्यक्ष ही लक्षिये कहे देखियत है औ शोभा सों मोहियत है कृष्णपक्षरूप राम हैं शुक्लपक्ष रूप लक्ष्मणहैं संध्यारूप सीताहैं अथवा दूनों जे पक्ष हैं तिनमें संधि कहे मध्य है तो शुक्लादि गणना सों दुवौ पक्षनको मध्य पूर्णिमा है तो संधिपदते पूर्णिमा जानो याहूमें पूर्णिमारूप सीता हैं दुवौ पक्षरूप राम लक्ष्मण हैं औ तीनों संध्या परस्परसधी हैं अर्थ कि एकत्र हैं प्रातःसंध्या रक्त है मध्याह्न संध्या शुक्ल है सायंसंध्या श्याम है यथा सामसंध्यायाम् ॥ "पूर्व संध्यातुगायत्री रक्तांगीरक्तवासता ॥ १ ॥ मध्याह्नतुयासंध्या श्वेतांगीश्वेतवासता ॥ २ ॥

अपराह्ने तु या संध्या कृष्णांगीकृष्णवाससा'' ॥ काहूं संध संध्या संधी या पाठ है वौ दुवौ पक्षनके संध कहे साथ संध्या संधी है सो जानो ॥ ३६ ॥

मू०—अनंगशेखरदंडक ॥ तडागनीरहीनतेसनीरहोतकेशोदासपुंडरीकझुंडभौंरमंडलीनमंडहीं । तमालवल्लरीसमेतिसूखिसूखिकैरहेतेबागफूलिफूलिकैसमूलशूलखंडहीं ॥ चितैचकोरनीचकोरमोरमोरनीसमेत हंसहंसिनीसमेतशारिकासबैपढैं । जहींजहींविरामलेतरामजूतहींतहींअनेकभांतिकेअनेकभोगभागसोबढैं ॥ ३७ ॥

टी०—पुंडरी कमल भाग सो कहे भाग्य सों अथवा द्विगुण चतुर्गुणादि भाग कहे हींसा सों ॥ ३७ ॥

मू०—सुंदरीछंद ॥ घामकोरामसमीपमहाबल । शीतहिलागतहैअतिशीतल ॥ ज्योंघनसंयुतदामिनिकेतन । होतहैंपूषन केकरभूषन ॥३८॥ मारगकीरजतापितहैअति । केशवसीतहि शीतललागति ॥ ज्योंपदपङ्कजऊपरपाँयनि । देजोचलैतेहितै सुखदायनि॥३९॥ दोहा ॥ प्रतिपुर औ प्रतिग्रामकी, प्रति नगरनकीनारि ॥ सीताजूकोदेखिकै, वर्णतहैंसुखकारि ॥४०॥ जगमोहनदंडक ॥ वासों मृगअङ्ककहैं तोसोंमृगनैनीसबवहसुधाधरतुहूंसुधाधरमानिये।वहद्विजराजतेरेद्विजराजिराजैंवहकलानिधितुहूंकलाकलितबखानिये।रत्नाकरकेहैंदोऊकेशवप्रकाशकर अंबरविलासकुवलयाहितमानिये । वाकेअतिशीतकरतुहूंसीताशीतकरचंद्रमासीचंद्रमुखीसबजगजानिये ॥ ४१ ॥

टी०—घामको जो महाबल कहे अति तेजहै सो रामके समीप में सीताको अति शीतल लागतहै जैसे घन जे मेघहैं तिनते युक्त जो दामिनी बिजुली है ताके तनुमें पूषण जे सूर्य हैं तिनके कर किरण भूषण होतहैं सूर्यकी किरणें मेघनमें परतीहैं तब इंद्रधनुष होतहै सोई दामिनीको भूषण समहै ॥ ३८ ॥

हेतु यह कि पृथ्वी की सीता पुत्रीहै रामचन्द्र जामातुहैं तासों पृथ्वीकी रज तिनको सुख दियोई चहै तामें युक्ति यह कि पंकजपर पाँउ धारिकै चलै तौ शीतलई लागत है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ या प्रकार कोऊ स्त्री सीतासों कहतिहै कि वह जो चंद्रमा है जाको मृगअंक सब कहत हैं मृगा जो शशा है सोहै अंकमें गोदमें मध्य इति जाके अथवा मृगको अंक कहे चिह्नहै जाके औ तोहूंको मृगनैनी कहतहैं औ वह सुधाधरहै सुधा अमृत को धरे है औ तुहूं सुधाधर है सुधासम हैं अधर ओष्ठजाके औ वह द्विजराज कहावत है तेरेहू द्विज जे दंतहैं तिनकी राजिकहे पंगति राजतिहै औ वह षोडशकलनको निधिहै औ तुहूं अनेक जे नेत्र विक्षेपादि कला हैं अथवा चौसठिकला तिनसों कलित है औ वह रत्नाकर जो समुद्र है ताको प्रकाशकर कहे बढावन हार है पूर्णमासीके चन्द्रमाके उदयसों समुद्र बाढत है प्रसिद्ध है औ तू भूषणनके रत्ननको जो आकर समूह है ताको प्रकाश शोभा करता है अर्थ तेरी छबिसों भूषणनके रत्न शोभा पावतहैं औ चन्द्रको अंबर आकाशमें विलासहै सीताको अंबर वस्त्रमें औ चन्द्रमा कुवलयको हित है औ सीता कुवलय कहे पृथ्वी मंडलको हितकरे अतिप्रिय लागतिहै अर्थ सौंदर्यादिक गुण सीतामें ऐसे हैं जासों सबको प्रिय है औ वाके चन्द्रमाके अति शीत है कर कहे किरणि औ हे सीता तुहूं शीतकर है जो तो को देखत हैं ताके लोचन शीतल हैं तौ जौन जौन चिह्नगुण चंद्रमामो हैं ते तोहूं में हैं याते हे चंद्रमुखी ! सब जग करिकै तोकों चन्द्रमा सम जानियतहै अर्थ सब जग तोकों चन्द्रमा समजानत हैं ॥ ४१ ॥

मू०–अन्यच्च ॥ कलितकलंककेतुकेतुअरिसेतुगातभोगयोगकोअयोगरोगहीकोथलसों ॥ पून्योईकोपूरनपैप्रतिदिनदूनोदूनो क्षणक्षणक्षीणहोतछीलरकीजलसों । चंद्रसोंजोबरणतरामचंद्रकी दोहाईसोईमतिमंदकविकेशवकुशलसों । सुंदरसुवासअरुकोमलअमलअतिसीताजूकोमुखसखिकेवलकमलसों ॥ ४२ ॥

टी०–दूसरीसखी ताकोमत खंडिकै आपनोमत कहतिहै कलंक कि जो केतुकहे पताका है अर्थ पताकासम जाको कलंक प्रसिद्ध है औ केतुको अरि शत्रु है राहु केतु एकइके खंड हैं तासों अक्षर मैत्रीके लिये केतु कह्यो औ सो आदिके जे

भोग हैं तिनको जो योगसंयोग रेताको अभोग असमर्थ है गुरुशापसों क्षयरोग युक्त है क्षणक्षण क्षीण होत जो छीलरकहे दीना अथवा अंजलिकोजलहै तासम प्रतिदिन दूनों क्षीणहोत हैं ॥ ४२ ॥

मू०—अन्यच्च ॥ एकेकहैंअमलकमलमुखसीताजूको एकक हैंचन्द्रसमआनंदकोकंदरी । होइजोकमलतौरयनिमैंनसकुचै रीचंदजोतौबासरनहोइद्युतिमंदरी । बासरहीकमलरजनीही- मेंचंद्रमुखबासरहूरजानिविराजैजगवंदरी । देखेमुखभावेअनदे- खेईकमलचंद तातमुखमुखैसखीकमलैनचंदरी ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ सीतानयनचकोरसखि, रविवंशीरघुनाथ ॥ रामचंद्र सियकमलमुख, भलोबन्योहैसाथ ॥ ४४ ॥ विजयछंद ॥ बहु- बागतड़ागतरंगनितीरतमालकीछांहविलोकिभली । घटिका- यकबैठतहैंसुख पायबिछायतहांकुशकाशथली ॥ मगकोश्रम- श्रीपतिदूरिकरैंसियकोशुभवाकलअंचलसों । श्रमतेऊहरैंतिन कोकहिकेशवचंचल चारुदृगंचलसों ॥ ४५ ॥ सोरठा ॥ श्रीर- घुबरकेइष्ट, अश्रुबलित सीतानयन ॥ सांचीकरीअदृष्ट, झूंठीउपमामीनकी ॥ ४६ ॥

टी०—तीसरी स्त्री दुवौ को मत खंडि आपनो कहति है कमलचंद्रके देखेहू पर मुख भावत है औ कमलचन्द्रमुखके अनदेखे ही भावत है जब या मुखको देखो तब कमलचंद्रके देखवे की इच्छा नहीं होति जब उत्तमवस्तु देखो तब अनुत्तम वस्तु देखे अच्छीनहीं लागति है ॥ ४३ ॥ सूर्यको औ चकोर को औ चंद्रको औ कमल को स्वाभाविक विरोध है सो इहाँ भलो कहे अद्भुत साथ बन्यो है ॥ ४४ ॥ दृगंचल दृगकोर ॥ ४५ ॥ श्रीरघुबर के इष्ट कहे प्रिय अश्रु आनंदाश्रु करिकै बलित युक्त जे सीताके नयन हैं तिन मीनकी जो झूठी उपमा अदृष्ट रही है ताको सांची करी अर्थ मीन जल में रहते हैं नयन जलमें नहीं रहत समतामें यह भेद रह्यो है सो आनंदाश्रु जलमें बूडि कै सीता के नयन सांची करी ॥ ४६ ॥

मू०—दोहा ॥ मारगयोंरघुनाथजू, दुखसुखसबहीदेत ॥ चित्रकूटपर्वतगये, सोदरसियासमेत ॥ ४७ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्र चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामस्यचित्रकूटगमनं नामनवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

टी०—दर्शन सों सुख देत वियोग सों दुख देत ॥ ४७ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जन जानकीप्रसाद निर्मिताया रामभक्ति प्रकाशिकायां नवमः प्रकाशः ॥ ९ ॥

मू०—दोहा ॥ यहप्रकाश दशमेंकथा, आवनभरतसुनाम ॥ राजमरणअरुतासुको, बसिबोनंदिग्राम ॥ १ ॥ दोधकछंद ॥ आनिभरत्तपुरीअवलोकी । स्थावरजंगमजीवसशोकी ॥ भाट नहींविरदावलिसाजैं ॥ कुंजरगाजैंनदुंदुभिबाजैं ॥ २ ॥ राजसभानविलोकियकोऊ । शोकगहेतवसोदरदोऊ ॥ मंदिरमातुविलोकिअकेली । ज्योंबिनवृक्षविराजतिवेली ॥ ३ ॥ तोटकछंद ॥ तबदीरघदेखिप्रणामकियो ॥ उठिकैउनकण्ठलगाइलियो ॥ नपियोजलसंभ्रमभूलिरहे । तबमातुसोंबातभरत्थकहे ॥ ४ ॥

टी०—नाम कहे प्रसिद्ध ॥ १ ॥ २ ॥ राज सभामें कोऊ न देख्यो तव शोकको गहे औ माता के मंदिरमें जाइ कै माताको अकेली देख्यो तव शोक गहे ॥ ३ ॥ ४ ॥

विजयाछंद ॥ मातुकहांनृपतातगयेसुरलोकहिक्योंसुतशोकलये ॥ सुतकौनसुरामकहांहैंअबैबनलक्ष्मणसीयसमेतगये । बनकाजकहाकहिकेनलभोसुखतोकोंकहासुखयामेंभये । तुमको प्रभुताधिकनोकोंकहाअपराधविनासिगरेई-

हये ॥ ५ ॥ दोहा ॥ भर्त्तासुतविद्वेषिनी, सबहीकोदुखदाइ ॥ यहकहिदेखेभरततब, कौशल्याकेपाइ ॥ ६ ॥ तोटकछंद ॥ तबपायनजाइभरत्थपरे । उनभेंटिउठाइकैअंकभरे ॥ शिरसूंघिविलोकिबलाइलई । सुत तो विनयाविपरीतभई ॥ ७ ॥ भरत-तारकछंद ॥ सुनुमातभई यहबातअनैसी । जुकरीसुतभर्तृविनाशिनिजैसी ॥ यहबातभई अबजानतजाके । द्विजदोषपरैसिगरेशिरताके ॥ ८ ॥ जिनके रघुनाथविरोधबसैजू । मठधारिनकेतिनपापबसैजू ॥ रसरामरस्योमननाहिंनजाको । रणमेंनितहोइपराजयताको ॥ ९ ॥ कौशल्या ॥ जानिसौंहकरौतुमपुत्रसयाने । अतिसाधुचरित्रतुम्हैंहम जाने ॥ सबकोसबकालसदासुखदाई । जियजानतिहौसुतज्यौं रघुराई ॥१०॥ चंचरीछंद ॥ हाइहाइजहांतहांसबह्वैरही सिगरीपुरी । धामधामनिसुन्दरीप्रगटींसबैजेहुतींदुरी ॥ लैगये नृपनाथकासबलोगश्रीसरयूतटी । राजपत्निसमेतिपुत्रनिविप्रलापगढीरटी ॥ ११ ॥

टी०-॥ ५ ॥ ६ ॥ लघूको शिरसूंघिबो बडेनकी प्रीतिरीतिहै रोगबलाइलीबोस्त्रीनके प्रसिद्ध हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ शिवआदि देवनके मठकी जे पूजालेतहैं ते मठधारी कहावतहैं रसकहे प्रेमअंगरादौ "विषवीर्यद्रवेरागेगुणेरसः" इत्यमरः रस्यो भीज्योयुक्त इति ॥ ९ ॥ १० ॥ विप्रलाप जे हैं अनर्थ वचन अथवा कैकेयी प्रति विरोध वचन तिनकी गढी कहे समूह रटी कहत भये कि कैकेयीही के करत ऐसो विघ्न भयो तासों याको मुखदेखिबो उचित नहीं है इत्यादि वचन सब कहत हैं । "विप्रलापो विरोधोक्तावनर्थकवचस्यपि" इत्यभिधानचिन्तामणिः ॥ ११ ॥

मू०-सोमराजीछंद ॥ करीअग्निअर्चा । मिटीप्रेतचर्चा ॥ सबैराजधानी । भईदीनबानी ॥ १२ ॥ कुमारललिताछंद ॥

क्रियाभरतकीनी । वियोगरसभीनी ॥ सजीगतिनबीनी । मुकुंदपदलीनी ॥ १३ ॥ तोटकछंद ॥ पहिरेवकलासुजटा- धरिकै । निजपाँयनिपंथचलेअरिकै ॥ तरिगंगगये गुहसंग लिये । चित्रकूटबिलोकतछाँडिदिये ॥ १४ ॥

टी०—जब भरत अग्निसों अर्चा पूजा करी अर्थ चितामें अग्नि दियो तब प्रेतचर्चा मिटी अर्थ सब अयोध्यावासी परस्पर अनेक प्रेतवार्ता करत रहे ताको छोंडिदीन वाणी भये अर्थ करुणा स्वर करिकै रोये मरण समयमों औ दाहभूमिमें लैजात मों औ दाह होतमों अधिक अधिक तर वियोग मानि रोइवेकी रीति प्रसिद्ध है अथवा अग्निकरीकहे चितामें अग्नि दियो तव ते अशु- द्धिसो अर्चाकहे देवपूजा मिटी औ प्रेतचर्चाभई इतिशेषः ॥१२॥ क्रिया षोडशी- आदि भरत नीकी करत भये ताके बादि मुकुंद रामचन्द्रके वियोगरसमें भीनी नवीनी गति कहे दशावल्कल वसनादि साजी औ मुकुंदपद लीनी कहे ज्ञान बुद्धि इति सजी अर्थ पिताकी क्रिया पूर्ण करि रामचन्द्रके चरणनमें मनुलगायो गति पद श्लेष है एक पक्ष दशा जानौ एक पक्ष बुद्धि जानौ " गातिस्त्रीमार्ग- दशयोर्ज्ञानेयात्राभ्युपाययोरितिमेदिनी" ॥ ॥ १३ ॥ अरिकै कहे हठ करिकै गंगा उतरिकै गुहको संग कहे ज्ञातिसमूह सूधो मार्ग बताइबेके लिये गये जब चित्रकूट देख्यो तव तिन्हैं छोडिदियो ॥ १४ ॥

मू०—मदनमोदकछंद ॥ सबसारसहंसभयेखगखेचरबारिद ज्योंबहुबारनगाजे । बनकेनरवानर किन्नरबालकलैमृगज्यों मृगनायकभाजे॥ तजिसिद्धसमाधिनके सबदीरघदौरिदरीनमें आसनसाजे । भूतलभूधरहालेअचानकआइभरत्थकेदुंदुभि- बाजे ॥ १५ ॥ दोहा ॥ रामचन्द्रलक्ष्मणसहित, शोभितसीता संग । केशवदाससहासउठि, चलेधरणिधरशृंग ॥ १६ ॥ लक्ष्मण—मोहनछन्द ॥ देखहुभरतचमूसजिआये।जानिअवल हमकोउठिधाये ॥ हींसतहयबहुवारणगाजे । जहँतहँदीरघदुंदु- भिबाजे ॥ १७ ॥ तारकछंद ॥ गजराजनिऊपरपाखरसोहैं ।

अतिसुंदरशीशशिरोमणिसोहैं ॥ मणिघूंघुरघंटनकेरवबाजैं । तडिताधुतमानहुँवारिदगाजैं ॥ १८ ॥ विजयछंद ॥ युद्धको आजुभरत्थचढेधुनिदुंदुभिकीदशहूँदिशिधाई । प्रातचलीचतुरंगचमूबरणीसोनकेशवकैसेहुँजाई ॥ योंसबकेतनआननिमें झलकीअरुणोदयकीअरुणाई । अंतरतेजनुरंजनकोरजपूतन कीरजऊपरआई ॥ १९ ॥

टी०—सारस हंस औ और जे खग पक्षी हैं ते खेचरकहे आकाशगामी भये जैसे मृगनायक सिंह जौन ग्रीवादि अंग पकरि पायो सोई अंग गहि मृगको लै भाग्यो ताही प्रकार अतिभय सों अपने अपने बालकनको लै किन्नरादि भागे ॥ ॥ १५ ॥ किन्नरादिकी या दशा देखि हास्यपूर्वक कारण देखिबेको धरणिधर शृंगमें चढे ॥ १६ ॥ हंसत बोलत ॥ १७ ॥ पाखरझूल ॥ १८ ॥ रजनको क्षत्र धर्म में रंजित करिबेको मानौं रजपूतनकी रज रजोगुण रजपूतीइति ऊपर कहि आयेहैं ॥ १९ ॥

मूल—तोटकछंद ॥ उठिकैधरधूरिअकाशचली । बहुचंचल बाजिखुरीनदली ॥ भुवहालतिजानिअकाशहिये । जनुथंभित ठौरनिठौरकिये ॥ २० ॥ तारकछंद ॥ रणराजकुमारअरूझहि गेजू । अतिसन्मुखघायनिजूझहिंगेजू ॥ जनुठौरनिठौरनिभूमि नवीने । तिनकेचढिबेकहँमारगकीने ॥ २१ ॥ सीताजू—तोटकछंद ॥ रहिपूरिविमाननिव्योमथली । तिनकोजनुटारनधूरि चली ॥ परिपूरिअकाशहिधूरिरही । सुगयोमिटिशूरप्रकाशसही ॥ २२ ॥ दोहा ॥ अपनेकुलकोकलहक्यों, देखहिंरविभगवंत । यहैजानिअंतरकियो, मानोमहीअनंत ॥ २३ ॥ तोटकछंद ॥ बहुतामहदीहपताकलसै । जनुधूममेंअग्निकीज्वाल बसै ॥ रसनाकिधौंकालकरालघनी । किधौंमीचुनचैचहुँओर बनी ॥ २४ ॥ दोहा ॥ देखिभरतकीचलध्वजा, धूरिनमेंसुख

देत । युद्धजुरनकोमनहुँप्रति, योधनबोलेलेत ॥ २९ ॥
लक्ष्मण–दंडकछंद॥मारिडारौंअनुजसमेतयहिखेतआजु मेटि
धरौंदीरघबचननिजपुरको । सीतानाथसीतासाथबैठेदेखिछत्र
तरयाहिसुखशोषौंशोकसबहीकेउरको ॥ केशवदासविलासवी-
सविस्वेबासहोइकैकेयीकेअंगअंगशोकपुत्रज्वरको ॥ रघुराज
जूको साजसकलछिड़ाइलेउँभरतहिआजुराजदेउँयमपुरको २६

टी०–सैन्यके भयसों अथवा वालसों हालत जानिकै थंभित कहे थांभखंभा इति ॥ २० ॥ सन्मुख घाव जूझिकै वीर स्वर्ग को जात हैं सो मानो राजकुमारनके स्वर्ग जाइवेको भूमि मार्ग कहे राह कीन्हें हैं ॥ २१ ॥ विमान आकाश गामी रथ व्योमयान 'विमानोऽस्त्रीत्यमरः' ॥ २२ ॥ मही जो पृथ्वीहै तेहि अनंत कहे अनेक अंतर कियो अनेक धूरिके तुंग उठत हैं तेई अंतर व्यवधान हैं अथवा अनंत लक्ष्मणको संबोधन है ॥ २३ ॥ रसना जिह्वा ॥ २४ ॥ २५ ॥ पुत्र ज्वर कहे पुत्रमरण चौवीसवें प्रकाशमें कह्यो है कि जरा जब आवै ज्वराकी सहेली तहां ज्वराशब्द मृत्युको वाची है रघुराजजूकी साज अर्थ गजरथादि राज साजराज्य रामचन्द्रको है जाको लै ताके सब साज भरत सजे हैं तिन्हें छडाइ रामचन्द्रमे साजिकै राज्यमें वैठारिये इत्यर्थः ॥ २६ ॥

मू०–दोहा ॥ एकराजमेंप्रगटजहँ,द्वैप्रभुकेशवदास॥तहांबस-
तहैरैनदिन,मूरतिवंतविनास॥२७॥कुसुमविचित्राछंद ॥ तबस-
बसैनावहिथलराखी।मुनिजनलीन्हेसँगअभिलाषी ॥ रघुपति
केचरणनशिरनाये । उनहँसिकैगहिकंठलगाये ॥२८॥ भरत
दोधकछंद॥ मातुसबैमिलिबेकहँआई । ज्यौंसुतकोसुरभीसुल-
वाई ॥ लक्ष्मणस्योउठिकैरघुराई । पाँयनजायपरेदोउभाई
॥२९॥ मातनिकंठउठायलगाये । प्राणमनोमृतदेहनिपाये ॥
आइमिलीतबसीयसभागी । देवरसासुनकेपगलागी ॥ ३० ॥

टी०–पितानें भरतको राजा कियो है तासों भरतको राज्यपदभ्रष्ट होइ तौ पिताको वचन निष्फल होइ या हेतु भरतको यमपुरको राज्यदेउँ जामें रामचन्द्र

सुचित्त ह्वै अयोध्यामें राज्य करैं इति भावार्थः ॥ २७ ॥ अभिलागी जे मुनिजन हैं अथवा मुनिजन संग लीन्हें औ और रामदर्शनको अभिलाषी हैं तिन्हें लीन्हें रामचन्द्रके हँसिवेके हेतु लक्ष्मणके वचन हैं ॥ २८ ॥ थोरे दिनकी वियानी गाय लवाई कहावति है ॥ २९ ॥ भरतके वचन सुनिकै भरत शत्रुघ्नको सीताके पास राखि लक्ष्मण मातनके मिलिवेको आये ताके पीछे सीता जो सभागी हैं सोऊ देवर जे भरत शत्रुघ्न हैं तिन सहित सासुनको आइमिलीं प्राप्त भईं औ सासुनके पग लागी ॥ ३० ॥

मू०--तोमरछंद ॥ तबपूछियोरघुराइ । सुखहैंपितानभाइ ॥ तवपुत्रकोसुखजोइ । क्रमतेउठींसबरोइ ॥ ३१ ॥ दोधक छंद ॥ आंशुनसोंसबपर्वतधोये । जंगमकोजडजीवनरोये ॥ सिद्धबधूसिगरींसुनिआईं । राजबधूसबईसमुझाईं ॥ ३२ ॥ मोहनछंद ॥ धरीचित्तधीर । गयेगंगतीर ॥ शुचिह्वैशरीर । पितृतर्पिनीर ॥ ३३ ॥ भरत--तारकछंद ॥ घरकोचलियेअब श्रीरघुराई । जनहौंतुमराजसदासुखदाई ॥ यहबातकहीजलसों गलभीन्यौ । उठिसोदरपाइँपरेतबतीन्यों ॥ ३४ ॥ श्रीराम-दोधकछंद॥राजदियोहमकोबनरूरो।राजादियोतुमकोअबपूरो॥ सो हमहूंतुमहूंमिलिकीजै । बापकोबोलुननेकहुछीजै ॥ ३५ ॥ ॥ दोहा ॥ राजाकोअरुबापको, बचननमेटैकोइ । जौनमानिये भरत तौ, मारेकोफलहोइ ॥ ३६ ॥ भरत--स्वागताछंद ॥ मद्य पानरतस्त्रीजितहोई। सन्निपातयुतबातुलजोई ॥ देखिदेखितिनकोसबभागै । तासुबातहतिपापनलागै ॥ ३७ ॥

टी०-राम बनगमन दशरथमरण भरतागमनादि कथाक्रमसों कहत सब रोवत-भईं ॥ ३१ ॥ सिद्ध तपस्वी अथवा देवयोनिविशेष ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ भरथलक्ष्मण शत्रुघ्न तीनों पांयन परे कि घरको चलिवो उचित है ॥ ३४ ॥ रूरोसुन्दर ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ स्त्री जित कहे जो स्त्री करिकै जीतो गयो है अर्थ स्त्रीके वश्य है औ वातुल जो वहुत बातैं करै ॥ ३७ ॥

मू०—ईशईशजगदीशबखान्यो । वेदवाक्यबलतेपहिचान्यो ॥ ताहिमेटिहठिकैरहिहौंतौ । गंगतीरतनकोतजिहौंतौ ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ मौनगहीयहबातकहि, छोंडौसबैविकल्प । भरतजाइ भागीरथी, तीरकरचोसंकल्प ॥ ३९ ॥ इन्द्रवज्राछंद ॥ भागीरथीरूपअनूपकारी । चंद्राननीलोचनकंजधारी ॥ वाणीबखानिमुखतत्त्वसोध्यो । रामानुजैआनिप्रबोधबोध्यौ ॥ ४० ॥ उपेन्द्रवज्राछंद ॥ अनेकब्रह्मादिनअंतपायो । अनेकधावेदनगीतगायो ॥ तिन्हैंनरामानुजबंधुजानौ । सुनौसुधिकेवलब्रह्ममानौ ॥ ॥ ४१ ॥ निजेक्षयाभूतलदेहधारी । अधर्मसंहारकधर्मचारी ॥ चलेदशग्रीवहिमारिबेको । तपीव्रतीकेवलपारिबेको ॥ ४२ ॥ उठोहठीहोहुनकाजकीजै । कहैंकछूरामसोमानिलीजै ॥ अदोषतेरीसुतमातुसोहै । सोकौनमायाइनकोनमोहै ॥ ४३ ॥

टी०—ईश जे विष्णु हैं औ ईश जे महादेव हैं और जगदीश जे ब्रह्मा हैं तिन यह बात बखान्यो है कि स्त्रीजितादिकनके वचन मेटे सों पातक नहीं होत सो हम वेदवाक्य बलसों पहिचान्यो है अर्थ वेदमें तीन्यो देवके ऐसे वचन हैं ते हम सुन्यो है अथवा तीनों देवन बखान्यो है औ वेदवाक्य बल बलहू सों पहिचान्यो अर्थ वेदहू यहै कहत है ॥ ३८ ॥ विकल्पविचार भागीरथी मंदाकिनी ॥ ३९ ॥ तत्त्व कहे सारांश सोध्यो कहे ढूँढ्यो ता सारांश युक्त मुखसों वाणी बखानी अथवा ऐसी वाणी बखानी जामें तत्त्व जो राम कथा तत्त्व है ता करिकै अपने मुखको सोध्यो शुद्ध करचो औ रामानुज जे भरत हैं तिनको प्रबोध कहे उत्तम ज्ञान आनि कहे ल्याइकै बोध्यो बोध करचो पद कहि या जनायो कि रामचन्द्रप्रति बन्धु बुद्धिरूपी निद्रामें सोवतरहैं तामें जगायो ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ सुत भरतको संबोधन है यासों या जनायो कि इनकी मायामें मैं मोहिकै तुम्हारी माते इनको वनगमन चाह्यो ॥ ४३ ॥

मू०—॥ दोहा ॥ यहकहिकैभागीरथी, केशवभईअदृष्ट ॥ भरत कह्योतबरामसों, देहुपादुकाइष्ट ॥ ४४ ॥ उपेंद्रवज्राछंद ॥ चले

बलीपावनपादुकालै । प्रदक्षिणारामसियाहुकोदै ॥ गयेतनंदी पुरबासकीनों । सबंधुश्रीरामहिचित्तदीनों ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ केशवभरतहिआदिदै, सकलनगरकेलोग ॥ वनसमानवरघर बसे सकलविगतसंभोग ॥ ४६ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोराचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांभरतस्यचित्रकूटागमनं नामदशमः प्रकाशः ॥ १० ॥

टीका-पादुकारूपी इष्ट.कहे स्वामी देहु आशय यह कि राज्य पर स्वामी चाहिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

टी०-॥ ४८ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायादशमःप्रकाशः ॥ १० ॥

मू०-दोहा ॥ एकादशैप्रकाशमें, पंचवटीकोवास॥शूर्पणखाकेरूपको, रघुपतिकरिहैंनाश ॥ १ ॥ भरतोद्धताछंद॥चित्रकूट तबरामजूतज्यो। जाइयज्ञथलअत्रिकोभज्यो॥ रामलक्ष्मणसमेतदेखियो । आपनोसफलजन्मलेखियो ॥ २ ॥

टी०-॥ १ ॥ भज्यौ कहे प्राप्त भये ॥ २ ॥

मू०-चन्द्रवर्त्मछंद ॥ स्नानदानतपजापजोकरियो । शोधि शोधिपनजोउरधरियो ॥ योगयागहमजालगिगाहियो। रामचंन्द्रसबकोफललहियो ॥ ३ ॥ वंशस्थाछंद ॥ अनेकधापूजनअत्रिजूकरचो । कृपालुह्वैश्रीरघुनाथजूथरचो ॥ पतिव्रतादेवि महर्षिकीजहां । सुबुद्धिसीतासुखदाइतहां ॥ ४ ॥ दोहा ॥पतिव्रतनकीदेवजा, अनुसूयाशुभगात॥ सीताजूअवलोकियो,जरा सखीकेसाथ ॥ ५ ॥ चतुष्पदीछंद ॥ शिरश्वेतविराजैकारीति

राजै जनुकेशवतपबलकी। तनुवलितपलितजनुसकलवासना निकरिगईथलथलकी ॥ कांपतिशुभग्रीवासबअँगसींवादेखत चित्तभुलाहीं । जनुअपनेमनप्रतियहउपदेशतियाजगमेंकछु नाहीं ॥ ॥६॥प्रमिताक्षराछंद ॥ हरवाइजाइ सियपाइँपरी । ऋषिनारिसूंघिशिरगोदधरी ॥ बहुअंगरागअँगअंगरये । बहु भाँतिताहिउपदेशदये ॥ ७ ॥ स्रग्विनीछंद ॥ रामआगेचले मध्यसीताचली । बंधुपाछेभयेसामसोमैभली ॥ देखिदेहीसबै कोटिधाकेमनो । जीवजीवेशकेबीचमायामनो ॥ ८ ॥

टी०–मनको शोधिशोधि शुद्ध करि करि गुनकी जो उर विशेष धरयो है अर्थ तुम्हारो ध्यान करयो है अथवा मनहीको शुद्ध करिकै जो उरमें धारण करयो अर्थ मनकी जो चंचलता है ताहि छोडाइ अपनेवश्य करयो है सो हे रामचन्द्र ! ताको सब को फल जो तुम्हारे दर्शन हैं ताको पायो ॥ ३ ॥ ४ ॥ जरा कहे बुढाईरूपी जो सखी है ताके साथ देख्यो ॥ ५॥ तन वलितकहे युक्त है पलितकहे ढिलाइसों अर्थ वृद्धता सों त्वचामें सिकुरा परिगये हैं सो मानों थलथल की अंगअंगकी वासना विषय वासना निकरिगई है ताहीते अंग अंग सिकुरि गयेहैं सींवा मर्यादा ॥ ६ ॥ हरवाइकहे हरबराइकै ॥ ७ ॥ वनोकहे कह्यो जीवेश ईश्वर ॥ ८ ॥

मू०–मालतीछंद ॥ विपिनविराधबलिष्ठदेखियो । नृपतनयाभयभीतलेखियो ॥ तबरघुनाथबाणकैहयो । निजनिर्णवा पंथकोठयो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ रघुनायकसायकधरे, सकललोक शिरमौर ॥ गयेकृपाकरिभक्तिवश, ऋषिअगस्त्यकेठौर॥१०॥ वसंततिलकाछंद ॥ श्रीरामलक्ष्मणअगस्त्यसनारिदेख्यो । स्वाहासमेतशुभपावकरूपलेख्यो ॥ साष्टांगक्षिप्रअभिवंदन जाइ कीन्हों ॥ सानंदआशिषअशेषऋषीशदीन्हों ॥ ११ ॥ बैठारि आसनसबैअभिलाषपूजे । सीतासमेतरघुनाथसबन्धु-

पूजे ॥ जाके निमित्तहमयज्ञयज्योसोपायो । ब्रह्मांडमंडनस्व-रूपजोवेदगायो ॥ १२ ॥

टी०-निर्वाण जो मोक्ष है ताके पंथ कहे राह में ठर्या कहे युक्त करयो अर्थ मुक्ति दियो ॥ ९ ॥ सकल लोक शिरमौर जे रघुनाथ हैं ते सायक जे बाण हैं तिनको धरे अगस्त्यके ठौरमें गये अथवा रघुनायक भक्तिके वश कृपा-कारिकै अगस्त्यके ठौर गये तहां सकललोक शिरमौर जे अपने सायक हैं तिन्हें धरे धारण करयो विष्णु के धनुर्बाण अगस्त्य के यहां धरे रहे हैं ते रामचंद्र को अगस्त्य दियो है यह कथा वाल्मीकीय रामायणमें है अथवा सकललोक शिर-मौर जो विष्णु हैं तिनके सायकधरेधारणकरयो अथवा रघुनायकके सकल लोक शिरमौर सायक अगस्त्यके ठौर धरे हैं तालिये औ भक्ति वश कृपाकारि अग-स्त्यके ठौर गये ॥ १० ॥ स्वाहा अग्नि की स्त्री ॥ ११ ॥ सर्वे आपने अभि-लाष पूजे पूर्ण करे ब्रह्माण्ड को मंडन भूषण जो यह रावरो स्वरूप है ताहीके मिलिवे के लिये हम यज्ञ यज्यौ होम्योकरयो इति सो यह स्वरूप पायो ॥ १२ ॥

मू०-पद्धटिकाछंद ॥ ब्रह्मादिदेवजबबिनयकीन । तटक्षीर सिन्धुकेपरमदीन ॥ तुमकह्योदेवअवतरहुजाइ। सुतहोदशरथ-कोहोतुआइ ॥ १३ ॥ हमतबतेमनआनन्दमानि । मनचिंतवत तवआगमनजानि । ह्वैरहिजैकरिजैदेवकाजु । ममफूलिफल्यो तपवृक्षआजु ॥ १४ ॥ श्रीराम-पृथ्वीछंद ॥ अगस्त्यऋषिरा-जजूबचनएकमेरोसुनौ।प्रशस्तसबभाँतिभूतलसुदेशजीमेंगुनौ॥ सनीरतरुखंडमंडितसमृद्धशोभाधरैं । तहांहमनिवासकीविमल पर्णशालाकरैं ॥ १५ ॥ अगस्त्य-पद्मावतीछंद ॥ यद्यपिजग कर्त्तापालकहर्त्तापरिपूरणवेदनगाये । अतितदपिकृपाकरिमा-नुषवपुधरिथलपूछनहमसोंआये ॥ सुनिसुरवरनायकराक्षस-घायकरक्षहुमुनिजनयशलीजै । शुभगोदावरितटविशदपंचव-टपर्णकुटीतहँप्रभुकीजै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ केशवकहेअगस्त्यके-पंचवटीकेतीर ॥ पर्णकुटीपावनकरी, रामचन्द्ररणधीर ॥ १७ ॥

॥ त्रिभंगीछंद ॥ फलफूलनपूरेतरुवररूरेकोकिलकुलकलरव-बोलैं। अतिमत्तमयूरीपियरसपूरीबनबनप्रतिनाचतिडोलैं॥ साराशुकपंडितगुणगणमण्डितभावनिमेंअरथबखानै॥ देखहु रघुनायकसीयसहायकमदनरतिमधुजानै ॥ १८ ॥

टी०-॥ १३ ॥ तव कहे तुम्हारो ॥ १४ ॥ प्रशस्तनीको सुदेश समउच्च नीच रहितेति सनीर सजल औ तरु जे वृक्ष हैं तिनको जो खण्ड समूह है तासों मण्डित युक्त औ समृद्ध कहे वर्द्धमान अधिक इति शोभाको धरे धारण करे होइँ निवासको कहे वसिवे की ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ रामचन्द्रके आगमन-सों दंडकारण्यमें रूरे कहे सुन्दर जे तरुवृक्ष हैं ते फल, औ फूलनसों पूरे. युक्त भये अथवा रूरेजे फल औ फूल हैं तिनसों तरुवर पूरे औ कोकिल के जे कुल-जाति समूह हैं ते कल कहे अव्यक्त मधुररव शब्दको बोलतहैं ॥ "काकलीतुकले-सूक्ष्मेध्वनौतुमधुरास्फुटे ॥ कलो मंद्रस्तुगंभीरेतारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु " इत्यमरः ॥ औ अतिमत्त जे मयूरीहैं ते पिय जे मयूर हैं तिनके रसमें प्रेममें पूरी वनवन प्रति नाचत डोलती हैं अर्थ जहाँ जहाँ मोर नाचत हैं तहाँ तहाँ संग मयूरी डोलती हैं औ सारो सारिका औ शुक जे गुणगणसों मंडित पंडित प्रवीणहैं अर्थ अनेक गुणनमें पंडित हैं ते भावनियम कहे अनेक भाव अभिप्राय युक्त गानके अर्थ को बखानत हैं अथवा नृत्यके जे अनेक भाव चेष्टा हैं तिनमें अर्थ को बखानत हैं जब जैसी चेष्टा देखत हैं तब तैसे अर्थ के प्रयोजनको बखान करत हैं तामें तर्क करतहैं कि रघुनायक रामचन्द्र औ सीता औ सहायक जे लक्ष्मण हैं तिनको इन वृक्षादिकन देख्यो है सो मानो मदन काम और रतिसहित मधुवसन्त जानत हैं तो वसंतहूके आगमनमें ये कौतुक होत हैं तासों उत्प्रेक्षा करयो औ युक्ति यह कि वसंत वनको प्रभुहैं सो प्रभुकी अवाईमें अनेक वितान बिछावने नृत्यादि रचना सब करत हैं सो रतिसहित मदन जो मित्र है तासों युक्त वसंतको आवत देखि वन करयो प्रफुल्लित जे अनेक कुंज हैं तेई वस्त्र भवन औ वितान हैं औ गिरे जे पुष्पहैं तेई पुष्प बिछावने हैं कोकिल गावत हैं मोर नाचत हैं सारो शुक बखान करत हैं वेश्यादि नृत्य कारिनहूमें बखान कर्त्ता एकरहत है ॥ १८ ॥

मू०-लक्ष्मण-सवैया ॥ सबजातिफटीदुखकीदुपटीकपटी नरहैजहँएकघटी। निघटीरुचिमीचघटीहूघटीजगजीवयतीन-

कीछूटीतटी । अघओघकीबेरीकटीविकटीनिकटीप्रकटीगुरु-ज्ञानगटी । चहुँओरननाचतिमुक्तिनटीगुणधूरजटीवनपञ्च-वटी ॥ १९ ॥

टी०-दुपटी द्वैपाटको ओढिवे को वस्त्र सो जहाँ जा पंचवटीके निकट नव फाटि जाति है नेकहू नहीं रहति अर्थ सब दुःख जहां नशि जात हैं औ कपटी जीव जहां एक घडी नहीं रहत यासों या जनायो कि जहाँ जातही कपटीको कपट दूरि होतहै औ जाकी शोभा निरखि जगके जे यती तपस्वी जीव हैं तिनकी तटी कहैं ध्यान स्थिती सो छूटि औ मीचुकी रुचि घटीहू घटी कहैं घरी घरीमें निघटी घटत भई अर्थ यती जीवनको मरे ते मुक्ति होति है परन्तु जा स्थानकी शोभा निरखि मुक्तिहू की इच्छा नहीं करत अघ पाप ओघ समूह वेरी वंधन जंजीरसो ऐसी जो पंचवटीहै सो धूर्जटी जो महादेव हैं तिनके गुणनसों जटी कहे युक्त है येई दुःख नाशनादि गुण महादेवहू मों हैं अथवा ये जे दुःख नाशनादि गुणहैं तिनसों औ धूर्जटी जे महादेव हैं तिनसों जटी कहे युक्त है पंचवटी ॥ १९ ॥

मू०-हाकलिकाछन्द ॥ शोभतदण्डककीरुचिबनी । भाँति-नभातिनसुन्दरघनी ॥ सेवबडेनृपकीजनुलसै ॥ श्रीफलभूरि-भाव जहँबसै ॥२०॥ बेरभयानकसीअतिलगै । अर्कसमूहज-हाँजगमगै ॥ नैनतकोबहुरूपनग्रसै । श्रीहरिकीजनुमूरतिलसै २१

टी०-दण्डकनाम राजा रहे हैं तिनको राज्य शुक्रके शाप सों वन ह्वै गयो है तासों दंडकारण्य कहावत है रुचि शोभा श्रीफल बेल औ लक्ष्मीको फल वडे राजाकी सेवामें वहुत द्रव्य पाइयत है ॥२०॥ भयानक बेर प्रलयकाल अर्क मदार औ सूर्य प्रलय कालहूमो बारहौं आदित्य उगत हैं नैननको अनेक रूपकरि ग्रसत हैं यासों या जनायो कि क्षणमें अधिक अधिक नवीन शोभा धरत है ऐसी विष्णुकी मूर्तिहू है तासों समता कर्यो सुंदरताको याही प्रकार वर्णन है यथामाघकाव्ये ॥ "दृष्टोपिशैलःसमुहुर्मुरारेरपूर्ववद्विस्मयमाततान ॥ क्षणेक्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपंरमणीयतायाः" ॥ २१ ॥

मू०-राम-दोधकछंद ॥ पांडवकीप्रतिमासमलेखो । अर्जुन भीममहामतिदेखो ॥ हैसुभगासमदीपतिपूरी । सिंदुरकीतिल-

कावलिरूरी ॥ २२ ॥ राजतिहैयहज्योंकुलकन्या । धाइविराजतिहै सँग धन्या ॥ केलिथलीजनुश्रीगिरिजाकी । शोभधरेशितकंठप्रभाकी ॥ २३ ॥ मनहरनछंद ॥ अतिनिकटगोदावरीपापसंहारिणी । चलतरंगतुंगावलीचारुसंचारिणी । अलिकमलसौगंधलीलामनोहारिणी । बहुनयनदेवेशशोभामनोधारिणी ॥ २४ ॥

टी०—प्रतिमा चित्र अर्जुन ककुभवृक्ष औ पांडुपुत्र ॥ "अर्जुनः ककुभे पार्थे इति मेदिनी" ॥ औ भीम अम्लवेतस वृक्ष औ भीमसेन ॥ "भीमोवृकोदरेघोरे शंकरेप्यम्लवेतसे इत्यभिधानचिंतामणिः" ॥ जो कहौ रामावतार प्रथम भयो है अर्जुनादि कृष्णावतार समय भो रहे हैं पूर्वापर विरोधहै तौ सब कल्पनमें दशौं अवतार होतहैं सो अनेक रामावतार कृष्णावतार भये हैं तासों दोष नहीं है यथा—तुलसीकृत रामायण में कहा है ॥ 'कलपकलपप्रति प्रभुअवतारा' । सुभगा सौभाग्यवती स्त्री सधवा इति ताके सम शोभा पूरीहै दंडककी रुचि सिंदुरक जो है वृक्ष विशेष औ तिलक वृक्ष करिकै रूरी सुन्दर है ॥ "सिन्दूरस्तरुभेदेस्यादितिमेदिनी ॥ तिलकोद्रुमरोगाश्वभेदेचतिलकालके इतिमेदिनी ॥ औ सुभगा सिन्दूरक जो संदुर है ताके तिलक की अवली करिके रूरी है अथवा सिन्दुरक करिकै और और जे सुवर्ण मणि आदि के तिलक हैं तिनकी अवली करिकै रूरी सुंदर है ॥ २२ ॥ कुलकन्या पद सों वडे की कन्या जानो धाइ वृक्षविशेष औ उपमातास्तना दूध पिआवति है गिरिजा पार्वती शितकण्ठ मयूर औ महादेव ॥ २३ ॥ जा पर्णकुटीके अति निकट पापसंहारिणी गोदावरी नाम नदी है फेरि कैसी है गोदावरी चल चंचल जे तरंग हैं तिनके जे तुंग समूह हैं तिनकी जे अवली पांती हैं तिनकी चारु कहे अच्छी भाँति संचारिणी चलावन हारी है अर्थ अनेक तरंगैं उठायो करति है अथवा तरंग तुंगावलिन करिकै चारु संचारिणी चलनहारी है अलि भ्रमर युक्त जे कमल हैं तिनके सौगंध सुगंध करिकै लीला है मनोहारिणी जाकी औ अलियुक्त कमलन करिकै बहुनयन जे देवेश इंद्र हैं तिनकी शोभा की मानो धारिणी धारण कर्त्री है इंद्रके सहस्रनेत्र हैं यहां नेत्र सदृश अलियुक्त कमलहै ॥ २४ ॥

मू०—दोधकछन्द ॥ रीतिमनोअविवेककीथापी ॥ साधुनकी गति पावत पापी । कंजजकीमतिसीवडभागी । श्रीह-

रिमंदिरसोंअनुरागी ॥ २५ ॥ अमृतगतिछंद ॥ निपटपति-व्रतधरणी । जगजनकेदुखहरणी ॥ निगमसदागतिसुनिये । अगतिमहापतिगुनिये ॥ २६ ॥

टी०-कंजजब्रह्मा ब्रह्माकीमतिहूको अनुरागहरि मंदिर वैकुण्ठ में है औ गोदावरी हू को है काहेते जो कोऊ स्नान करत हैं ताको आपनो जानि वैकुण्ठ पठावति है ॥ २५ ॥ यामें विरोधाभास है सदा पति जो समुद्र हैं तामें लीन रहतिहै तोसों निपट पतिव्रत धरणी कह्यो विरोध पक्षमें दुःख काम पीडा अविरोध में पापजनित दुःख दरिद्रादि निगम जे वेद हैं तिनमें सदा गति कहे सदा है गति मुक्ति जासों ऐसी सुनियत है अर्थ जो कोऊ स्नान करत हैं ताकोमुक्तिदेतिहैं औ पति जो समुद्रहै ताही को अगति सुनियत है अर्थ ताको गति मुक्ति नहीं देति यह विरोधार्थ है अविरोधहू की अगति गमन रहित समुद्रको जल वहत नहीं ॥ २६ ॥

मू०-दोहा ॥ विषमेंयहगोदावरी, अमृतनकोफलदेति ॥ केशवजीवनहारको, दुखअशेषहरिलेति ॥ २७ ॥ त्रिभंगी-छंद ॥ जबजबधरिवीनाप्रगटप्रबीनाबहुगुणलीनासुखसीता । पियजियहिरिझावैदुखनिभजावै विविधबजावैगुणगीता ॥ तजिमतिसंसारीविपिनविहारीदुखसुखकारीघिरिआवै । तबतबजगभूषण रिपुकुलदूषणसबकोभूषणपहिरावै ॥ २८ ॥ तोटकछंद ॥ कबरी कुसुमालिसिखीनदई । गजकुंभनिहार-निशोभमई ॥ मुकुताशुक सारिकनाकरचे । कटिकेहरिकिं-किणिशोभसचे ॥ २९ ॥ दुलरी कलकोकिलकंठबनी ॥ मृगखंजनअंजनभाँतिठनी ॥ नृपहंसनि नूपुरशोभभिरी । कलहंसनिकंठनिकंठसिरी ॥ ३० ॥

टी०-याहूमें विरोधाभास है विषमय कहे जलमय ॥ "विषन्तुगरलेतोये इति मेदिनी" ॥ औ जैसे अमृत अमर करत है तैसे याहू मुक्तकै अमर करतिहै विरोध पक्षमें जीवन जीव अविरोधमें जल दुःख प्यास दुःख अथवा विषयमें कहे टेढ़ीहै

अमृत जे देवता हैं तिनके फलको देति है अर्थ शुद्धगतिको देति है औ जीवनहार जे यमराज हैं तिनको दुःख कहे तिनकृत दुःख यम यातना इति। ताको अशेष कहे संपूण हरिलेति है ॥ २७ ॥ सुख कहे सुखसों गुण सीतारामचंद्रकी गुणगीता दुःख कारी व्याघ्रादि सुखकारी कोकिलादि जे विपिनविहारी कहे वन विहारी हैं ते संसारी मति कहे भेद भय मतिको तजिकै मनुष्यके समीपमें वन जीवनको आपहीसों आइबो आश्चर्य है सो आवत हैं याही संसारी मतिको त्याग जानो ॥ २८ ॥ तीनि छंदनमें एक वाक्यता है शिखी मोरकबरी कहे केशपाश ॥ २९ ॥ नृप हंसराजहंस ॥ ३० ॥

मू०–सुखबासनिवासितकीनतबै । तृणगुल्मलतातरुशैल सबै ॥ जलहूथलहूयहिरीतिरमैं । बनजीवजहांतहँसंगभ्रमैं ॥ ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ सहजसुगंधिशरीरकी, दिशिविदिशन-अवगाहि ॥ दूतीज्योंआई लिये, केशवशूर्पनखाहि ॥ ३२ ॥ मरहट्टाछंद ॥ यकदिनरघुनायकसीयसहायकरतिनायक-अनुहारी । शुभगोदावरीतटविमलपंचवटबैठेहुतेमुरारी ॥ छबिदेखतहींमनमदनमथ्योतबुशूर्पणखातोहिकाल । अति-सुंदरतनुकरिकछुधीरज धारि बोलीवचनरसाल ॥ ३३ ॥

टी०–सुखवासन कहे सुखके सुगंधनसों तृण कुशादि गुल्म गुलाव आदि लता लवंगादि तरु आम्रादि औ याही रीतिसों अर्थ जैसे सीताजूके गावतमें रमत हैं तैसेही सौंदर्यादिहूके वश ह्वै रामचन्द्रके समीपमें जल जीव हंसादि औ थलजीव मयूरादि जे वन जीवकहे दंडकारण्यके जीव हैं ते रमत हैं औ जहाँ तहाँ रामचंद्रके संग भ्रमत हैं अर्थ जहाँ रामचन्द्र जात हैं तहां संग संग भ्रमत फिरत हैं तीन हू छंदनमें युक्ति यह कि जा जीवको जो अंगवर्ण्य है ताकेही अपन पहिरायो अथवा जाके जा अंगमें रामचंद्र जो भूषणपहिरायो ताको तीन अंगसुंदरताको प्राप्त ह्वै वर्ण्य भयो औ काहू काहू जीवके अवपर्यंत ताको चिह्न रह्यो है ॥ ३१ ॥ जैसे दूती ढूटिकै स्त्रीको पुरुषके पास लै जाति है तैसे रामचन्द्रके शरीरकी जो सहज स्वाभाविक सुगंधि है सो दिशि विदिशनमें अवगाहिकै ढूटिकै शूर्पनखाको रामचंद्रके पास ल्याई रामचंद्रके अंगनको मदन सुगंध

जो वनमें वायु योगसों फैलि रह्यो है ताको आघ्रानके ताके अनुसार शूर्पणखा रामचंद्रके पास आई इति भावार्थः ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

मू०-शूर्पणखा-सवैया ॥ किन्नरहोनररूपविचक्षणयच्छकी स्वच्छशरीरनिसोहौ । चित्तचकोरकेचंदकिधौंमृगलोचनचारुविमाननिरोहौ । अंगधरेकिअनंगहौकेशवअंगीअनेकनकेमनमोहौ । बीरजटानिधरेधनुवाणलियेवनितावनमेंतुमकोहौ ॥ ३४ ॥ राम-मनोरमाछंद ॥ हमहैंदशरत्थमहीपतिकेसुत । शुभरामसुलक्ष्मण नामनसंयुत ॥ यहशासनदैपठयेनृपकानन। मुनिपालहुमारहुराक्षसकेगन ॥३५॥ शूर्पणखा॥नृपरावणकीभगिनीगनि मोकहँ।जिनकीठकुराइतितीनहुलोकहँ॥मुनिजैदुखमोचनपंकजलोचन।अबमोहिंकरोपतिनीमनरोचन ॥३६॥ तोमर छंद॥ तबयोंकह्योहँसिराम । अबमोहिंजानिसबाम ॥ तियजायलक्ष्मणदेखि समरूपयौवनलेखि ॥३७॥ शूर्पणखा-दोधकछंद ॥ रामसहोदरमोतनदेखो । रावणकीभगिनीजियलेखो ॥ राजकुमाररमोसँगमेरे । होहिंसबैसुखसंपतितेरे ॥ ३८ ॥ लक्ष्मण ॥ वैप्रभुहोंजनजानिसदाई । दासिभयेमहँकौनिबड़ाई ॥ जौभजियेप्रभुतौप्रभुताई ॥ दासिभये उपहास सदाई ॥ ३९ ॥

टी०-विचक्षणप्रवीण चित्तरूपी जो चकोर है ताके चंद्रमाही जैसे चन्द्रमा चकोरको सुख देत है तैसे तुम चित्तको सुख देत हो चंद्रमा मृगनके विमान रथको रोहत है अर्थ चढत है तुम मृगरूपी जे लोचन हैं तिनहीके विमानको रोहतहौ अर्थ जो तुमको कोऊ देखत है ताके नयननमें ऐसे बसि जात हौ कि उतरत नहीं ॥ ३४ ॥ शासन आज्ञा ॥ ३५ ॥ हे मन ! रोचन अर्थ मेरे मनको तुम अति रुचत हौ ॥ ३६ ॥ आपने रूप औ यौवन संग इन्हें लेखि कहे जानु अर्थ जैसो रूप यौवन तेरो है तैसो इनहूंको है ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ सदाई जन हों काहि या जनायों कि कबहूं प्रभुता ह्वैबेकी आशा नहीं है ॥ ३९ ॥

मू०—मल्लिकाछंद॥ हासकेबिलासजानि। दीहमानखंडमानि॥ अक्षिबेकोचित्तचाहि। सामुहेभईसियाहि॥ ४०॥ तोमरछंद॥ तबरामचन्द्रप्रवीन। हँसिबंधुत्योंदृगदीन॥ गुनिदुष्टता सहलीन। श्रुतिनासिकाबिनुकीन॥ ४१॥ दोहा—शोन छिंछिछूटतबदन, भीमभईतेहिकाल॥ मानोकृत्याकुटिलयुत, पावकज्वालकराल॥ ४२॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणि-श्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां शूर्पणखाश्रवणनासिकाछेदनं नामैकादशः प्रकाशः॥११॥

टी०—जब जान्यौ कि ये मोसों रमिहैं नहीं केवल मोसों हासके बिलास उपहास करत हैं तब दीह कहे बडो आपनो मानखंड कहे अपमान मानिकै॥ ४०॥ ॥ ४१॥ कराल पावक ज्वाल सों युक्त है वदनजाको ऐसी मानो कृत्यानामा देवी है॥ "कृत्याक्रियादेवतयोरितिमेदिनी" ॥ ४२॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकायामेकादशः प्रकाशः॥ ११॥

मू०—दोहा॥ या द्वादशे प्रकाशखर, दूषण त्रिशिरानाश॥ सीताहरणविलाप सु,-ग्रीवमिलन हरि त्रास॥ १॥

टी०—त्रासजो भय है ताको हरिकै सुग्रीवको मिलन है अर्थ वालिको वध निश्चय करि सुग्रीवको त्रास हरि रामचन्द्रमित्रता करि है॥ १॥

मू०—तोटकछंद॥ गइशूर्पणखाखरदूषणपै। सजिल्याइतिन्हैंजनभूषणपै॥ शरएकअनेकतेदूरिकिये। रविकेकरज्योंतमपुंजपिये॥ २॥ मनोरमाछंद॥ नृपकेखरदूषणज्योंखरदूषण। तमदूरिकियेरविकेकुलभूषण॥ गदशत्रुत्रिदोषज्योंदूरिकरैवर। त्रिशिराशिरत्योंरघुनंदनकेशर॥ ३॥ भजिशूर्पणखागइरावणपैतव। त्रिशिराखरदूषणनाशकहेसब॥ तवशूर्पण-

खरसुखबातसबैसुनि । उठिरावणगोमारीचजहाँमुनि ॥ ४ ॥ मनोरमाछंद ॥ रावणबातकहीसिगरीत्यों । शूर्पणखाहिंविरूप करीज्यों ॥ एकहिरामअनेकसंहारे । दूषणस्योंत्रिशिराखर मारे ॥ ५ ॥ तूअबहोहिसहायकमेरो । हौंबहुतैगुणमानिहौंतेरो ॥ जोहंरिसीतहिल्यावनपैहैं । वैभ्रमिशोकनहींमरिजैहैं॥६॥ मारीच ॥ रामहिंमानुषकै जनिजानो । पूरणचौदहलोकवखानो ॥ जाहुँजहाँतियलैसुनदेखो । हौंहरिकोजलहूंथललेखो॥७॥

टी०–रामचन्द्रकी आज्ञासों लक्ष्मण सीताको लैकै गुफामें राख्यो है यह कथा शेष जानो ॥ २ ॥ वृष राशिके रवि जे शेखर कहे तृणके दूषण होत हैं सुखाइ डारत हैं तैसे रविके कुलके पूषण जे रामचन्द्र हैं तिन खर औ दूषण नाम राक्षस को दूरि कियो कहे मारचो औ गेद शत्रु जो वैद्य है सो जैसे त्रिदोष कहे कफ पित्त वात तीनोंको दोष एकही बार दूरि करत है तैसे रघुनंदनके शर त्रिशिराके शिरनको एकही बार दूर करचो ॥ ३ ॥ ४ ॥ स्यों कहे सहित ॥५॥ सीताको ढूँढत भूतलमें भ्रमि कहे घूमिकै अथवा संदेहको माप्त ह्वैकै ॥ ६ ॥ चौदहों लोकमें पूर्ण कहे व्याप्त ॥ ७ ॥

मू०–रावण–सुन्दरीछंद ॥ तूअबमोहिंसिखावतहैशठ । मैं वशजगतकियोहठहीहठ ॥ बेगिचलैअबदेहिनऊतरु । देव सबैजजएकनहींहरु ॥ ८ ॥ दोहा ॥ याचिचल्योमारीचमन, मरणदुहूंविधिआसु ॥ रावणकेकरनरकहै, हरिकरहरिपुरबासु॥ ॥ ९ ॥ राम–सुंदरीछंद ॥ राजसुताइकमंत्रसुनोअव । चाहत हौंभुवभारहरेउसब ॥ पावकमोंनिजदेहहिंराखहु । छायशरीर मृगहिअभिलाषहु ॥ १० ॥ चामरछंद ॥ आइयोकुरंगएक चारुहेमहीरको । जानकीसमेतचित्तमोहि रामवीरको ॥ राज पुत्रिकासमीपसाधुबंधुराखिकै । हाथचापबाणलैगयेगिरीशनां-

---

१ सूर्य्य. २ रोग.

घिकै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ रघुनायकजबहींहन्यो, सायकशठ मारीच ॥ हालक्ष्मणयहकहिगिरेउ, श्रीपतिकेस्वरनीच ॥ ॥ १२ ॥ निशिपालिकाछंद ॥ राजतनयातबहिंबोलसुनियों कहेउ । जाहुचलिदेवरनजातहमपैरहेउ । हेममृगहोहिनहिंरै-निचरजानिये । दीनस्वररामकेहिभाँजिमुखआनिये ॥ १३ ॥

टी०-एक हर महादेवको छोडिकै और सब देवता मेरेजन कहे सेवक हैं ॥ ॥ ८ ॥ आशु कहे जल्दी ॥ ९ ॥ छाया शरीरसों मृगै कहे चलिबेको अभि-लाप करो अर्थ छाया शरीर आलंब्य रहौ अथवा छाया शरीरसों या सुवर्णमृगको अभिलाषी ॥ १० ॥ हेम सुवर्ण औ हीरनको कुरंग हरिण बनि मारीच आयो ॥ ११ ॥ जैसो रामचन्द्रको स्वरकहे शब्द है ताही स्वरसों हा लक्ष्मण यह कहिकै गिरयौ नीच मारीचको विशेषण है ॥ १२ ॥ यह कोऊ राक्षस है हरिण-को रूप धरिकै आयो है ताने रामचन्द्रको मारयो तासौं हा लक्ष्मण ऐसो दीन-स्वर रामचन्द्र कह्यो इति भावार्थः ॥ १३ ॥

मू०-लक्ष्मण ॥ शोचअतिपोचउरमोचदुखदानिये । मातु यहबातअवदातममभानिये ॥ रैनिचरछद्मबहुभाँतिअभिलाप-हीं । दीनस्वररामकबहूंनमुखभापहीं ॥ १४ ॥ चंचलाछंद ॥ पक्षिराजयक्षराजप्रेतराजयातुधान । देवताअदेवतानृदेवताजि-तेजहान ॥ पर्वतारिअर्बखर्बसर्बसर्बथाबखानि । कोटिकोटिसूर चन्द्ररामचन्द्रदासमानि ॥ १५ ॥ चामरछन्द ॥ राजपुत्रि-काकह्योसोऔरकोकहैसुनै । कानमूंदिबारबारशीशबीसधा-धुनै ॥ चापकीयरेखखाँचिदेवसाखिदैचले । नांघिहैतेभस्म होहिंजीवजेबुरेभले ॥ १६ ॥

टी०-अति पोच कहे निषिद्ध जो दुःखदानि शोच है ताको उरसों मोचु कहे त्याग करौ छद्म कपट ॥ १४ ॥ पक्षिराज गरुड यक्षराज कुबेर प्रेतराज यम-राज यातुधान राक्षस देवता औ अदेवता दैत्य नृदेवता राजा औ पर्वतारि इंद्रते ये सब अर्ब खर्ब संख्या परिमित औ अर्बखर्ब सर्वकहे महादेव अर्बखर्बको संबंध

राशिपदहूमों है तिन्हैं सर्वथा कहे सब प्रकार बखानि कहे कहाँ औ कोटि सूर्य औ चन्द्रमा हैं तिन सबको रामचन्द्रके दास कहे सेवक मानो रामचन्द्रके मारिबे लायक ये कोऊ नहीं हैं इति भावार्थः ॥ १५ ॥ लक्ष्मणको राजपुत्रिकाने जे कटुवचन कहे तिन्हैं और कौन कहै औ कौन सुनै अर्थ अतिकटुवचन कहे जे काहूके कहिबे सुनिबे लायक नहीं हैं औ जो थोरो सुनिबोहू करै तौ जामें आगे और ना सुनिपरै तालिये कान मूंदिकै बिनसुने वचननके शोकसों बीसधा अर्थ अनेक प्रकारसों शीश धुनै अथवा सीताही कान मूँदिकै शीश धुनत भई कान मूँदिबेको हेतु यह जामें लक्ष्मणके ये बोध वचन न सुनिपरै तौ लक्ष्मण वातै ना कहैं रामचन्द्रके पास जाइ अथवा जामें कटुवचन ना सुनिपरैं तालिये लक्ष्मणहीं कान-को मूंदिकै वारवार शीशधुनतभये ॥ १६ ॥

मू०--छिद्रताकिक्षुद्रराजलंकनाथआइयो । भिक्षुजानिजान-कीसोभीषकोबोलाइयो ॥ शोचपोचमोचिकैसकोचभीमवेष-को । अंतरिक्षहींकरिज्योंराहुचंद्ररेखको ॥ १७ ॥ दण्डक ॥धू-मपुरकेनिकेतमानोंधूमकेतुकी शिखाकीधूमयोनिमध्यरेखासु-धाधामकी । चित्रकीसीपुत्रिकाकीरूरेबयरूरेमांहशम्बरछोडा-इलईकामिनिकीकामकी ॥ पाखंडकीश्रद्धाकीमठेशबशएकाद-शीलीन्हीकैश्वपचराजशाखाशुद्धसामकी । केशवअदृष्टसाथ जीवजीतिजैसीतैसीलंकनाथहाथपरीछायाजायारामकी ॥ १८॥

टी०-क्षुद्रनको राज जो लंकनाथ है सो छिद्र कहे अवसर ताकि भिक्षुककहे दंडीरूप धरिकै सीतापै आयो शूर्पणखाकी नासिका काटेको जो पोच कहे बुरो शोच है सीता हरण निश्चय करि ताको मोचिकै छोडिकै अथवा पोच रावणको विशेषण है औ भीमवेषको जो संकोच सिकोरनो रह्यो ताको मोचिकै अर्थ जो लघुशरीर करयोरहै ताको बडाइकै अंतरिक्ष आकाश ॥ १७ ॥ धूमपुर के निकेत कहे घरमें अर्थ धूम समूह में धूमकेतु जो अग्नि है ताकी शिखाज्योति है कि धूमयोनि जे मेघहैं तिनके मध्यमें सुधाधाम जो चन्द्रमा है ताकी रेखा कहे कलाहै कि रूरेकहे बडे बघरूरे कहे बौंडर वायु ग्रंथि करिकै प्रसिद्ध है तामें चित्रपुत्रिका है कि शंबरनामा जो दैत्य है सो कामको शत्रुहै तेहि काम की

कामिनी रतिको छँडाइ लीन्ही है कि पाखंडके वशमों अद्धापरी है यह कथा विज्ञानगीतामें प्रसिद्ध है कि मठपतिके वश एकादशी परी कि श्वपचराजु चांडालन को राजा शुद्धसामवेद की शाखा लीन्होंहै अदृष्ट कर्मके साथ में जैसी जीवैं ज्योति परी है तैसी छाया कृत जो राम की जाया सीता है सो लंकनाथ के हाथ में परी ॥ १८ ॥

मू०-सीताजू-हरिलीलाछंद ॥हारामहारमनहारघुनाथधीर। लंकाधिनाथबशजानहुँमोहिंबीर ॥ हापुत्रलक्ष्मणछोडावहुबेगिमोहिं । मार्तंडवशयशकीसबलाजतोहिं ॥१९॥ पक्षीजटायु यहबातसुनंतधाइ।रोक्योतुरंतबलरावणदुष्टजाइ॥कीन्हों प्रचंड रथछत्रध्वजाबिहीन । छोडयोविपक्षतबभोजबपक्षहीन ॥२०॥ संयुताछंद॥दशकंठसीतहिलैचल्यो।अतिवृद्धगीधहियोदल्यो॥ चितजानकीअधकोंकियो । हरितीनिद्वैअवलोकियो ॥ २१ ॥ पदपद्मकीशुभघूंघरी । मणिनीलहाटकसोंजरी ॥ जनुउत्तरीय विचारिकै । शुभडारिदीयगठारिकै ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सीताके पदपद्मको, नूपुरपटजनिजानु॥मनहुँकरयोसुग्रीवघर, राजश्री प्रस्थानु॥२३॥यद्यपिश्रीरघुनाथजू, समसर्वंगसर्वज्ञ॥नरकैसी लीला करत, जेहिमोहतसबअज्ञ ॥२४॥ राम-सवैया॥ निज देखोंनहींशुभगीतहिसीतहिकारणकौनकहौअबहीं।अतिमोहितकैबनमांझगई सुरमारगमेंमृगमारयोजहीं ॥ कटुबातकछूतुम सोंकहिआईकिधौंतेहित्रासडेराइरहीं । अबहैयहपर्णकुटीकिधौं और किधौंवहलक्ष्मणहोइनहीं ॥ २५ ॥

टी०- ॥ १९ ॥ प्रचंडपदजटायुरावणरथतीन्योकोविशेण ह्वै सकते है विपक्ष शत्रु रावण ॥२०॥ तीनि औ द्वै कहे पांच अथवा द्वै तीनि कहिवेकी रीति शुभावोक्ति है हरि वानर ॥२१॥ उत्तरीय ओढिवेको वस्त्र ॥२२॥ जब प्रस्थान भयो तब आप आयोई चाहै ॥ २३ ॥ सम कहे सदा एक रस रहत हैं औ सर्वंग कहे सर्वत्र व्याप्त हैं औ सर्वज्ञ कहे सबजानत है ॥ २४ ॥ जो हमारे स्वप्नों हो लक्ष्मण वह

कहिके मृग मरयो है सो हमारो शब्दजानि ताही स्वरके मार्ग ह्वै हमारे बड़े हितसों वनके मध्यमें गई है कि हे लक्ष्मण! यह पर्णकुटी है कि कछु औरई वस्तु है औ कि वह पर्णकुटी नहीं है और ई पर्णकुटी है ॥ २५ ॥

मू०-दोधकछन्द॥ धीरजसोंअपनोमनरोक्यो। गीधजटायुपरयोअवलोक्यो॥ छत्रध्वजारथदेखिकैबूझेउ। गीधकहौरणकौनसोजूझेउ॥ २६॥ जटायु॥ रावणलैगयोराघवसीता। हारघुनाथरटैशुभगीता॥ मैंविनछत्रध्वजारथकीन्हों। ह्वैगयोहौंबलपक्षविहीनो॥२७॥ मैंजगमेंसबतेबडभागी। देहदशातबकारणलागी॥ जोबहुभांतिनवेदनगायो। रूपसोंमैंअवलोकनपायो॥२८॥ राम॥ साधुजटायुसदाबडभागी। तोमनमोबपुसोंअनुरागी॥ छूटयोशरीरसुनीयहबानी। रामहिमेंतवज्योतिसमानी॥ २९॥ तोटकछंद॥ दिशिदक्षिणकोकरिदाहचले। सरितागिरिदेखतवृक्षभले॥ बनअंधकवंधबिलोकतहीं। दोउसोदरखैंचलियेतबहीं॥३०॥ जबखैंबेहिकोजियबुद्धिगुनी। दुहुँबाणनिलैदोउबाहिहनी॥ वहँछाडिकैदेहचल्योजबहीं यहव्योममेंबातकह्योतबहीं॥ ३१॥ तोटकछंद॥ पीछेमघवामोहिंशापदई। गंधर्वतेराक्षसदेहभई॥ फिरिकैमघवासहयुद्धभयो। उनक्रोधकैशीशमेंवज्रहयो॥ ३२॥

टी०-॥२६॥ २७॥ दशा अवस्था अर्थ यह कि यह देह गृध्रकी औ यह वृद्धावस्था तुम्हारे कछु उपकारके लायक नहीं रही तासों तुम्हारोउपकार भयो औ ऐसो जो तुम्हारो रूप है ताकों देख्यो तासों जगमें मैं सबसों बडभागी हौं॥ २८॥ अर्थ सायुज्य मुक्ति पायो॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ बाहु दई पर्यन्त तीनिछंदके छेपकहैं पीछेकहे पूर्वहीं॥ ३२॥

मू०-दोहा॥ गयोशीशगडिपेटमें, परयोधरणिपरआय॥ कछुकरुणाजियमोभई, दीन्हीबाहुबढ़ाय॥३३॥बाहुदई ह्वैको-

शकी, ऐवैतेहिगहिहिखाउँ ॥ रामरूपसीताहरण, उधरहुगहनउ पाउ॥३४॥सुरसरितेआगेचले, मिलिहैंकपिसुग्रीव।देहैंसीताकी खबरि, बाढैसुखअतिजीव ॥३५॥ तोटकछंद ॥ सरिताएककेशवसोभरई । अवलोकितहांचकवाचकई॥ उरमेंसियप्रीतिसमाइरही । तिनसोंरघुनायकबातकही ॥ ३६ ॥ अवलोकतहौं जबहींजबहीं । दुखहोततुम्हैंतबहींतबहीं ॥ वहबैरनचित्तकछूधरिये । सियदेहुबताइ कृपाकरिये ॥ ३७॥ शशिकेअवलोकन दूरिकिये । जिनकेमुखकीछबिदेखिजिये ।कृतचित्तचकोरकछूकधरौ । सियदेहुबताय सहायकरौ ॥ ३८ ॥

टी०—॥३३॥करुणा करिकै द्वै कोश कि वाहु दई औ यह वर दियो कि जो इन वाहुनके मध्यमें आवै ताको खाहु जब सीताहरण ह्वैहै तब रामचन्द्र या मग अइहैं तिनके गहन उपाय सों उद्धरहु कहे तुम्हारो उद्धार होई अर्थ जब रामचन्द्रको इन वाहुनसों गहिहै तब तेरो उद्धार ह्वैहै ॥ ३४ ॥ सुरसरि गोदावरी ॥ ३५ ॥३६ ॥ जब सीताको तुम अवलोकत रहे कहे देखत रहौ तब अपनासों अधिक सुन्दर सीताके कुच देखि तुम्हारे दुख होत रहे अथवा हमको संयोगी देखत तासो तुम्हारे दुःख होत रह्यो ॥ ३७ ॥ शशि जो अति सुन्दर जिनके मुखको देखि शशिकी ओर विलोकिवो छोडि केवल जिनके मुखकी छविको देखिकै जियत रहेहौ अथवा शशिके अवलोकन दर्शन दूरिकिये पर अर्थ जब कृष्णपक्षमें चन्द्रमा आपनो दर्शनदृष्टि सों दूरि कियो ना देखि परयो तब चंद्रसम केवल जिनके मुखकी छविको देखि जियत रहे हौ वह कृत कहे उपकार कछु चित्तमें धरिकै सीताको बताइ देउ ॥ ३८ ॥

मू०—सवैया ॥ कहिकेशवयाचककेअरिचंपकशोकअशोक लियेहरिकै । लखिकेतककेतकिजातिगुलाबतेतीक्षणजानितजे डरिकै ॥ सुनिसाधुतुम्हैंहमबूझनआयेरहेमनमौनकहाधरिकै । सियकोकछुसोधुकहौकरुणामयसोकरुणाकरुणाकरिकै॥३९॥ नाराचछंद॥ हिमांशुसूरसोलगैसोबातवज्रसोवहै ।दिशालगैकृ-

शानुज्योंबिलेपअंगकोदहै ॥ विशेषिकालरातिसोकरालराति मानिये। वियोगसीयकोनकालकोकहारजानिये ॥ ४० ॥

टी०—रामचन्द्र करुण वृक्षसों कहत हैं कि चम्पक जेहैं ते याचकके अरि शत्रुहैं पुष्पनको याचक जो भ्रमर है ताको निकट नहीं आवनदेत चंपकमें भ्रमर नहीं बैठत यह प्रसिद्ध है ता भयसों चंपक सो सीताको सोधु नहीं जांचे अशोक जे वृक्ष हैं तिनके शोकको हरिकै छोडिकै अशोक यह जो नाम है ताको लीन्हों है तासों जिनहूको तज्योहै कि जिनके शोक हैही नहीं ते हमारो दुःख देखि दुःखी ह्वै कृपा करि सीताको सोधु काहेको बताई हैं केलक केवरा औ केतकी औ गुलाब इनकी जाति जे और कंटक वृक्ष हैं कमलादि तिन्हें तीक्ष्ण कहे कंटकित जानिकै डरिकै तज्यो है सो हे करुणा कहे करुण वृक्ष ! करुणा कहे दीनतामय जे हमहैं तिनसों सीताको कछू सोधु कहौ ॥३९॥ रामचन्द्र लक्ष्मणसों कहत हैं कि हिमांशु जो चन्द्रमा है सो हमको सूर्य सम तप्त लागत है औ वायु वज्रसम बहति है औ दशों दिशा अग्निके समान तप्तलागतिहै औ तुम जो शीतलताके अर्थ हमारे अंगनमें विलेप करतहौ सो अंगनको जारतहै औ राति काल राति समकराल लागति है औ सीताको वियोग लोक हरकाल संहार काल सम लागत है ॥ ४० ॥

मू०—पद्धटिकाछन्द ॥ यहिभाँतिविलोकेसकलठौर। गये शबरीपैदोउदेवमौर ॥ लियोपादोदकत्यहिपदपखारि। पुनि अर्घ्यादिकदीन्हेंसुधारि ॥ ४१ ॥ हरदेतमंत्रजिनकोविशाल शुभकाशीमेंपुनिमरणकाल॥ तेआयेमेरेधामआज। सबसफलकरनजपतपसमाज ॥४२॥ फलभोजनकोतेहिधरेआनि। भयेयज्ञपुरुषअतिप्रीतिमानि॥ तिनरामचन्द्रलक्ष्मणस्वरूप। तबधरेचित्तजगजोतिरूप॥४३॥ दोहा ॥ शबरीपावकपंथतब, हरखिगईहरिलोक ॥ बननविलोकितहरिगये, पंपातीरसशोक ॥ ४४ ॥ तोटकछंद ॥ अतिसुन्दरशीतलसोभवसै। जहँरूपअनेकनिलोभलसै ॥ बहुपंकजपक्षिविराजतहैं। रघुनाथविलोकतलाजतहैं ॥ ४५ ॥ सिगरीऋतुशोभितशुभ्रजहीं। लहै

ग्रीषमपैनप्रवेशसही ॥ नवनीरजनीरतहाँसरसैं । सियकेशुभ लोचनसेदरसैं ॥ ४६ ॥

टी०-॥ ४१ ॥ मंत्र राम तारक तप औ जप समाज के सफल करन कहे सफल कर्त्ता अर्थ जो कोऊ जप तप करत है ताको फल रामचंद्र ही देत हैं ॥ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ जीवतही अग्निमों जरिकै ॥ ४४ ॥ कैसो है पंपासर अति सुंदर है औ अति शीतल है जहां शोभा जो है सदा आय बास करति है औ जहां कहे स्थान में जातही प्राणिन के अनेक रूप सो लोभ वसतहै अर्थ जहां जातही प्राणिन के रहिबेको लोभबाढत है औ बहुत पंकज कमल औ हंसादि पक्षी विराजतहैं ते रामचन्द्रको देखिकै लज्जित होत हैं जा अंगको जो उपमान है ता अंगको निरखि अपना सों अधिक जानि लजात हैं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

मू०-विजयछंद ॥ सुन्दरसेतसरोरुहमें करहाटकहाटककी द्युतिकोहै । तापरभौंरभलेमनरोचनलोकविलोचनकीरुचिरोहै॥देखिदईउपमाजलदेविनदीरघदेवनकेमनमोहै । केशवकेशवरायमनोकमलासनकेशिरऊपरसोहै ॥ ४७ ॥लक्ष्मण-सवैया ॥ मिलिचक्रिनचंदनबातबहैअतिमोहतन्यायनहींमतिको। मृगमित्रविलोकतचित्तजरैलियेचन्दनिशाचरपद्धतिको । प्रतिकूलशुकादिकहोहिंसबैजियजानैनहींइनकीगतिको । दुखदेततड़ागतुम्हैंनबनैंकमलाकरह्वैकमलापतिको ॥ ४८ ॥

टी०-सरोरुह कमलकरहाटक शिफाकंद हाटकसुवर्ण लोकके लोचनकी रुचि कहे इच्छाको रोहैकहै धारण करत है अथ जिनको देखि सबके लोचननमें सदा देखिबेकी इच्छा होतिहै अथवा लोकके लोचनन की रुचि शोभा रोहत है अर्थ लोचन सम शोभतहै केशवराय विष्णु कमलासन ब्रह्मा श्वेत कमल सोई ब्रह्माको आसन कमल समहै करहाटक ब्रह्मासम पीतवर्ण है भ्रमर विष्णुसम है ॥४७॥ पंपासर सो लक्ष्मण कहत हैं कि चन्दनबात जो इनकी मतिको मोहत है मूर्च्छित करत है मो न्याय यही सों काहे ते चंदन वृक्षमें लपटे जे अनेक चक्रीसर्प हैं तिनमों मिलिकै स्पर्शकरिकै बहत है सो सर्पनक संगको फल है सर्पहू जाको काटत हैं ताको मूर्च्छित करत हैं अति पतिसों मृगके अंकमें धरे हैं तासों मृग मित्रपद

कह्यो सों संग मित्र जो चंदहै ताको विलोकि इनको चित जरत है सोऊ न्यायही है काहेते निशाचरन की पद्धति परिपाटीको लिये है निशाचर राक्षसहू हैं चंदहू है सो निशाचरन की राक्षसन की परिपाटीको लिये है राक्षसनहूंको देखतही चित्तजरतहै औ मृग मित्रकहि या जनायो कि पशुनको मित्र है प्रतिकूला दुःखद जो शुकादिक होतहैं सोऊ न्यायही है काहेते वे पक्षी पशुहैं इनकी गतिको नहीं जानत कि ये ईश्वरहैं कमलाकरपद श्लेष है कमलनके आकर रापूहसों युक्त औ कमला लक्ष्मीके उत्पन्नकर्ता युक्ति यह कि ये तुम्हारे जामातु हैं इनको दुःख देना तुम्हें न चाहिये ॥ ४८ ॥

मू०-दोहा ॥ ऋष्यमूकपर्वतगये, केशवश्रीरघुनाथ ॥ देखे वानरपंचविभु, मानोदक्षिणहाथ ॥४९॥ कुसुमविचित्राछंद ॥ तबकपिराजारघुपतिदेखे । मननरनारायणसमलेखे॥ द्विजवपुधरितहँहनुमतआये। बहुविधिआशिपदैमनभाये ॥ ५० ॥ हनुमान ॥ सबविधिरूरेबनमहँकोहौ। तनमनसूरेमनमथमोहौ॥ शिरसिजटावकलाबपुधारी । हरिहरमानहुंविपिनबिहारी ॥ ५१ ॥ परमबियोगीसमरसभीने । तनमनएकैयुगतनकीने ॥ तुमकोहौकालगिबनआये । कयहिकुलहौकौनेपुनिजाये ॥ ५२ ॥ राम-चंचरीछंद ॥ पुत्रश्रीदशरत्थकेबनराजशासन आइयो । सीयसुन्दरिसंगहीबिछुरीसोसोधनपाइयो ॥ राम लक्ष्मणनामसंयुतशूरवंशबखानिये । रावरेबनकौनहौक्यहि काजक्योंपहिंचानिये ॥ ५३ ॥

टी०-सुग्रीव हनूमान नल नील सुषेण य पांच जे वानरहैं विभु कहे प्रतापी तिन सहित ऋष्यमूक को देख्यो मानों सो पृथ्वीको दक्षिण हाथ है पृथ्वी इति शेषः अथवा मानों अपनो दक्षिण हाथही देख्यो है मित्रको औ भ्राता को दक्षिण बाहुसम कहिबेकी रीतिहै ॥ ४९ ॥ नरनारायणके द्वैरूप हैं ॥ ५० ॥ रूरे सुन्दर

---

१ दामाद।

॥ ५१ ॥ परम वियोगी हौ अर्थ तुम्हारी चेष्टाते जानि परत है कि काहू बडे हितको वियोग भयो है औ जटा बल्कलादि सों शान्तरसमें भीनेजानि परतहौ ॥ ॥ ५२ ॥ शासनआज्ञा ॥ ५३ ॥

मू०–हनुमान–दोहा ॥ यागिरिपरसुग्रीवनृप, तासँगमंत्री चारि ॥ वानरलईछँडाइतिय, दीन्होवालिनिकारि ॥ ५४ ॥ दोधकछंद ॥ वाकहँजोअपनोकरिजानो । मारहुवालिविनैयह मानो ॥ राजदेहुजोवाकीतियाको । तोहमदेहिंबतायसियाको ॥ ५५ ॥ लक्ष्मण ॥ आरतकेप्रभुआरतटारौ । दीनअनाथनकोप्रतिपारौ ॥ स्थावरजंगमजीवजोकोऊ । सन्मुखहोतकृतारथसोऊ ॥ ५६ ॥ वानरह्वैहनुमानसिधारेउ । सूरजकोसुतपाँयनिपारेउ ॥ रामकह्योउठिवानरराई । राजसिरीसखिस्योतियपाई ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ उठेराजसुग्रीवतब, तनमनअतिसुखपाइ ॥ सीताजूकेपटसहित, नूपुरदीन्हेआइ ॥ ५८ ॥ तारकछंद ॥ रघुनाथजबैपटनूपुरदेखे । कहिकेशवप्राणसमानहिंलेखे ॥ अवलोकतलक्ष्मणकेकरदीन्हे । उनआदरसोंशिरमानिकैलीन्हे ॥ ५९ ॥ राम–दंडक ॥ पंजरकीखंजरीटनैननको किधौंमीनमानसको केशोदासजलुहैकिजालुहै । अंगकोकि अंगरागगेडुआकीगलसुईकिधौंकटिजेबहीकोउरकोकिहारुहै ॥ बंधनहमारोकामकेलिकोकिताडिबेकोताजनोंविचारकोकीचमरबिचारुहै । मानकीजमनिकाकी कंजमुखमूंदिबेको सीताजूकोउत्तरीयसबसुखसारुहै ॥ ६० ॥

टी०–वानर वालिको विशेषण है ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कृतार्थ कहे कृतार्थ है अर्थ प्रयोजन जाको ॥ ५६ ॥ अर्थ वालिको मारि कै राज्य श्रीसहित तुम्हारी स्त्री हम तुमको देहैं ऐसा निश्चय वचन रामचंद्र सुग्रीवको दियो ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

शिर मानिकै कहे शिरपर राखि कै ॥ ५९ ॥ रामचन्द्रकहत हैं कि हमारे खंज-रीट कहे खंडरिचरूपीजेनयनहैं तिनको पंजर पिंजराहै जामें परिनयन कै कढन नहीं पावत औ कि मीनरूपी जो मानस मन है ताको जल है कि जालु है जैसे मीन जलसों नहीं कढति तैसे मन यासों नहीं कढत औ जालको औ पंजरको हेतु एकही है अंगन को कि अंगराग कहे चंदनादि को लेपहै कि गरुआ तकिया है कि गलसुई छोटी तकिया है अथ स्पर्शते अंगनको अंगरागादि सम सुखदहै औ कि कटिजेव कहे क्षुद्रघंटिका है औ किही को जेव कहे धुकधुकी है जेवपदको संबंध याहूमें है औ कि उरको हार है औ कि कामकेलि समयको हमारो बंधन फांस है औ कि कामकेलि समयको हमारे ताडिवेको ताज नोकसा है कोडाइति अर्थ कामकेलिमें अति चंचल कर्ता है औ कि कामकेलिका जो विचार कहे विगत चार चलन है रतांत इतिताको रत श्रमहर चमरकहे वाल व्यजन है यहां चमर पदते व्यजन जानौं अथवा हमारे विचारको चमर है अर्थ विचारको शोभा-कर्त्ता है अर्थ प्रकाश कर्ता है ऐसो हमारो विचार अनुमान है औ कि सीताजूके मानकी जमनीका कनात है अर्थ याही की आडमें सीताजूको मान रहत रह्यो औ कि सीताजूको कंजमुख मूँदिवेको सब सुखसार उत्तरीय है याही विधि उत्त-रीयको वर्णन हनुमन्नाटकमें है । "द्यूतेपणःप्रणयकेलिपुकंठपाशः क्रीडापरिश्रम हरंव्यजनं रतांते । शय्यानिशीथसमयेजनकात्मजायाप्रातं मयाविधिवशादिहचो-त्तरीयम्" ॥ ६० ॥

मू०--स्वागताछंद ॥ वानरेन्द्रतबयोंहँसिबोल्यो । भीतभेद जियकोसबखोल्यो ॥ आगिबारिपरतक्षकरीजू । रामचन्द्रहँ-सिबाहँधरीजू ॥ ६१ ॥

टी०-जब निश्चय मित्र जान्यो तब आपनो भीतभेदकहे वालि कृत भयको सब भेद खोल्यो कहे कह्यो मित्र सों अंतःकरण को सब भेद कह्यो चाहिये॥ ६१॥

मू०--सूरपुत्रतबजीवनजान्यो । वालिजोरबहुभाँतिबखा-न्यो ॥ नारिछीनिजेहिभाँतिलईजू । सोअशेषबिनतीविनईजू ॥ ॥ ६२ ॥ एकबारशरएकहनौजो ॥ साततालबलवंतगनौतो । रामचन्द्रहँसिबाणचलायो॥तालबेधिफिरिकैकरआयो ॥ ६३॥

---

१ खञ्जन या खडरीच ।

सुग्रीव—तारकछंद ॥ यह अद्भुतकर्मऔरपैहोई । सुरसिद्धप्रसि-द्धनमेंतुमकोई ॥ निकरीमनतेसिगरीदुचिताई । तुमसोंप्रभु-पाय सदासुखदाई ॥ ६४ ॥ विजयछंद—बावनकोपदलोकन-मापिज्योंबावनकेवपुमाँहसिधायो । केशवसूरसुताजलसिंधु-हिपूरिकैसूरहिको पदपायो ॥ रामकेबाणत्वचामबबेधिकैका-मपैआवतज्योंजगगायो ॥ रामकोशायकसातहुतालनि बेधि-कैरामहिंकेकरआयो ॥ ६५ ॥ सोरठा ॥ जिनकेनामविलास, अखिललोकबेधतपतित ॥ तिनको केशवदास, साततालबे-धतकहा ॥ ६६ ॥ रामतारकछंद—अतिसंगतिबानरकीलघु-ताई । अपराधबिनावधकौनिबडाई ॥ हतिवालिहिदेउतुम्हैं-नृपशिक्षा । अबहैकछुमोमनएेसियइच्छा ॥ ६७ ॥

टी०—॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ वालिके शीघ्र वधमें आपनें अंतर निश्चयको प्रकट करत मित्रताधिक्य को दिखावत रामचन्द्र परिहासपूर्वक सुग्रीव सों कहते हैं कि हे सुग्रीव ! वानरकी संगति अति लघुता है काहेते अपराध विना वधमें कछू बडाई नहीं है लघुताई ही है परंतु हमारे मनमें अब यहै इच्छा है कि वालिको मारि तुमको नृपशिक्षा दीजै अर्थात् राजा कीजिये यह केवल वानर संगतिको प्रभाव है विनकाज अकाज करिबो सब वानरनको स्वभाव होतहै तिनकी संगतिते तैसो स्वभाव भयोचाहै ॥ ६७ ॥

मू०—इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रच-न्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां सीताहरणरामसुग्रीव मैत्रीवर्णनंनामद्वादशः प्रकाशः ॥ १२ ॥

टी०—इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां द्वादश प्रकाश. ॥ १२ ॥

मू०–॥ यातेरहैप्रकाशमें, बालिवध्योकपिराज ॥ वर्णनवर्षा शरदको, उदधिउलंघनसाज ॥ १ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ रविपुत्रबालिसोंहोतयुद्ध । रघुनाथभयेमनमाहँक्रुद्ध ॥ शरएकहन्यो-उरमित्रकाम ॥ तबभूमिगिरयोकहिरामराम ॥ २ ॥ कछुचेत-भयेतेहिबलनिधान ॥ रघुनाथविलोकेहाथबान ॥ शुभचीरज-टाशिरश्यामगात । वनमालहियेउरविप्रलात ॥ ३ ॥ बालि ॥ तुम आदिमध्यअवशानएक । जगमोहतहौवपुधरिअनेक ॥ तुमसदाशुद्धसबकोसमान । केहिहेतुहत्योकरुणानिधान ॥४॥ राम ॥ सुनिवासवसुतबुधिबलविधान । मैंशरणागतहिततहते-प्रान ॥ यहसांटोलैकृष्णावतार । तबह्वैहौतुमसंसारपार ॥ ५ ॥

टी०–॥ १ ॥ मित्र जे सुग्रीवहैं तिनके काम कहे अर्थ बालिके वधमें केवल सुग्रीवही को हित है रामचंद्रको कछु हित नहीं है ॥ २ ॥ ३ ॥ जगको आदि कहे उत्पत्ति मध्य कहे प्रतिपाल अवसान कहे संसार कर्त्ता एक तुमही हौ अर्थ ब्रह्मारूप ह्वै तुमहीं सृष्टि करते हो विष्णु रूप ह्वै प्रतिपाल करत हौ रुद्र रूप ह्वै संहार करतहौ सो अनेक वपुशरीर धरिकै जगको मोहत हौ अर्थ दशरथके पुत्र रामचन्द्र हैं इत्यादि मोह बढावत हौ ॥ ४ ॥ सांटो कहे बदलो ॥ ५ ॥

मू०–रघुवीररंकतेराजकीन । युवराजबिरदअंगदहिदीन ॥ तबकिष्किंधातारासमेत ॥ सुग्रीवगयेअपनेनिकेत ॥ ६ ॥ दोहा ॥ कियोनृपतिसुग्रीवहति, बालिबलीरणवीर । गयेप्रव-र्षण अद्रिको, लक्ष्मणश्रीरघुवीर ॥ ७ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ देख्यो-शुभ गिरिवरसकलसोभधरफूलबरनबहुफलनिफरे । संगसर-भऋक्षजन केशरिकेगणमनहुधरणिसुग्रीवधरे ॥ सँग शिवाविरा-जैगजमुख गाजैपरवभृतेलैचित्तहरे । शिरशुभचन्द्रकधरपरम-दिगंबरमानो हरअहिराजधरे ॥ ८ ॥

टी०—रामचंद्र सुग्रीवको रंक कहे दरिद्री ते राजा कीन्हो सुग्रीव पदको संबंध रंक राज पदहूमेंहै विरद पदवी ॥ ६ ॥ प्रवर्षण नामा जो अद्रि पर्वत है तामें जाइ वास करचो ॥ ७ ॥ रामचंद्र कैसो पर्वत देखत भये कि फूल हैं बरन बहु कहे अनेक रंगके औ वहुत फलन सों फरे बहुपदको संबंध फलन हूं मों है आगे श्लेषोरक्षाकरि वर्णत हैं शरभवानर नाम विशेष है औ पशु-जाति विशेष ॥ "शरभस्तु पशौ भिंदिकरभेवानरेभिदि इति मेदिनी"। ऋक्ष पर्वतहूमें है सुग्रीवहूके संग जाम्बवंतादि हैं केशरी कहे सिंह ताके गण समूह औ केशरी नामा वानर हनूमान के पिता तिनके गण सैन्य समूह शिवा पार्वती औ शृगाली गजमुख गणेश औ हस्ती आदि और बनजीव आदि पदते गैंडा आदि जानौं पर कहे वडे जे भूतसेवक हैं नंदिकेश्वरादि औ कोकेलचंद्रक चंद्रमा औ कपूर अर्थ कदली वृक्षनमें कपूर होतहै ते कदली जामें वहुत हैं अथवा जल अनेक वाप्यादिकनमें भरचो है अथ चंद्रक धर मोर ॥ "चंद्रः कर्पूरको कांपिल्य सुवार्णवारिषु इति मेदिनी"। दिगंवरनग्नदुवौपच्छमेंएकैहै अहिराज वासुकी औ वडे सर्प ॥ ८ ॥

मू०—तोमरछंद ॥ शिशुसोलसैसँगधाइ । बनमालज्योंसुरराइ ॥ अहिराजसोयहिकाल । बहुशीशशोभनिमाल ॥ ९ ॥ स्वागताछंद ॥ चंद्रमंदद्युतिवासरदेखौ । भूमिहीनभुवपालविशेषौ ॥ मित्रदेखियहशोभतहैयौं । राजसाजबिनुसीतहिहौं ज्यौं ॥ १० ॥ दोहा ॥ पतिनीपतिबिनुदीनअति, पतिपतिनीबिनुमंद ॥ चंद्रबिनाज्यौंयामिनी, ज्योंविनयामिनिचंद ॥ ॥ ११ ॥ स्वागताछंद ॥ देखिरामबरषाऋतुआई । रोमरोमबहुधादुखदाई ॥ आसपास तमकीछबिछाई रातिदिवसकछु-जानिनजाई ॥ १२ ॥ मंदमंद धुनिसोंघनगाजैं । तूरतार-जनुआवझबाजैं ॥ ठौरठौरचपलाचमकैयौं । इंद्रलोकतियना-चतिहैज्यौं ॥ १३ ॥ मोटनकछंद ॥ सोहैंघनश्यामलघोर घनैं । मोहैंतिनमैंबकपांतिमनैं ॥ शंखावलि पी बहुधाजल-सों । मानीतिनकोउगिलैबलसों ॥ १४ ॥ शोभा अतिशक्र-

शरासनमें। नानाद्युतिदीसतिहैवनमें। रत्नावलिसी दिवि-द्वारमनो। वर्षागमबांधियदेवमनो॥ १५॥

टी०-शिशु बालक धाइ जो माताते अन्य आपनो स्तन दूध पिआवति है औ वृक्षविशेष सुरराइ कहे विष्णु ते वनमाल पहिरेहैं पर्वतमें वनकी माला पंगति-समूहेति है अथ वडोव है बहुशीश सहस्र शिर औ बहुतशीशसो सो हैं वृक्ष ॥ ९॥ दिनमें द्युतिहीन चंद्रमाको देखि रामचंद्र लक्ष्मण सों कहतहैं मित्र। सूर्य अथवा मित्र लक्ष्मण को संबोधन है॥ १०॥ ११॥ एकादश छंद्न मों जैसो वर्णन करचो है ऐसी बर्षाऋतु आई देखिकै रामचंद्र कलहंस कलानिधि खंजन कंज याते इसमें छंद में जे वचन हैं ते कहत भये इति शेषः ॥ १२॥ तूर नगारे तार उच्चस्वर॥ १३॥ १४॥ दिवि द्वार कहे आकाशके द्वारमें रत्ना-वलि पदते रत्ननके वन्दनवार जानौ बडे की अवाईमें वंदनवार बांधिवेकी रीति प्रसिद्ध है॥ १५॥

मू०-तारकछंद॥ घनघोरघनेदशहूंदिशिछाये। मघवाज-नुसूरजपैचढिआये॥ अपराधबिनाक्षितिकेतनताये। तिनपी-डनपीडितह्वैउठिधाये॥ १६॥

टी०-तीनि छंद को अन्वय एक है ग्रीष्म ऋतुनें अति तेजसों सूर्य क्षिति पृथ्वीके तनताये तप्त करचो है जो कोऊ काहूको विन दोष दुःख देई ताको दंड करिबो राजन को उचित है इंद्रदेवन के राजा हैं तासों सूर्यको उचित दोर्घ दंड कियो जासों ऐसो अवना करै उत्प्रेक्षा करि यह राजनीति प्रगट देखायो अथवा पृथ्वीको अशरण जानिकै अशरणको सहाय करिबो बडेनको उचित है तासों अथवा पृथ्वीको स्त्री जानिकै स्त्री की रक्षा करिवो वडेन को उचित है तासों दुंदुभि कहे जे गजादि वाहन पर चमूके आगे नगारे बाजत हैं निर्घात कहे जाको वज्र शब्द सब कहत हैं सो नहीं है सबै कहे जे ते निर्घात होत हैं तेते पवि कहे वज्र के पात गिरिबो बखानो कहे कहत हैं अर्थ जे वार निर्घात होत है सो निर्घात नहीं है बार बार इंद्र सूर्यको वज्र चलावत हैं ताहीको शब्द होत है सम कहे बराबरि अर्थ जैसे अत्रिकी स्त्रीके उरमें देख्यो तैसे याके उरमें देख्यो है गोर मदाइनी कहे इंद्र धनुष नहीं है प्रत्यक्ष धनुष है गोर मदाइनि इंद्र धनुष को नाम पश्चिममों प्रसिद्ध है औ वर्नना तुसारहूरों प्रगट होत है कहूँगोर सदायन नाहीं पाठ है तौ गो जे किरणें हैं ते रराद कहे

मेघनके अयन कहे घरमें मध्यमें इति नहीं है प्रत्यक्ष धनुष है सूर्य की किरणें मेघनमें परि इंद्र धनुष होत है यह प्रसिद्ध है खड्ग कहे तरवारि द्युतिवंत चन्द्रशुक्रादि तौ एकही चूकसों जातिमात्रको दंड बडे कोपको जनावत है चन्द्रवन्धू वीरवहोटी रसराज में कह्योहै नवलवधू उरलाजे इन्द्र वधूसीहोई ॥ १६ ॥

मू०—अतिगाजतबाजतदुंदुभिमानो ॥ निरघातसबैपविपातबखानो ॥ धनुहैयहगोरमदाइनिनाहीं । शरजालबहैजलधार वृथाहीं ॥ १७ भटचातकदादुरमोरनबोलै । चपलाचमकैंनफिरैखगखोलै ॥ द्युतिवंतनकोबिपदाबहुकीन्हीं । धरनीकहँ चंद्रवधूधरिदीन्हीं ॥ १८ ॥ तरुनीयहअत्रिऋषीश्वरकीसी । उरमें हमचन्द्रकलासमदीसी ॥ वरषानसुनैकिलकैकिलकाली । सबजानतहैंमहिमाअहिमाली ॥१९॥ घनाक्षरी ॥ भौहैंसुरचापचारु प्रमुदितपायोधर । भूखन जरायजोतितड़ितरलाईहै । दूरिकरीसुखमुखसुखमाशशीकीनैंनअमलकमलदलदलितनिकाईहै ॥ केशोदास प्रवलकरेनुकागमनहरमुकुतसुहसकसबदसुखदाईहै । अंबरवलित मतिमोहैनीलकंठजूकीकालिकाकिवरखाहरखिहियआईहै ॥ २० ॥

टी०—॥ १७ ॥ १८ ॥ सम कहे वरावरि अर्थ जैसे अत्रिकी स्त्री के उरमें देख्योहै तैसे याके उरमें देख्योहै अनसूयाको पातिव्रत देखि ब्रह्मा विष्णु महेश पुत्र होवेकी इच्छाकरि गर्भमें आय चंद्रमा दत्तात्रेय दुर्वासारूप यथाक्रम अवतार लियो है कथा पुराणनमें प्रसिद्ध है अहिमाली महादेव औ सर्पनकी माला वर्षागमनमें सर्प अति प्रसन्न होत हैं ॥ १९ ॥ कैसी है वर्षा कि जामें अनेक ग्रहपतन चोरादिके भौ कहे डर हैं औ सुरचाप कहे इन्द्र धनुष है चारुसुन्दर औ प्रमुदित कहे प्रसन्न हैं पयोधर मेघजामें औ भू कहे पृथ्वी औ ख कहे आकाशमें जराइ कहे देखि परति है ज्योति जाकी ऐसी तड़ित जो बिजुली है ताकी तरलता है औ दूरि कीन्हों है मुख कहे मदनरी मुखकी सुखमा शोभा शशि

कहे चन्द्रमाकी अर्थ चन्द्रप्रकाश नहीं होन पावत औ नै जे नदी हैं ते न कहे नहीं हैं अमल निर्मल अर्थ नदीनको जल म्लान ह्वै जात है औ कमलनको दल समूह दलित होत है औ निकाई कहे काई सों रहित है अथवा कमलदलकी दलित है निकाई जामें केशवदास कहत हैं कि रेणुका जो धूरिहै ताको गमनहर प्रबल है क कहे जल जामें अर्थ ऐसो जल चारों ओर भयो है जासों धूलि नहीं उडति औ मुकुत कहे त्यक्त है हंसक जे हंस हैं तिनको सुखदाई शब्द जामें वर्षामें हंस उडजातहैं यह प्रसिद्ध है औ अम्बर जो प्रकाश है तामें वलित कहे युक्त नीलकण्ठ जे मोर हैं तिनकी मतिको मोहै कहे प्रसन्न करति है कालिका कैसी है कि भौंहैं हैं सुरचाप इन्द्रधनुषहू ते चारु जाकी औ प्रमुदित कहे उन्नत हैं पयोधर स्तन जाके भूषणनमें जराइ कहे जराऊ जो ज्योति है तामें तडित जो बिजुली है ताकी तरलाई चंचलता है अथवा भूषणमें जडाऊकी जो ज्योति है सो जटित समरलाई कहे योजित है अर्थ भूषणनमें रत्ननकी ज्योति बिजुली सम दमकति है रत्नजटित भूषण जडाऊ कहावत हैं औ दूरि कीनी है सुख मुख कहे सहज मुखही सो शशि जो चन्द्र है ताकी सुखमा शोभा अर्थ सहजमुख ऐसो छबिवान् है जामें चन्द्र द्युति मंद होति है औ अमल कहे स्वच्छ जे नयन हैं तिन करिकै कमलदलकी निकाई दलित है अर्थ जिनके नयननके आगे कमलनकी छबि दलि जाति है औ केशवदास कहत हैं कि प्रबल कहे नीको जो करेनुका हस्तिनी को गमन है ताकी हरणहारी है औ मुकुत कहे छूटचो अर्थ उच्चरित जो हंसक कहे बिछुवान को शब्द है सोहै सुखदायी जाको अर्थ जाके चलतमें सुखदायक अनेक रंगको बिछुवानको शब्द होतहै औ अम्बर जो वस्त्रहै तामें वलित युक्त नीलकण्ठ जे महादेव हैं तिनकी मति को मोहन है यहाँ काली पदते पार्व्वती जानो ॥ २० ॥

मू०-तारककन्द ॥ अभिसारिनिसीसबुझैंपरनारी । सतमारगमेटनकोअधिकारी ॥ मतिलोभमहामदमोहछयीहै । द्विजराजसुमित्रप्रदोषमयीहै ॥ २१ ॥ दोहा ॥ वर्णतकेशव सकलकवि, विषमगाढ़तमसृष्टि ॥ कुपुरुषसेवाज्योंभई, संततमिथ्यादृष्टि ॥ ॥ २२ ॥ चंद्रकलाछंद ॥ कलहंसकला निधिखंजनकंजकछूदिन केशवदेखिजिये । गतिआननलो-

चनपायनकेअनुरूपकसेमनमानिलिये ॥ यहिकालकरालते-
शोधिसबैहठिकैबरषामिसदूरिकिये । अबधौंबिनप्राणप्रियार-
हिहैंकहिकौनहितूअवलम्बिहिये ॥ २३ ॥

टी०—सत कहे उत्तम मार्ग यथोचित कुलांगनन की रीति औ राजमार्गादि ग्रामते ग्रामांतर की राह इति कि लोभ औ महामद औ मोह सों छई मति बुद्धि है वर्षा द्विजराज चन्द्रमा औ सुमित्र सूर्य तिनके दोषमयी है अर्थ चंद्र सूर्यको उदय नहीं होन पावत औ मति द्विजराज ब्राह्मण औ सुष्ठुमित्र इनके दोषमयी है यासों या जानों लोभ मद मोह युक्त प्राणी मित्र दोष द्विजदोष करत नहीं डरत ॥ २१ ॥ विषम कहे भयानक जो गाढ तम अन्धकार है ताकी सृष्टि कहे वृद्धि में मिथ्या दृष्टि भई जैसे कुपुरुषकी सेवामें होति है तैसी सकल कवि वर्णत हैं अर्थ जब कुपुरुष सेवा कोऊ करत है तब वाहि यह देखि परतहै कि कछू पायहैं जब कछू ना पायो तव पूर्ण दृष्टि मिथ्या होतभई तैसे जा दृष्टि सों सब विषय पदार्थ देखि परत हैं ताही दृष्टिसों वर्षांधकारमें निकटगत वस्तु नहीं देखियत पूर्ण दृष्टि मिथ्या होतिहै ॥ २२ ॥ अनुरूपक कहे प्रतिम जा वस्तुके वियोगसों विकलता होति है ताकी प्रतिमा देखि कछू बोध होतहै यह जो हमारो कराल कहे भयानक काल कहे समयहै जामें सीयवियोगादि दुःख भये ताही काल वर्षाको व्याज करि हमको दुःख देवेको तिनहुन कलहंसादिक-नको दूरि कीन्हों ॥ २३ ॥

मू०—दोहा ॥ बीतेबर्षाकालयों, आईशरदसुजाति ॥ गये
अँध्यारीहोतिज्यों,चारुचांदनीराति ॥ २४ ॥ मोटनकछंद ॥
दंतावलिकुन्दसमानगनो । चंद्राननकुन्तलभौंरघनो ॥ भौंहें
धनुखंजननैनमनो । राजीवनिज्योंपदपानिभनो ॥ २५ ॥
हारावलिनीरजहीपरमैं । हैंलीनपयोधरअम्बरमैं ॥ पाटीरजो-
न्हाइहिअंगधरे । हंसीगतिकेशवचित्तहरे ॥ २६ ॥ श्रीनाग-

१ हस्त. २ वस्त्र.

दकीदरशेमतिसी । लोपैतमताअपकीरतिसी ॥ मानौपति-
देवनकीरतिको । सतमारगकीसमुझैगतिको ॥ २७ ॥

टी०-सुजातिकहे उत्तम॥२४॥ द्वै छंदको अन्वय एकहै शरदको स्त्री रूप करि कहतहैं कुंदके जे पुष्पहैं तेई दंतनकी अवली पंगतिहै कुन्द शरत्कालमें फूलतहैं यह कवि नियमहै औ चन्द्रमा जो है सोई आनन मुखहै चन्द्रमा वर्षाके मेघनमें मूंद्यो रहत है शरत्कालमें प्रकाशित होतहै औ सब राजा शरत्काल में पूजन करि धनुष चामरादि धारण करत हैं सो चौंर जे हैं तेई कुन्तल केशपाश हैं घनो कहे अति सघन औ धनुष जे हैं तेई भौहैं हैं औ शरत्कालमें खंजन आवत है तेई नयन हैं औ राजीव कहे कमल फूलतहैं तेई पद औ पाणि कहे कर हैं औ स्वातीनक्षत्रकी वर्षा सों नीरज मोती होतहैं तिनकी हारावलि हृदयमें है जाके औ पयोधर जे मेघहैं ते अम्बर कहे आकाशमें लीनहैं मिलेहैं स्त्री पक्ष पयोधर कुच अम्बर वस्त्रमें लीनहैं औ जोन्हाई जो है सोई पाटीर कहे चन्दनलेपहैं शरतपक्षहंसी गति कहे हंसनकी गति स्त्रीपक्ष हंसन की ऐसी गति इन सब करिकै सबके चित्त को हरे है वश्य करे है ॥ २५ ॥ २६ ॥ तमता अंधकार औ तमोगुण नारद सत्त्वगुणी हैं पतिदेव जे पतिव्रता हैं तिनकी रति प्रीति को मानौ कहे जानौं अर्थ शरत्काल नहीं है पतिव्रतन की प्रीति है प्रीति कैसी है पतिसेवा आदि जे सत कहे उत्तम मार्ग हैं तिनकी गति कहे तिनविषे गमन समुझति कहे जानति हैं शरत्कैसी है सत कहे उत्तम जे मार्ग राह हैं तिनकी गति कहे प्रभाव को समुझै कहे जानति है अर्थ वर्षा करिकै बिदारित जे सतमार्ग हैं तिनको प्रकट करति है ॥ २७ ॥

मू०-दोहा ॥ लक्ष्मणदासीवृद्धसी, आईशरदबजाति ॥
मनहुँजगावनकोहमहिं,बीतवर्षारााति ॥ २८ ॥ कुंडलिया ॥
तातेनृपसुग्रीवपै, जैयेसत्वरतात । कहियोबचनबुझाइकै, कुश-
लनचाहोगात ॥ कुशलनचाहोगातचहतहौबालिहिदेखो । कर-
हुनसीताशोधकामवशरामनलेखो ॥ रामनलेखोचित्तचहीसुख
संपतिजाते । मित्रकह्योगहिबाँहकानिकीजतहै ताते ॥ २९ ॥
दोहा ॥ लक्ष्मणकिष्किंधागये, वचनकहेकरिक्रोध ॥ तारातब

समुझाइयो, कीन्हींबहुतप्रबोध ॥ ३० ॥ दोधकछंद ॥ बोलिलयेहनुमानतबैजू ॥ ल्यावहुवानरबोलिसबैजू ॥ बारलगैनकहूबिरमाहीं ॥ एकनकोउरहैघरमाहीं॥ ३१॥त्रिभंगीछंद ॥ सुग्रीवसंघातीमुखद्युतिरातीकेशवसाथहिसूरनये । आकाशबिलासी सूरप्रकाशीतबहींवानरआइगये॥ दिशिदिशिअवगाहनसीतहि चाहनयूथपयूथसबैपठये । नलनीलऋच्छपतिअंगदकेसँग दक्षिणदिशिकोबिदाभये ॥ ३२ ॥

टी०—जैसे वृद्धदासीके शुक्ल रोमनकरिके सर्वाङ्ग शुक्लहोतहै तैसे याहू शुक्ल है तासों वृद्धदासी समकह्यो लक्ष्मण संबोधन है ॥ २८ ॥ सत्वर कहे शीघ्र चित्त चही कहे मनमानी ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ साथहि कहे लक्ष्मणके साथहि रामचन्द्रके पास आइ गये लक्ष्मण इतिशेषः सूरप्रकाशी कहे सूर्यको ऐसोहै प्रकाश जिनको ॥ ३२ ॥

मू०—दोहा ॥ बुद्धिविक्रमव्यवसाययुत,साधुसमुझिरघुनाथ। बलअनंतहनुमंतके, मुदरीदीन्हींहाथ ॥ ३३ ॥ हीरकछन्द ॥ चण्डचरणछण्डिधरणिमंडिगगनधावहीं । तत्क्षणहूयदक्षिण दिशि लक्ष्यनहींपावहीं ॥ धीरधरनबीरबरणसिंधुतटसुभावहीं। नाम परमधामधरयरामकरमगावहीं ॥ ३४ ॥

टी०—बुद्धिपद सो दान उपाउ जानौं कारेते बुद्धिवान हठ नहीं करते समय विचारि दान उपाइ सों कार्य्य साधत हैं औ विक्रम कहे अति बल 'विक्रमस्त्वतिशक्तिता' इत्यमरः । यासों दंडउपाउ जानौं बली अतिबलसों दंडकरि कार्य्य साधत है व्यवसाय कहे यतन सों भेद उपाउ जानौं यत्नी पुरुष अनेक यतन करि मन्त्र्यादिकन सों भेदकरिके कार्य्य साधत हैं औ साधु पदते साम उपाउ जानौं साधु प्राणी मिलापही सों कार्य्य साधतहैं सो यासों समयोचित चारिहू उपाइ करि कार्य्यसाधिवेको लायक हनुमानको समुझि कै बल कहे सैन्य अनन्त है जाके मध्यमें रघुनाथ हाथमें रामचन्द्र मुदरीदीन्ही ॥ ३३ ॥ तत्क्षण कहे जब रामचन्द्रकी आज्ञा पाना [illegible] चंड कहे प्रचंड चरणन सों धरणि पृथ्वीको छाँड़िके सर्व

आकाश को मंडिकै भूषित करिकै अर्थ अति-अति जोर सों कूदिकै गगन कहे आकाश को मंडिकै भूषित करिकै धरन आकाश मार्ग ह्वै कै धावतहै सीताको लक्ष्मण कहे खोज नहीं पावत धीरकै धरन हार जे वीर वरण स्वरूप राव हैं ते सिंधुके तटमें स्वभाव ही साधरमको परम कहे बड़ो धाम जो रामनाम है औ कर्म वालिवधादि तिन्हैं गावत हैं धीरधरण कहि या जनायो कि यद्यपि खोज नहीं सीताको पायो परन्तु धीरको धरे हैं अधीर नहीं भये तौ जहां ताईं खोजपाइहैं तहां ताईं ढूंढि हैं औ स्वभावही कहि या जनायो कि कछुभय मानिकै रामनामको नहीं गावत ॥ ३४ ॥

मू०-अंगद-अनुकूलछंद ॥ सीयनपाई अवध बिनासी । होहुसबैसागरतटवासी ॥ जोघरजैयेसकुचअनंता।मोहिन्छोंडै जनकनिहंता ॥ ३५ ॥ हनूमान ॥ अंगदरक्षारघुपतिकीन्हों । सोधनसीताजलथललीन्हों ॥ आलसछांडैंकृतउरआनौं।होहु कृतघ्नीजनिशिखमानौं ॥ ३६ ॥ अंगददंडक ॥ जीरणजटायु गीधधन्यएकजिनरोंकिरावणबिरथकीन्होंसहिनिजप्राणहानि। हुतेहनुमंतबलवंततहांपांचजनदीनेहुतेभूषणकछूकरनरूपजा-नि॥ आरतपुकारतहीरामरामबारबारलीन्होंनछंडाइतुमसीता अतिभीतमानि। गाइद्विजराजतियकाजनपुकारलागैभोगवैन-रकघोरचोरकोअभयदानि ॥३७॥ दोहा ॥ सुनिसंपातिसप-क्षह्वै,रामचरितसुखपाय।सीतालंकामांझहैं,खगपतिदईबताय॥ ॥ ३८ ॥ दंडक ॥ हरिकैसोवाहनकीबिधिकैसोहेमहंसलीक-सीलिखत भयाहनकेअंकको । तेजकोनिधानराममुद्रिकाबि-मानकैधौंलक्ष्मणकोबाणछूट्योरावणनिशंकको । गिरिगजगं-डतेउड़ान्योसुवरण अलि सीतापदपंकजसदाकलंकरंकको । हवाईसीछूटीकेशोदासआसमानमेंकमानकैसोगोलाहनुमान-चल्योलंकको ॥ ३९ ॥

टी०-मास दिवस की अवधि दियो है । यथा वाल्मीकीये ॥ “ अधिगम्य-वैदेहीनिलयंरावणस्यच । मासेपूर्णेनिवर्तध्वमुदयंप्राप्यपर्वतम् ॥ १ ॥ ऊर्द्ध्वमा-

सान्नवक्तव्यंवसन्वध्योभवेन्मम " ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ जीरण वृद्ध ॥ ३७ ॥ चंद्रमा ऋषि को आशीर्वाद रह्यो है कि सीताके खोजको वानर ऐ हैं तिन्हैं मिले पच्छ तेरे जामिहैं तुलसीकृतरामायणमों प्रसिद्ध है ॥ ३८ ॥ सदा कलंकही को रंक कहे दरिद्र अर्थ कलंक रहित जो सीतापदपंकज हैं कमान तोपको नाम पश्चिममों प्रसिद्ध है औ गोला के साहचर्य सों अति निश्चित है यथा भूषणकविः। "छूटतकमाननकेगोलीतीरबाननकेमुसकिलजात मुरचानहूं के ओटमें । ताहीसमैंशिवराजदावकरीपैंडापर दैसुरंगहलाकोहुकुमकरचोगोटमें ॥ भूषणभनतकहौंकिमतिकहांलोंदेसीहिम्मतिइहांलोंशरजाकेभटजोटमें । ताउदैदै मोछन कंगूरनमैं पाइंदैदै घाउदैदैअरुमुख कूदेजाय कोटमें" ॥ ३९ ॥

मू०—दोहा ॥ उदधिनाकपतिशत्रुको उदितजानिबलवंत ॥ अंतरिक्षहींलक्षिपद, अच्छछुयोहनुमंत ॥ ४० ॥ बीचगयेसुरसामिली, औरसिंहिकानारि ॥ लीलिलियोहनुमंततेहि, कढ़ेउदरकहँफारि ॥ ४१ ॥

टी०—उदधि जो समुद्रहैं तामें नाकपति जे इन्द्र हैं तिनको शत्रु मैनाक ताको उदित कहे आपने विश्रामके लिये उठ्यो जानिकै अंतरिक्ष ही कहे आकाशही सों लक्षि कहे देखिकै बलवंत जे हनुमंतहैं तिन ता मैनाकके बाधके लिये अच्छ कहे स्वच्छ जो पद है तासों छुयो स्पर्शमात्र करचो काहे ते वाल्मीकीयरामायणमें लिख्यो है कि हनूमान मैनाक सों अपनी प्रतिज्ञा कह्योहै कि मध्यमें विश्राम न करिहौं । यथा—"त्वरतेकार्यकालोमेअहश्चाप्यनिवर्तते । प्रतिज्ञाचमयादत्तानस्थातव्यमिहांतरा " ॥ अथवा पदके सदृश अच्छसो छुयो अर्थ जैसे पदसों स्पर्शकरि लघुविश्राम करनोहै तैसे केवल दृष्टि सों स्पर्श करि विश्राम कियो ॥ ४० ॥ सिंहिकाने हनुमंत को लीलिलियो ॥ ४१ ॥

मू०—तारकछंद ॥ कछुरातिगयेकरिदंशदशासी । पुरमांझचलेबनराजिबिलासी॥ जबहींहनुमंतचलेतजिशंका । मगरोंकिरहीतियह्वैतबलंका ॥ ४२ ॥ लंका ॥ कहिमोहिंउलंघ्यचलेतुमकोहौ ॥ अतिसूक्षमरूपधरेमनमोहौ ॥ पठयेक्यहिकारणकौनचलेहौ । सुरहौकिधौंकोउसुरेशभलेहौ ॥ ४३ ॥ दनु-

मान ॥ हमबानरहैंरघुनाथपठाये । तिनकीतरुणीअवलोकन-आये ॥ लंका ॥ हतिमोहिंमहामतिभीतरजैये ॥ हनूमान ॥ तरुणीहिंहते कबलोंसुखपैये ॥ ४४ ॥ लंका ॥ तुममारेहिपै-पुरपैठनपैहौ । हठकोटिकरौवरहीफिरिजैहौ ॥ हनुमंतबलीते-हिथापरमारी । तजिदेहभईतवहीबरनारी ॥ ४५ ॥ लंका-चौ-पाई ॥ धनदपुरीहौंरावणलीन्ही । वहुविधिपापनकरेसभीनी । चतुराननचितचिंतनकीन्हों ॥ बरुकरुणाकरिमोकहँदीन्हों ॥ ॥ ४६ ॥ जबदशकंठसियाहरिलैहैं । हरिहनुमंताबिलोकनऐहैं ॥ जबवहतोहिहतैतजिशंका । तबप्रभुहोइविभीषणलंका ॥४७॥ चलनलगौं जबहीतबकीजो । मृतकशरीरहिपावकदीजो ॥ यहकहिजातभईवहनारी । सबनगरीहनुमंतनिहारी ॥ ४८ ॥

टी०-दंशकहे डास यामें कोऊ कोऊ संदेह करत हैं कि दंश रूप धरिकै गये मुद्रिका कैसे लैगये तालिये और अर्थ कारि दंशकहे सिंह "कारिणंहस्तिनंद-शतीतिकरिदंशः"। ताको रूप कारि चले तो सिंहको औ श्वानको रूप एक होताहै ताही सों श्वानको नाम ग्रामसिंह है श्वानको ग्राममें जैबो साधारण रहत है तासों श्वानको रूप धरिकैगये ॥ ४२ ॥ सूक्ष्म कहे लघु श्वानके अर्थमें सूक्ष्म कहे तुच्छ ॥४३॥४४॥४५॥ धनद कुबेर ॥४६॥ हरि वानर॥४७॥मृतक शरीर कहे पुरी रूप मृतक शरीर लंकाने या प्रकार को वर मांग्यो है ताही लिये हनुमान लंकापुरीको जारि हैं ॥ ४८ ॥

मू०-तबहरिरावणसोवतदेख्यो । मणिमयपालिककीछ्बि-बिलेख्यो ॥ तहँतरुणीबहुभाँतिनगावैं । बिच बिच आवझ बीनबजावैं ॥ ४९ ॥ मृतकचितापरवानहुंसोहैं । चहुँदिशि-प्रेतवधूमनमोहैं ॥ जहँ जहँ जाइतहाँदुखदूनो । सियाबिनहैं-सिगरोपुरसूनो ॥ ॥ ५० ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ कहूंकिन्नरी-किन्नरीलैबजावैं । सुरी आसुरीबांसुरीगीतगावैं ॥ कहूंयक्षिणी-

पक्षिणीलैपढ़ावैं । नगी कन्यकापन्नगीकोनचावैं ॥ ५१ ॥ पियैंएकहालागृहैंएकमाला । बनीएकबालानचैचित्रशाला ॥ कहूंकोकिलाकोककीकारिकाको । पढ़ावैसुआलैशुकीशारिकाको ॥ ५२ ॥ फिरयोदेखिकै राजशालासभाको । रह्योरीझिकैबाटिकाकीप्रभाको । फिरयो बीरचौंहूंचितैशुद्धगीता । बिलोकीभलीसिंसिपामूलसीता ॥ ५३ ॥

टी०-॥ ४९ ॥ ५० ॥ किन्नरी सारंगी बाँसुरीमें गीत गावती हैं अथवा बाँसुरी सम गीत गावतीहैं ॥ ५१ ॥ हाला मदिरा सुष्ठु जे आलय घर हैं तिनमें शुकी औ शारिका मैना कोकिला जे हैं ते कोकशास्त्र की कारिका पढावती हैं अथवा स्त्री कोकिला सम पढावती हैं ॥ ५२ ॥ या प्रकार सब स्थाननमें फिरयो सो ऐसी राजशाला सभा कहे राजभवनमें स्त्रीनकी सभाको देखिकै रीझि रह्यो अथवा या प्रकार राजशाला औ राजसभाको देखि कै रीझि रह्यो जब सीताको तहां न देख्यो तब वाटिका की प्रभाको फिरयो अर्थ वाटिकाको गमन करयो शुद्ध गीता सीताको विशेषण है शिंशुपासी सौ अथवा " अगुरु पिच्छिलागुरु शिंशुपा " इति विश्वः ॥ ५३ ॥

मू०-धरेएकबेनीमिलीमैलसारी । मृणालीमनोपंकसोंकाढ़िडारी ॥ सदारामनामैररैदीनबानी । चहूँओरहैंएकसीदुःखदानी ॥ ५४ ॥ ग्रसीबुद्धिसीचित्तचिंतानिमानों । कियोजीभदंतावलीमैंबखानो ॥ किधौंबेरिकैराहुनारीनलीनी । कलाचंद्रकी चारुपीयूषभीनी ॥ ५५ ॥ किधौंजीवकोजोतिमायानलीनी । अविद्यानकेमध्यविद्याप्रवीनी ॥ मनोसर्वइस्त्रीनमेंकामबामा । हनूमानऐसीलखीरामरामा ॥ ५६ ॥ तहाँदेवद्वेषीदशग्रीवआयो । सुन्योदेविसीतामहादुःखपायो ॥ सबै अंगलैअंगहीमेंदुरायो । अधोदृष्टिकैअश्रुधाराबहायो ॥५७ ॥ रावण ॥ सुनोदेविमोपैकछूदृष्टिदीजै । इतोशोचतोरामकाजै-

नकीजे ॥ बसैंदंडकारण्यदेखैनकोऊ । जोदेखैमहाबावरोहो-
यसोऊ ॥ ९८ ॥

टी०–पंकसदृश मैल सारोहै कहूंपंक शोकाधिकारी पाठ है तौ मानो पंक युक्त मृणाली है शोकाधिकारी कहे अति शोक युक्त दुहन को विशेपणहै ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ संसार विषे कीनी बुद्धि अविद्या है ईश्वर विवेकिनी बुद्धि विद्या है रामा स्त्री ॥ ५६ ॥ अति लाज भयसों अंग सिकोरिकै बैठी ॥ ५७ ॥ चारि छंदको अन्वय एक हैं रावण कहत है कि हे देवि ! ऐसे जे रामचंद्र हैं तिनको शोचना करो हमजे तुम्हारे सदादास हैं तिनपै कृपा काहे नाहि करियत जासों अदेवी दैत्य स्त्री देवांगना तिनकी रानी होय औ वाणी सरस्वती औ मघौनी इंद्राणी मृडानी पार्वती तुम्हारी सेवा करैं औ किन्नरी सारंगी लिये किन्नरी किन्नर कन्या तुम्हारे समीप गीत गावैं औ सुकेशी औ उर्वशी नाचैं तुमसों मान कहे आदर पावैं यामें आपनो प्रभाव देखायो कि ए सब इंद्रादि मेरी आज्ञाकर हैं रामचन्द्र कैसे हैं दंडकारण्य में बसत हैं अर्थ वनवासी हैं औ ऐसे छिपे रहत हैं जिनको कोऊ कबहूं देखत नहीं औ जो देखत है औ सो महा बावरो आपने तनकी औ भवनादि की सुधि भूलि जात है यासों या जनायो कि बावरो होत है ताहीको संग्रह कोऊ नाहीं करत औ वे ऐसे हैं जिनको देखत औरऊ बावरो होत है तासों सोच करिबे लायक नहीं है अनाथ के अनुसारी कहे अनुगामी हैं अर्थ यह कि काहू बडेके अनुगामी नहीं हैं 'तुम्हें देवि दूषै हितू ताहि मानैं' इत्यादि दुवौ वचन भेद उपायकेहैं सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे देवि ! हे जगदंब ! हमपर कछु कृपादृष्टि दीजै अर्थ तुम्हारी नेक कृपादृष्टिसों हमारो भलो होत है औ रामचन्द्रके काज येतो शोच काहेको करती हौ रामचन्द्र शोचनीय नहीं हैं काहेते वे ऐसे प्रतापी हैं कि निर्जन दंडकारण्यमें बसते हैं आशय कि अति निर्भय हैं औ देखै न कोऊ अर्थ अनेक ध्यानादि उपाय योगी जन जिनके देखिबेको करत हैं ताहूपर दर्शन नहीं पावत सो छठे प्रकाशमें कह्यो है कि "सिद्धसमाधि सजैं अजहूं न कहूं जग योगिन देखन पाई"। औ जो देखतहै अर्थ जाको दर्शन होतहै सो महा बावरो होत है अर्थ बावरे सम संसार सुखको त्यागकरि जीवन्मुक्त ह्वै जात है अथवा बावरे सम देहकी सुधि नहीं रहति जैसे सुतीक्षणको भयो अथवा महा बावरो महादेव होई अर्थ महादेव सम प्रभावको प्राप्त होइ ॥ ९८ ॥

मू०—कृतघ्नीकुदाताकुकन्याहिचाहै ॥ हितूनग्नमुंडीनहींको सदाहै ॥ अनाथैसुन्योमैंअनाथानुसारी । बसैंचित्तदंडीजटीमुंडधारी ॥ ५९ ॥

टी०—कृत जो कर्म हैं ताके हंता नाशकर्त्ता हैं अर्थ शुभाशुभ कर्म बन्धन तोरि दासनको मुक्तकरत हैं औ कु जो पृथ्वी है ताके दाता हैं अर्थ पूर्ण पृथ्वीके दाता हैं वावनरूप ह्वै वलिसों ले इंद्रको दियो औ कु जो पृथ्वी है ताकी कन्या चैत्रमहो तिन्हैं चाहत हैं औ नग्न औ मुण्डी जे तप स्वी हैं तिनके हितू हैं औ अनाथ कहे जिनको नाथ स्वामी कोऊ नहीं है आशय कि आपही सबके नाथ हैं औ अनाथ कहे अशरण जे मानी हैं तिनके अनुसारी अगामी हैं जाको रक्षक कोई नहीं है ताकी रक्षा करिवे को पाछे पाछे आपु फिरत हैं जैसे गज प्रह्लादकी रक्षा करचो औ दण्डी औ जटी औ मुण्डधारी जे तपस्वी हैं तिनके चित्तमें वसत हैं अर्थ राजाको सदा ध्यान करतेहैं अथवा दंडी औ जटी औ मुण्डधारी ऐसे जे महादेव हैं तिनके चित्तमें वसत हैं औ द्रव्यरूप लक्ष्मीको जे दूषत हैं औ उदासीन रहत हैं ते दास विष्णुको अतिप्रिय हैं औ निर्गुणी कहे प्राकृत गुणन करि रहित हैं अर्थ अति उत्कृष्ट गुणहैं जिनके। यथा वायुपुराणे ॥ "सत्त्वादिगुणहीनत्वान्निर्गुणी हरिरीश्वरः" ॥ औ ता नाम कहे ताको नाम ऐसो है जाकारिकै नहीं लीजियत अर्थ जाके नामको शिवआदि देव सव जपतेहैं अथवा महानिर्गुणी कहे रज सत्त्व तमोगुण करि रहित हैं औ ताको नाम नहीं लीजियत है अर्थ जाके नामका जप नहीं है ऐसी जो ब्रह्मज्योति है सो है अथवा हे देवि! जे तुम्हैं दूषतहैं तिन्हैं कहा हितू मानत हैं अर्थ हितू नहीं मानते जो तुम्हारी-रंचकऊ विरोधी है ताही रामचन्द्र परम विरोधी मानत हैं जयंतादि ते जानौ औ तोसों उदासीन है ताहू को कहा हितू मानत है अर्थ ताहू को आपनो परम हितूहू होइ पै विरोधही जानतेहैं सीय खोजको वानर पठाइवेमें सुग्रीव उदासीनता करचो प्रेमकरि आपुहीसों वानर न पठयो तव कोपकरि लक्ष्मणसों विरोधी सम वचन कहि पठावनादि सों जानौं औ महानिर्गुणी कहे उत्कृष्ट गुणन करि युक्त जे रामचन्द्र हैं तिनको नाम कहाना लीजै अर्थ यह कि लीजे ताहीके नामसों मुक्ति प्राप्ति होती है ॥ मैं तुम्हारो सदा दास हौं मोपै कृपा काहे नाहीं कीजत सेवकपर कृपा करिवो स्वामीको उचित है अंदवीनकी रानीहोहु इत्यादि वचन आशीर्वादात्मक हैं कि तुम ऐसे सुखको प्राप्त होहु ॥ ५९ ॥

मू०—तुम्हैंदेविदूपैहितूताहिमानै । उदासीनतोसोंसदाताहि जानै॥ महानिर्गुणीनामताकोनलीजै । सदादासमोपैक्रपाक्यों नकीजै ॥ ६० ॥ अदेवीनृदेवीनकीहोहुरानी । करैंसेववानीम-घौनीमृडानी ॥ लियेकिन्नरीकिन्नरीगीतगावैं । सुकेशीनचैउर्व-शीमानपावैं ॥ ६१ ॥ मालिनीछंद ॥ तृणबिचदैबोलीसीयगं-भीरवानी । दशमुखशठकौतूकोनकीराजधानी ॥दशरथसुतद्वे-षीरुद्रब्रह्मानभासै। निशिचरवपुराभूक्योंनश्योमूलनासै॥६२॥ अतितनुधनुरेखानेकनाकीनजाकी । खलशरखरधाएक्योंसहै-तिच्छताकी। बिडकनघनघूरेभक्षिक्योंबाजजीवै।शिवशिरशशि श्रीकोराहुकैसेसोछीवै ॥ ६३ ॥

टी०—॥ ६० ६१ ॥ पतिव्रतनको परपुरुषसों संभाषण अनुचित है तासों तृण कहे खरको अंतरकरचो यह लोकमर्य्यादा है अथवा तृण अंतरमें करि या जनायो कि हम प्राणनको तृण समान समुझे हैं जो तू स्पर्श करिहै तौ प्राण तृण समानछोडि देहैं अथवा रावणको जनायो कि तू तृणसमानहै काहेते गंभीरवाणी बोली याते कछू भय नहीं सूचितहोत कोऊ कोऊ तृणअंचलहूको कहत हैं तौ अंचल ओट सों बोली या जानौं तेरो तो मूल तबही नशिगयोरहै जब हम को हरिल्यायोरहै तामें कछू लग्यो है ताको ऐसी बातैं कहि अबनीकी भाँतिसों काहेको नाशत है ॥ ६२ ॥ तनु कहे सूक्ष्म बिट पुरीष तेरो राज्य सुख बिडकन सदृश है हम बाज सदृश हैं औ हम शिव शिर शशिसदृश हैं तू राहु सदृश है ॥ ६३ ॥

मू०—उठिउठिशठह्वांतेभागुतौलौं अभागे । मम वचनबिस-र्योसर्पजोलोंनलागे ॥ विकलसकुलदेखौंआसुहीनाशतेरो । निपटमृतकतोकोरोषमारैनमेरो ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ अवधिदई द्वैमासकी, कह्योराक्षसिनबोलि । ज्योंसमुझैसमुझाइयो, युक्ति छुरीसोंछोलि ॥ ६५॥ चामरछंद ॥ देखिदेखिकैअशोकराज पुत्रिकाकह्यो ॥ देहिमोहिंआगितैंजोअंगआगिह्वैरह्यो ॥ ठौर पाइपवनपुत्रडारिमुद्रिकादई । आसपासदेखिकैउठायहाथकै-

लई ॥ ६६ ॥ तोमरछंद ॥ जबलगीसियरीहाथ । यहआगि कैसीनाथ ॥ यहकह्योलषितबताहि ॥ मणिजटितसुंदरीआहि ॥ ६७ ॥ जबबांचिदेख्यौनाउ । मनपरचोसंभ्रमभाउ॥ आ-बालतेरघुनाथ । यहधरीअपनेहाथ ॥ ६८ ॥ बिछुरीसोकौनउपाउ । केहिआनियोयहिठाउ ॥ सुधिलहौंकौनउपाउँ । अबकाहिबूझनजाउँ ॥ ६९ ॥ चहुँओरचितैसत्राश। अवलोकियोआकाश॥तहँशाखबैठोनीठि।तबपरचोबानर डीठि ॥७०॥

टी०—हमारे वचनमें विप्रशरण शील जे सर्पहैं इहां सर्प पदते सर्प शाप जानो ते जबलों तेरे अंगनमें नहीं लागे अर्थ जैसे सर्पके काटतही प्राण छूटतहैं तैसे हमारे शापसों तेरोप्राण छूट जैहैं अथवा हमारे वचनहीं जे विसर्पी कहे प्रशरण शील सर्पहैं ते जब लौं तेरे अंगन में नहीं लागे ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ अरुणपत्र युक्त अशोक वृक्ष विरहसों दाहक अग्नि समदेखि परत हैं तासों सीताजू कह्यो कि तिहारो सर्वाङ्ग आगि सम ह्वै रह्यो है सो हमको आगि तू देहु जामें जरि-कै दुसह रामवियोग ताप मिटाइये इति भावार्थः ॥ ६६ ॥ सियरी शीतल ॥ ॥ ६७ ॥ आवाल ते कह्यो लडिकाईहीं सों ॥ ६८ ॥ सुधिकहे खबरि ॥ ६९ ॥ नीठि कहे मरुमरुकै ॥ ७० ॥

मू०—तबकह्योकोतूआहि । सुरअसुरमोतनचाहि ॥ कैपक्ष पक्षविरूप । दशकंठबानररूप ॥ ७१ ॥ कहिआपनोतूभेद । नतुचितउपजतखेद ॥ कहिबेगवानरपाप । नतुतोहिं देहौंशाप ॥ तबवृक्षशाखाहूमि । कपिउतरिआयोभूमि॥ ७२ ॥ पद्ध-टिकाछंद ॥ करजोरिकह्योहौंपवनपूत । जियजननिजानुरघु-नाथदूत ॥ रघुनाथकौनदशरत्थनंद । दशरत्थकौनअजतन-यचन्द ॥ ७३ ॥ केहिकारणपठयेयहिनिकेत । निजदेनलेन संदेशहेत ॥ गुणरूपशीलशोभासुभाउ । कछुरघुपतिकेलक्षण बताउ ॥ ७४ ॥ अतियदपिसुमित्रानंदभक्त । अतिनैनकहैंअ-तिशूरशक्त ॥ अरुयदपिअनुजतीन्योंसमान । पैतदपिभग्न

भावतनिदान ॥ ७५॥ ज्योंनारायणउरश्रीवसंति । त्योंरघुप-तिउरकछुद्युतिलसंति ॥ जगतितनेहैंसवभूमिभूप । सुरअसुर नपूजैंरामरूप ॥ ७६ ॥ सीताजू-निशिपालिकाछंद ॥ मोहिं परतीतियहिभाँतिनहिं आवई । प्रीतिकहिधोंसुनरवानरनि क्यों भई ॥ वातसववर्णिपरतीतिहरित्योंदई । आशुअन्हवा-इउरलाइसुंदरीलई ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ आशुवरपिहियरेहरपि, सीतासुखदसुभाइ । निरखिनिरखिपियमुद्रिकहि, वरणतिहैं बहुभाइ ॥ ७८ ॥

टी०-पच्छ जो हैज्ञाति वर्ग तासों विरूप कहे अन्य रूप ॥ ७१ ॥ खेद डर पाप छल यह छंद छःचरणकोहै तासों गाथा जानो यथा वृत्तरत्नाकरे॥ "शेषंगाथा-स्त्रिभिःषड्भिश्चरणैश्चोपलक्षिताः"॥ माघको दूसरो छंद छः चरणको है ॥ ७२॥ ॥७३॥ कछु कहे गुणादिकनमों काहूकोसक्षणकहौ ॥७४॥ शक्तसमर्थ ॥७५॥ नपूजेकहेसमता नहीं करत ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ भाइकहेअभिप्राय ॥ ७८ ॥

मू०-पद्धटिकाछंद ॥ यहसूरकिरणतमदुःखहारि । शशिक-लाकिधौंउरश्रीतकारि ॥ कलकीरतिसीशुभसहितनाम । करौ ज्यश्रीयहतजीराम ॥ ७९ ॥ कैनारायणउरसमलसंति । शुभ-अंकनऊपरश्रीवसंति ॥ वरविद्यासीआनंददानि । युतअष्टाप-दमनशिवामानि ॥ ८० ॥ जनुमायाअच्छरसहितदेखि । कैप-त्रीनिश्चयदानिलेखि ॥ प्रियप्रतीहारनीसीनिहारि । श्रीरामो-जयउच्चारकारि ॥ ८१ ॥ पियपठईमानौसखिसुजान । जगभू-षणकोभूषणनिधान ॥ निजआईहमकोशीषदेन । यहिकिधौं-हमारोमरमलेन ॥ ८२ ॥

टी०-हमारो तम अंधकार सदृश जो दुःख है ताकी रहनहारी है ताते कैधौं सूर्य की किरण है कल कहे अविन्न मुद्रिका में राम नाम लिख्यो है औ कीर-तिहू जा प्राणीकी होति है ताके नाम के साथही रहति है प्रथम ताको नाम

कहि कीरति कही जाति है राज्य श्रीहूको रामचन्द्र छोंड्यो है औ याहू को छोंड्यो है ॥ ७९ ॥ नारायणके उरमें अंक जो गोदहै तापर श्री बसति है अथवा अंक कहे श्रीवत्सादि चिह्न पर श्री बसति है मुद्रिकामें श्रीरामोजयति लिख्यो है तहां रामोजयति इन अंकनके ऊपर श्रीअंक लिख्यो है शिवा पार्वती पक्ष अष्टापद कहे पशु पशुपदते सिंह अथवा वृषभ जानौ । "चामीकरं जातरूपं महा रजतकांचने ॥ रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियामित्यमरः" मुद्रिका पद सुवर्ण ॥ ८० ॥ अक्षर विष्णु औ अंक पिय जे रामचन्द्र हैं तिनकी प्रतिहारिणी चोबदारिनी हैं यामें श्रीरामोजयति लिख्यो है प्रतिहार को नामोच्चार करिबो धर्म है ॥ ८१ ॥ सखी कैसी है जगके जितने भूषण गहने हैं तिनको जो भूषण कहे भूषिबो है ताको निधान भांडा है अर्थ अनेक प्रकार सों भूषण पहिराइबे में चतुर है औ मुद्रिका कैसी है जग भूषण जे रामचन्द्र हैं तिनको भूषणनको निधान कहे भांडा है अर्थ जब याको रामचन्द्र पहिरत हैं तब अनेक भूषण पहिरे रूप अपना को मानत हैं अथवा जब या मुद्रिकाको धारण करत हैं तब अनेक भूषण पहिरे समान छवि होति है अथवा जगके जे भूषण गहने हैं तिनको जो भूषण है सो माताको निधान कहे भांडा है काहेते मोहर है सब राज्यको व्यवहार मोहरके अंकन सों सही होतहै ॥ ८२ ॥

मू०—दोहा ॥ सुखदा शिखदा अर्थदा, यशदा रसदातारि । रामचन्द्रकी मुद्रिका, किधौं परम गुरुनारि ॥ ८३ ॥ बहु बरणा सहजप्रिया, तमगुनहराप्रमान । जगमारग दरशावनी, सूरज किरण समान ॥ ८४ ॥

टी०—परम गुरुनारि कैसीहै कोमल भाषणादि करिकै सुखदा है औ शिखदाता है कि कुलांगननको ऐसो करिबो उचित है सो करौ औ अर्थ जो प्रयोजन है ताको दाता है कि स्त्रियनको पतिव्रतसों देवलोक गमन होत हैं यह पतिव्रतमें देवलोक गमनरूप जो प्रयोजन है ताको देति है औ पतिव्रत साधन करार यश देति है औ अनेक वचन चातुर्य्यादि रस कहे गुण देति है औ मुद्रिका दर्शनसों सुखदा है औ शिख दाताहै काहेते शिक्षा दियो कि धीरज धरौ औ अर्थ प्रयोजनको दाता है काहेते रामचन्द्रको संदेशरूप हमारो प्रयोजन रह्यो ताको दियो अथवा अर्थ जो ज्ञानहै ताको दाता है औ अतिशूल्यादिरूप [illegible] जाके पास रहै ताको यश दाता है औरस कहे प्रेमको दाता है अर्थ रामचन्द्र प्रतिप्रेम

ढावन हारी है ॥ "शृंगारादौविषेवीर्येगुणेरागेद्रवेरसः ॥ इत्यमरः ॥ ८३ ॥ बहु
रणा कहे बहुत हैं बरण रंग अक्षर जिनके औ सहज प्रिया दुवौ हैं तमगुण
अंधकार औ अज्ञान सूरज किरण जगके मारग राह देखावत हैं औ मुद्रिकाहू
जगमारग दरशावनी है काहेते जहाँ रामचंद्र हैं तहांकी राह देखायो जा मारग
है हमारो मन रामचंद्रके निकट गयो दोहा क्षेपक है ॥ ८४ ॥

मू०-दोहा-श्रीपुरमेंवनमध्यहों,तूमगकरीअनीति। कहिमुंदरीअबतियनकी, कोकरिहैपरतीति ॥ ८५ ॥ पद्धटिकाछंद॥ कहि कुशलमुद्रिकेरामगात। पुनिलक्ष्मणसहितसमानतात ॥ यहउत्तरदेतिनबुद्धिवंत ॥ केहिकारणयौंहनुमंतसंत ॥ ८६ ॥ हनूमान-दोहा ॥ तुमपूंछतकहिमुद्रिकै, मौनहोतियहिनाम ॥ कंकनकीपदवीदई तुमबिनयाकहँराम ॥ ८७॥ दंडक ॥ दीरघदरीनबसैंकेशोदासकेशरीज्योंकेशरीकोदेखिबनकरीज्योंकपतहैं । बासरकीसंपतिउलूकज्योंनचितवतचकवाज्योंचंदचितैचौगुनोंचपतहैं । केकासुनिव्यालज्योंबिलातजातघनश्यामघननकेघोरनजवासोज्योंतपतहैं ॥ भँवरज्योंभवतवनयोगीज्योंजगतरैनिसाकतज्योंरामनामतेरोईजपतहैं॥८८॥

टी०-श्रीजो राज्यश्रीहै तेहिपुरमें अयोध्यामें रामचन्द्रको छोडिदियो औ
बनके मध्यमें हमछाँड्यौ राम हमैं तू छाँड्यो सो हे सुन्दरी ! कहौ तियनको
अबको परतीतिकरि है अर्थ कोऊ ना करि है ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ तुम्हारे
विरह सों रामचन्द्र ऐसे दुर्बल भये हैं जासों याको कंकनके स्थानमों पहिरत है
इति भावार्थः ॥ ८७ ॥ सीताजू सों हनुमान कहतहैं कि हे सीता ! तुम्हारे बिरह
सों रामचंद्र ऐसी दशाको प्राप्त हैं कि दीरघ दरीन में केशरी जो सिंहहै ताके
समान वसत हैं जैसे सिंह भूमिहीमें सोवत बैठत है कछू सेजादि सुख की इच्छा
नहीं करत तैसे रामचंद्र हैं औ केशरी पदश्लेष है करी कहे हस्ती पच्छ सिंह
जानौ रामपक्ष केशरी केशरी उदीप कहे तासों औ बासर जो दिन है ताकी
संपत्ति कहे लक्ष्मी शोभा इति ताको उलूक जो घूघू पक्षी विशेष है ताके समान
नहीं देखत घूघू को दिनको देखि नहीं परत औ रामचन्द्रको अनेक वस्तु देखि

विरह उद्दीपन होतहै तासों दिनमें इतउत नहीं निरखत औ चंद्रमाको देखि चक्रवाक समान जपत हैं चन्द्रमा विरह उद्दीपन है तासों औ केका जो मोरवाणी है ताको सुनि व्याल जो सर्प हैं ताके समान बिलात जातहैं सर्प भक्षनके भयसों रामचन्द्र विरह वर्द्धन भयसों ॥ "केकावाणीमयूरस्येत्यमरः" औ घनश्याम कहे सजल जे घन मेघ हैं तिनको जो घोर शब्द है तासों जवाँसे सम तपत हैं जवासे जल वृष्टिसों निज जरिबो जानिकै औ रामचन्द्रके विरहाग्नि ज्वलित होति है तासों औ वनमें ठौर ठौर भौंरसम भँवत रहत हैं औ जैसे योगीध्यान धारणादि करत राति बितावत हैं तैसे तुम्हारे वियोग सों विकल जे रामचंद्रहैं तिनको रात्रिहू में निद्रा नहीं आवती औ जैसे शाक्त कहे देवीको उपासक देवीको नाम जपत हैं तैसे राम तिहारोई नाम रात्रि दिन जपत हैं ॥ ८८ ॥

मू०–हनूमान-बारिधरछंद ॥ राजपुत्रियकबातसुनौपुनि । रामचन्द्रमनमांहकहीगुनि ॥ रातिदीहयमराजजनीजनु । यात नानितनजानतकैमनु ॥ ८९ ॥

टी०–दीह कहे वडी जो राति है सो जानो यमराज की जनी कहे किंकरी है ता राति कारिकै कृत जो यातना पीडा है ताको कि हमारो तन जानत है कि मन जानत है जापै वीतति है अर्थ कहिवे लायक नहीं है अति वडी है औ यम किंकरन हूं कारिकै कृत यातना कहिवे लायक नहीं होति अति कठोर होति है तासों यमकिंकरी सम कह्यो ॥ ८९ ॥

मू०–दोहा ॥ दुखदेखेसुखहोहिगो, सुक्खनदुःखविहीन । जैसेतपसीतपतपै, होतपरमपदलीन ॥ ९० ॥ वरषाविभव देखिकै, देखीशरदसकास । जैसेरणमेंकालभट, भेंटिभेंटियतबास ॥ ९१ ॥ दुःखदेखिकैदेखिहौ, तवमुखआनँदकंद । तपनतापतपिद्यौसनिशि, जैसेशीतलचन्द ॥ ९२ ॥ अपनीदशाकहाकहौं दीपदशासीदेह । जरतजातिवासरनिशा, केशव सहितसनेह ॥ ९३ ॥ सुमति सुकेसिसुनैनिसुनि, समुखिसुदंतिसुश्रोणि । दरशानैगोवेगिही, तुमकोसरनिजयोनि ॥ ९४ ॥ हरिगीतछंद ॥ कहुजनानिदेपरतीतिजालोंगमच-

न्ह्वाहि०ावई। शुभशीशकीमणिदईयहकहिशुयशतवजगगा-वई॥ सबकालह्वैहौअमरअरुतुमससमरजयपदपाइहौ। सुत आजुतेरघुनाथकेतुमपरमभक्तकहाइहौ॥ ९५॥

टी०–तुमको हमारे विरह कृत जो दुःखहै ताके अनन्तर मिलापरूप सुख ह्वै है इति भावार्थः॥ ९०॥ वैभव ऐश्वर्य जैसे वर्षा बिताई शरदको भेट्यो तैसे रावणादिकनको मारि तुमको भेंटिहैं इति भावार्थः॥ ९१॥ ९२॥ और अपनी दशा कहा कहिये तुम्हारे स्नेह प्रेम सहित जो देह है सो स्नेह तैल सहित दीपदशा कहे दीपकी बाती सम बासर निशा कहे रातौंदिन जरतजातिहै॥ ९३॥ सुन्दर है श्रोणि कहे कटि जाकी। "कटि श्रोणीककुद्मतीत्यमरः॥" सरसिजयोनि ब्रह्मा तुमको मोहिं दरशावैगो मोहिं इति शेषः॥ ९४॥ ९५॥

मू०–करजोरिपगपरितोरिउपबनकोरिकिंकरमारियो। पुनि जंबुमालीमंत्रिसुतअरुपंचमंत्रिसंहारियो॥रणमारिअक्षकुमार बहुबिधिइंद्रजीतसोंयुद्धकै। अतिब्रह्मशस्त्रप्रमाणमानिसोवश्य भोमनशुद्धकै॥ ९६॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकाया-मिन्द्रजिद्विरचितायांहनूमद्ध्वंसनंनामत्रयोदशः प्रकाशः॥ १३॥

टी०–जंबुमाली प्रहस्तनामा मंत्रीको पुत्र है यथा वाल्मीकीये॥ सदष्टो राक्षसेंद्रेण प्रहस्तस्य सुतो बली॥ जम्बुमाली महादंष्ट्रो निर्जगाम धनुर्द्धरः॥ १॥ पुनः पंचमंत्रिणउक्ताः वाल्मीकीये॥ सविरूपाक्षयूपाक्षौ दुर्द्धर्षं चैव राक्षसम्। प्रघसम्भासकर्णौ च पंच सेनाग्रनायकान्॥ ९६॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां त्रयोदशः प्रकाशः॥ १३॥

मू०–दोहा॥ याचौदहेंप्रकाशमें, ह्वैहैलंकादाह॥ सागरतीरमिलानपुनि, करिहैरघुकुलनाह॥ १॥ रावण–विजयछंद॥ रेकपिकौनतुअक्षकोघातक दूतबलीरघुनंदनजीको।कोरघुनंदन रेत्रिशिराखरदूषणदूषणभूषणभूको।सागरकैसेतरचोजैसेगोपद

काजकहासियचोरहिदेखो। किसेबँधायोजोसुंदरितेरीछुईदृगसो-वतपातकलेखो ॥२॥ रावण-चामरछंद ॥ कोरिकोरियातना-निफोरिफारिमारिये। काटिकोटिफारिमाँसुबांटिबांटिडारिये ॥ खालखैंचिखैंचिहाडभूजिभूजिखाहुरे। पौरिटांगिरुंडमुंडलैउम-ड्रजाहुरे ॥३॥ बिभीषण ॥ दूतमारियेनराजराजछोड़िदीजई। मंत्रिमित्रपूँछिकैसोऔरदंडकीजई ॥ एकरंकमारिक्योंबडोकलं-कलीजई। बुंदसोकिगोकुहामहासमुद्रछीजई ॥ ४ ॥

टी०—मिलान कहे विश्राम ॥ १ ॥ हम तेरी स्त्रीको सोवत में दृग सों छुयो अर्थ देख्यो ता पातक सों बांधिगये तू रामचन्द्रकी स्त्रीको हरि ल्यायो है तेरी अतिदुर्गति ह्वै है इतिभावार्थः ॥ २ ॥ हनूमानके कठोरवचन सुनि कोप करि रावण राक्षसन सों कहत है कोरि कोरि कहे करोरि करोरि जे यातना बाधा हैं नखदंतता जनदंडघातादि सों फोरि फोरि कहे जामें चर्म फोरि रुधिर कढि आवै या प्रकारसों मारि डारो कहूं ताजनानि पाठ है तौ ताजन कहे चाबुक औ खालखैंचे रोमांचिके कुठारादि सों हाडनके स्थान में काटिके औ छुरिकादि सों फारिके ताको मांस बांटि बांटि डारिये कहे आपनो आपनो भाग करि लीजिये औ हाड खैंचिके कहे निकारिके भूजिभूजिकै खाय डारो रुण्ड रुण्डकी पदते रुंडकी खाल जानो अर्थ यह कि रुण्डकी खालमें तृणादि भरिकै सबके देखिबेके लिये पौरिमें कहे पुरद्वारमें टांगिदेहु औ मुंडको लैके उडाइ कहे उडिके राम पास जाउ रामपासइतिशेषः। जासों मुण्ड चीन्हि रामचन्द्र दूतको मारयो जानि दुःखपावें इतिभावार्थः ॥ ३ ॥ ४ ॥

मू०—तूलतेलबोरिबोरिजोरिजोरिबाससों। लैअपाररारअं-गदूनसूतसोंकसो। पूछपवनपूतकोसंवारिबारिदीजहीं ॥ अंग-कोघटाइकैउडाईजातमोतहीं ॥५॥ चंचरीछंद ॥ धामधामनि आगिकीबहुज्वालमालबिराजहीं ॥ पवनकेझकझोरतेझँझरीझ-रोखनभ्राजहीं ॥ बाजिबारणशारिकाशुकमोरजोरणभाजहीं। छुद्रज्योंबिपदाहिआवतछोडिजातनलाजहीं ॥६॥ भुजंगप्रया-

तछंद ॥ जटीअग्निज्वालाअटासेतहैज्यों । शरत्कालकेमेघसंध्यासमैज्यों ॥ लगीज्वालधूमावलीनीलराजैं । मनोस्वर्णकीकिंकिणीनागराजैं ॥ ७ ॥ लसैपीतक्षत्रीमठीज्वालमानौ । ठकेओढनीलंकबक्षोजजानौ ॥ जरेजूहनारीचढ़ीचित्रसारी । मनोचेटकामेंसतीसत्यधारी ॥ ८ ॥ कहूँरैनिचारीगहेज्योतिगाढे । मनोईशरोषाग्निमेंकामडाढे ॥ कहूंकामिनीज्वालमालानिभौरें । तजैंलालसारीअलंकारतौरें ॥ ९ ॥

टी०-तूलरुई वाससी वस्त्र ॥ ५ ॥ झँझरीके जे झरोखा कहे छिद्र हैं तिनमें भ्राजहीं कहे शोभित हैं जैसे क्षुद्रप्राणी जाके पास रहत है ताको कछू विपत्ति परे तो सहाय नहीं करत ताको छोडिकै भागत है लजात नहीं है तैसे अग्निदाहकी जो विपत्तिहै तामें वारणादि सब भागत भये ॥ ६ ॥ नाग कहे हाथी ॥७॥ वक्षोज कुचसम पीत क्षत्रिय हैं ओढनी सम अग्निज्वाल है ॥ ८ ॥ भौरे कहे भ्रमसों अलंकार स्वर्ण भूषण ॥ ९ ॥

मू०-कहूंभौनरातेरचेधूमछाहीं । शशीसूरमानोंलसैंमेघमाहीं । जरैशस्त्रशालामिलीगंधमाला ॥ मिलैअद्रिमानौलगीदावजाला ॥ १० ॥ चलीभागिचौहूंदिशाराजधानी । मिलीज्वालमालाफिरैदुःखदानी ॥ मनोईशबानावलीलाललोलैं । सबैदैत्यजा यानकेसंगडोलैं ॥ ११ ॥ सवैया ॥ लंकलगाइदईहनुमंतबिमान बचेअतिउच्चरुखीहै । पाचिफटैंउचटैंबहुधामनि रानीरटैंपानीपानीदुखीहै ॥ कंचनकोपबिल्योपुरपूरपयोनिधिमेंपसरेतिसुखीहै । गंगहजारमुखीगनिकेशोगिरामिलीमानौअपारमुखीहै ॥ १२ ॥

टी०-शशि कहे श्री जो प्रताप है त्यहिसहित प्रतापरहित सूर्य्यको रंग श्वेत है प्रतापसहित अरुण है तासों शशि कह्यो अथवा कि शशि कहे चन्द्रमा सहित मानों सूर्य लसत हैं अर्थ चन्द्रयुक्त सूर्य होते हैं तब सूर्य्यग्रहण होत है सो

मानो ग्रहण समयमें सूर्य शोभित हैं इत्यर्थः । औ कि मानो सूर्य मेघनमें शोभित हैं यथा सिद्धांत रहस्ये 'छादयत्यर्कमिन्दुरिति' । सर्पसम शस्त्रहैं चन्दन गंधसम गंधहै ॥ १० ॥ महादेव त्रिपुरको भस्म करिबे को बाण चलायो है ते बाण दैत्य जाया जे दैत्यस्त्री हैं तिनके भागत में तनुमें लागे भस्म करचोहै मानो तेईहैं बाणावली सम ज्वाला माला हैं दैत्यजाया सम राक्षसी हैं ॥ ११ ॥ पाचि कहे पन्नामणि अथवा पाचि कहे पाकिकै फटै कहे फूटती हैं ते मणि बहुधा उचटती हैं कहे उछरती हैं गंगको सहस्रमुखी कहे सहस्रधारा ह्वै समुद्रको मिलीं गुणिके गिरा जो सरस्वती है सो मानो अति सुखी ह्वै कै अपार कहे अगन्यमुखी ह्वै कै समुद्रको मिली हैं सुवर्णद्रव सरस्वतीके जल समहै ॥ १२ ॥

मू०–दोहा ॥ हनुमतलाईलंकसब, बच्योबिभीषणधाम ॥ ज्योंअरुणोदयबेरमें, पंकजपूरबयाम ॥ १३ ॥ संयुताछंद ॥ हनुमंतलंकलगाइकै । पुनिपूछसिंधुबुझाइकै ॥ शुभदेखिसीतहि पाँपरे । मनिपायआनँदजीभरे ॥ १४ ॥ रघुनाथपैजबहीगये । उठिअंकलावनकोभये ॥ प्रभुमैंकहाकरणीकरी । शिरपायकीध-रणीधरी ॥ १५ ॥ दोहा ॥ चिन्तामणिसीमणिदई, रघुपतिकरहनुमंत ॥ सीताजूकोमनरँग्यो, जनुअनुरागअनंत ॥ १६ ॥

टी०–हनुमान करिकै लाई कहे जारी जो जरति सब लंका है तामें बच्यो जो विभीषणको धाम है सो ज्वालमध्य कैसो शोभित है जैसे पूर्व याम कहे प्रथम पहर अरुण जे सूर्य हैं तिनके उदयके बेरमें कहीं समयमें पङ्कज कमल शोभित है जैसे कमल रात्रिको मुकुलित रहत है प्रातही सूर्योदय होत अति प्रफुल्लित ह्वै प्रकाशको प्राप्त होत है तैसे रावणको प्रताप [illegible] जो रात्रि है तामें [illegible]षणको धाम उदासीन रह्यो सो लङ्कामें रामप्रतापरूपी सूर्योदय [illegible] [illegible] जो अग्नि तेज है तामें शोभित भयो पूर्वयाम कहि या जानियो कि ज्यों ज्यों सूरज सम प्रताप अधिक उदय को प्राप्त ह्वै है त्यों त्यों कमल सम विभीषणको घर अधिक प्रकाशको प्राप्त ह्वै है इतिभावार्थः ॥ पूर्वयाम [illegible] किंवा [illegible] आच्छादित ह्वै [illegible] तृतीयादि पहरहू में उदित [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] रामायण में कह्यो है कि, लंक जारिकै हनुमान [illegible]

कि यामें सीताहू जरि गई ह्वै हैं तासों फिरि सीताके पास जाइ सीता को शुभ कहे सकुशल देखिके मणिसम पाइके आनन्द जीमें भरत भये जैसे कछु मणि रत्न पाये आनन्द होत है तैसे भयो ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू०-दोधकछंद ॥ श्रीरघुनाथजबैमणिदेखी। जीमहँभागदशासमलेखी ॥ फूलिउठ्योमनुज्योंनिधिपाई। मानहुँअंधसोदीठिसोहाई ॥ १७ ॥ तारकछंद ॥ मणिहोहिनहींमनुआहिसियाको। उरमेंप्रगटयोतनुप्रेमदियाको ॥ सबभागिगयो जो हुतो तमछायो। अबमैंअपनेमनकोमतपायो ॥ १८ ॥ दरशैहमको बनहींदरशाये। उरलागतिआइबरयाइलगाये ॥ कुछउत्तरदेति नहींचुपसाधी ॥ जियजानतिहैहमकोअपराधी ॥ १९ ॥ हनूमान ॥ कहुसीयदशाकहिमोहिंनआवै। चरकाजडबातसुनै दुखपावै ॥ सरसोप्रतिबासरबासरलागै। तनघावनहींमनप्राणनखागै ॥ २० ॥

टी०-भाग्यकी दशा कहे अवस्था ॥ १७ ॥ प्रिया प्रियके मनसों मनमिले अति प्रेम प्रगट होत है यह प्रसिद्ध है सो रामचंद्र कहत हैं कि ता मणिको देखि प्रेमरूपी जो दिया कहे दीपक है ताको तनु कहे स्वरूप ज्योति इति हमारे उरमें प्रगट भयो तासों यह सीताको मन है जा दीपके प्रगट भये सो हमारे मनमें जो तम अन्धकार छायो रहे सो सब भागिगयो तो इहां तम पदते अज्ञान अथवा वियोग दुःख जानौं ता तमसे हमारे मनको रावण वचनरूप अथवा कर्त्तव्य वस्तु विचार रूप जो मत हिरानो रहे ताको पायो ॥ १८ ॥ अब यह दरशायेहु कहे हमारी ओर निहारो यह कहे हू पर हमको नहीं दरशै कहे देखति अर्थ हमारी ओर नहीं निहारति औ जब बरिआई कहे जबरई अपने हाथनसों उरमें लगाइयत है तब लागति है आपनी ओर सों नहीं लागति ॥ १९ ॥ चर कहे जंगम मनुष्यादि जड वृक्षादि प्रतिवासर कहे रोज रोज अर्थ निरन्तर वासर जो दिन है अथवा रागभेद जो रावणके मंदिरनमें नित्य राग होत है सो सीताके शर कहे बाण सम लागत है सो शरके लागे तनुमें घाव होत है वा शरके लागे तनमें घाव नहीं होत औ मन औ प्राणन में खागै कहे लपटात है अर्थ मन औ प्राणनको छेदत है "वासरो रागभेदेह्नीत्यभिधानचिन्तामणिः" ॥ २० ॥

मू०—प्रतिअंगनकेसँगहीदिननाशैं । निशिसोंमिलिबाढति दीहउसासैं ॥ निशिनेकहुनींदनआवतिजानौं । रविकीछबिज्योंअधरातबखानौं ॥ २१ ॥ घनाक्षरी ॥ भौंरनीज्योंभ्रमतरहति बनबीथिकानि हंसिनीज्योंमृदुलमृणालिकाचहतिहै । हरिणी ज्योंहेरतिनकेशरीकेकाननहिंकेकाशुनिव्यालीज्योंबिलानहींचहतिहै । पीउपीउरटतरहतिचितचातकीज्योंचंदचितैचकईज्योंचुपह्वैरहतिहै । सुनहुनृपतिरामबिरहतिहारेऐसीसूरतिनसीताजूकीमूरतिगहतिहै ॥ २२ ॥

टी०—शरद् ऋतु सों शिशिर पर्यंत दिनमान घटत है रात्रि मान बाढत है सो हनूमान शरदऋतु में गये सो लंका जाइ कै शरद में अथवा हेमन्त मों रामचन्द्र के पास आयेहैं हैं सो रामचन्द्र सों कहत हैं कि जैसे या समय के दिन मर्याद करिकै नाशत कहे घटत हैं तैसे सीताके सब अंग घटत हैं दूबरे होतहैं औ ज्यों ज्यों निशा बाढति है त्यों त्यों दीह उसास बाढति है दूसरो अर्थ खुलो है अधराति मों जैसे रविकी छबि नेक नहीं रहति तैसे सीताको रातिके नींद नहीं आवति अधरात कहे अति विनिद्रता जनायो जैसे तुलसीकृतमों कह्यो है कि । "शिरिस कुसुम कहुं बेधत हीरा" ॥ २१ ॥ भौंरनी सम बन अशोक वाटिकाकी बीथिकानिमें कहे गलिन में भ्रमत रहति है अथवा मन करिकै बन बीथिकानिमें भ्रमति रहति है तुम्हारो बियोग बनहींमों भयो है तासों सीता को मन बन बन भ्रम्यो करत है हंसिनी सुखभावसे सीता शीतलताकेलिये केशरी सिंह औ कुंकुमहरिणीवधभयसोंसीता बिरहोद्दीपन भयसों॥२२॥

मू०—सीताजूसंदेश—दोहा ॥ श्रीनृसिंहप्रह्लादकी, वेदजोगावतगाथ । गयेमासदिनआशुही, झूँठीह्वैहैनाथ ॥ २३ ॥ आगमकनककुरंगके,कहीबातसुखपाइ । कोपानलजरिजायजनि, शोकसमुद्रबुडाइ ॥ २४ ॥

टी०—नृसिंहरूप ह्वै [illegible] [illegible] निज [illegible] [illegible] [illegible] गाथा वेद गावत है सो हम प्रति रावणकृत जे अवधि मास के दिन [illegible] [illegible]

गये कहे वीते आशुही कहे थोरेही दिन मां झूंठी ह्वै है अवधि दिन बीत रावण हमको मारि डारि है तब सब कहिहैं कि साक्षात् स्त्री सीता की रक्षा रावण सों न करयो तो असंबंधी प्रह्लाद की रक्षा कहा करयो ह्वै है इति भावार्थः ॥ जे वनकृत अवधि दिन तेरहें प्रकाश में कह्यो है । अवधि दई द्वै मासकी । सो जानो अथवा मास दिन कहे एक महीना गये कहे वीते अर्थ एक महीना के वाद हम प्राण छोड़िदेहैं वाल्मीकीयमें कह्यो है । "इदंब्रूयाश्चमेनाथं शूरं-रामं पुनःपुनः । जीवितं धारयिष्यामि मासं दशरथात्मजम् । ऊर्ध्वं मासन्नजीवेयं सत्येनाहं ब्रवीमि ते" ॥ २३ ॥ "राजसुता यक मंत्र सुनो अब । चाहत हों भुव भार हरयो सब ॥ पावकमें निज देहहि राखहु । छायाशरीर मृगै अभिलाषहु ॥" या प्रकार राक्षसन को मारि भुवभार हरिबो कह्यो रहै सो बात को या अनल-में जरन न पावे औ शोकरूपी समुद्र में डूबन न पावे ता बात की रक्षा तुम को नीके प्रकार सों करिबे है ॥ २४ ॥

मू०–राम-दंडक ॥ सांचोएकनामहरिलीन्हेसबदुःखहरिऔ-रनामपरिहारिनरहारिठायेहौ । बानरनहींहौतुममेरेबाणरोषसम बलीमुखशूरबलीमुखनिजगायेहौ॥शाखामृगनाहीबुद्धिबलन-केशाखमृगकैधौंवेदशाखामृगकेशवकोभायेहो । साधुहनुमन्त बलवंतयशवंततुमगयेएककाजकोअनेककरिआयेहौ ॥ २५॥ हनूमान–तोमरछंद ॥ गइमुद्रिकालैपार । मनिमोहिंल्याईवार॥ कहकरयोमैबलरंक । अतिमृतकजारीलंक ॥ २६ ॥

टी०–सीताको संदेश दै कै हमारो सब दुःख तुम हरिलीन्हों ताते हरि यह जो तुम्हारो नामहै सो सांचो है 'हरतिदुःख मितिहरिः,। अर्थ जो दुःखको हरै सो हरि कहावै सो तुम नरहरि कहे नृसिंह हौ और नाम जो नर है ताको परिहारि कहे छोडि कै हरि एते नाम सों ठाये कहे युक्त हौ यासों या जनायो कि प्रह्लाद के समान तुम हमारो दुःख हरयो है अथवा औरजे नामहैं इंद्रादिक तिनको परिहारि कहे छोडिकै नरहरि कहे नृसिंह यह जो नाम है ताके सम ठाये हौ अर्थ इन्द्रादि-कनकी समता करिबेलायक तुम नहीं हो विक्रमादि करिकै तुम नृसिंहके समान हो मेरे वाण को जो रोष क्रोध है ताके समहो अर्थ जैसे हमारे वाणको क्रोध निष्फल नहीं होत तैसे तुम निष्फल नहीं होत जो काज करिबो चाहौ सो करि

ही आवो अथवा मेरे बाण के सम हौ औ मेरे रोष के सम हौ कहूं बाण रस सम पाठ है तौ बाण को जो रस कहे बलहै ताके सम हौ अर्थ जैसे हमारे बाणमें बल है तैसे तुम्हारे बलहै "शृंगारादौविषेवीर्येद्रवेरागेगुणेरसः" इत्यमरः हे बलीमुख शूर अर्थ बलीमुख जे वानर हैं तिनमें शूर कहे वीरबली जे बलवान हैं तिनके मुखन करिकै निज कहे निश्चय करिकै गाये हौ अर्थ बड़े बड़े बलवान तुम्हारो बखान करत हैं औ शाखा जे वृक्षशाखा हैं तिनके मृग कहे गामी तुम नहीं हौ बुद्धि बलनके जे शाखा हैं तिनके गामी हौ अर्थ अनेक बुद्धि बल करि कारज साधत हौ औ कि वेदकी जे कलाआदि शाखा हैं तिनके मृग कहे गामी हौ अर्थ वेदाध्ययन मों प्रवीण हो एक काज सीय खोज अनेक काज लंका दाहादि ॥ २५ ॥ २६ ॥

मू०–अतिहत्योबालकअच्छ । लैगयोबांधिविपच्छ ॥ जड़वृक्षतोरेदीन । मैंकहाविक्रमकीन ॥ २७ ॥ तिथिविजयदशमीपाइ ॥ उठिचलेश्रीरघुराइ ॥ हरियूथ यूथपसंग । बिनपच्छकेतिपतंग ॥ २८ ॥

टी०–विपच्छ कहे शत्रु जो मेघनाद है सो म्वहिं बांधि लैगयो ॥ २७ ॥ शरत्कालमें सीताके ढूँढिबेके लिये वानरनको रामचन्द्र पठायो है औ मास दिवसकी अवधि दईहै सो समुद्रतटमें अंगद कह्यो है कि । सीय न पाई अवधि बिताई । तौ शीतकालके माससों अधिक दिन बीते औ अमरकोषमें कह्यो है कि द्वौद्वौमाघादिमासौस्यादृतुः । या मतसों कॉर औ कार्त्तिक द्वै मास शरत्काल जानौ औ कॉर शुक्लदशमी विजयदशमी कहावतीहै ताको रामचन्द्र चले यद्यपि विरोधहै तहां और अर्थ दशमी तिथिमों विजयनामा मुहूर्त्तको पाइकै श्रीरामचन्द्र चले दशमी यथा । वाल्मीकीये-अस्मिन्मुहूर्त्तेसुग्रीवप्रयाणमभिरोचय । युक्तोमुहूर्तो विजयः प्राप्तो मध्यं दिवाकरः । कैसे हैं हरियूथ विना पच्छके पतंग कहे पक्षी हैं अर्थ विन पच्छ पक्षिसम उडत हैं ॥ २८ ॥

मू०–समुझैजनसूरप्रकाश । आकाशनाकितविलाश ॥ पुनिऋक्षलक्ष्मणसंग । जनुजलधिगंगतरंग ॥ २९ ॥ सुग्रीव-दंडक ॥ केशोदासराजचन्द्रसुनौराजारामचन्द्ररावरीजबदिसिनउचकिचलतिहै । पूरतिहैभूरिधूरिरोदसिहिआसपासदिसिदिसिवर-

पाज्योंबलनिबलतिहै । पन्नगपतंगतरुगिरिगिरिराजगजराज मृगमगराजराजनिदलतिहै। जहांतहांऊपरपतालपयआइजात पुरइनिकेसेपातपुहुमीहलतिहै ॥ ३० ॥

टी०-वानरनके संगमें लक्षन ऋच्छ हैं सो वानर औ ऋच्छ कैसे शोभित हैं जानों जलधि औ गंगाके तरंग हैं जलधि तरङ्ग सम ऋच्छ हैं गंगतरंगसम वानर हैं ॥ २९ ॥ रोदसी कहे भू,आकाश "द्यावाभूमी च रोदसीत्यमरः ।" बलानि कहे वानरयूथनि औ मेघ समूहनि करि दिशि दिशि कहे दशों दिशिनिको वलित कहे आच्छादित करतिहै पन्नग-सर्प, पतंग-पक्षी ॥ ३० ॥

मू०-लक्ष्मण ॥ भारकेउतारिबेकोअवतरेहौरामचन्द्रकिधौं केशोदासभूरिभारतप्रबलदल । टूटतहैंतरुवरगिरिगणगिरिवर-सूखेसबसरवरसतितासकलजल। उचकिचलतहरिदचकनिद-चकतमंचऐसेमचकतभूतलकेथलथल।लचकिलचकिजातशे-षकेअशेषफणभागिगईभोगवतीअतलबितलतल ॥ ३१ ॥ गीतिकाछंद । रघुनाथजूहनुमंतऊपरशोभियेतेहिकालजू । उदयाद्रिशोभनशृंगमानहुंशुभ्रसूरबिशालजू । शुभअंगअंगद संगलक्ष्मणलक्षियेबहुभांतिजू। जनुमेरुमंदरसंगअद्भुतचंद्रराज तरातिजू ॥ ३२ ॥दोहा॥ बलसागरलक्ष्मणसहित,कपिसाग-रणधीर ॥ यशसागररघुनाथजू, मेलेसागरतीर ॥ ३३ ॥

टी०-भोगवती कहे नागपुरी ॥ ३१ ॥ अंगदके ऊपर शुभ अंग जे लक्षण हैं तिन्हें रामचन्द्रके संग बहु भांतिसों लक्षये कहे देखियत है मेरु कहे सुमेरुके शृंगमें कै मंदर कहे मंदराचलके शृंगमें रातिको चंद्र राजत है ॥ ३२ ॥ कपि-सागर कहे कपिनकी सागर सदृश सेना ॥ ३३ ॥

मू०-विजयाछंद ॥ भूतिबिभूतिपियूषहुकीबिषईशसरोराकि-पाययियोहै । हैकिधौंकेशवकश्यपकोवरदेवअदेवनकेमनमोहै। संतहियोकिबसैहरिसन्ततशोभअनन्तकहैकविकोहै । चन्दन नीरतरंगतरंगितनागरकोउकिसागरसोहै ॥ ३४ ॥ गीतिका

छंद ॥ जलजालकालकरालमालतिमिंगिलादिकसोंबसै । उर लोभक्षोभविमोहकोहसकामज्योंखलकोलसै ॥ बहुसंपदायुत जानियेअतिपातकीसमलेखिये । कोउमांगनोअरुपाहुनोंनहीं नीरपीवतदेखिये ॥ ३९ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-
भिन्द्रजिद्विरचितायांसमुद्रतटरामसैन्यनिवेशनंनाम
चतुर्दशःप्रकाशः ॥ १४ ॥

टी०--ईश कहे महादेव केशरीपच्छ भूति कहे अधिकहै विभूति कहे भस्मकी औ पियूष कहे अमृतकी अमृत युक्त चंद्रमा धारण करे हैं तासों औ विषको सागर पच्छ भूति कहे उत्पत्ति हैं विभूति कहे रत्नादि द्रव्य औ पियूष कहे अमृत औ विषकी जासों देव अदेव कश्यप के पुत्र हैं तासों पिताको वर पुत्रनको लाग्योई चाहे औ समुद्रकी दीर्घता देखि देव अदेव मोहित कहे मूर्छित होत हैं नागर कहे नगर श्रेष्ठ सो चंदनको जो नीर कहे उद्धर है ताके जे तरंग हैं तासों तरंगित चित्रित है अर्थ अंगनमों नीकी विधि चंदन लेप करे हैं सागर पच्छ चंदन वृक्ष करिकै नीरके तरंग तरंगित हैं जाके अर्थ जाके तरंगमें चंदन वृक्ष बहत हैं जो कहो अमृतोत्पत्ति औ हरिशयन क्षीरसागरमों है तो इहां समुद्रकी जातिमात्रको वर्णन है लवण क्षीर भेदसों नहीं है सो जानो ॥ ३८ ॥ जा समुद्रके जलको जाल कहे समूह जो है सो कालहूते कराल जे तिमिंगिल मत्स्यभेद हैं तिन्हैं आदि जे जलजीव हैं तिनसों कहे तिनसहित बसत हैं अर्थ जा जलमें तिमिंगिलादि रहत हैं आदि पदते ग्राहादि जानो सो कैसो शोभित है जैसे लोभ औ क्षोभ कहे डर औ विमोह औ कोह कहे क्रोध औ काम सहित खलको दुष्टको उर लसतहै औ बहुत संपत्ति रत्नादिसों युक्तहै ताहूपर कोउ मांगनो कहे याचक अर्थ जे रत्नादि लेनेके लिये जात हैं पाहुनो कहे नातो विष्णु आदि तिनको नीर जल पीवत नही देखियत ताते बडे पातकी सम लेखियत हैं गोवधादि पाप युक्त बडे पातकीहूको जल अति संपत्तिहूके लोभसों कोउ नहीं पीवत इति भावार्थः ॥ ३९ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानि [illegible]
[illegible]निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां [illegible] चतुर्दशः प्रकाशः ॥ १४ ॥

मू०-दोहा ॥ याप्रकाशदशपंचमें, दशशिरकैविचार ॥ मिलनबिभीषणसेतुरचि, रघुपतिजैहैंपार ॥ १ ॥

मू०-रावण-गीतिकाछंद ॥ सुरपालभूतलपालहौसबमूल मंत्रतेजानिये। बहुमंत्रवेदपुराणउत्तममध्यमाधमगानिये ॥ करियेजोकारजआदिउत्तममध्यमाधमभानिये।उरमध्यआनि-अनुत्तमैजेगयेतेकाजबखानिये ॥२॥ स्वागताछंद ॥ आजुसो-हिंकरनेसोकहौजू ॥ आपुमांहजनिरोषगहौजू ॥ राजधर्मकहिये छबिछाये। रामचन्द्रनहिंजौंलगिआये ॥ ३ ॥

टी०-सब महोदरादि जे राक्षस हैं तिनसों रावण कहत है कि तुम सब सुरपाल जे इंद्रहैं तिनको जो भूतल स्वर्गहै ताके पालनहार हौ अर्थ इंद्रलोकमें राज्य करचौ है आशय यह कि मंत्रनहींके जोरसों इंद्रको जीति इंद्रलोक अमल्यौ अथवा सुरपाल इंद्र सम भूतलपाल हौ इंद्रको ऐसो राज्य करत हौ सो मूलमंत्र कहे सिद्धांतमंत्र अर्थ जिनसों शत्रुकी पराजय आपनो जय होय ऐसे मंत्र जानिये कहे जानत हौ वेद पुराणनमें बहुत जे मंत्र हैं तिन्हैं उत्तम औ मध्यम औ अधम नीति प्रकारके वेद पुराणनकरिकै गाइयत है अर्थ वेद पुराण कहत हैं यथा शास्त्रकी दृष्टिसों अर्थ जैसो शास्त्र कहत हैं ताही विधिसों एक मत ह्वैकै मंत्र ठहरावै सो मंत्र उत्तम है औ जहां मंत्रीजन अपने मतको मंत्र भिन्न भिन्न कहैं फिरि राजभयादि कारणसों उदासीनतासों एकमत ठहरावैं सो मंत्र मध्यम है औ मंत्री जो आपनेही अपने मनको मत भिन्न भिन्न कहैं एकमत कैसेहू ना होइ सो मंत्र अधम है यथा। वाल्मीकीये। ऐकमत्यमुपागम्य शास्त्रदृष्टेन चक्षुषा। मंत्रिणो यत्र निरतास्तमाहुर्मंत्रमुत्तमम् ॥ १ ॥ बह्वीरपि मतीर्गत्वा मंत्रिणामर्थनिर्णयः॥ पुनर्यत्रैकतां प्राप्तः स मंत्रो मध्यमः स्मृतः ॥२॥अन्योन्यं मतिमास्थाय यत्र संप्रतिभाष्यते। नचैकमत्यश्रेयोस्ति मंत्रः सोधम उच्यते ॥ ३ ॥ तिन तीनहूं प्रकारके मंत्रनमें आदि उत्तम जो कारज है ताको करिये अर्थ एक मत है कारज करिये औ मध्यम औ अधमको भानिये कहे दूरि करो ऐसे समयमें जे अनुत्तम काज व्यतीत ह्वैगये अर्थ आपनेहीं आपने मनकी सब मिलि कह्यो तिन बातनको उरमें आनिकै बखानिये कहे कहत हौ अर्थ ऐसे समयमों ऐसी बात कहिबो उचित नहींहै तासों एकमत ह्वै मंत्र करौ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

मू०–प्रहस्त ॥ वामदेवतुमकोवरदीन्हो । लोकलोकसिगरेवशकीन्हो ॥ इन्द्रजीतसुतसोजगमोहै । रामदेवनरबानरकोहै ॥ ४ ॥ मृत्युपाशभुजजोरनितोरे । कालदंडतुमसोंकरजोरे ॥ कुंभकर्णसमसोदरजाके । औरकौनमनआवततोके ॥ ५ ॥ कुंभकर्ण–चतुष्पदी० ॥ आपुनसबजानतकह्यौनमानतकीजेजोमनभावै।सीतातुमआनीमीचुनजानीआनकिमंत्रबतावै॥ जेहिबरजगजीत्यौसर्वअतीत्यौतासोंकहाबसाई । अतिभूलिगईतबशोचकरतअबजबशिरऊपरआई ॥ ६ ॥ मंदोदरी-विजयछंद॥रामकिवामजोआनीचोराइसोलंककमेंमीचुकीबेलिबईज । क्योंरणजीतहुगेतिनसोंजिनकीधनुरेखननांघिगईजू॥ बीसबिसेबलवन्तहुतेजोहुतीदृगकेशवरूपरईजू।तोरिशरासनशंकरकोपियसीयस्वयंवरक्यौंनलईजू ॥ ७ ॥

टी०–वामदेव महादेव सरस्वती उक्तार्थः ॥ रामचन्द्र देव हैं नर औ वानर को हैं इहां देव पदते ईश्वर जानो अर्थ रामचन्द्र ईश्वर हैं औ सुग्रीवादि वानर सब देवसैन्य हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ वर कहे बल अर्थ तपोबल अथवा शिवादिके वरसों सब अतीत्यौ कहे बीतो तासों कहा बसाइ कहे जोर चलै अर्थ विनाशको समय आयो सोई तुमसों ऐसे सीयहरणादि कार्य करायो है अथवा जेहि शिव औ ब्रह्माके वरसों जगको जीत्यौ सो वरदान सब बीतो कहेते कि यह वर दीन रह्यो कि नर वानरनको छोडिके औरनसों तुमको भय न ह्वै है सो और औ वानर ही लरिबेको आवत हैं सो वानरको प्रभाव तो कछु यामें चलि है नहीं सो तुमको तब कहे सीयहरणादि समयमों यह सुधि भूलि गई कि हमको नर वानरसों भय है जब शिर ऊपर आई है तब शोच करत हौ तो तासों कहा बसाइ कहे जोर चलै अर्थ अब मृत्युते रक्षाको कछु उपाय नहीं है ॥ ६ ॥ जो तुम्हारे दृगनमें सीतारूप जो सौंदर्य है ता करिकै रई कहे बसी रहे ॥ ७ ॥

मू०–बालिबलीनबच्योबरखोरिहिक्यौंबचिहौतुमआपनिखोरहि।जालगिक्षीरसमुद्रमथ्यौकहिकैसनबांधिहैवारिधिथोरहि॥

श्रीरघुनाथगनौअसमर्थनदेखिविनारथहाथिनघोरहि। तोरयो शरासनशंकरकोजेहिसोवकहातुवलंकनतोरहि ॥८॥ मेघनाद-दोहा ॥ मोकोंआयसुहोइजो, त्रिभुवनपालप्रवीन ॥ रामसहितसवजगकरौं,नरवानरकरिहीन ॥९॥ विभीषण-मोटनकछंद॥ कोहैअतिकायजोदेखिसकै। कोकुंभनिकुंभवृथाजोवकै ॥ कोहैइन्द्रजीतजोभीरसहै। कोकुंभकर्णहथ्यारुगहै ॥ १० ॥

टी०--जालगि कहे जा लक्ष्मीरूप जे सीता हैं तिनके लिये ॥ ८ ॥ सरस्वती उक्तार्थः मेघनाद कहत है कि जो मंत्र कहिवेको हमको आज्ञा होइ तौ हम कहियत है कि त्रिभुवनपाल कहे तीनों लोकके रक्षा करणहार औ प्रवीण कहे विवेकी यासों या जनायो कि केवल समदृष्टिहीसों नहीं प्रतिपाल करत भक्तनपर अतिकृपा शरणागतरक्षण शत्रुनाशादि कर्म यथोचित करत हैं ऐसे जे रामचन्द्र हैं तिनहीं करिकै सहित सब जग है अर्थ रामचंद्रही सर्वत्र व्याप्त हैं अर्थ कि विष्णु हैं यथावृत्तरत्नाकरे ॥ म्यरस्तजन्नगैर्लांतैरेभिर्दशभिरक्षरैः ॥ समस्तं वाङ्मयं व्याप्तं त्रैलोक्यमिव विष्णुना ॥ इनको नर औ वानर करिकै हीन करौं कहे करि मानत हौं अर्थ रामचन्द्र विष्णुहैं वानर सब देवताहैं अंगदहू सोरहे प्रकाशमें कह्यो है कि। कौनइहांनरवानरकोरे ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०--देखेरघुनायकधीररहै । जैसेतरुपल्लवबातबहै ॥ जौलौंहरिसिंधुतरैइतरे । तौलौंसियलैकिनपाइपरै॥११॥जौलौंनलनीलनासिंधुतरै। जौलौंहनुमंतनदृष्टिपरै ॥ जौलौंनहिंअंगदलंकदही। तौलौंप्रभुमानहुबातकही॥१२॥ जौलौंनहिलक्ष्मणबाणधरै । जौलौंसुग्रीवनक्रोधकरै॥जौलौंरघुनाथनशीशहरै तौलौंप्रभुमानहुपाइपरै ॥१३॥ रावण--कलहंसछंद ॥अरिकाजलाजतजिकैउठिधायो।धिकतोहिंमोहिंसमुझावनआयो।तजि रामनामयहबोलउचारयो।शिरमांझलातपगलागतमारयो१४

टी०--अर्थ रघुनाथको देखि अतिकायादिकनके काहूके धीर न रहि है ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ रामनामको तजि कहे छोड़ यह बोलु रावण उचारयो

कहे कह्यो सरस्वतीउक्तार्थः अरि कहे शत्रुके काजसों लाज तजिकै उठि-
धायो है अर्थ रामचन्द्रके हाथ मृत्युसों हमारी मुक्ति ह्वै है तामें चाहिये कि
तू भाई है सहाय करै सो तू शत्रुता करत है जामें याकी मुक्ति ना होइ
यामें तोको लाज नहीं है भाई ह्वै कै शत्रुको काम करत है तोकों धिक्
है जो मोहिं समुझावत है कि रामचंद्रसों न लरौ अथवा मोहिं कहे मोहवश ह्वै
के रामको नाम जो जपत रह्यो ताको तजिकै यह बोल उचारयो कहे एती कथा
कह्यौ यह कहिके पॉयनमें परत बिभीषणके शिरमें लात मारयौ ॥ १४ ॥

मू०—करिहायहायउठिदेहसँभारेउ । लियअंगसंगसबमंत्रि-
यचारेउ ॥ तजिअंधबंधुदशकंधउडान्यो । उररामचंद्रजगती-
पतिआन्यो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ मंत्रिनसहितबिभीषण,
बाढीशोभ अकाश ॥ जनुअलिआवतभावतो, प्रभुपदपद्म-
निवास ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ निकटबिभीषणआवतजाने ।
कपिपतिसोंतबहींगुदराने ॥ रघुपतिसोंतिनजाइसुनायो ।
दशमुखसोदरसेवहिआयो ॥ १७ ॥ श्रीराम० ॥ बुधिबलवं-
तसबैतुमनीके । मतसुनिलीजैमंत्रिनहीके ॥ तबजोबिचारप-
रैसोइकीजै । सहसाशत्रुनआवन दीजै ॥ १८ ॥ अंगद—
सुंदरीछंद ॥ रावणकोयहसांचहुसोदरु । आपुबलीबलवंत-
लियेअरु ॥ राक्सवंशहनैंहतनेसब । काज कहातिनसों-
हमसोंअब ॥ १९ ॥ वध्यविरोधहसैंइनसोंअति । क्योंमि-
लिहैहमसोंतिनसोंमति ॥ रावणक्योंनतजोतबहींइन । सी-
यहरीजबहींबहनिर्घृन ॥ २० ॥ नल० ॥ चारपठैइनकोम-
तलीजिय । ऐसेहिकैसेबिदाकरिदीजिय ॥ राखियजोअति-
जानिय उत्तम । नाहिंतोमारियछोडिसबैभ्रम ॥ २१ ॥

टी०—॥ १५ ॥ १६ ॥ कपि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुग्रीव [illegible] [illegible]
गुदराने कहे जनाये ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

निर्घृण कहे निर्दय ॥ 'कारुण्यं करुणा घृणा इत्यमरः' ॥ २० ॥ चार कहे दूत ॥ २१ ॥

मू०-नील० ॥ सांचिहुजोयहहैशरणागत । राखियराजिवलोचनमोमत ॥ भीतनराखियतौअतिपातक । होइजोमातुपिता कुलघातक ॥ २२ ॥ हनूमान-हरिलीलाछंद ॥ जानौविभीषणनरोत्तमरामराज । प्रह्लादनारदविशारदबुद्धिसाज ॥ सुग्रीवनीलनलअंगदजाम्बवंत । राजाधिराजबलिराजसमानसंत ॥ २३ ॥ दोहा ॥ कहनलपाई बातसबहनूमंतगुणधाम ॥ कह्यौविभीषणआपुही, सवन सुनाइप्रणाम ॥ २४ ॥ सवैया ॥ दीनदयालुकहावतकेशवहौं अतिदीनदशागह्यौगाढो । रावणके अघओघमेंकेशवबूडतहौं वरहींगहिकाढो । ज्योंगजकीप्रह्लादकीकीरतित्योंहींविभीषणकोयशबाढो । आरतबंधुपुकारसुनो किन आरतहौं तौपुकारतठाढो ॥ २५ ॥

टी०-जो माता औ पिता औ कुलको घात करू होय औ भीत ह्वै के आवै ताको न राखौ तौ बडो पातक है अथवा जो माता पिता औ कुल घातकको पातक होत है सोई पातक जो भीतको ना राखै ताको होत है ॥ २२ ॥ प्रह्लाद औ नारदके समान हैं विशारद कहे धृष्ट परिपक्व इति बुद्धिकी साज जिनकी अर्थ प्रह्लाद नारद राम तुम्हारो भक्त है ॥ "विशारदः पंडिते च धृष्टे इतिमेदिनी" ॥ २३ ॥ २४ ॥ बाढो कहे बाढौ ॥ २५ ॥

मू०-केशवआपुसदासह्यौदुःखपैदासनदेखिसकेनदुखारे । जाकोभयोजेहिभाँतिजहाँदुखत्योंहींतहांतिहिभाँतिपधारे ॥ औरियबारअबारकहाँकहुँनाहिंतुकाहुकेदोषबिचारे । बूडतहौंमहामोहसमुद्रमेंराखतकाहेनराखनहारे ॥ २६ ॥ हरिलीलाछंद ॥ श्रीरामचंद्रअतिआरतवंतजानि । लीन्हींबोलायशरणागतसुखदानि ॥ लंकेशआउचिरजीवहिलंकधाम । राजा-

कहाउजग जौंलगिरामनाम ॥ २७ ॥ तोटकछंद ॥ जबहीं रघुनायकबाण लियो । सविशेषविशोषितसिंधुहियो ॥ तबहीद्विजरूपसोआइ गयो । नलसेतुरचैयहमंत्रदयो ॥२८॥ दोहा ॥ जहँतहँवानरसिंधुमैं,गिरिगणडारतआनि ॥ शब्दरह्यो भरिपूरिमहि, रावणको दुखदानि ॥ २९ ॥ तोटकछंद ॥ उछलैजलउच्चअकाशचढै । जलजोरदिशाविदिशानमढै ॥ जनुसिंधुअकाशनदीअरिकै । बहुभाँतिमनावतपांपरिकै ॥३०॥

टी०--त्योंहीं कहे तत्कालही मोह कहे दुःख ॥ २६ ॥ २७ ॥ समुद्रतटमें रामचन्द्र तीन दिन डेरा कियेरहे जब समुद्र राह नहीं दियो तब समुद्रको शोषिवेकेलिये कोपकारि रामचन्द्र बाण लियो इति कथा शेषः॥ २८ ॥ २९ ॥ समुद्रको जल उछरि आकाशकोचढत है सो मानहू समुद्र पायन परिकै आकाश गंगाको मनावत है ॥ ३० ॥

सू०--बहुव्योमविमानतेभीजिगये । जलजोरभयेअँगरागमये ॥ सुरसागरमानहुयुद्धजये ।सिगरेपटभूषणलूटिलये॥३१॥ अतिउच्छलिछिंछित्रिकूटछयो । पुररावणकेजलजोरभयो ॥ तबलंकहनूमतलाइदई । नलमानहुआइबुझाइलई ॥ ३२ ॥ लगिसेउजहांतहँशोभगहे । सरितानिकफेरिप्रवाहवहे ॥ पतिदेवनदीरतिदेखिभली । पितुकेघरकोजनुरूसिचली ॥३३॥सब सागरनागरसेतुरची । बरणैबहुधायुतशक्रशची ॥ तिलकावलिसीशुभशीशलसै ।मणिमालकिधौंउरमेंविलसै॥३४॥तारकछंद ॥ उरतेशिवमूरतिश्रीपतिलीन्ही।शुभसेतुकमूलअधिष्ठित कीन्ही॥इनकेदरशैपरशैपगजोई।भवसागरकोतरिपारसोहोई॥३५॥

टी०--जल जोर भये सो बहुत व्योम आकाश देवतनके विमान भीजिगये कहे जो अंगनमें लग्यो कुंकुमादि लेप है तामें रये कहे युक्त पट [illegible] रहि आये हैं सो मानो सुर जे देवता हैं तिनको सागर युद्धमें जीत्योहै [illegible] लूटि लीन्हो है इहां पटभूषणनको बहि [illegible] लेइबो जिनत कहे उपमेय है [illegible]

है तासों अनुक्त विषय वस्तूत्प्रेक्षा है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ सेतुमें लगिके जहाँ तहाँ सोभरयेन जे सरितनके प्रवाह हैं ते फेरिकहे उलटिकै बहन लगे सो पांय पारि पारि मनावत हैं ऐसी भली कहे बडी रति प्रीति पतिकी समुद्रके देवनदी आकाशगंगामें देखिकै मानों आपने पिताके घरको रूसि चलीहैं ॥३३॥ नागरश्रेष्ठ ॥३४॥ उरते अर्थ विचारते जो वस्तु करिवो होतहै ताको विचार प्रथम मनहिमो आवत है ॥३५॥

मू०-दोहा॥ सेतुमूलशिवशोभिजै, केशवपरमप्रकाश॥ सागरजगतजहाजको, करियाकेशवदास ॥ ३६ ॥ तारकछंद ॥ शुकसारणरावणदूतपठायो । कपिराजसोएकसंदेशसुनायो॥अपने घरजैयहुरेतुमभाई । यमहूंपहँलंकलईनहिंजाई ॥ ३७ ॥ सुग्रीव०॥भजिजेहौंकहांनकहूंथलदेखों ।जलहूंथलहूंरघुनायकपेखों ॥ तुमबालिसमानसहोदरमेरे । हतिहौंकुलस्यौतिनप्राण न तेरे ॥ ३८ ॥ सबरामचमूतरिसिंधुहिआई । छबिऋक्षनकी धरअंबरछाई ॥ बहुधाशुकसारणकोजोबताई । फिरिलंकमनों वर्षाऋतुआई ॥ २९ ॥

टी०-संसार सागरको जो जहाज रामनाम है ताके करिया कहे केवट जे शिव हैं जैसे केवट जहाजमें चढाइ समुद्रपार करत है तैसे शिवमरणकाल काशीमें रामरूपी तारक मंत्र जहाजपर चढाइ संसारपार करत हैं ते सेतुके मूलमें परम प्रकाश कहे प्रसन्नतासों शोभित हैं जो जहाजपर चढाइ पार करत है सो आपने प्रभुसों सेतुपर चढाइ पार करिवेको अधिकार पाइ प्रसन्न भयोई चाहै इतिभावार्थः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ता रावणके संदेशमें सुग्रीवको भाई कह्यो ताको जवाब सुग्रीव दियो कि रावणसों कहियो कि तुम वालिके समान हमारे भाई हौ तासों तुम्हारो वध उचित है ॥ ३८ ॥ जा रामचन्द्रको काहु नीके प्रकारसों सुग्रीवादि वीरनको शुकसारण दूतसों वहुधा वहुत प्रकारसो वताइ कहे वतायो रहै अर्थ वर्णन करयो है सो तुलसीकृत रामायणमें रावणसों शुकसारण कह्यो है कि ॥ असमैं श्रवणसुनादशकंधर । पदुमअठारहयूथप वंदर ॥ अथवा जा प्रकार शुकसारणको वतायो है सो आगे कवित्तमें वर्णन है सो रामचमू सिंधुको तरि कहे उतरिकै लंकामें आई है सो भू आकाशमें ऋक्ष मेघसम श्याम शोभित है सो मानों फेरि हेमंत ऋतुमें वर्षाऋतु लंकामें आई है ॥ ३९ ॥

मू०—दण्डक॥ कुंतलललितनीलभ्रुकुटीधनुषनैनकुमुदकटाक्षबाणसबलसदाईहै। सुग्रीवसहिततारअंगदादिभूषण रु मध्यदेशकेशरीसुगजगतिभाईहै॥ विग्रहानुकूलसबलक्षलक्षऋक्षबलऋक्षराजमुखीमुखकेशोदासगाईहै। रामचन्द्रजूकीचमूराज्यश्रीविभीषणकीरावणकीमीचुदरकूचचलिआई है॥ ४०॥

टी०—रामचन्द्र चमू कैसीहै कि कुंतल औ ललित औ नील औ भ्रुकुटी औ धनुष औ कुमुद औ कटाक्ष औ बाण औ सबलई जे वानर हैं ते सदा हैं जामें अथवा बाण पर्यंत इन नामन करिकै युक्त औ सदा सबल कहे बलवान ऐसे जे वानर ऋक्ष हैं ते हैं जामें औ सुग्रीव सहित है औ तार नामा जे वानरहैं तिन सहितहै औ अंगदादिक जे भूषण कहे सेनानायक हैं तिनसों युक्त है औ मध्य देशनामा औ केशरीनामा औ सुगज नामा जे वानरहैं तिनकी गति भाई कहे नीकी है जामें औ विग्रहनामा औ अनुकूलनामा औ ऋक्षराज मुख कहे ऋक्षराज जे जाम्बवंत हैं ते हैं मुख कहे मुखिया जामें ऐसो लक्ष लक्ष कहे अनेक लक्ष ऋक्षन ऋक्षनकोहै बल सैन्य जामें विभीषणकी राज्यश्री कैसी है कि कुंतल जे केश हैं ते हैं ललित कहे सुंदर औ नील कहे श्याम जाके औ भ्रुकुटी धनुष सम जाकी औ नयन हैं कुमुद कहे कमलसम जाके औ कटाक्ष हैं बाणसम जाके औ सबल कहे सुंदरता सहित सदा है अर्थ जाकी छवि काहू समयमां म्लानि नहीं होति॥ "बलं गंधरसे रूपे-इति मेदिनी"॥ औ सुष्ठु जो ग्रीवा है सो सहितहै तार कहे विमल मुक्तनसों अर्थ मोतिनकी माला पहिरे है॥ "तारो निर्मलमौक्तिके मुक्ताशुद्धावुच्चनादे-इत्यभिधानचिंतामणिः"॥ औ अंगद जो बिजायठ है तेहि आदिदै जे भूषण हैं तिनसों युक्त है औ मध्यदेश जो कटि है सो है केशरी कहे सिंहको ऐसो जाको औ सुष्ठु जो गज है अर्थ जो अति ललित चाल चलत है ताकी ऐसी गति है भाई कहे नीकी जाकी औ विग्रह कहे शरीर है अनुकूल कहे यथोचित सब कहे पूर्ण अर्थ जैसो जौन अंग चाहिये तौन अंग निर्माई है अथवा अनुकूल कहे हित है सबको अर्थ जे देखत हैं तासों मन वश होत है अथवा अनुकूल कहे व्यापि गति "गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः इत्यमरः"॥ औ [illegible] हैं [illegible] [illegible] रामचन्द्रजी है [illegible] [illegible] अर्थ [illegible] अनेक [illegible]

नक्षत्रकी शोभा लैके चन्द्रमा आपु धारण करै तब जाके मुखके सम होय ॥ "ऋक्षस्तुस्यान्नक्षत्राक्षभल्लयोः-इत्यभिधानचिंतामणिः" ॥ रावणकी मीचु कैसी है कि कुंत जो बरछी है सो है ललित कहे लचकति जाके अर्थ बरछी हाथमें लिये है अथवा कुंतल जो भालाहै सोई ललित कहे अति तीक्ष्ण जाको अर्थ हथियारको धरे है ॥ "कुंतलोभल्लकेशयोरित्यभिधानचिंतामणिः ॥" औ नील कहे श्यामवर्ण है औ भ्रुकुटी भौंह हैं धनुषसम विकराल जाकी इहां कवि क्रूर स्त्री करि वर्णत है तासों भौंहनकी धनुषकी क्रूरता धर्म करि साम्य जानो औ नयन हैं कुमुद कहे कुत्सित है मुद आनंद जिनमें ऐसे हैं जाके अर्थ रावणके वधको आनंद है बिभीषणके राज्यलाभादि उत्सवको आनंद नहीं है अथवा नयन हैं कुमुद कहे मुद जो आनंद है प्रसन्नता इति तासों रहित अर्थ अतिकोपसों अरुण अति विकरालहैं प्रशस्त नहीं हैं औ कटाक्ष हैं बाणतम कराल जाके औ सबल कहे बुद्धिबल सहित सदा हैं इहां बलपदते बुद्धिबल जानौ अर्थ बुद्धिबलसों सीता हरणादि कार्य कराइ रामचन्द्रसों विरोध कराइ दियो तार कहे उच्चस्वर करिकै सहित है सुष्ठुग्रीवा जाकी सुष्ठु पदको अर्थ यह कि ऐसी उच्चस्वर करिबेकी शक्ति और काहूकी ग्रीवामें नहीं है औ अंगद जो बिजायठ हैं तेहि आदि भूषण कहे नहीं है अर्थ मुंडमालादि क्रूर भूषण पहिरे हैं औ मध्य कहे अधम अनुत्तमेति हैं देश कहे जाके अंग ॥ "मध्यंविलग्नेन स्त्रीस्यान्नयाय्ये-ऽन्तरेधमेऽपिचेति मेदिनी ॥" औ केशरी जो सिंह है ताकी गजपर ऐसी गति भाई है जाको अर्थ जैसे गजके मारिबेको सिंह चलत है तैसे रावणके मारिबेको चली आवति है औ रामचन्द्रको जो विग्रह विरोध है सोई है अनुकूल हित जाको अर्थ रामचन्द्रके विरोधहीसों है कार्यसिद्धि जाकी औ सब कहे पूर्ण अनेक लक्ष जे ऋक्ष भालु हैं तिनको है बल जाके औ ऋक्षराज जे जाम्बवंत हैं तिनको ऐसो है सुखजाको ॥ ४० ॥

मू०-हीरकछंद ॥ रावणशुभश्यामलतनुमंदिरपरसोहियो। मानहुदशशृंगयुतकलिंदगिरिबिमोहियो॥ राघवशरलाघवगति छत्रमुकुटयोंहयो। हंससबलअंशसहितमानहुउडिकैगयो ॥ ४१ ॥ लज्जितखलतज्जिसुथलभज्जिभवनमेंगयो। लक्ष्मण प्रभुतलक्षण गिरिदक्षिणपरसोभयो ॥ लंकनिरखिअंकहर-

गिरिमर्मसकलजोलह्यो । जाहुसुमतिरावणवहअंगदसनयों-
कह्यो ॥ ४२ ॥ चंचलाछंद ॥ रामचन्द्रजूकहंतस्वर्णलंकदे-
खिदेखि । ऋच्छबानरालि घोरओरचारिहूविशेखि ॥ मंजुकं-
जगंधलुब्धभौंरभीरसीविशाल । केशोदासआसपासशोभिजे-
मनोमराल ॥ ४३ ॥

टी०—उवल कहे अनेकरंग मिश्रित हैं अंशु कहे किरण जाके ऐसे जे सूर्य हैं तिन सहित मानों कलिंदगिरि शृंगते हंस कहे हंस समूह उडिगयो है यहाँ जातिविषे एक वचन है हंसनके सदृश श्वेत छत्र हैं औ सूर्यनके सदृश अनेक रंग नग जटित मुकुट हैं ॥ ४१ ॥ दक्षिण गिरि कहे समुद्रके दक्षिण कूलकी गिरि समुद्र पारको गिरि इति मर्म भेद ॥ ४२ ॥ भौंर भीर सम ऋक्ष हैं मराल हंस सम वानर हैं ॥ ४३ ॥

मू०—ताम्रकोटलोहकोटस्वर्णकोटआसपास । देवकीपुरी घिरीकिपर्वतारिकेविलास ॥ बीचबीचहैकपीशबीचबीचऋक्ष-
जाल । लंककन्यकागरेकिपीतनीलकंठमाल ॥ ४४ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र
चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायां रामसैन्यसमुद्रतरणं
नामपंचदशः प्रकाशः ॥ १५ ॥

टी०—अर्थ इंद्रकी शत्रुतासों मानो पर्वतन देवपुरीको घेरिलियो है देवपुरी सदृश स्वर्णकोट है जाके मध्यमो पुरी है औ ताके आस पास ताम्रादिके कोट हैं ते पर्वत समान हैं यासों या जनायो कि लंका देवपुरी सम है ॥ ४४ ॥

टी०—॥ ॥ इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादनिर्मि-
तायां रामभक्तिप्रकाशिकायां पंचदशः प्रकाशः ॥ १५ ॥

मू०दोहा—यह वर्णनहैषोडशो, केशवदासप्रकाश । रावण
अंगदसोंकियो, मिलिकैवचनविलास ॥ १ ॥ अंगदकूदि
गयेजहाँ, आसनगतलंकेश । मनुमधुकरकरहाटपर, शोभि-

तश्यांमलवेप ॥ ॥ २ ॥ प्रतीहारनाराचछंद ॥ पढोबिरंचि मोनवेदजीवसोरछंडिरे । कुबेरबेरकैकहीनयक्षभीरमंडिरे । दिनेशजाइदूरिबैठुनारदादिसंगहीं । नबोलुचंदमंदबुद्धिइंद्रकीसभानहीं ॥ ३ ॥ चित्रपदाछंद ॥ अंगदयोंसुनिवानी । चित्तमहारिसआनी ॥ ठेलिकै लोगअनेसे । जाइसभामहँबैसे ॥ ४ ॥ चित्रपदाछंद ॥ कौनहोपठयेसोकौनेह्यांतुम्हैंकहकामहै ॥ अंगद ॥ जातिबानरलंकनायक दूतअंगदनाम है ॥ रावण ॥ कौनहैवहबांधिकैहमदेहपूछिसबैदही । लंकजारिसँहारिअक्षगयोसोबातवृथाकही ॥ ५ ॥

टी०-॥ १ ॥ आसनमें गत कहे बैठो ॥ २ ॥ रावणके सभाभवनमें जाइ अंगद ऐसे कौतुक देखत भये प्रतीहार या प्रकारके अनादर पूर्वक वचन ब्रह्मादिसों कहत हैं हे कुबेर ! तुमसों कैयो वार कह्यो कि तुम यक्षनकी भीरको न मंडौ अर्थ यक्षनकी भीरको संग लै इहां न आयो करो सो तुम आइवो करत हौ ३॥ ॥ ४ ॥ लंकनायक विभीषण॥ ५ ॥

मू०-महोदर ॥ कौनभांतिरहौतहांतुमराजप्रेषकजानिये । लंकलाइगयोजोवानरकौननामबखानिये ॥ मेघनादजोबांधियोवहिमारियोबहुघातबै । लोकलाजदुरयोरहैअतिजानिजैनकहांअबै ॥ ६ ॥ रावण ॥ कौनकेसुतबालिकेवहकौनबालिनजानिये । कांखचांपितुम्हैंजोसागरसातन्हातबखानिये ॥ हैकहांवह वीरअंगददेवलोकबताइयो । क्योंगयोरघुनाथबाणबिमानबैठि सिधाइयो ॥ ७ ॥ लंकनायककोबिभीषणदेवदूषणकोदहै ॥ मोहिजीवतहोहिंक्योंजगतोहिजीवतकोकहै ॥ मोहिंकोजगमारिहैदुर्बुद्धितेरियजानिये । कौनबातपठाइयोकहिबीरबेगिबखानिये ॥ ८ ॥ अंगद ॥ सवैया ॥ श्रीरघुनाथकोबानरकेशवआयोहोएकुनकाहूहयोजू । सागरकोमदझारिचिकारित्रिकूटकोदे-

हविहारछयोजू। सीयनिहारिसंहारिकैराक्षसशोकअशोकबनीहि दयोजू। अक्षकुमारहिमारिकैलंकहिजारिकैनीकेहिजातभयोजू९

टी०-महोदरने पूंछो कि तुम तहां कौन भांतिसों रहत हौ अर्थ कौने कामके अधिकारी हौ तब अंगद कह्यो है हम राजाके इहां प्रेषक कहे यथोचित स्थानमें दूतनके पठावनहार हैं अर्थ दूतनके नायक हैं लोक लाज दुरचो रहै यह कहि अंगद या जनायो कि हमारे सैन्यमें ऐसो कोऊ नहीं है जाको काहूं बांध्यो मारचो होइ ॥ ६ ॥ ७ ॥ पाछे अंगद कह्यो है कि हम लंकनायकके दूत हैं सो रावण पूछचो कि लंकनायक को है जाके तुम दूत हौ तब अंगद कह्यो है कि विभीषण लंकनायक है कैसो है विभीषण जे देवतनके दूषण कहे पीडा करनहार हैं तिनको दहे कहे जारत हैं यामों या जनायो कि तुमहूं देव दूषण हो तुमहूं को दहि हैं ॥ ८ ॥ सागरके मद रह्यो कि हमको कोऊ ना नांघि सकिहै सो नांधिके ता मदको झारि डारचो अर्थ दूरि करचो औ चिकारिके गर्जिके त्रिकूट नाम जो लंकापुरीको पर्वत है ताके देहमें अर्थ सब पर्वतभरमें विहारि कहे नीके प्रकारसों पुरीके स्त्री भवनादि देखिके छयो कहे रहत भयो ॥ ९ ॥

मू०-मंगोदकछंद ॥ रामराजानकेराजआइयेइहांधामतेरेमहाभागजागेअबै । देविमंदोदरीकुंभकर्णादिदैमित्रमंत्रीजितेपूंछिदेखौसबै । राखिजैजातिकोभांतिकोवंशकोसाधिजैलोकमेंलोकपरलोकको । आनिकैपांपरोदेसुलैकोशलेआसुहीईशसीताहिलैओकको ॥ १० ॥ रावण ॥ लोकलोकेशसोंशोचिब्रह्मारचैंआपनीआपनींसींवसोंसोरहै । चारिबाहैंधरेविष्णुरक्षाकरैंबातसांचीयहैवेदबाणीकहै ॥ ताहिभूभंगहीदेवदेवेशसोंविष्णुब्रह्मादिदैरुद्रजूसंहरे । ताहिंहोंछांडिकैपांयकाकेपरोंआजुसंसारतोपांयमेरेपरें ॥ ११ ॥ मदिराछंद ॥ रामकोकामकहारिपुजीतहिकौनकबैरिपुजीत्योकहा । बालिबलीछलसोंभृगुनंदनगर्बहरोद्विजदीनमहा ॥ दीनसोक्योंछितिछत्रहत्योविनप्राण-

तश्यामलवेष ॥ ॥ २ ॥ प्रतीहारनाराचछंद ॥ पढोबिरंचि मोनवेदजीवसोरछंडिरे। कुबेरबेरकैकहीनयक्षभीरमंडिरे। दिनेशजाइदूरिबैठुनारदादिसंगहीं। नबोलुचंदमंदबुद्धिइं-द्रकीसभानहीं ॥ ३ ॥ चित्रपदाछंद ॥ अंगदयोंसुनिबानी। चित्तमहारिसआनी ॥ ठेलिकै लोगअनेसे। जाइसभामहँ बैसे ॥ ४ ॥ चित्रपदाछंद ॥ कौनहोपठयेसोकौनेह्यांतुम्हैं-कहकामहै ॥ अंगद ॥ जातिबानरलंकनायक दूतअंगदनाम है ॥ रावण ॥ कौनहैवहबांधिकैहमदेहपूछिसबैदही। लंकजारि-सँहारिअक्षगयोसोबातवृथाकही ॥ ५ ॥

टी०-॥ १ ॥ आसनमें गत कहे बैठो ॥ २ ॥ रावणके सभाभवनमें जाइ अंगद ऐसे कौतुक देखत भये प्रतीहार या प्रकारके अनादर पूर्वक वचन ब्रह्मादिसों कहत हैं हे कुबेर ! तुमसों कैयो बार कह्यो कि तुम यक्षनकी भीरको संग लै इहां न आयो करो सो तुम आइबो करत हौ ३॥ न मंडौ अर्थ यक्षनकी भीरको ॥ ४ ॥ लंकनायक बिभीषण॥ ५ ॥

मू०-महोदर ॥ कौनभांतिरहैतहांतुमराजप्रेमकजानिये। मेघनादजोबांधि लंकलाइगयोजोबानरकौननामबखानिये ॥ लोकलाजडुरयोरहैअतिजानिजैन योवहिमारियेबहुघातबै। कौनकेसुतबालिकेवहकौनबा-कहांअबै ॥ ६ ॥ रावण ॥ कांखचांपितुम्हैंजेसागरसातन्हातबखानिये॥ लिनजानिये। क्योंगयोरघुनाथबाणबिमानबैठि सिधाइयो ॥ ७ ॥ हैकहांवह वीरअंगददेवलोकबताइयो। लंकनायककोबिभीषणदेव दूषणकोदहै।मोहिजीवतहोहिंक्योंजगतोहिजीवतकोकहै।मोहिं कोजगमारिहैदुर्बुद्धितेरियजानिये।कौनबातपठाइयोकहिबीरबे गिबखानिये॥८॥अंगद॥सवैया॥श्रीरघुनाथकोबानरकेशवआ-योहोएकुनकाहूहयोजू। सागरकोमदझारिचिकारित्रिकूटकोदे-

हविहारछयोजू। सीयनिहारिसंहारिकैराक्षसशोकअशोकबनीहि दयोजू। अक्षकुमारहिमारिकैलंकहिजारिकैनीकेहिजातभयोजू९

टी०-महोदरने पूंछो कि तुम तहां कौन भांतिसों रहत हौ अर्थ कौने कामके अधिकारी हौ तब अंगद कह्यो है हम राजाके इहां प्रेषक कहे यथोचित स्थानमें दूतनके पठावनहार हैं अर्थ दूतनके नायक हैं लोक लाज दुरयो रहै यह कहि अंगद या जनायो कि हमारे सैन्यमें ऐसो कोऊ नहीं है जाको काहू बांध्यो मारयो होइ ॥ ६ ॥ ७ ॥ पाछे अंगद कह्यो है कि हम लंक नायकके दूत हैं सो रावण पूछयो कि लंकनायक को है जाके तुम दूत हौ तब अंगद कह्यो है कि बिभीषण लंकनायक है कैसो है बिभीषण जे देवतनके दूषण कहे पीडा करनहार हैं तिनको दहै कहे जारत हैं यामों या जनायो कि तुमहूं देव दूषण हौ तुमहूं को दहि हैं ॥ ८ ॥ सागरको मद रह्यो कि हमको कोऊ ना नांघि सकिहै सो नांधिकै ता मदको झारि डारयो अर्थ दूरि करयो औ चिकारिकै गर्जिकै त्रिकूट नाम जो लंकापुरीको पर्वत है ताके देहमें अर्थ सब पर्वतभरेमें विहारि कहे नीके प्रकारसों पुरीके स्त्री भवनादि देखिकै छयो कहे रहत भयो ॥ ९ ॥

मू०-गंगोदकछंद ॥ रामराजानकेराजआइयेइहांधामतेरेमहाभागजागेअबै । देविमंदोदरीकुंभकर्णादिदैमित्रमंत्रीजितेपूंछिदेखौसबै । राखिजैजातिकोभांतिकोवंशकोसाधिजैलोकमेंलोकपलोककों । आनिकैपांपरौदेसुलैकोशलैआसुहींईशसीताहिलैओककों ॥ १० ॥ रावण ॥ लोकलोकेशसोंशोचिब्रह्मारचैंआपनीआपनींसींवसोंसोरहै । चारिबाहैंधरेविष्णुरक्षाकरैंबातसांचीयहैवेदवाणीकहै ॥ ताहिभूभंगहीदेवदेवेशसोंविष्णुब्रह्मादिदैरुद्रजूसंहरै । ताहिहोंछोंडिकैपायँकाकेपरौंआजुसंसारतोपायँमेरेपरै ॥ ११ ॥ मदिराछंद ॥ रामकोकामकहारिपुजीतहिकौनकबैरिपुजीत्योमहा । बालिबलीछलसोंभृगुनंदनगर्वसहोद्विजदीनमहा ॥ दीनसोक्योंछितिछत्रहत्योबिनप्राण-

निहैहयराजकियो । हैहयकौनवहैबिसरयोजिनखेलतहीतुम्हैं बांधिलियो ॥ १२ ॥

टी०-जा स्त्रीके संग राज्याभिषेक होइ सो देवी कहावै ॥ "देवी कृताभिषेका-यामित्यभिधानचिंतामणिः" ॥१०॥ कल्पांतके अंतमें ब्रह्मा सृष्टि रचत हैं विष्णु रक्षा करत हैं सो ताहि कहे लोक सृष्टिको औ देवेश इन्द्र औ विष्णु औ ब्रह्मादि दै जे देव हैं तिन्हैं रुद्र जे महादेव हैं ते भू जो भौंहदै ताके भंगही टेढ़ी करनेहीसों संहारकालमों संहारकारि डारत हैं ॥ ११ ॥ छत्र कहे छत्रवर्णः ॥ १२ ॥

मू०-अंगद-विजयछंद ॥ सिंधुतरयोउनकोबनरातुमपैधनुरेखगईनतरी । बांध्योइबांधतसोनबँध्योउनबारिधिबांधिकैबाटकरी ॥ अजहूंरघुनाथप्रतापकीबाततुम्हैंदशकंठनजानिपरी । तेलनितूलनिपूंछिजरीनजरीजरीलंकजराइजरी ॥ १३ ॥ मेघनाद ॥ छांडिदियोहमहींबनराबहपूंछकोआगनलंकजरी । भीरमेंअक्षमरयोचपिबालकवादिहिंजाइप्रशस्तिकरी ॥ तालविंधेअरुसिंधुबँधेयहचेटकविक्रमकौनकियो । बानरकोनरकोवपुरापलमैंसुरनायकबांधिलियो ॥ १४ ॥

टी०-बांध्योई कहे हनुमानको बंधन तुम काहूविधिसों करिवोहू करयौ ताहू पर बांधत ना बन्यौ तेल औ तूल कहे रुईयुक्त जो वस्तु होतिहै सो विशेष जरति है सो या प्रकारकी पूंछ तुम करी सो ना जरी औ केवल सुवर्ण औ रत्ननमें अग्नि ज्वलित नहीं होति परंतु तुम्हारी लंका तृणादि रहित केवल रत्नादिके जरायसों जरी जरत भई रामके प्रभावसों ऐसी अनहोनी बातैं होती हैं ताहूपर तुम्हैं नहीं जानि परत इतिभावार्थः ॥ १३ ॥ वादि कहे वृथा प्रशस्ति कहे स्तुति सप्तताल वेध्यो औ सिंधु बांध्यो यह चेटक कहे भगरविद्या है सरस्वती उक्तार्थः ॥ जो रामचन्द्र तालवेधन सिंधुबंधन करयौ सो तो चेटक कहे भगर विद्यासम है अर्थ खेल समहै यामें कौन विक्रम कहे अतिबल कियोहै ॥ "विक्रमस्त्वतिशक्तिता इत्यमरः" ॥ अर्थ वै चाहैं तौ त्रैलोक्यको संहार करिडारैं सिंधुबंधादि सदृश कर्मनमे उनको कौन श्रम है ऐसे प्रबल वे ना होते तौ जिन हम पलमें सुनायकको बांधि लियो ते बानर औ नरको वपुरा है जाते अर्थ हम इंद्र लोकादिमें जाइकै इन्द्रादिको

जीत्यौ औ वै हमपर चढि आये हैं हम वपुरासम कछू करि नहीं सकत अथवा वपुरा समुझि हमपर चढिआये हैं ॥ १४ ॥

मू०—अंगद ॥ चेटकसोंधनुभंगकियोप्रभुरावरेकोअतिजीरनहो। वाणसमेतरहेपचिकैतुमजासचँपैनतज्योथलुहो ॥ बाण सुकौनबलीवलिकेसुतवैबलिबावनबांधिलियो।ओईसोतौजिन कीचिरचेरिननाचनचाइकैछांडिदियो ॥१७॥ रावण ॥ नील सुखेनहनूउनकेनलऔरसबैकपिपुंजतिहारे। आठहुआठदिशा बलिदैअपनोपदुलैपितुजालगिमारे॥तोसेसपूतहिजाइकैवालि अपूतनकीपदवीपगुधारे। अंगदसंगलैमेरोसबैदलआजुहिक्यों नहनैबपमारे ॥ १६ ॥ दोहा ॥ जोसुतअपनेबापको, बैरनलेइ प्रकाश ।तासोंजीवतहीमरचो, लोगकहैंतजित्रास ॥ १७ ॥

टी०—कवित्तमें उक्ति मेघनादकी है औ जवाव रावणको अंगद दियो ता जवावहीसों या जानो कि रामचन्द्र सिंधुवंधनादि सम शंभु धनुषभंग चेटकहीसों कियो है यह वात रावण कह्यो है अंगद कहत हैं कि प्रभु जे रामचन्द्र हैं तिन चेटकसों धनुष भंग कीन्हों औ तुम कहत हौ कि जीरण कहे पुरानो रहै परन्तु तुमको पुरानो तो रहै पै वाणसमेत तुम पराक्रम करि पचिकै कहे थकिकै रहिगये ताहूपर थलहू ना छोंडचो अर्थ रंच ना उठचों ॥ १५ ॥ नील, सुखेन, हनुमान औ सुग्रीव औ राम लक्ष्मण औ विभीषण ये जे आठ हैं सरस्वती उक्तार्थः॥ नील सुखेनादि चारि वानर उनके सुग्रीवके हैं ते वालिके भयसों भागे रहे तव संगरहे यासों या जनायो कि जो रामचन्द्र आज्ञाहू करैं औ तिनहींके मोहसों तिनहीं वै तिहारो राज्य न दियो चाहैं तौ सव वानर तेरेई साथी ह्वै हैं तासों तू आठहू आठ दिशा वलिद जे रामचन्द्र हैं आठ दिशनके आठ जो इन्द्रादि दिक्पाल हैं ते हैं वलिदकहे भेटके दाता जिनके अर्थ इन्द्रादि दिक्पाल जिनकर भेंट देतहैं तिनहीं सों आपनो पद जो राज्यहै ताको लै जाके लिये सुग्रीव तिहारे पितुको मारिडारचो है काहेते राज्य तिहारे पिताको है रामचन्द्र मर्यादापुरुषोत्तम हैं जो तू कहिहै तौ तोको विशेष देहैं । "वलिर्दैत्योपहारयोरित्यभिधानचिन्तामणिः" ॥ वापमारे कहे जो तेरे वापको मारचो है ॥ १६ ॥ १७ ॥

मू०-अंगद॥इनकोबिलगुनमानिये,कहिकेशवपलआधुपानी पावकपवनप्रभु, ज्योंअसाधुत्योंसाधु॥१८॥रावण॥द्रुतविलंबितछंद॥ उरसिअंगदलाजकछूगहौ।जनकघातकबातवृथाकहौ॥ सहितलक्ष्मणरामहिंसंहरौ । सकलवानरराजतुम्हैंकरौ ॥१९॥

टी०-विलगु कहे द्वेष साधु कहे भलो असाधु कहे बुरो ॥ १८ ॥ जनक पिता सरस्वती उक्तार्थः ॥ हे अंगद तुम रामचन्द्रसों मिलिबेकों हमकों कहत हौ यामें तुमको कछू लाज नहीं होत ऐसी बात कहि कछु लाज तौ उरमें गहौ काहेते कि तुम्हारे जनक बालि तिनके जे घातक रामचन्द्र हैं तिनकी बात वृथा है यह तुम कहौ अर्थ रामचन्द्रकी बात वृथा नहीं होति जो मनमें संकल्प करतहैं सो करिबोई करत हैं यासों या जनायो कि अति बली बालिके वध करिबेको संकल्प कियो सो वध करिबोई कियो तैसे वै तो हमारे मारिबेको संकल्प करैं हैं यह संकल्प वृथा काहू उपावसों न ह्वै है तासों मैं लक्ष्मण सहित रामहिंसों संहरों कहे संहारनाशकों प्राप्त होत हौं अर्थ लक्ष्मण सहित राम मोहिं मारतहींहैं नाहीं तो ऐसो हित सीख तुमको दियो है जासों सब वानरनको राजा तुमको करौं अर्थ सुग्रीवसों छोरि तुम्हारो राज्य तुम्हैं देऊं अथवा जनकघातक जे सुग्रीवहैं तिनकी बात वृथा कहत हौ अर्थ जो तुम्हारे पिताको मारचो ताकी तुम बडाई वृथा करत हौ मैं लक्ष्मण सहित राम करिकै संहरौं कहे नाश कों प्राप्त होत हौं नाहीं तो सुग्रीवको मारि सब वानरनकौ राजा तुमकों करौं ॥ १९ ॥

मू०-अंगद-निशिपालिकाछंद ॥ शत्रुसबमित्रहमचित्तपहिंचानहीं । दूतविधिनूतकबहूंनउरआनहीं ॥ आपमुखदोखिअभिलाषअभिलाषहू । राखिभुजशीशतबऔरकहँराखहू ॥ २० ॥ रावण-इन्द्रवज्राछन्द ॥ मेरीबडीभूलसोकाकहौंरे । तेरोकह्योदूतसबैसहौंरे ॥ वैजोसबैचाहततोहिंमारचो । भारोंकहातोहिंजो दैवमारचो ॥ २१ ॥ अंगद-उपेन्द्रवज्राछन्द ॥ नराचश्रीरामजहींधरैंगे। अशेषमाथेकटिभूपरैंगे ॥ शिखाशिवाश्वानगहैंतिहारी । फिरैंचहूंवोरनिरैविहारी ॥ २२ ॥

टी०-तुम्हारी जो यह नूतन कहे नवीन दूतविधि कहे दूतता तोर फोर है ताको कबहूं न उरमें आनि हैं पाइ है ॥ २० ॥ २१ ॥ नराच बान निरैबिहारी रावणको संबोधन है अथवा शिवा औ श्वान औ और जे निरैबिहारी काकादि हैं ते तिहारी शिखा गहे तिहारे शिरको लिये फिरैंगे ॥ २२ ॥

मू०-रावण भुजंगप्रयातछन्द ॥ महामीचुदासीसदापाइँधोवै । प्रतीहारह्वैकैकृपाशूरसोवै ॥ क्षपानाथलीन्हेरहैछत्रजाको । करैगो कहाशत्रुसुग्रीवताको ॥ २३ ॥ सकामेघमालाशिखीपाककारी । करैकोतवालीमहादंडधारी ॥ पढ़ैवेद ब्रह्मासदाद्वारजाके । कहाबापुरोशत्रुसुग्रीवताके ॥ २४ ॥

टी०-अंगदकह्यो कि श्रीराम बाण धरिकै तुमको मारिहैं ताको उत्तर रावण दियो कि महामीचुजो है सो मेरे सदा पाइँ धोइबेके अर्थ दासीहै याते अति न्यूनदासी जनायो एकशत एक मीचु हैं तामें शत अकालमीचु हैं एक महामीचु है शतमीचु उपायसों दूरि होती हैं एक महामीचु काहू उपायसों नहीं मिटति । यथा भावप्रकाशे " एकोत्तरं मृत्युशतमथर्वाणः प्रयच्छते । तत्रैकः कालसंयुक्तः शेषास्त्वागंतवः स्मृताः " । यामों या जनायो कि युद्धादिमें मरिबो तो अकालमृत्यु है सो मेरे समीप कैसे आइ है ॥ २३ ॥ सका कहे सक्का पाककारी रसोंईदार ॥ २४ ॥

मू०-अंगद-विजयछन्द ॥ पेटचढ्योपलनापलिकाचढ़िपालकिहूचढ़िमोहमढ्योरे । चौकचढ्योचित्रसारीचढ्योगजबाजिचढ्योगढ़गर्वचढ्योरे ।व्योमविमानचढ्योईरह्योकहिकेशवसोंकबहूंनपढ्योरे । चेततनाहींरह्योचाढ़िचित्तसोंचाहतमूढ़चिताहूचढ्योरे ॥ २५ ॥

टी०-प्रथमहिं पेटमें चढ्यो कहे गर्भमें आयो जब जन्म भयो तब पलनामें चढिकै झूल्यो कछू और बडो भयो पलिका जो खट्वा है तामें चढि सोवन लाग्यो औ जब व्याह भयो तब पालकीमें चढि व्याहने चल्यो तब मोह जो माया है तामें मढ्यो कहे युक्त भयो फेरि पाणिग्रहणमें चौकमें चढ्यो फेरि स्त्रीके संग चित्रसारीमें चढ्यो फेरि राजा ह्वैकै गजबाजिमें चढ्यो औ गढपर

चढ्यो औ गर्वपर चढ्यो अर्थ राज्याभिमान भयो औ जेहि कहे जाते अर्थ जाकी कृपासों व्योममें विमानन पर चढ्योई रह्यो अर्थ पुष्पकादि विमानन पर चढ्यो आकाश आकाश फिरत रह्यो केशव कहत हैं कि सो जो वह प्रभु रामचन्द्र हैं ताकों कबहूं न पढ्यो अर्थ राम नाम कबहूं न जप्यो सो हे मूढ़ ! अब चिताहू पर चढ्यो चाहत है ताहू पर तेरो चित्त चढि रह्यो है कहे मत्त ह्वै रह्यो है तामें तू चेतत नहीं अर्थ चेत नहीं करतो चिताहूमें चढ्यो चाहत है यह कहि या जनायो कि रामचन्द्र तोहि शीघ्रही मारि हैं तासों उनके शरणमें जाइकै आपनो भलो करु ॥ २५ ॥

मू०-रावण-भुजंगप्रयातछंद ॥ निकारयोजोमैंपालियेरा-जजाको । दियेकाढिकैजूकहात्रासताको ॥ लियेबानराली-कहौंबाततोसों। सोकैसेलरैरामसंग्राममोसों ॥ २६ ॥ अंगद-बिजयछन्द ॥ हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगाउँनठाउँकोठाउँ-बिलैहै । तातनमातनपुत्रनमित्रनवित्तनतीयकहींसंगरैहै ॥ केशव कामकोरामबिसारतऔरनिकामनकामहिऐहै । चेति-रे चेतिअजौंचितअन्तरअंतकलोकअकेलोईजैहै ॥ २७ ॥

टी०-रामचन्द्रके राज्याभिषेकको येतो बडो उत्सव तामें भरत घरमें नहीं रहे सो सुनिकै रावण याही समुझ्यो कि परस्पर स्वाभाविक बन्धु बिरोध समुझि भरतकृत अभिषेकोत्सवभंग भयसों भरतको दशरथ निकारि दियो है है सो कहत है कि निकारो जो भैया भरत है ताने पिता कारि करिकै दियो राज जाको काढिकै कहे देश सों निकारिकै लै लीन्हों ताको कहा त्रास कहे रहै आशय यह कि जा भयसों दशरथ भरतको निकारिकै रामचन्द्रको राज्य दियो सोई आपने बलसों भरत रामचन्द्रसों छोरि लीन्हों औ देशसों निकारि दीन्हों तो जिनसों पिताको दियो राज्य न राखत बन्यो ते हमको मारिकै कहा हमारो राज्य छोरि हैं औ ताहूपर सैन्य बानरनको लिये हैं औ वेष यतीको धरे हैं यतिनको औ बानरनको काम लरिबेको नहीं है सारस्वती उक्तार्थः । संकल्प करिकै जो रामचन्द्र हमारो राज्य लियो औ हम करिकै निकारो जो भाई बिभीषण है ताको दियोहै ता बानको कहा हमारे आत्रासहै अर्थ वडोत्रास है यह हम निश्चय जानत हैं कि रामचन्द्रको संकल्प निष्फल न ह्वै है हमसों राज्य छोरि बिभीषणको दे हैं और कहे अग्नि

ताकी आली कहे समूह अर्थ जिनमों अति अग्नि है ऐसे बाण लिये हैं अथवा र कहे तीक्ष्ण जे बाण हैं तिनकी आली कहे पंक्तिसमूह इति तिनको लिये हैं सो रामचन्द्रके संग्राममें मोसों कहे हम ऐसो प्राणी कैसे जुरै अर्थ हम उनके युद्ध करिबे लायक नहीं हैं। 'रस्तीक्ष्णे दहने इत्यभिधानचिंतामणिः।' 'पुस्यालिविश-दाशये त्रिषु स्त्रियां पस्यायां सेतौ पंक्तौ च कीर्तिता' इत्यभिधान चिंतामणिः॥२६॥ वित्त धन ॥ २७ ॥

मू०–रावण–भुजंगप्रयातछंद॥डरैगायविप्रैअनाथैजोभाजै। परद्रव्यछोंडैपरस्त्रीहिलाजै ॥ परद्रोहजासोंनहोवैरतीको।सुकैसे लरैबेषकीन्हेंयतीको॥२८॥ दोहा॥ गेंदकरेउमैंखेलको,हरगिरि केशोदास। शीशचढायेआपने, कमलसमानसहास॥ २९ ॥

टी०–जे रामचन्द्र गाय औ विप्रको डरात हैं अथ अतिदीनं गाय औ विप्र तिनहूंको डरात हैं तासों अति कादरहैं औ अनाथ जे प्राणी हैं जिनको नाथ कोऊ नहीं है ताहीको भजै कहे सेवन करत हैं अर्थ ताहीसों संग करत हैं यासों या जनायो कि भयसों रंचकहू परद्रव्य नहीं लै सकत हमारो राज्य कैसे लें हैं औ पर स्त्रीको लजातहैं यासों या जनायो कि जे स्त्रीको लजात हैं ते बीरनसों कहा धृष्टता करि हैं औ जिनसों परद्रोह कबहूं रत्तीहूभरिनाहीं ह्वै सकत आशय कि शत्रुता करत डेरातहैं औ ताहूपर वेष यती तपस्वीकी धरेहैं अर्थ बेषहू बीरको नहीं है सो मोसों कैसे लरि हैं सरस्वती उक्तार्थः–मर्यादा पुरुषोत्तम हैं तासों ब्रह्मशाप गोशापको डेरातहैं भृगु लातहू मारयो ताहू पर कछू ना करयो अनाथ जे प्रह्लाद गजादि हैं तिनके निकट ही रहे जा भांति कष्ट भयो ताही विधि निकट वर्तीसम रक्षा कियो औ परद्रव्य परस्त्री हरनमें पाप होत है तासों त्याग करत हैं औ परद्रोह जासों रत्तीहूभरि नाहीं होत यासों समदरशी जानों सबको समान हैं तिनसों हम कैसे लरैं अर्थ वे ईश्वर हैं वेष कहे रूप मात्र यती को कीन्हे हैं ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०–अंगद–दंडक ॥ जैसोतुमकहतउठायोएकगिरिवरऐसे कोटिकपिनकेबालकउठावहीं। काटेजोकहतशीशकाटतघनेरे घावमगरकेखेलकहाभटपदपावहीं ॥ जीत्योजोसुरेशरणशा-पऋषिनारिहीकोसमुझहुहमद्विजनातेसमुझावहीं । गहेराम पायँसुख पाइकैतपी तप सीताजूको देहु देव दुंदुभी बजा-

नहीं ॥३०॥ रावण–वंशस्थछंद॥ तपीजपीविप्रनिछिप्रहीहरौं । अदेवद्वेषीसबदेवसंहरौं ॥ सियानदेहौंयहनेमजीधरौं । अमानुषीभूमिअवानरीकरौं ॥३१॥ अंगद–विजयछंद ॥ पाहनते पतिनीकरिपावनटूककियोहरको धनुको रे । छत्रविहीनकरे क्षणमेंक्षितिगर्वहत्यौतिनकेबलको रे ॥ पर्वतपुंजपुरैनिकेपात समानतरेअजहूंधरको रे । होइँनरायणहूंपै नयेगुणकौनइहां नरवानरको रे ॥ ३२ ॥ रावण–चंचरीछंद ॥ देहिंअंगदराजतोकहंमारिवानरराजको।बांधिदेहिंविभीषणै अरुफोरिसेतुसमाजको ॥पूंछजारहिंअक्षरिपुकीपाइंलागहिंरुद्रके । सीयकोतबदेहुंरामहिंपारजाइंसमुद्रके ॥ ३३ ॥

टी०–घाघ कहे नटादि इंद्रजालिका॥३०॥सरस्वती उक्तार्थः–हे अंगद !हौ केशव हौ कि तपी औ जपी जे विप्रहैं अथवा तपी औ जपी औ विप्रनको छिप्रहीं हरों कहों कि तपी औ जपी जे विप्र हैं अथवा तामें कछूविचार नहीं करत औ अदेव जे दैत्य जे राक्षस हैं तिनके द्वेषी शत्रु देवता हैं तिन्हैं क्षिप्रहीं संहरत हौं कहे मारतहौं यासों हौं बडो पापी हौं सो सियाको न देहौं यह नेम जो जीमें धरतहौं सो अब कहे या समयमों अमानुषी कहे नाहीं हैं मानुष्य जहां औ अनरी कहे नाहीं हैं कोऊ काहू को अरि शत्रु जहां ऐसी जो भूमि कहे स्थान है विष्णुलोक ताको करों कहे साधत हौं । 'भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे' इति अभिधानचिंतामणिः । ब्रह्मदोष देवदोषादि बडे पातकनसों छूटिबेको उपाव और नहीं है तासों सीताको नहीं देतो कि सीताके लिये आइकै रामचंद्र मोंहिं मारिहैं तौ सब पातकनसों छूटिकै विष्णुलोक जैहों इति भावार्थः ॥ ३१ ॥ अजहूं कहे अबहूं अर्थ एतेहूपर तौ धरको कहर करौ ॥ ३२ ॥ सरस्वती उक्तार्थः यामें प्रहस्तादि मंत्रिनप्रति काकोक्ति है रावण कहत है कि हे अंगद ! तुमतौ नीकी शिष देतहौ परंतु प्रहस्तादि मंत्रिनकरि दी कर्मवश मेरी ऐसी दुर्मति है कि जब रामचंद्र येती बातैं करैं तब सीताको देहुं सो ऐसो काहेको कैहैं तासों दुर्मति कृत हमारी मृत्यु विशेष सो ह्वै चुको यह निश्चय जानौं ॥ ३३ ॥

मू०–अंगद–लंकलाइगयो बलीहनुमंतसंतनगाइयो ॥ सिंधुबांधतशोधिकैनलक्षीरछीटबहाइयो । ताहितोहिंसमेतअंधउ-

खारिहौंउलटीकरौं । आजुराजकहाँविभीषणबैठिहैं तोहितेडरौं॥ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अंगदरावणकोमुकुट, लैकरिउड्योसुजान । मनोचलोयमलोकको, दशशिरकोप्रस्थान ॥ ३५ ॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्र-जिद्विरचितायामंगदरावणसंवादवर्णनं नाम शोडशः प्रकाशः ॥ १६ ॥

टी०—क्षीर कहे जल ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां अंगदसवादवर्णनं नाम षोडशः प्रकाशः ॥ १६ ॥

मू०—दोहा ॥ यासत्रहेंप्रकाशमें, लंकाकोअवरोध । शत्रुच-मूवर्णनसमर,लक्ष्मणकोपरबोध ॥१॥ अंगदलैवामुकुटको,परे रामकेपाइ ॥ रामबिभीषणकेशिरसि, भूषितकियोबनाइ॥ २ ॥

मू०—पद्धटिकाछंद ॥ दिशिदक्षिणअंगदपूर्वनील ॥ पुनि हनूमंतपश्चिमसुशील ॥ दिशिउत्तरलक्ष्मणसहितराम । सुग्रीव मध्यकीन्हेबिराम॥३॥सँगयूथपयूथपबलबिलास । पुरफिरत विभीषणआसपास ॥ निशिबासरसबकोलेतसोध । यहिभांति-भयो लंकानिरोध ॥४॥ तबरावणसुनिलंकानिरोध । उपजोत-नमन अतिपरमक्रोध ॥ राख्योप्रहस्तहठिपूर्वपौरि । दक्षिणहिं-महोदरगयो दौरि ॥५॥ भयोइंद्रजीतपश्चिमदुवार । हैउत्तररराव-णबलउदार ॥ कियोबिरूपाक्षथितमध्यदेश । करैंनरान्तकच-हुंघाप्रवेश ॥६॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ अतिद्वारद्वारमहँयुद्धभये । बहुऋच्छकंगूरनलागिगये ॥ तबस्वर्णलंकमहँशोभभई।जनुअ-ग्निज्वालमहँधूमभई ॥ ७ ॥

टी०–अवरोध घेरनो ओ बिभीषणकारि शत्रु जो रावण है ताके चमूदल वर्णन है परबोधु मूर्छा ॥ १ ॥ २ ॥ रामचंद्रके ओ लंकाके मध्यमें सुग्रीव विश्राम कीन्हे हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ छंद उपजातिहै ॥ ७ ॥

वहीं ॥३०॥ रावण–वंशस्थछंद॥ तपीजपीविप्रनिछिप्रहीहरौं । अदेवद्वेषीसबदेवसंहरौं ॥ सियानदेहौंयहनेमजीधरौं । अमानुषीभूमिअवानरीकरौं ॥३१॥ अंगद–विजयछंद ॥ पाहनते पतिनीकरिपावनटूककियोहरको धनुको रे । छत्रविहीनकरे क्षणमेंक्षितिगर्वहत्यौतिनकेबलको रे ॥ पर्वतपुंजपुरैनिकेपात समानतरेअजहूंधरको रे । होइँनरायणहूंपै नयेगुणकौनइहां नरवानरको रे ॥ ३२ ॥ रावण–चंचरीछंद ॥ देहिंअंगदराजतोकहंमारिवानरराजको।बांधिदेहिंबिभीपणै अरुफोरिसेतुसमाजको ॥पूंछजारहिंअक्षरिपुकीपाइंलागहिंरुद्रके । सीयकोतबदेहुंरामहिंपारजाइंसमुद्रके ॥ ३३ ॥

टी०–घाघ कहे नटादि इंद्रजालिका॥३०॥सरस्वती उक्तार्थः–हे अंगद !हौ केशव हौं कि तपी औ जपी जे विप्रहैं अथवा तपी औ जपी औ विप्रनको छिप्रहीं हरौं कहौं कि तपी औ जपी जे विप्र हैं अथवा तामें कछूविचार नहीं करत औ अदेव जे दैत्य जे राक्षस हैं तिनके द्वेषी शत्रु देवता हैं तिन्हैं क्षिप्रहीं संहरत हौं कहे मारतहौं यासों हौं बडो पापी हौं सो सियाको न देहौं यह नेम जो जीमें धरतहौं सो अब कहे या समयमों अमानुषी कहे नाहीं हैं मानुष्य जहां औ अनरी कहे नाहीं हैं कोऊ काहू को अरि शत्रु जहां ऐसी जो भूमि कहे स्थान है विष्णुलोक ताको करौं कहे साधत हौं । 'भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे' इति अभिधानचिंतामणिः । ब्रह्मदोष देवदोषादि बडे पातकनसों छूटिबेको उपाव और नहीं है तासों सीताको नहीं देतो कि सीताके लिये आइकै रामचंद्र मोंहिं मारिहैं तौ सब पातकनसों छूटिकै विष्णुलोक जैहौं इति भावार्थः ॥ ३१ ॥ अजहूं कहे अबहूं अर्थ एतेहूपर तौ धरको कहर करौ ॥ ३२ ॥ सरस्वती उक्तार्थः यामें प्रहस्तादि मंत्रिनप्रति काकोक्ति है रावण कहत है कि हे अंगद ! तुमतौ नीकी शिष देतहौ परंतु प्रहस्तादि मंत्रिनकरि दी कर्मवश मेरी ऐसी दुर्मति है कि जब रामचंद्र ऐती बातैं करैं तब सीताको देहुं सो ऐसो काहेको कैहैं तासों दुर्मति कृत हमारी मृत्यु विशेष सो है चुको यह निश्चय जानौं ॥ ३३ ॥

मू०–अंगद–लंकलाइगयो बलीहनुमंतसंतनगाइयो ॥ सिंधु बांधतशोधिकैनलक्षीरछीटबहाइयो । ताहितोहिंसमेतअंधउ-

खारिहौंउलटीकरौं। आजुराजकहांविभीषणबैठिहैं तेहितेडरौं॥ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अंगदरावणकोमुकुट, लैकरिउड्योसुजान। मनोचलोयमलोकको, दशशिरकोप्रस्थान ॥ ३५ ॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्र-जिद्विरचितायामंगदरावणसंवादवर्णनं नाम शोडशः प्रकाशः ॥ १६ ॥

टी०-क्षीर कहे जल ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां अगदसवादवर्णनं नाम षोडशः प्रकाशः ॥ १६ ॥

मू०-दोहा ॥ यासत्रहेंप्रकाशमें, लंकाकोअवरोध। शत्रुच-मूवर्णनसमर,लक्ष्मणकोपरबोध ॥१॥ अंगदलैवामुकुटको,परे रामकेपाइ ॥ रामबिभीषणकेशिरसि, भूषितकियोबनाइ॥ २ ॥

मू०-पद्धटिकाछंद ॥ दिशिदक्षिणअंगदपूर्वनील ॥ पुनि हनूमंतपश्चिमसुशील ॥ दिशिउत्तरलक्ष्मणसहितराम। सुग्रीव मध्यकीन्हेबिराम॥३॥सँगयूथपयूथपबलबिलास। पुरफिरत विभीषणआसपास ॥ निशिबासरसबकोलेतसोध। यहिभांति-भयो लंकानिरोध॥४॥ तबरावणसुनिलंकानिरोध। उपजोत-नमन अतिपरमक्रोध ॥ राख्योप्रहस्तहठिपूर्वपौरि। दक्षिणहिं-महोदरगयो दौरि॥५॥ भयोइंद्रजीतपश्चिमदुवार। हैउत्तररावणबलउदार॥ कियोबिरूपाक्षथितमध्यदेश। करैंनरान्तकच-हुंघाप्रवेश ॥६॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ अतिद्वारद्वारमहँयुद्धभये। बहुम्लेच्छकेंगूरनलागिगये ॥ तबस्वर्णलंकमहँशोभभई।जनुअ-ग्निज्वालमहँधूमभई ॥ ७ ॥

टी०-अवरोध घेरनो औ विभीषणकरि शत्रु जो रावण है ताके चमूसं. वर्णन है परमोधु मूर्छा ॥ १ ॥ २ ॥ रामचंद्रके औ लंकाके मध्यमें सुग्रीव विश्राम कीन्हे हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ छंद उपजातिहै ॥ ७ ॥

मू०–दोहा ॥ मरकतमणिकेशोभिजै, सबैकँगूराचारु ॥
आइगयोजनुघातको,पातककोपरिवारु ॥ ८ ॥ कुसुमविचित्रा
छंद ॥ तबनिकसोरावणसुतशूरो । जेहिरनजीत्योहरिबलपू-
रो ॥ तपबलमायातमउपजायो । कपिदलकेमनसंभ्रमछायो ॥
॥ ९ ॥ दोधकछंद ॥ काहुनदेखिपरैवहयोधा । यद्यपिहैंसिगरे
बुधिबोधा ॥ शायकसोंअहिनायकसाध्यो । सोदरस्योरघुना-
यकबांध्यो ॥ १० ॥ रामहिंबांधिगयोजबलंका । रावणकी
सिगरीगईशंका । देखिबँधेतबसोदरदोऊ । यूथपयूथत्रसेसब-
कोऊ ॥ ११ ॥ स्वागताछंद ॥ इंद्रजीततेहिलैउरलायो । आ-
जुकाजसबमोमनभायो ॥ कैबिमानअधिरूढतिधाये । जानकी
हिरघुनाथदेखाये ॥ १२ ॥ राजपुत्रयुतनागनिदेख्यो । भूमि-
युक्ततरुचंदनलेख्यो ॥ पन्नगारिप्रभुपन्नगसाईं । कालचालिक-
हुजानिनजाई ॥ १३ ॥ दोहा ॥ कालसर्पकेकवलते, छोरत-
जिनकोनाम ॥ बँधेतेब्राह्मणबचनबश, मायासर्पहिराम ॥ १४ ॥

टी०–कंगूरनमें ऋक्ष लपटे हैं तासों मानों मरकत मणिहींके कंगूरा शोभित
हैं पातक देवदोष ब्रह्मदोषादि ॥ ८ ॥ हरि इन्द्र ॥ ९ ॥ बुद्धि बोधाकहे बुद्धि-
युक्त ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ तेहि रावण इंद्रजीतको उरमें लगायो ॥ १२ ॥
भूमिमें युक्त कहे गिरे चंदन वृक्षहू नागयुक्त रहतहैं दुःखयुक्त सीता यह कहत
भई कि हे पन्नगारिप्रभु! हे पन्नगसांई ! पन्नग जे सर्प हैं तिनके अरि कहे
भक्षक जे गरुड हैं तिनके तुम स्वामी हौ यासों या जनायो कि तुम्हारे वाहनजे
गरुड हैं. ते अनेक सर्प भक्षण करतहैं औ पन्नगसांई कहि या जनायो कि तुम
सदा सर्प ही पर सोयो करत हौ ते तुम नागपासमें बाँधे हौ तौ काल जो समयहै
ताकी चाल कछू जानि नहीं परति बलाबल समय ही नत उन्नतको उन्नत नत
करत है इति भावार्थः ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०–स्वागताछंद ॥ पन्नगारितबहींतहँआये । व्यालजाल-
सबमारिभगाये ॥ लंकमांझतबहींगइसीता । शुभ्रदेहअव-

लोकिसुगीता ॥ १५ ॥ गरुड-इंद्रबज्राछंद ॥ श्रीरामनारायणैलोक कर्त्ता । ब्रह्मादिरुद्रादिकेदुःखहर्त्ता ॥ सीतेशमोकोकछूदेहुशिक्षा । नान्हींबडीईशजोहोइइक्षा ॥ १६ ॥ राम ॥ कीबेहुतोकाजसबैसोकीन्हों । आयेइहांमोकहंसुक्खदीन्हों ॥ पांलागिबैकुंठप्रभाबिहारी।स्वलौकगोतत्क्षणबिष्णुधारी॥१७॥ इंद्रबज्राछन्द ॥ धूम्राक्षआयोजतुदंडधारी।ताकोहनूमंतभयेप्रहारी॥जितेअकंपादिबलिष्ठभारे।संग्राममेंअंगदवीरमारे॥१८॥ उपेंद्रबज्राछंद ॥ अकंपधूम्राक्षहिजानिजूझ्यो । महोदरैरावणमंत्रबूझ्यो॥सदाहमारेतुममंत्रबादी।रहेकहाह्वैअतिही बिषादी॥

टी०-॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ छंद उपजाति है ॥ १८ ॥ बिषादी कहे दुखी उदासीन इति ॥ १९ ॥

मू०-महोदर ॥ कहैजोकोऊहितवंतबानी । कहौसोतासों अतिदुःखदानी ॥ गुनौनदावैबहुधाकुदावै ॥ सुधीतबैसाधतमौनभावै ॥ २० ॥ कहोशुकाचार्य्यसुहौंकहौंजू । सदातुम्हारोहितसंग्रहौंजू ॥ नृपालभूमैविधिचारिजानों । सुनो महाराजसबैबखानों ॥ २१ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ यहैलोकएकैसदासाधिजानै । बलीबेनज्योंआपुहीईशमानै ॥ करैसाधनाएकपरलोकहीको । हरिश्चन्द्रजैसेगयेदैमहीको ॥ २२ ॥ दुहूंलोककोएकसाधैसयाने । विदेहीनज्योंवेदबानीबखाने ॥ नटैलोकदोऊहठीएकऐसे । त्रिशंकैहँसैंज्योंमलेछअनैसे ॥ २३ ॥ दोहा ॥ चहूंराजकोमैंकहूँ, तुमसों राजचरित्र ॥ रुचैसोकीजैचित्तमें, चितहुमित्र आमित्र ॥ २४ ॥ चारिभांतिमंत्रीकहे, चारिभांतिकेमंत्र ॥ मोहिंलुनायोशुक्रजू, सोधिसोधिसबतंत्र ॥ २५ ॥

टी०–जो कोऊ तुम्हारे हितकी बात कहत है तासों कहे प्राणीको तुम दुखदा कहे दुखदायक कहत हौ अथवा दुखदानी कहे कटुवाद कहतहौ औ दांव कुदांव कहे समय कुसमयको गुनत नहीं हौ अर्थ जा समय मांको करिबो उचित है ताको विचार नहीं करत हौ आपने मनहींकी करत हौ तासों अथवा दांवको नहीं गुनत हौ बहुधा कुदांवहीको गुनत हौ तासों सुधी जे सुबुद्धि है मंत्री जन ते मौनभावको साधत हैं कहे चुपह्वै रहत हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ २३ ॥ मित्र कहे हित अमित्र कहे अहितकी चिंता करौ कि कौन चरित्र हमको हित है कौन अहित है अथवा सब मंत्रिन मंत्र कह्यो है तामें मित्र अमित्रकी चिंता करौ कि कौन हितकी कहत है औ कौन अहितकी कहत है ॥ २४ ॥ चारि भांतिके मंत्री हैं औ चारि भांतिके मंत्र होत हैं तंत्र कहे सिद्धांत अथवा तंत्र शास्त्र ॥ २५ ॥

मू०–छप्पै ॥ एकराजकेकाजहतैंनिजकारजकाजे । जैसेरथनिकारिसबैमंत्रीसुखसाजे ॥ एकराजकेकाजआपनेकाजबिगारत ।जैसेलोचनहानिसहीकविबलिहिनिबारत॥एकप्रभुसमेतअपनोभलोकरतदाशरथिदूतज्यों। एकआपनोप्रभुकोबुरोकरतरावरोपूतज्यों ॥ २६ ॥ दोहा ॥ मंत्रजोचारिप्रकारके,मंत्रिनकेजप्रमान ॥ बिषसेदाडिमबीजसे, गुडसेनीबसमान ॥ ॥ २७ ॥ चंद्रवर्त्मछंद ॥ राजनीतिमततत्त्वसमुझिये. । देशकालगुणियुद्धअरुझिये ॥ मंत्रिमित्रअरिकोगुणगहिये । लोकलोकअपलोकनबहिये ॥ २८ ॥

टी०–दाशरथि दूत अंगद औ हनुमान सीताको देहु तुमसों इत्यादि संधिकी बातैं कहि आपने प्रभुको काज साधत हैं औ युद्धमें आपनो मरण घातादि बचाइ आपनो हित करत हैं औ रावरो पूत युद्ध कराइ आपनी औ तुम्हारीऊ मृत्यु कियो चाहत है ॥ २६ ॥ विषसे खातहूमें कटु औ गुण जिनको मृत्युदायक है औ दाडिम बीजसे खातहूमें मधुर औ गुण जिनको पुष्टि कर्त्ता है औ गुडसे खातमें मधुर गुण दुखद है औ नीबसे खातमें कटु गुण सुखद है ॥ २७ ॥ कहूं यह पाठ है कि और विचार तत्व सब लहिये तौ उपजाति चंद्रवर्त्म छंद जानो ॥ २८ ॥

मू०—रावण ॥ चारिभांतिनृपतातुमकहियो ॥ चारिमंत्रिमतमैंनमगाहियो ॥ राममारिसुरएकनबचिहैं ॥ इंद्रलोकबसोबासहिरचिहैं ॥ २९ ॥ प्रमिताक्षराछंद ॥ उठिकैप्रहस्तसजिसेनचले । बहुभांतिजाइकपिपुंजदले ॥ तबदौरिनीलउठिमुष्टिहन्यो । असुहीनगिरचोसुवमुंडसन्यो ॥ ३० ॥ वंशस्थछंद ॥ महाबलीजूझतहीप्रहस्तको । चल्योतहींरावणभीडिहस्तको ॥ अनेकभेरीबहुदुंदुभीबजैं । गयंदक्रोधांधजहांतहांगजैं ॥ ३१ ॥ सनीरजीमूतनिकासशोभहीं । बिलोकिजाकोसुरसिद्धक्षोभहीं ॥ प्रचंडनैर्ऋत्यसमेतिदेखिये । सप्रेतमानोंमहकाललेखिये ॥ ३२ ॥ बिभीषण—बसंततिलकाछंद ॥ कोदंडमंडितमहारथवंतजोहै । सिंहध्वजासमरपंडितवृन्दमोहै ॥ माहाबलीप्रबलकालकरालनेता । सामेघनादसुरनायकयुद्धजेता ॥ ३३ ॥

टी०—रामचन्द्रको मारिकै औ सुर देवता येकौ ना मोंसों वचिहैं अर्थ सब देव नहूंको मारिकै इंद्रलोकमें बसोवास रचिहौं सरस्वती उक्तार्थ-रामचंद्र जेहैं ते हमैं मारिकै एको देवतान वचिहैं कहे वाकी रहिहैं सब देवतनको वसोवास इंद्रलोकमें रचिहैं अर्थ हमारे भयसों इंद्रलोकसों भागिकै देवता कंदरादिकनमों जाइ वसे हैं तिन्हैं निभय करिकै इंद्रलोकमें बसाइ हैं ॥ २९ ॥ छन्दउपजाति है ॥ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ सनीर कहे सजल जीमूत कहे मेघनके निकास सदृश शोभित है क्षोभहीं कहे डेरात हैं नैर्ऋत्य राक्षस ॥ ३२ ॥ रामचन्द्र पूंछचौ है इति कथा शेषः नेता कहे दंड कर्ता ॥ ३३ ॥

मू०—जोव्याघ्रवेपरथव्याघ्रनिकेतधारी । संरक्तलोचनकुबेरविपत्तिकारी ॥ लीन्हेंत्रिशूलसुरशूलसमूलमानों । श्रीराघवेंद्रअतिकायवहैसोजानों ॥ ३४ ॥ जोकांचनीयरथशृंगमयूरमाली । जाकेउदारउरषण्मुखशक्तिशाली ॥ स्वर्धामधामहर-

कीरतिकैनजानी । सोईमहोदरवृकोदरबंधुमानी ॥ ३५ ॥ जाकेरथाग्रपरसर्पध्वजाविराजै । श्रीसूर्यमंडलविडंबनज्योति साजै ॥ आखंडलीयवपुजोतनत्राणधारी । देवांतकैसोसुरलोकविपत्तिकारी ॥ ३६ ॥ जोहंसकेतुभुजदंडनिपङ्गधारी । संग्रामसिंधुबहुधाअवगाहकारी ॥ लीन्हीछँड़ाइजेहिदेवअदेव वामा । सोईखरात्मजबलीमकराक्षनामा ॥ ३७ ॥

टी०–त्रिशूल कैसो है सुर जे देवताहैं तिनको मानों समूल कहे पूर्णशूल कहे मृत्युहै । "शूलोस्त्री रोगआयुधे मृत्युकेतनयोगेषु" इतिमेदिनी ॥ ३४ ॥ कांचनीयरथ कहे सुवर्णको रथ ताके शृंगमें अग्रभागपै मयूरनकी मालापंगति लगी है अर्थ मयूरध्वजी है जाकी शक्ति बरछी षण्मुख जे स्वामिकार्त्तिक हैं तिनके उदार कहे बडे उरमें शाली कहे लगी है स्वः जो स्वर्ग है ताके धाम धाम कहे घर घरको हर कहे हरणहार है अर्थ लूटनहार है ॥ ३५ ॥ श्रीसूर्यमंडलको विडंवन कहे निंदक ज्योति कहे तेजको साजत है रथ अथवा आप अथवा तनत्राण अखण्डलीय कहे इन्द्रको ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

मू०–भुजंगप्रयातछन्द ॥ लगेस्यंदनैंबाजिराजीविराजैं । जिन्हैंवेगकोपौनकोबेगलाजैं ॥ भलेस्वर्णकीकिंकिणीयूथबाजैं । मिलेदामिनीसोंमनोमेघगाजैं ॥३८॥ पताकाबन्योशुभ्रशार्दूलशोभै । सुरेंद्रादिरुद्रादिकोचित्तछोभै ॥ लसैछत्रमालाहँसैसोमभाको । रमानाथजानौंदशग्रीवताको ॥ ३९॥ पुरद्वारछांड्योसबै आपुआयो । मनोद्वादशादित्यकोराहुधायो ॥ गिरिग्रामलैलैहरिग्राममारै । मनोपद्मिनीपत्रदंतीबिहारै ॥ ४० ॥

टी०–दामिनीसम स्वर्णकिंकिणीके यूथ कहे समूह हैं मेघसम रावणके श्याम घोडे हैं"यथा–वाल्मीकीये ।रथं राक्षसराजस्य नरराजो ददर्शह ॥ कृष्णवाजिसमायुक्तं युक्तं रौद्रेण वर्चसा" ॥ ३८ ॥ शार्दूल कहे व्याघ्र ॥३९॥ पुररक्षाके लिये मेघनादादिको पुरद्वारमें छांडिकै आप लरिबेको आयोहै "यथा–वाल्मिकीये रावणोक्तिः। "ततस्सरक्षोधिपतिर्महात्मा रक्षांसि तान्याह महाबलानि । द्वारेषु चार्या-

गृहगोपुरेषु सुनिर्वृतास्तिष्ठतु निर्विशंकाः ॥ इहागतं मां सहितं भवद्भिर्वनौकसः छिद्रमिदं विदित्वा । शून्यां पुरीं दुःप्रसहां प्रमथ्य प्रधर्षयेयुः सहसा समेताः ॥ विसर्जयित्वा सचिवांस्ततस्तान् गतेषु रक्षस्सु यथा नियोगे ॥" सो गिरिजे पर्वतहैं तिनके ग्राम कहे समूह लै लैकै हरि जे वानरहैं तिनको समूह मारतहै तिन गिरि समूहनमें रावण पद्मिनी कमलिनी पत्रमें दंतीसम विहार कौतुक करतहै अर्थ गिरि ग्राम रावण की देहमें दंतीकी देहमें पद्मिनीपत्र सम लागत है ॥ ४० ॥

मू०—सवैया ॥ देखिबिभीषणकोरणरावणशक्तिगहीकररोष रईहै । छूटतहीहनूमंतसोंबीचहिंपूंछलपेटिकैडारिदईहै ॥ दूसरि ब्रह्मकीशक्तिअमोघचलावतहीहाइहाइभईहै । राख्योभलेशरणागतलक्ष्मणफूलिकैफूलिसीओढिलईहै ॥ ४१ ॥ स्रग्विनी-छंद ॥ जोरहींलक्ष्मणैलेनलाग्योजहीं ॥ मुष्टिछातीहनूमंतमारचोतहीं ॥ आशुहीप्राणकोनाशसोह्वैगयो । दंडद्वैतीनिमेंचेततोको भयो ॥ ४२ ॥ मरहट्टाछंद ॥ आयोडरिप्राणनिलैधनुबाणनि-कपिदलदियोभगाइ ॥ चढिहनूमंतपररामचन्द्रतबरावणरोंक्योजाइ ॥ धरिएकबाणतबसूतछत्रध्वजकाटेमुकुटबनाइ ॥ लागेदूजोशरछूटिगयोवरुलंकगयोअकुलाइ ॥ ४३ ॥ दोधक-छंद ॥ यद्यपिहैअतिनिर्गुणताई । मानुषदेहधरेरघुराई ॥ लक्ष्मण-रामजहीं अवलोक्यो ॥ नैननतेंनरह्योजलरोक्यो ॥ ४४ ॥ राम ॥ बारकलक्ष्मणमोहिं बिलोको । मोकहँप्राणचलेतजिरोको ॥ हौंसुमिरौंगुणकेतिकतेरे । सोदरपुत्रसहायकमेरे ॥ ४५ ॥

टी०—फूलिकै प्रसन्न ह्वैकै ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ हनूमानसों प्राणनको डरिकै कपि दलको भगायो जाय तहां हनूमान क्यों न गये तौ जब रावण वा ठौरसों भागो तब लक्ष्मणको लै हनूमान रामचन्द्रके पास गये इतिकथाशेषः ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

मू०—लोचनबाहुतुहींधनुमेरो । तूबलविक्रमवारकहेरो ॥ तू-बिनहौंपलप्राणनराखौं । सत्यकहौंकछुझूंठनभाखौं ॥ ४६ ॥

मोहिंरहीयतनीमनशंका। देननपाइबिभीषणलंका॥ बोलिउ-ठौप्रभुकोप्रणपारो। नातरुहोतहैमोमुखकारो॥४७॥ विभीषण-सुंदरीछंद॥ मैंबिनऊंरघुनाथकरौअब। देवतजोपरिदेवनकोसब॥ औषधिलैनिशिमैंफिरिआवहि॥केशवसोसबसाथजिआवहि॥४८॥सोदरसूरकोदेखतहीमुख॥रावणकेपुरवैसिगरेसुख॥ बोलसुनेहनुमंतकरचोप्रन। कूदिगयोजहँऔषधिकोवन॥४९॥

टी०-बल कहे सेन विक्रम पराक्रम ॥ ४६ ॥ प्रभु जो मैं हौं ताको विभीषणको लंकदान रूपी जो प्रण है ताको पारोकहे पूरण करौ ॥ ४७ ॥ हे रघुनाथ ! जो मैं विनऊं कहे बिनती करत हौं सो तुम करो हे देव ! सब मिलके परिदेवन जो विलाप है ताको छोंडि देहु ॥ "विलापः परिदेवनमित्यमरः" ॥४८॥ प्रथम कह्यो है कि औषधि लैकै निशिहीमें फिरि आवै ताको हेतु कहत हैं सोदर जे लक्ष्मण हैं सूर जे सूर्य हैं तिनको मुख देखतही रावणके सिगरे सुख पुरवैं कहे पूरित करिहै अर्थ सूर्योदय भये लक्ष्मण न जीहैं या प्रकारको विभीषणको बोल सुनिकै निशिहीमें हम औषधि ल्याइ हैं हनुमंत यह प्रण करचो ॥ ४९ ॥

मू०-रागषट्पद॥ करिआदित्यअदृष्टनष्टयमकरौंअष्टवसु। रुद्रनबोरिसमुद्रकरौंगंधर्बसर्बपसु॥ बलितअबेरकुबेरबलिहिगहिदेउंइन्द्रअब। विद्याधरनिअबिद्यकरौंबिनासिद्धिसिद्धसब॥ निजहोहिदासिदितिकीअदितिअनिलअनलमिटिजाइजल। सुनिसूरजसूरजउदतहींकरौंअसुरसंसारबल॥ ५० ॥ भुजंगप्रयातछंद॥ हन्योबिघ्नकारीबलीबीरबामैं। गयोशीघ्रगामीगयेएकयामैं॥ चल्योलैसबैपर्वतैकैप्रणामैं॥ नजान्योबिशल्यौषधीकौनतामैं॥ ५१ ॥

टी०-रामचन्द्र सुग्रीवसों कहत हैं कि जो सूर्य उदयको प्राप्त होइ तौ जेते देवता हैं तिनकी सबकी आयुर्दशा करौं औ देवतनके शत्रु जे असुर दैत्यहैं तिनको बल संसारभरेमों करि देउं अर्थ तीनों लोकमें दैत्यनको राज करि देउं दिति दैत्यनकी माता अदिति देवतनकी माता ॥ ५० ॥ वामकहे कुटिल ऐसा जो

हनुमानके सूर्योदय पर्यंत विलंबाइबेके लिये कपट तपस्वीकोरूप धरे मगमें बैठो कार्यको विघ्नकारी कालनेमि राक्षस है ताको मारिकै एक यामै पहरै गये कहे वीते औषधि पास गयो बिशल्यौषधी कहे विशल्यकरनी औषधी ॥ ५१ ॥

मू०—लसैंऔषधीचारुभोव्योमचारी।कहैंदेखियोंदेवदेवाधिकारी ॥ पुरीभौमकीसीलियेशीशराजै । महामंगलार्थीहनूमंत गाजै ॥ ५२ ॥ लगीशक्तिरामानुजेरामसाथी । जडेह्वैगयेज्यों गिरैहेमहाथी ॥ तिन्हैंज्याइबेकोसुनोप्रेमपाली । चल्योज्वाल मालीहिलेकीर्तिमाली॥५३॥ किधौंप्रातहीकालजीमेंबिचार्यो। चल्योअंशुलैअंशुमालीसँहार्यो। ॥ किधौंजातज्वालामुखीजोर लीन्हें । महामृत्युजामेंमिटेहोमकीन्हें ॥ ५४ ॥

टी०—वा पर्वतमें ज्वलित औषधी सोहती हैं ताको लै हनुमान व्योमचारी आकश मगगामी भयो देव औ देवाधिकारी गंधर्वादि अथवा देवदेव जे इन्द्र हैं तिनके अधिकारी जे देवता हैं अर्थ औषधिनकी रक्षामों जिनदेवतनको इंद्र अधिकार दियो है अथवा देवदेव इंद्र औ मंत्रादिमें अधिकारी जे देवता हैं ते कहत हैं कि महामंगल कल्याणके अर्थी जे हनुमान हैं ते भौम जे मंगल हैं तिनकी पुरीहीको लिये जात हैं अनेक मंगल सम ज्वलित औषधी वृंद है मंगल पद श्लेष हैं कल्याण औ भौमको नाम है ॥ ५२ ॥ तिन्हैं कहे तिन लक्ष्मणको ज्याइवेको औषधिनके ज्वालाकी माली कहे समूह हैं जामें सो ज्वालमाली कहावै ऐसा जो पर्वत है ताहीको लैके चल्यो है अर्थ ज्वलित हैं औषधिवृंद जामें ऐसो जो औषधिपर्वत द्रोणाचल है ताहीको लिये जात हैं अथवा ज्वालकी है माली समूह जामें ऐसी जो विशल्यकरनी औषधि है ताहीको लै चल्यो है अथवा ज्वालमाली जे अग्नि हैं तिनको लै चल्यो है कीर्तिमाली हनूमानको विशेषण है ॥ ५३ ॥ औ प्रातहि कहे सूर्योदय होतही लक्ष्मणको काल कहे मृत्यु जीमें विचार्यो है सो अंशुमाली जे सूर्य हैं तिनको संहारि कहे मारिकै सूर्यके अंशु कहे किरण अथवा प्रभाव लिये जात हैं जामें सूर्योदय ना होइ ॥ " अंशुः प्रभाकिरणयोरिति " मेदिनी ॥५४॥

मू०—विनापत्रहैयत्रपालाशफूलो मैंकोकिलासीभ्रमैंभौंरभूले ॥ सदानंदरामैंमहानंदकोलै । हनूमंत आयेंव संतैंमनोलै ॥ ५५ ॥

मोटनकछंद ॥ ठाढेभयेलक्ष्मणमूरिछियै । दूनीशुभशोभशरीरलियै ॥ कोदंडलियेयहबाततरै । लंकेशनजीवतजाइघरै ॥ ॥ ५६ ॥ श्रीरामतहींउरलाइलियो ॥ सूंघ्योशिरआशिष-कोटिदियो ॥ कोलाहलयूथपयूथकियो ॥ लंकाहहलीदश-कंठहियो ॥ ५७ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रि-
कायामिद्रजिद्विरचितायांलक्ष्मणमूर्च्छामोचनं
नामसप्तदशः प्रकाशः ॥ १७ ॥

टी०–यत्र जा पर्वतमें औषधीवृंद नहीं हैं बिनापत्र फूले पलाशके वृक्ष हैं या प्रकार भूले कोकिलनकी आली पंगती रमती हैं औ जामें भ्रमें कहे घूमत हैं बसंत कैसो है कि यत्र कहे जामें विनापत्र पलाश फूलि रहेहैं औ जामें कोकिलावली रमती हैं औ भूले कहे उन्मत्ततासों देहकी सुधि बिसराये भौंर भ्रमत हैं यामें (श्लेषोत्प्रेक्षा) है सो सदानन्द जे राम हैं तिनके महानंदके लिये हनूमान मानो बसंत ही ल्याये हैं बसंतको देखि सबको आनंद होत है तासों अथवा जैसे राजनके इहां आनंदार्थमाली वसंत बनाइकै लैजात हैं तैसे मानो रामचन्द्रके महाआनंदको हनूमान वसंतको रूपही बनाइ ल्याये हैं ॥५५॥ मूरि जो औषधि है ताको छिये कहे छुये सों ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननिजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद-
निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सप्तदशः प्रकाशः ॥ १७ ॥

मू०–॥ दोहा ॥ अष्टादशप्रकाशमें, केशवदासकराल । कुम्भकर्णकोबर्णिबो, मेघनादकोकाल ॥ १ ॥ दोधकछंद ॥ रावणलक्ष्मणकोसुनिनीके । छूटिगयेसबसाधनजीके । रेसुत मंत्रिविलंब न लावो । कुंभकरन्नहिजाइजगावो ॥ २ ॥ राक्षस लक्ष्मणसाधनकीन्हे । दुंदुभिदीहबजाइ नवीने ॥ मत्तअमत्त बडेअरुबारे । कुंजरपुंजजगावतहारे ॥ ३ ॥ आइजहांसुरना-

रिसभागीं । गावनबीनबजावनलागीं ॥ जागिउठोतबहींसुर दोषी । क्षुद्रक्षुधाबहुभक्षणपोषी ॥ ४ ॥

टी०-कुम्भकर्णको औ मेघनादको काल कहे मृत्यु बर्णिबो ॥ १ ॥ साधन कहे जयसिद्धिके उपाय ॥ २ ॥ साधन कहे जगाइबेको यत्न ॥ ३ ॥ यह महादेवसे वर रह्यो हैं कि देवांगननको गान सुनि कुंभकर्ण अकालहूमें जागि है तासों जब देवांगना आइ गावन लागीं तब जाग्यो ॥ यथा ॥ हनुमन्नाटके ॥ "निद्रां तथापि न जहौ यदि कुंभकर्णः श्रीकंठलब्धवरकिन्नरकामिनीनाम् ॥ गंधर्वयक्षसुरसिद्धवरांगनानामाकर्ण्य गीतममृतं परमं विनिद्रः" ॥ ४ ॥

प्र०-नराचछंद ॥ अमत्तमत्तदंतिपंक्तिएककौरकोकरै । भुजापसारिआसपासमेयबोपसंहरै ॥ बिमानआसमानकेजहां तहांभगाइयो । अमानमानसोदिवानकुंभकर्णआइयो ॥ ५ ॥ रावण ॥ समुद्रसेतुबांधिकैमनुष्यदोइआइयो ॥ लियेकुचालि वानरालिलंकअंकलाइयो ॥ मिल्योबिभीषणौनमोहिंतोहिंनें-कहूडरेउ । प्रहस्तआदिदैअनेकमंत्रिमित्रसंहरेउ ॥ ६ ॥ करो सोकाजआशुआजचित्तमैंजोभावई । असुख्यहोइजीवजीव शुक्रसुख्यपावई ॥ समेतिरामलक्ष्मणैसोबानरालिभक्षिये । सकोसमंत्रिमित्रपुत्रधामग्रामरक्षिये ॥ ७ ॥

टी०-मान (गर्व) दिवान (सभा) ॥ ५ ॥ वानरालिको लंकके अंक कहे गोदमें लायो है अर्थ लंकके मध्यमें प्राप्त कियो है अथवा जो पुरी काहू कबहूं न घेरयौ ताको घेरिकै अंक कहे कलंक लायो है यामें रामचंद्रके बलको वर्णन है निंदा नहीं हैं तासों सरस्वती उक्तार्था नहीं कियो ॥ ६ ॥ ऐसो काज करो जासों देवतनको विघ्न हो जीव जे बृहस्पति हैं ते असुख्य होइ औ हमारो जय होइ शुक्र सुख पावें सरस्वती उक्तार्था राम लक्ष्मण समेत या वानरालिको भक्षिये कहे भक्षण करि सकियत है अर्थ नहीं भक्षण करि सकियत काहेते अनेक नर वानर हम भक्षण करे हैं इनको सेतुबंधनादि कर्म देखिकै हमारो जीव अति डरत हैं ताते कोष कहे खजाना सहित मंत्र्यादिकनको रक्षिये कहे रक्षण करि सकित है अर्थ नहीं रक्षण करि सकियत अर्थ ये हमको सबको मारि ग्रामादि लेन चाहत हैं ॥ ७ ॥

मू०–कुंभकर्ण–मनोरमाछंद ॥ सुनियेकुलभूषणदेवविदूष-ण । बहुआजिविराजिनकेतुमपूषण ॥ भवभूपजेचारिपदार-थसाधत । तिनकोकबहूंनहिंबाधकबाधत ॥ ८ ॥ पंकजवा-टिकाछंद ॥ धर्मकरतअतिअर्थबढावत । संततिहितरतिको-बिदगावत । संततिउपजतहीनिशिवासर ।साधततनमनमुक्ति महीधर ॥ ९ ॥

टी०–बहुतै जे हैं आजि कहे समरनके विराजी कहे शोभनहार अर्थ अनेक समरकर्ता तिनके मध्यमें तुम पूषण पाठ है तहाँ अर्थ कि बहुत जे आजिविराजी संग्रामकर्ता हैं तिनके तम पूषण कहे तमको भूषण सम हौ अर्थ सूर्य तमको नाश करत है तैसे तुम संग्रामकर्त्ता जे शत्रु भट हैं तिन्हें नाश करत हो चारि पदार्थ अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, ॥ ८ ॥ चारों पदार्थनके साधिवेको समय कहत हैं कि महीधर जे राजा हैं ते सन्तत कहे निरंतर धर्महू करत हैं औ संतति अर्थ द्रव्यहूको बढावत हैं अथवा धर्मको करत अर्थ बढावत हैं अर्थ सतरीतिसों अर्थ बढावत हैं औ संततहित हैं रतिस्त्री भोग अर्थ काम साधन जिनको ऐसे कोबिद गावत हैं अर्थ ये तीन्यों एकही समयमों साध्य हैं औ जब संतति कहे पुत्र उत्पन्न भयो तब निशि औ वासर तन औ मन करिकै मुक्तिको साधन करत हैं आजतक तुम अर्थ, धर्म, कामको साधन कीन्हों अब तुम्हारो पुत्र समर्थ है ताको सब राजभार सौंपि सीताको रामचंद्रको देकै हेतु करि मुक्ति साधन करौ इति भावार्थः ॥ ९ ॥

मू०–दोहा ॥ राजाअरुयुवराजजग, प्रोहितमंत्रीमित्र । कामीकुटिलनसेइये, कृपणकृतघ्नअमित्र ॥१०॥ घनाक्षरी ॥ कामीबामीझूंठक्रोधीकोढीकुलद्वेषीखलुकातरकृतघ्नीमित्रदोष-द्विजद्रोहिये । कुपुरुषकिंपुरुषकाहलीकलहीक्रूरकुटिलकुमंत्री-कुलहीनकेशौठोहिये ॥पापीलोभीशठअंधबावरेबधिरगूंगाबौ-नाअविवेकीहठीछलीनिरमोहिये।सूमसर्बभक्षीदैववादीजोकुबा दीजड़अपयशीऐसोभूमिभूपतिनसोहिये ॥ ११ ॥

टी०–ये पांचौं राजादि इन दूषण सहित होहिं तौ सेवनके योग्य नहीं योग नहीं होत अथवा यथाक्रमसोंजानौ राजा कामी काहेते उचितानुचित विचार विना सुन्दरी देखि प्रजाजनकी स्त्रिनको गहि मंगावतहैं तासों देश उजार होतहै औ युवराज कुटिल काहेते मंत्र्यादिकनसों विरोध राज्यविध्वंस करतहैं औ प्रोहित कृपण कहे दरिद्र काहेते विवाहादि समयमों द्रव्य लोभ वश वेदविहित घट्यादि विताइ असंगल करत हैं अथवा शत्रुसों कछु द्रव्य पाइ मरणादिके लये राशि नाम बतावत हैं औ मंत्री कृतघ्नी काहेते स्वामीको कृत विसारि शत्रुसों मिलि राज्य छोंडावैं औ मित्र अमित्र कहे हृदयमों भलो ना चाहै काहेते कछू गूढ मंत्र कहै सो शत्रु पास पहुँचावै ये पाँचौं इन पांचहुन दोष सहित सेवन योग नहीं होत यासों या जनायो कि तुम राजा हौ तुम्हें ऐसो काम साधन ना चाहिये जासों ईश्वर जे रामचंद्र हैं तिनकी स्त्रीको हरि ल्यायो हौ ॥ १० ॥ वामी (वाममार्गी) कुपुरुष कहे पुरुषार्थ रहित किंपुरुष कहे कुछुहै पुरुषकी आकृति जिनकी काहला (रोगी) दैववादी कहे जे भाग भरोसे रहत हैं याहूमें या जनायो कि तुमको ऐसो कामसाधन ना चाहिये ॥ ११ ॥

मू०–निशिपालिकाछंद ॥ बानरनजानुसुरजानुशुभगाथहैं ॥ मानुषनजानुरघुनाथजगनाथहैं । जानकिहिदेहुकरि नेहुकुलदेहुसो ॥ आजुरणसाजपुनिगाजुहँसिमेहुसो ॥ १२ ॥ रावण–दोहा ॥ कुंभकरणकरियुद्धकै,सोइरहौघरजाइ।वेगिविभीषणज्योंमिल्यो,गहौशत्रुकेपाइ ॥ १३॥ मंदोदरी–दो०॥ इंद्रजीतअतिकायसुनि, नारांतकसुखदाइ।भैयनसोंप्रभुझुकतहैं,-क्यों नकहौसमुझाय ॥ १४ ॥ मंदोदरी–चंचलाछंद ॥ देवकुंभकर्णकेसमानजानियेनआन। इन्द्रचंद्रविष्णुरुद्रब्रह्मकोहरै उगुमान ॥ राजकाजकोकहैजोमानियेसोप्रेमपालि। कचलीनकोचलैनकालकीकुचालिचालि ॥ १५ ॥

टी०–कुल औ देहसों नेह करिकै जानकीको देहु यह कहि या जनायो कि ना देहौ तौ रामचंद्र तुम्हारे कुलके सहित तुम्हारो नाश करि दें ॥ १२ ॥ कारि कटे करौ ॥ १३ ॥ झुकत कहे रिस करत है भैयनसों बहुवचन कहि या जनायो

कि एक भाई बिभीषण समुझावन लाग्यौ ताको लात मारयो अव वैसेही कुंभकर्णसों रिस करत हैं ॥ १४ ॥ देव रावणको संबोधन है जो बात कुंभकर्ण कहत है सो राजाके काजके हितको कहत है ताहि प्रेमको पालिकै कहे हित करिकै मानिये अर्थ सीताको दैकै रामचंद्रसों हित करौ काहेते काल जो समय है ताकी जो कुचालि कहे प्रतिकूलता है तामें चालि कहे चाल युद्धादि उत्कृष्ट कर्म रहित विचार युक्त निजहितसाधक कार्य कृत्यकै पूर्व नाहीं चल्यो को अव नाहीं चलत अर्थ जे पूर्व भये हैं तिन चल्यो है अव जे होत जात हैं ते चलत हैं जब आपनो समय टेढो होत है तवशत्रु मिलनादि कार्य करिबो साधिबो अनुचित नहीं है इति भावार्थः ॥ अथवा कालकी जो कुचालि है ताकी जो चलि कहे चालु है अर्थ जव आपनो काल प्रतिकूल भयो ता समयमों जो कार्यसाधक उचित चाल है ॥ १५ ॥

मू०-विष्णुभाजिभाजिजातछोंड़िदेवताअशेष । जामदग्न्य देखिदेखिकैनकीननारिवेष ॥ ईशरामतेबचेबचेकबानरेशबालि । कैचलीनकोचलैनकालकीकुचालिचालि ॥ १६॥ बिजयाछंद । रामहिंचोरिनदीन्हींसियाजितकेदुखसोतपलीलिलियोहै । रामहिंमारनदीहोंसहोदररामहिंआवनजानदियोहै ॥ देहधरचौतुमहींलगिआजुलोंरामहिंकेपियज्यायेजियोहै ॥ दूरिकन्योद्विजताद्विजदेवहरेहीहरेआततायीकियोहै ॥ १७ ॥

टी०-कालकी कुचालिमें चालु कैं चली है सोकहत हैं देवदानवनके युद्धमें देवतनके सहायको विष्णु जात हैं परन्तु जव जानत हैं कि दैत्यनको समय सहायक है हमको कुटिल है हम इनसों ना जीति हैं तव यशकी सुधि भुलाइ आपने प्राणनकी रक्षाके लिये भागि जात हैं या प्रकार कयोंवारकी कथा पुराणनमें प्रसिद्ध है यासों या जनायो कि विष्णुसों वली कोऊ नहीं है तेऊ समय विचारि गौं साधि जात हैं औ जामदग्नि जे परशुराम हैं तिनको देखिकै कै क्षत्री नारिको वेष नहीं धरचो यासों या जनायो कि जव परशुरामको समय रह्यो तव बडे बडे क्षत्री समय विचारि नारिको वेष धारि जीव वचायो औ तेई परशुराम ताही क्षत्रीवंशमें उत्पन्न जे रामचन्द्र हैं तिनको समय वली विचारि आपनो धनुषवाण दै हेतु करचो तासों हेईश ! रामचन्द्रको समय वली है सो सीताको

दैकै हेतुरूपी जो बचिवेको उपाय है तासों बचो काहेते बालि बली रहे तिन बचिवेको उपाय न कियो ते ना बचे मरेही गये चौथो तुमको अर्थ पाछेके छंदमें कह्यो है ॥ १६ ॥ आवन जान दियो अर्थ युद्धमंडलमें आवन दियो फेरि युद्ध मंडलसों फिरि जानदियो स्त्रीहर्तादिक छह आततायी कहावत हैं यथा भागवते ॥"अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः॥ क्षेत्रदारापहश्चैव षडेते आतता-यिनः"॥ आततायी ब्राह्मणहू होइ ताके वधसों ब्रह्मदोष नहीं है तासों ॥ १७ ॥

मू०--दोहा ॥ संधिकरोविग्रहकरो सीताकोतोदेह । गनौं न पियदेहीनमें, पतिब्रताकीदेह ॥ १८ ॥ रावण-बिजयाछंद ॥ हौंसतुछांडिमिलैंमृगलोचनिक्योंक्षमिहैंअपराधनये ॥ नारि हरीसुतबांध्योतिहारेहोंकालिहिसोदरसाँगिहये । बामनमांग्यो त्रिपैंगधरादक्षिणाबलिचौदहलोकदये ॥ रंचकबैरहुतोहरिवंच कबांधिपतालतऊपठये ॥ १९ ॥ दोहा ॥ देवरकुम्भकरन्नसों हरिअरिसोंसुतजाइ । रावणसोंप्रभुकौनको, मंदोदरीडेराइ २०

टी०--पतिव्रता जे स्त्री हैं तिनकी देह स्वरूप देहिनमें न गनौं ॥ १८ ॥ अप-राधन ये कह्यो तासों वलिको प्राचीन बैर जानों अर्थ हिरण्यकशिपुके रंचक बैर सों वलिको वांधि पाताल पठायो ॥ १९ ॥ २० ॥

मू०--चामरछन्द ॥ कम्भकर्णरावणैंप्रदक्षिणाहिदैचल्यो । हाइहाइह्वैरह्योअकाशआशुहीहल्यो । मध्यक्षुद्रघंटिकाकिरीट संगशोभनो । लक्षपक्षसोंकलिन्द्रइन्द्रकोचढ्योमनों ॥ २१ ॥ नाराचछंद ॥ उडैंदिशादिशाकपीशकोरिकोरिश्वासहीं। चपैंच-पेटपेटबाहुजानुजंघसोतहीं॥लियेहैंऔरऐंचिऐंचिबीरबाहुबात-हीं। भपेतेअन्तरिक्षरिक्षलक्षलक्षजातहीं॥२२॥कुम्भकर्ण-भुजं-गप्रयातछन्द ॥ नहौंताड़काहौंसुबाहैनमानों । नहौंशंभुकोदंड सांचीबखानों ॥ नहौंतालमालीखरैजाहिमारो। नहौंदूषणौसि-न्धुसूधोनिहारो ॥२३॥सुरीआसुरीसुन्दरीभोगकर्णे । महाका-

..कोकालकहौंकुम्भकर्णै॥सुनौरामसंग्रामकोतोहिंबोलौं।बढ़्यो ..लंकाहिआयेसोखोलौं॥ २४॥

टी०-लक्ष विधिको जो पक्ष कहे विरोध है तासों अर्थ बड़े विरोधसों अथवा लक्ष विधिको जो पक्ष कहे बलहै तासों अर्थ बड़े बलसों इहां लक्ष शब्द अधिकार्थमें है। "पक्षो मासार्धके पार्श्वगृहे साध्य विरोधयोः॥ केशादेःपरतो वृंदे बले सखिसहाययोः" इतिमेदिनी॥ २१॥ जे लक्षण ऋक्ष भयसों अन्तरिक्षको जात हैं तिन्हें बाहँके बात वायुसों खैंचिकै भषे खाइ डारचो॥ २२॥ द्वै छन्दको अन्वय एक है खरै कहे खर राक्षसै सूधो निहारो अर्थ कपिनको सूधो समुझिकै मारन वेधन करचो सरस्वती उक्तार्थः॥ मेरी ओर इनसम शत्रु दृष्टिसों ना निहारो सूधो कहे कृपा दृष्टिसों निहारो अथवा मोंको सूधो कहे शत्रुभावरहित आपनो दास निहारो सरस्वती उक्तार्थः॥ लंकामें आयेते जो तुम्हारे गर्व बढ़्यो है ताहि खोलें कहे प्रसिद्ध करौं आशय कि जब मोको मारिहौ तब तुम्हारो बलादिको जो गर्व है सो सब प्राणिनमें प्रसिद्ध ह्वै है॥ २३॥ २४॥

मू०-उठ्योकेशरीकेशरीजोरछायो। बलीबालिकोपूतलैनीलधायो॥ हनूमन्तसुग्रीवसाभेसभागे। डसैडांससेअंगमातंगलागे॥ २५॥ दशग्रीवकोबंधुसुग्रीवपायो। चल्योलंकमेंलैभलेअंकलायो। हनूमन्तलातैंहत्योदेहभूल्यो। छुट्योकर्णनाशाहिलैइन्द्रफूल्यो॥ २६॥ सँभारचोघरीएकदूमैमरालै। फिरचोरामहींसाम्हुहैंसोगदालै॥ हनूमन्तजूपूंछसोंलाइलीन्हों। नजान्योंकबैसिंधुमेंडारिदीन्हों॥ २७॥

टी०-केशरी नामा वानर केशरी कहे सिंहके जोरसों छायो उठ्यो अथ सिंह सम गर्जिकै शीघ्र चल्यो॥ २५॥ इन्द्रसम सुग्रीव फूल्यो सुखी भयो॥ २६॥ २७॥

मू०-जहींकालकेकेतुसोंताललीनो। करचोरामजूहस्तपादहीनो॥ चल्योलोटतैधाइबक्रैधाचाली।उड़्योमुंडलैबाणज्योंमुंडमाली॥ २८॥ तहींस्वर्गकेदुंदुभीदीहबाजैं। करचो

पुष्पकीवृष्टिजैदेवगाजैं ॥ दशग्रीवशोकग्रस्योलोकहारी । भयो लंकहीमध्यआतंकभारी॥२९॥ दोहा ॥ तबहींगयोनिकुंभिला, होमहेतइन्द्रजीत ॥ कह्योतहांरघुनाथसों, मतोबिभीषणमीत- ॥ ३० ॥ चंचरीछंद ॥ जोरिअंजुलिकोबिभीषणरामसोंविनतीकरी । इंद्रजीतनिकुंभिलागयोहोमकोरिसजीभरी॥ सिद्धहोमनहोइजौलगिईशतौलगिमारिये। सिद्धहोहिप्रसिद्धहैयहसर्वथा हम हारिये ॥ ३१॥ दोहा॥ सोईबाहिहतैकिनर, वानरऋक्षजोकोइ ॥ बारहवर्षक्षुधातृषा, निद्राजीतेहोइ ॥ ३२ ॥ चंचरीछंद ॥ रामचन्द्रविदाकरचोतबवेगिलक्ष्मणवीरको। त्योंबिभीषणजामवंतहिंसंगअंगदधीरको ॥ नीललैनलकेशरीहनुमंतअंतकज्योचले । वेगिजाइनिकुंभिलाथलयज्ञकेसिगरेदले ॥ ३३ ॥

टी०-तालवृक्षआदिपदते आयुधै जानो वक्रै कहे मुखै मुण्डमाली महादेव ॥ २८ ॥ २९ ॥ दोहा क्षेपकहै निकुंभिला राक्षसके देवतनको स्थान वट वृक्षसों युक्तहै तामें यज्ञ कारि इन्द्रजीत अजय होत रह्यो है ॥३०॥३१॥ ३२ ॥ ३३ ॥

मू०-जामवंतहिमारिद्वैशरतीनिअंगदछेदियो । चारिमारिबिभीषणैहनुमंतपंचसुबेधियो॥एकएकअनेकवानरजाइलक्ष्मणसोंभिरचो।अंधअंधकयुद्धज्योंभवसोंजुरचोभवहीहरचो। ३४ गीतिकाछंद॥रणइंद्रजीतअजीतलक्ष्मणअस्त्रशस्त्रनिसंहरै। शरएकएकअनेकमारतबुंदमंदरज्योंपरै ॥ तबकोपिराघवशत्रुकोशिरबाणतत्क्षणकरधरचो।दशकंधसंध्यहिकोकियोशिरजाइअंजुलिमैंपरयो ॥३५॥ रणमारिलक्ष्मणमेघनादहिस्वच्छशंखबजाइयो।कहिसाधुसाधुसमेतइंद्रहिदेवतासबआइयो॥कहुमाँगियेवरवीरसत्वरभक्तिश्रीरघुनाथकी । पहिराइमालविशालअर्चहिकैगयेसबसाथकी ॥ ३६ ॥ कलहंसछंद ॥ हतिइंद्रजीतकहँलक्ष्मणआये । हँसिरामचन्द्रबहुधाउरलाये॥ सुनिमित्रपुत्रगु-

भसोदरभेरे । कहिकौनकौनसुमिरौंगुणतेरे ॥ ३७ ॥ दोहा ॥
नींदभूखअरुप्यासको,जोनसाधतेबीर। सीतहिक्योंहमपावते,
सुनुलक्ष्मणरणधीर ॥ ३८ ॥

इतिश्रीमतराकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रच-
न्द्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायामिन्द्रजिद्वधवर्णनं
नामाष्टादशः प्रकाशः ॥ १८ ॥

टी०-लक्ष्मणसों कैसे जाय भिरचो भय जो डरहै साही कहे हृदयसों हरचो कहे दूरि भयो है जाके ऐसो जो गर्वादि करिके अंध कहे आंधरो अंधक नाम दैत्य है सो जैसे भव जे महादेव हैं तिनसों युद्धमें जुरचो है अर्थ जैसे महादेवसों निर्भय अंधक लरचो तैसे लक्ष्मणसों इन्द्रजीत लरतभयो ॥ ३४ ॥ एक एक कहे एक-को परस्पर अनेक शर मारत हैं अर्थ लक्ष्मणको मारत हैं ते शर दुहूनके अंगनमें मंदरमें जलबुंदसम परत हैं अर्थ अतिबलीनतासों कछू पीडा नहीं करत उद्धरचो काढचो ॥ ३५ ॥ साथकी कहे जो अर्चाकी विधि संगमों लै आये रहैं कहूं शुभगायकी पाठ है तौ शुभगाथ कहे लक्ष्मण ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद-
निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायामष्टादशः प्रकाशः ॥ १८ ॥

सू०-॥ दोहा ॥ उनईसयेंप्रकाशमें, रावणदुःखनिधान ॥
जूझैगोमकराक्षपुनि, ह्वैहैदूतबिधान ॥ १ ॥ रावणजैहैगूढथल,
रावरलुटैबिशाल ॥ मंदोदरीकढोरिबो, अरुरावणकोकाल ॥२॥
मोटनकछंद ॥ देख्योशिरअंजुलिमैंजबहीं । हाहाकरिभूमिप-
रचोतबहीं ॥ आयेसुतसोदरमंत्रितबै । मंदोदरित्योंतियआई
सबै ॥ ३ ॥ कोलाहलमंदिरमांझभयो । मानौंप्रभुकोउडिप्रा-
णगयो ॥ रोवैदशकंठबिलापकरै । कोऊनकहूंतनधीरधरै ॥४॥
रावण-दंडक ॥ आजुआदित्यजलपवनपावकप्रबलचंदआ-
नंदमयतापजगकोहरौं । गानकिन्नरकरहुनृत्यगंधर्वकुलयक्ष
बिधिलक्षउरयक्षकर्दमधरौं ॥ ब्रह्मरुद्रादिदैदेवत्रैलोककेराजको

जायअभिषेकइन्द्रहिकरौं । आजुसियरामदैलंककुलदूषणहिं यज्ञकोजायसर्वज्ञनिप्रनकरौं ॥ ५ ॥ महोदर—तोटक ॥ प्रभुशोकतजौतनधीरधरो । सकशत्रुबधोसोबिचारकरो ॥ कुलमेंअब जीवतजोरहिहै । सबशोकसमुद्रहिसोबहिहै ॥ ६ ॥

टी०—दुःखको निदान कहे बडो दुःख ॥ १ ॥ रावरे खिनके रहिबेको घर, कठोरिबो कहे केशादि पकरि निर्दय खैंचिबो ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ इंद्रजीतके मरे रावण बडे दुःखसों संयुक्त ह्वै ऐसे बिलाप वचन कहत भयो कि जो इन्द्रजीत मर्‍यो तो मोंहू मरतही हौं तासों मेरे डरसों जे बातै जन नाहीं करत रहे ते सब भयको छोडिकै आपने आपने भाये काज करौ कपूर औ अगुरु औ कस्तूरी औ कंकोल मिलाइ यक्षकर्दम होत है सो यक्षनको अति प्रिय है अंगनमें लेप करत हैं ॥"कर्पूरागुरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्षकर्दमः"॥ औ सीता राम मिलिकै कुलदूषण (विभीषण) को लंका दैकै सर्वज्ञ ब्राह्मणनको यज्ञको निवारो कहें अवकाश देहिं ॥ ५ ॥ अतिदुखमें धैर्य्यके बचन कहिवेको उचित है तासों महोदर, मंदोदरी धीर धराइवेके वचन कहति हैं जा उपायसों शत्रु वधो सक कहे सकैं अर्थ शत्रु मार्‍यो जाय सो विचार करौ सबके मरेको जो शोक है ताके समुद्रमें वह्यो करि है ॥ ६ ॥

मू०—मंदोदरी—चौपाई ॥ सोदरजूझ्योसुतहितकारी । को गहिहैंलंकागढभारी ॥ सीतहिदैकरिपुहिसँहारो । मोहतिहैविक्रमबलभारो ॥ ७ ॥ रावण ॥ तुमअबसीतहिदेहुनदेहू । बिन सुतबंधुधरौंनहिंदेहू ॥ यहितनजोतजिलाजहिरैहौं । वनबासि जाइसबैदुखसैहौं ॥ ८ ॥ मकराक्ष—भुजंगप्रयातछंद ॥ कहां कुंभकर्णौकहाइन्द्रजीतै । करैसोइबैवैकरैयुद्धभीतै ॥ सुजौलों जिऔंहौंसदादासतेरो । सियाकोसकैदैसुनौंमंत्रमेरो ॥ ९ ॥

टी०—यह जो तुम्हारो भारी लंकागढ है ताहि कौन गहि है कहे लै सकि है अर्थ लंकागढ शत्रुके लेवे लायक नहीं है विक्रम कहे यत्न बलकहे शक्तिको मोहति है कहे मूर्छित कराति है अर्थ तुम्हारो यत्न औ बल निष्फल होतहै सो पातीके दुःख प्रभावसों ॥ ७ ॥ ८ ॥ भीत युद्ध कहि या जनायो कि वाण वेदनादि भय सों अंतर्धान ह्वै युद्ध करि हैं सरस्वती उक्तार्थः ॥ वै आपने बलसों सबको मारि सीताको लै हैं इति व्यंग्यार्थः ॥ ९ ॥

मू०-महाराजलंकासदाराजकीजै । करौंयुद्धमेरीविदावेगि कीजै ॥ हतौंरामस्योवंधुसुग्रीवमारौं । अयोध्याहिलैराजधानी-सुधारौं ॥ १० ॥ बिभीषण-बसंततिलकाछंद ॥ कोदंडहाथ रघुनाथसँभारिलीजै । भागेसबैसमरयूथपदृष्टिदीजै ॥ वेटाब-लिष्टखरकोमकराक्षआयो । संहारकालजनुकालकरालधायो ॥ ॥ ११ ॥ सुग्रीवअंगदबलीहनुमंतरोंक्यो । रोंक्योरहौनरघु-बीरजहींबिलोक्यो ॥ मारचोविभीषणगदाउरजोरठेली । का-लीसमानभुजलक्ष्मणकंठमेली ॥ १२ ॥ गाढ़ेगहेप्रबलअंगनि-अंगभारे । काटेकटैनबहुभांतिनकाटिहारे ॥ ब्रह्मादियोवरहि अस्त्रनशस्त्रनलागै । लैहीचल्यौसमरसिंहहिजोरजागै ॥१३॥ गाढ़ांधकारदिविभूतललीलिलीन्हो । ग्रस्तास्तमानहुंशशीकहँ राहुकीन्हो ॥ हाहादिशब्दसबलोगजहींपुकारे ॥वाढेअशेषअँ-गराक्षसकेबिदारे ॥ श्रीरामचन्द्रपगलागतचित्तहर्षै । देवाधि-देवमिलिसिद्धनपुष्पवर्षै ॥ १४ ॥

टी०-सरस्वती उक्तार्थः ॥ काकूक्तिसों कहत हैं कि हे महाराज ! अब लंकामें तुम सदा राज किया करौ महाराज पद कहि या जनायो कि मंत्रको त्याग करि प्रभुतासों अपने मनहीं की वात करचो औ जैसे कुंभकर्णादिकनकी सबकी विदा कियो है तैसे मेरीहू बिदा करौ हौं युद्ध करौं जाइ औ तुम्हारी आज्ञा के सदृश जैसे कुंभकर्णादिकन वंधु सहित राम औ सुग्रीवको मारि राज-धानी अयोध्यामें सुधारचो है तैसे हौंहूं वंधु सहित राम औ सुग्रीवको मारिकै राजधानी अयोध्यामें सुधारौं जैसे सब मरिगये हैं तैसे हौंहूं मरौं जाइ इति व्यंग्यार्थः ॥ १० ॥ ११ ॥ विभीषण गदा मारचो ताको उरके जोरसों ठेलिकै लक्ष्मणके कंठमें कालसर्पके समान भुजा मेलत भयो ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०-दोहा ॥ जूझतहीमकराक्षके, रावणअतिदुखपाइ । स-त्वरश्रीरघुनाथपै,दियोवसीठपठाइ ॥ १५॥ सुंदरीछंद ॥ दूत-हिदेखतहीरघुनायक । तापहँबोलिउठेसुखदायक ॥ रावणके

कुशलीसुतसादर । कारजकौनकरैअपनेघर ॥ १६ ॥ दूत–विजयछन्द ॥ पूजिउठेजबहींशिवकोतबहींविधिशुक्रबृहस्पति आये । कैविनतीमिसकश्यपकेतिनदेवअदेवसबैबकसाये ॥ होमकीरीतिनईसिखईकछुमंत्रदियोश्रुतिलागिसिखाये । हौंइतकोपठयोउनकोउतलैप्रभुमंदिरमांझसिधाये ॥ १७ ॥

टी०–कि शशीको दिवि आकशते भूतलमें पाइकै अर्थ स्थानच्युत (अवल) जानिकै स्वाभाविक शत्रुतासों गाढो कहे बहुत जो अंधकार है ताने लीलिलियो है औ कि राहूने ग्रस्तास्त कीन्हो है शशीसम लक्ष्मण है अंधकार औ राहुसम मकराक्ष है जब मकराक्षको शस्त्रास्त्रसों मरण ना जान्यो तब हाथनसों कसिकै गाढे जो गहे रहै ताही समय शीघ्रतासों लक्ष्मणजी बाढ कहे स्थूलकाय ह्वै कै राक्षसके अशेष संपूर्ण अंग विदारे कहे विदीर्ण कीन्हे अर्थ फारि डारे ऐसी शीघ्रतासों लक्ष्मणजू आपने अंगस्थूल किये कि मकराक्ष जो हस्तग्रहण करे रहै सो हस्तग्रहण ना छूटन पायो तासों वक्षस्थल फाटि गयो अधिदेव गन्धर्वादि औ आदि देव पाठ होइ तौ ब्रह्मादि जानौ यह छन्द छै चरणको है ॥१५॥१६॥ सत्वर कहे शीघ्र बसीठ (दूत) पूछौ कि रावण कौन कारज करत हैं ताको जवाब रावणके प्रभावको देखावत चतुरतासों दियो जब रावण देव औ अदेव सबके नाश करिबेके लिये शिव जे महादेव हैं तिनको पूजन करिकै उठे हैं कि ताही क्षण अति डर मानिकै विधि (ब्रह्मा) औ शुक्र औ बृहस्पति ये तीनों आइकै कश्यपके व्याजसों विनती करिकै देव औ अदेव सब बकसाये कहे मांगि लीन्हें अर्थ ब्रह्मादिकन आइ यह कह्यो कि कश्यप यह विनती करयो है कि देव औ अदेवनको हमको बकसीस देव अर्थ इनको नाश ना करौ इहां अदेव पदते जे देवतनते अतिरिक्त प्राणी हैं दैत्य मनुष्यादि ते सब जानौ यासों या जनायो कि जब रावण शिवकी पूजा करत है तब संहार करिबेकी शक्ति प्राप्ति होति है औ देव अदेवनको बकसाइकै कछू नई होमकी रीति सिखायो औ श्रुति (कान) में लागिकै कछू मंत्र दीन्हां याके आगे मोहिं या ओर पठायो औ ब्रह्मादिकनको लैकै प्रभु जो रावण है सो मंदिरको गया कहिबेको हेतु या जामें रामचन्द्र जानें कि हमप्रति कोपसों रावण सब देव औ अदेवको नाश करिबेको चाह्यो तिनको बकसाइ ब्रह्मादिकन कछु हमारि ही हानि हेत होम औ मंत्र सिखायो है है ॥ १७ ॥

मू०-दूत-संदेश ॥ सूर्पणखाजोबिरूपकरीतुमतातेकियोह-महूंदुखभारो।बारिधिबंधनकीन्हींहुतोतुममोसुतबंधनकीन्होंति हारो॥होइजेहोनीसोहोइहीरहैनमिटैजियकोटिविचारबिचारो। दैभृगुनंदनकोपरशारघुनंदनसीतहिलैपगुधारो ॥१८॥ दोहा ॥ प्रतिउत्तरदूतहिदियो, यहकहिश्रीरघुनाथ ॥ कहियोरावणहो हिं जब, मंदोरिकेसाथ ॥ १९ ॥ रावण-संयुताछंद ॥ कहिधौं बिलंबकहाभयो । रघुनाथपैजबतूगयो ॥ कहिभांतितूअवलो-कियो । कहुतोहिंउत्तरकादियो ॥ २० ॥

टी०-सीताको हरिकै तुमको दुख दीन्हों अथवा सीताहीको भारी दुख दीन्हों पशुराम तौ धनुषबाण दियो है इहां रावण परशा माग्यो तहां या जान्यो कि रावण सुन्यौ है कि रामचंद्र परशुरामको हथियार छोरि लीन्हों है औ परशुरामको मुख्य हथियार परशाही है तासों परशा जान्यों ॥ १८ ॥ रामचंद्र मंदोदरीकी बुद्धिकी स्तुति बिभीषणसों सुन्यौ है तालिये मंदोदरीके साथ कह्यो है अर्थ जो मंदोदरी इन वचननको सुनि है तो समय विचारि ग्लानि दै रावणको लरिबेको पठाइ है अथवा जा मंदोदरी सहित रावण दुख पावै अथवा कुंभकर्णादिके मरेसों रावण भीत ह्वै संधिके लिये दूत पठायो है ऐसा न होइ कि आपही शरणमों चलि आवै जो हमको शरणागत रक्षकत्वधर्म प्रतिपालन करि रावणको रक्षतही बनै तालिये जो मंदोदरी इन वचनको सुनि है तौ समय बिचारि ग्लानि दै लरिबेहीके लिये पठाइ है संधिके लिये ना पठाइ है ॥१९॥२०॥

मू०-दूत-दंडक ॥ भूतलकेइंद्रभूमिबैठेहुतेरामचंद्रमारिचक-नकमृगछालहिबिछायेजू । कुंभहरकुंभकर्णनाशाहरगोदशीश चरणअकंपअक्षअरिउरलायेजू । देवांतकनारांतकत्योंसुसक्या तबिभीषणबैनतनकानरूषबायेजू । मेघनादमकराक्षमहोदर-प्राण हरबाणत्योंबिलोकतपरमसुखपायेजू ॥ २१ ॥ रामसंदे-शबिजयछंद ॥ भूमिदईभुवदेवनकोभृगुनंदनभूपनसोंबरलैकै। वामन स्वर्गदियोमघवैसोबलीबलिबांधिपतालपठैकै । संधि-

कीबातनको प्रतिउत्तरआपुनहींकहिये हितकैकै । दीन्हीं है लंकबिभीषणको अबदेहिंकहांतुमकोयहदैकै ॥ २२ ॥ मंदोदरी-मालिनीछंद ॥ तबसबकहिहारेरामकोदूतआयो । अबसमुझिपरीजोपुत्रभैया जुझायो ॥ दशमुखसुखजीजैरामसोंहौं लरोंयों ॥ हरिहरसबहारेदेबिदुर्गालरीज्यों ॥ २३ ॥

टी०-रावण पूंछेउ कि केहिभांति तू रामचंद्रको देख्यो है ताको उत्तर यामें दियो है कुंभहर औ कुंभकर्ण नाशाहर सुग्रीव अकंप औ अक्षके अरि (हनुमान शत्रु हैं सत्रहें प्रकाशमें कह्यो है कि ॥ जिते अकंपादि बलिष्ठ भारे संग्राममें अंगद वीर मारे ॥ यामें विरोध होत है तासों या जनायो दूसरो अकंप रह्यो ताको हनुमान मारयो है यथा वाल्मीकीये" स चतुर्दशभिर्बाणैर्निशितैर्देहदारणैः। निर्बिभेद महावीरो हनुमंतमकंपनः । ततोवृक्षसमुत्पाट्य कृत्वा वेगमनुत्तमम् । शिरस्यभिजघानाशु राक्षसेन्द्रमकंपनम् । यथा पद्मपुराणे ॥ जघान हनुमान्भूयो चतुर्थेहन्यकंपनम् ।" औ देवांतक औ नरांतकके अंतक [अंगद] औ मेघनाद औ मकराक्ष महोदरके प्राणहार (लक्ष्मण) यह अति निर्भय समय स्वरूप जानो ॥२१॥ वर कहे बलसों या प्रकार अवतार धरि धरि हम तीनों लोक बांटि दियो अब तुमको यह जो परशा है ताको दैकै कहा कौन स्थान देहिं जामें तुम रहौ परशुरामकी कथा कहि या जनायो कि जिन सहस्रार्जुन तुम्हें बांधि राख्यो तिनको हम क्षणमें मारयो वामनकी कथा कहि या जनायो कि जिन बलिकी दासिन पालसों तुम्हें गहिकै निकारि दीन्हों तिनको बांधिकै हम पाताल पठायो तैसे तुमहूंको मारि विभीषणको लंका देहैं ॥ २२ ॥ शुम्भ निशुम्भादिके युद्धमें हरिहरादि सब हारि गये हैं तब दुर्गा लरिकै मारयो है यह कथा मार्कंडेयपुराणमें प्रसिद्ध है ॥ २३ ॥

मू०-रावण ॥ छलकरिपठयोतोपावतोजोकुठार ॥ रघुपति बपुराकोधावतोसिंधुपारै ॥ हतिसुरपतिभर्ताविष्णुमायाविलासी । सुनहिंसुखितोकोलयावतोलक्षिदासी ॥ २४ ॥ चामरछंद ॥ प्रौढरूढिकोसमूढगूढगेहमेंगयो । शुक्रमंत्रशोधिशोधिहोमकोजहींभयो ॥ वायुपुत्रबालिपुत्रजामवंतधाइयो ।

लंकमेंनिशंकअंकलंकनाथपाइयो ॥ २५ ॥ मत्तदंतिपंक्तिबा-
जिराजिछोरिकैदई । भांतिभांतिपक्षिरानिभाजिभाजिकैगई ॥
आसनेबिछावनेवितानतानतूरियो। यत्रतत्रछत्रचारुचौंरचारु-
चूरियो ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ भगीदेखिकैशंकिलंकेशबाला।
दुरीदौरिमंदोदरीचित्रशाला ॥ तहांदौरिगोबालिकोपूतफूल्यो।
सबैचित्रकीपुत्रिकादेखिभूल्यो ॥ २६ ॥

टी०-सिंधुके पारै धावतो कहे भागि जातो सुरपति (इंद्र) तिनके भर्त्ता रक्षक औ मायाके विलासी जे विष्णु हैं तिनको हति कहे मारिकै तोको लक्षि जो लक्ष्मी हैं ताको दासी ल्यावतो यासों या जनायो कि रामचंद्र जो करत हैं सो सब परशाहीके बलसों करत हैं यामें रामचंद्रकी शक्ति कछु नहीं है। ॥ २४ ॥ प्रौढ जो धृष्टता है ताकी रूढि कहे परिपक्वता ताको समूढ कहे समूह अर्थ अति धृष्ट ऐसा जो रावण है सो यज्ञ करिबेको गूढगेहमों जात भयो मंदोदरीकी ऐसी कटु बातैं सुनि कछू लाज न कियो तासों अतिधृष्ट कह्यो ॥ "समूढःपुंजिते भुग्ने इति मेदिनी" ॥ सो शुक्रके मंत्रको शोधि कहे शुद्धोच्चार करिकै होमके अर्थ जब उद्यत भयो तब निशंक कहे शंकाते रहित है अंक (हृदय) जिनको ऐसे जे वायुपुत्रादि हैं ते धावत भये तब लंकनाथके जे अंक कहे राजचिह्न हैं छत्र चामरादि तिन्हैं पायो कहे देख्यो तब जान्यो कि याही मंदिरमें रावण ह्वै है तालिये या प्रकारको उपद्रव करयो सो आगे कहत हैं। ॥ २५ ॥ तान (डोरी) ॥ २६ ॥

मू०-गहैदौरिजाकोतजैताकिताको । तजैजादिशाकोभ-
जैबामताको ॥ भलीकैनिहारीसबैचित्रसारी । लहैसुंदरीको
दरीकोबिहारी ॥ २७ ॥ तजैदृष्टिकोचित्रकीसृष्टिधन्या। हँसी-
एकताकोतहींदेवकन्या ॥ तहींहासहीदेवकन्यादिखाई । गही
शंकिकैलंकरानीबताई ॥ २८ ॥

टी०-फूल्यो कहे आनन्दित जा पुतरीको अंगद दौरिकै गहत है ताको पुतरी जानि तजत है औ अंगद जा दिशाको तजत हैं ता दिशाको बाम कहे मंदोदरी भजति है अथवा जा दिशाको अर्थ जा:दिशाकी पुतरिनको अंगद गहत

हैं ता दिशामें अंगदको ताकिकै देखिकै ता दिशाको तजै कहे छोडति है अर्थ तां दिशाकी पुतरिनको छोडाति है औ जा दिशाको अंगद तजत हैं ता दिशाको मंदोदरी भजै कहे प्राप्त होतिहै अथवा भागतिहै दरी [कन्दरा] ॥ २७ ॥ धन्या कहे अति निपुण जो चित्रकी सृष्टि है दृष्टिको तजै कहे त्याग कराति है अर्थ मंदोदरी पास दृष्टि नहीं जान देति मंदोदरीको नहीं देखन देति इति अथवा धन्या जो चित्रकी सृष्टिहै तामें मंदोदरीकी दृष्टिको तजै कहे त्याग करातिहै अर्थ अपने पास नहीं आवन देति यह मंदोदरीहै ये तौ ज्ञानदृष्टिमें नहीं होत इति भावार्थः॥ या प्रकार कौतुक देखिकै अंगदको एक देवकन्या हँसत भई सो हांसीसों देवकन्या अंगदको देखाइ कहे देखि परी तब ताहीको मंदोदरी जानि अंगद गही तब शंकिकै ताने लंकरानि जो मंदोदरी है ताको बतायो कहूं तहीं शंकिकै पाठहै ॥ २८ ॥

मू०—सुआनीगहेकेशलंकेशरानी । तमश्रीमनोंसूरशोभानिशानी ॥ गहेबाहँऐंचेंचहूंओर ताको । मनोहंसलीन्हेमृणालीलताको ॥ २९ ॥ छुटीकंठमालालुरैंहारटूटे । खसैंफूलफूले लसैं केशछूटे ॥ फटीकंचुकीकिंकिणीचारुछूटी । पुरीकामकीसीमनोरुद्रलूटी ॥ ३० ॥ विनाकंचुकीस्वच्छवक्षोजराजैं । किधौंसांचहूश्रीफलैशोभसाजैं ॥ किधौंस्वर्णकेकुंभलावण्यपूरे । बशीकर्णकेचूर्णसंपूर्णपूरे ॥ ३१ ॥ मनोइष्टदेवैसदाइष्टहीके । किधौंगुच्छद्वैकामसंजीवनीके ॥ किधौंचित्तचौगानकेमूलसोहैं । हियेहेमकेहालगोलाबिमोहैं ॥ ३२ ॥ सुनीलंकरानीनकीदीनबानी । तहींछांडिदीन्हीमहामौनमानी ॥ उठ्यो सोगदालैयदालंकवासी । गयेभागिकैसर्वशाखाविलासी ॥ ॥ ३३ ॥ मंदोदरी—दोहा ॥ सीतहिदीन्हेदुखवृथा, सांचोदेखो आजु ॥ करैजोजैसीत्योंलहै, कहारंककहँराजु ॥ ३४ ॥

टी०—सूर्यकी शोभानसों मानी मानों तमश्री [अन्धकारकीश्री] शोभा है तमश्रीसम बार हैं सूर्यशोभासम सिंदूर है इहां सिंदूर नहीं कह्यो सो उपमानते उपमेयको ग्रहण कियो अथवा सूर्यशोभासम अंगद है मृणाली लतासम बार हैं

हंससम अंगदादि वानर हैं ॥ २९ ॥ ३० ॥ लावण्य [सुन्दरता] ॥ ३१ ॥ सदा दुष्ट जो स्वामी रावण है ताके इष्ट देव हैं अर्थ जैसे सबप्राणी इष्टदेवको हृदयमों बसाये रहत हैं तैसे रावणके मनमों सदा बसत हैं गुच्छ पुष्प गुच्छ कामसंजीवनी लतासम मंदोदरीहै औ कि चित्त जे मन हैं तिनको जो चौगान खेल है ताको मूल कहे जर अर्थ कारण जो मंदोदरीको हियो कहे वक्षःस्थल है तामें शोहत है कहे सुवर्णके हालगोला कहे गेंद हैं अर्थ जैसे हालगोलानको खेलनहार आपनी आपनी ओर खैंचत हैं तैसे देखनहारनके चित्त इनकुचनको आपनी आपनी ओर खैंचत हैं मूल कहि या जनायो कि मनुष्य चौगान खेल खेलत हैं चित्त नहीं खेलत सो याहीते चित्तनको चौगान खेल नयो उत्पन्न भयो है सो जानो अथवा चित्त चौगानके मूल हालगोलानहींको विशेषण है चौगान खेल प्रसिद्ध है ॥ ३२ ॥ मौन ह्वै मन्त्रको जो जपत है ताको छोडि दीन्हों मानी कहे गर्वी यदा कहे जब ॥ ३३ ॥ ३४ ॥

मू०-रावण-बिजयछन्द ॥ कोबपुराजोमिल्योहैबिभीषण हैकुलदूषणजीवैगोकौलौं । कुंभकरन्नमरचोमघवारिपुतौरीकहानढरैंयमसौंलौं । श्रीरघुनाथकेगातनिसुंदरिजानैनतूकुशलीतनुतौलौं । शालसबैदिगपालनकेकररावणकेकरवालहैजौलौं ॥ ३५ ॥ चामरछंद ॥ रावणैंचलेचलेतेधामधामतेसबै । साजिसाजिसाजसूरगाजिगाजिकैतबै ॥ दीहदुंदुभीअपारभांतिभांतिबाजहीं । युद्धभूमिमध्यक्रुद्धमत्तदंतिराजहीं ॥ ३६ ॥ चंचरीछंद ॥ इन्द्रश्रीरघुनाथकोरथहीनभूतलदेखिकै । बेगिसारथिसोंकहेउरथजाहिलैसुबिशेषिकै ॥ तूणअक्षयबाणस्वच्छअभेदलैतनत्राणको । आइयोरणभूमिमेंकरिअप्रमेयप्रणामको ॥ ३७ ॥ कोटिभांतिनपौनतेमनतेमहालघुतालसै । बैठिकैध्वजअग्रश्रीहनुमंतअंतकज्योंहँसै ॥ रामचन्द्रप्रदक्षिणाकरिदक्षह्वैजबहींचढे । पुष्पबर्षिबजायदुंदुभिदेवताबहुधाबढे ३८॥

टी०-तनु कहे रंचकहू कुशली ना जानै सरस्वती उक्तार्थाः ॥ हे सुन्दरि ! श्रीरघुनाथके गातनि करिकै मेरे तनको तू कुशली न जानै अर्थ मोकों रामचन्द्र

मारि हैं ॥ ३९ ॥ ३६ ॥ तूण कहे तर्कस अक्षय कहे जाते बाण ना चुकैं ॥ ॥ ३७ ॥ लघुता शीघ्रता हनूमान ध्वज अग्रमें यासों चढे कि यह रथ कछू राक्षसन माया मा कियो होइ बढे [फूले] अर्थ आनंदित भये ॥ ३८ ॥

मू०—रामकोरथमध्यदेखतक्रोधरावणकेबढ्यो । बीसबाहुनकीशरावलिव्योमभूतलसोंमढ्यो ॥ शैलहैसिकतागयेसब दृष्टिकेबलसंहरे । ऋक्षबानरभेदितत्क्षणलक्षधाक्षतनाकरे ॥ ॥ ३९ ॥ सुंदरीछंद ॥ बाणनसाथविधेसबबानर । जायपरेमलयाचलकोघर ॥ सूरजमंडलमेंएकरोवत । एकअकाशनदीमुखधोवत ॥ ४० ॥ एकगयेयमलोकसहेदुख । एककहैंभवभूतनसोंरुख ॥ एकतिसागरमांझमरेमरि । एकगयेबड़वानलमेंजरि ॥ ४१ ॥ मोटनकछंद ॥ श्रीलक्ष्मणकोपकरचोजबहीं । छोड्योशरपावककोतबहीं ॥ जारयोशरपंजरछारकरयो । नैर्ऋत्यनकोअतिचित्तडरयो ॥ ४२ ॥ दौरैहनुमंतबलीबलसों । लैअंगदसंगसबैदलसों ॥ मानोंगिरिराजतजेडरको घेरैचहुंओरपुरंदरको ॥ ४३ ॥

टी०—सिकता [बारू] दृष्टिके बल कहे पराक्रम अर्थ अति बाणांधकारमों काहूको कछू देखि नहीं परत क्षतना कहे मधुमक्षिकादिकनके छाता जामें मधु रहत है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ नैर्ऋत्य [राक्षस] ॥ ४२ ॥ पुरंदर इन्द्र सम रावण है गिरिराजनके सदृश अंगदादि हैं ॥ ४३ ॥

मू०—हरिच्छंद ॥ अंगदरणअंगनसबअंगनमुरझाइकै । ऋक्षपतिहिअक्षरिपुहिलक्षगतिबुझाइकै ॥ वानरगणबाणनसन केशवजबहींमुरयो । रावणदुखदावनजगपावनसमुहेजुरयो ॥ ॥ ४४ ॥ ब्रह्मरूपकछंद ॥ इंद्रजीतजीतआनिरोंकियोसुबाणतानि । छोंडिदीनवीरबानिक्रानकेप्रमानआनि ॥ शिवप्रताप काढिचापचर्मवर्ममर्मछेदि । जातभोरसातलैअशेषकंठमाल

भेदि ॥ ४५ ॥ दंडकछंद ॥ सूरजमुसलनीलपट्टिशपरिघनल जामवंतअसिहनूतोमरप्रहारेहैं । परशासुखेनकुंतकेशरीगवय शूलविभीषणगदागजभिंदिपालतारेहैं । मोगराद्विविदतीरकट-राकुमुदनेजाअंगदशिलागवाक्षविटपबिदारे हैं । अंकुशशरभ चक्रदधिमुखशेषशक्तिबाणतिनरावणश्रीरामचंद्रमारेहैं ॥४६॥ दोहा ॥ द्वैभुजश्रीरघुनाथसों, बिरचेयुद्धबिलास, बाहुअठारह यूथपनि, मारेकेशोदास ॥ ४७ ॥

टी०-रण अंगन कहे रणभूमिके मध्यमें अंगदको सब अंगनसों मुरझाइकै कहे मूर्च्छित करिकै अर्थ सर्वांग शिथिल करिकै लक्ष कहे निशानकी गतिसों बुझाइकै कहे समुझाइकै अर्थ निशानासम वेधिकै औ और जो वानरगणनसों जब मुरे तौ न रामचन्द्रके समुहैं जुरयो अर्थ लरन लग्यो ॥ ४४ ॥ वीरवानि कहे वीरस्वभावसों चर्म [ढाल] वर्म [बखतर] नर्म [मर्मस्थल] ॥ ४५ ॥ सूरज [सुग्रीव] शेष [लक्ष्मण] ॥ ४६ ॥ श्रीरामचन्द्रसों धनुर्बाणसों लरत है तासों एक हाथ बाणमें एक धनुषमें लग्यो है तासों द्वै भुज जानों ॥ ४७ ॥

मू०-गंगोदकछंद ॥ युद्धजोईजहांभांतिजैसीकैरताहिता हीदिशारोंकिराखैतहीं । आपनेअस्त्रलैशस्त्रकाढ़ैसबैताहिकेहू कहूंघावलागैनहीं ॥ दौरिसौमित्रलैबाणकोदंडज्यौंखंडखंडी ध्वजाधीरछत्रावली । शैलशृंगावलीछोडिमानोंउडीएकहीबेर कैहंसवंशावली ॥ ४८ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ लक्ष्मणशुभलक्षण बुद्धिबिचक्षणरावणसोंरिसछोडिदई । बहुबाणनिछंडैजेशिर खंडैतेफिरखंडैशोभनई ॥ यद्यपिनरपंडितगुणगणमंडितरिपु बलखंडितभूलिरहै । तजिमनबचकायकसूरसहायकरघुनाय-कसोंबचनकहै ॥ ४९ ॥ ठाढ़ोरणगाजतकेहुनभाजततनमन लाजतसबलायक । सुनिश्रीरघुनंदनमुनिजनबंदनदुष्टनिकंद-

नसुखदायक ॥ अबटरैनटारचोमरैनमारचोहौंहठिहारचोधरि-
शायक । रावणनहिंमारतदेवपुकारतह्वैअतिआरतजग-
नायक ॥ ५० ॥

टी०—ज्यों धनुषगुण शैलशृंग सदृश रावण शिर हैं हंशवंशावलीसदृश श्वेत छत्र हैं ॥ ४८ ॥ रिपुबल करिकै खंडित हैं रणपांडित्यादि जाके ऐसे जे लक्ष्मण हैं ते भूलि रहे कहे आश्चर्ययुक्त ह्वै रहे हैं तासों मनसा, वाचा, कर्मणा, रावणसों लरिबो तजिकै ॥ ४९ ॥ मैं तन औ मनसों लज्जित होत हौं ॥ ५० ॥

मू०—राम—छप्पै ॥ जेहिशरमधुमदमरदिमहासुरमर्दनकी-
न्हेंउ। मारेहुकर्कशनर्कशंखरुतिशंखजोलीन्हेंउ ॥निष्कंटकसु-
रकटककरचोकैटभवपुखंड्यो । खरदूषणत्रिशिराकबंधतरुखं-
डविहंड्यो ॥ कुंभकर्णज्यहिसंहरचोपलनप्रतिज्ञातेटरौं । तेहि
बाणप्राणदशकंठकेकंठदशौंखंडितकरौं ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ रघु-
पतिपठयोआसुही,असुहरबुद्धिनिधान ॥ दशशिरदशहूदिशन-
को, बलिदैआयोबान ॥ ५२ ॥ मदनमनोरमाछंद ॥ भुवभार-
हिसंयुतराकसकोगणजाइरसातलमैंअनुराग्यो । जगमेंजयश-
ब्दसमेतिहिकेशवराजबिभीषणकेशिरजाग्यो । यमदानवनंदि-
निकेसुखसोंमिलिकैसियकेहियकोदुखभाग्यो । सुरदुंदुभिसी
सँगजाशररामकोरावणकोशिरसाथहिलाग्यो ॥ ५३ ॥ मंदोद-
री-विजयछंद ॥ जीतिलियेदिगपालशचीकेउसासनदेवनदीस-
बसूकी । बासरहूनिशिदेवनकीनरदेवनकीरहेसंपतिहूकी । ती-
निहुंलोकनकीतरुणीनकीबारीबंधीहुतीदंडदुहूकी । सेवतश्वा-
नशृगालसोरावणसोवतसेजपरेअबभूकी ॥ ५४ ॥

टी०—कर्कश (कठोर) तरुखंड [सप्तताल] ॥ ५१ ॥ असुहर [प्राणहर] ॥ ५२ ॥ मयदानवनंदिनि [मंदोदरी] [सहोक्ति अलंकार है]॥ ५३ ॥ सदा रावणके भयसों स्वर्गसों भागे जे इन्द्र हैं तिनके विरहसों शची [इंद्राणीकि] जे उष्ण उसासहैं तिनसों देवनदी [आकाशगंगा] सब सूकी कहे सूखि गई ॥ ५४ ॥

मू०-राम-तारकछंद ॥ अबजाहुबिभीषणरावणलैकै । सकलत्रसबंधुक्रियासबकैकै ॥ जनसेवकसम्पतिकोशसँभारो । मयनंदिनिकेसिगरेदुखटारो ॥ ५५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकाया-मिन्द्रजिद्विरचितायांरावणवधवर्णनंनामैकोनविंशः प्रकाशः ॥१९॥

टी०-जनसेवक कहे सेवक जन अथवा जन [बंधुजन] सेवक [चाकर] संपत्ति अश्व,गज, वस्त्रादि कोष खजाना ॥ ५५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकाया मेकोनविंश. प्रकाशः ॥ १९ ॥

मू०-दोहा ॥ या बीसयेंप्रकाशमैं, सीतामिलनविशेषि ॥ ब्रह्मादिककीस्तुतिगमन, अवधपुरीकोलेषि ॥ १ ॥ प्रागवरणि अरुवाटिका, भरद्वाजकीजानि ॥ ऋषिरघुनाथमिलापकहि, पूजाकरिसुखमानि ॥ २ ॥ श्रीराम-तारकछंद ॥ जयजायकहो हनुमंतहमारो । सुखदेवहुदीरघदुःखबिदारो ॥ सबभूषणभूषितकैशुभगीता । हमकोतुमबेगिदिखाबहुसीता ॥ ३ ॥ हनुमंतगयेतहहींजहँसीता । तबजायकहीजयकीसबगीता ॥ पग लागिकह्योजननीपगुधारो । मगचाहतहैंरघुनाथतिहारो॥४॥ सिगरेतनभूषणभूषितकीने । धरिकैकुसुमावलिअंगनवीने ॥ द्विजदेवनिबंदिपढ़ीशुभगीता । तबपावकअंकचलीचढिसीता॥ ॥ ५ ॥ भुजंगप्रयातछंद ॥ सबस्त्रासबैअंगशृंगारसोहैं । विलोकैरमादेवदेवीबिमोहैं ॥ पिताअंकज्योंधन्यकाशुभ्रगीता । लसैअग्निकेअंकत्योंशुद्धसीता ॥ ६ ॥

टी०-॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ सीताको बंदि कहे वंदना करि कै देवतन, द्विज ब्राह्मण, समान शुभगीता कहे मंगलपाठ पढ्यौ अर्थ जैसे गमन समयमों

ब्राह्मण मंगलपाठ पढत हैं तैसे सीताजूको रामचन्द्रके पास गमनमें देव बढत भये अथवा द्विज औ देवन औ वंदीजन शुभगीता पढत भये औ जो अग्निके अंकमें बैठिकै सीताआई सो लोकके देखाइबेको तौ शुद्धताकी साक्षि दियो औ जो सीताको देह कनककुरंगके आगमनमें रामचन्द्र अग्निको सौंप्यौ रहै ता देहकी थातीसम रामचन्द्रके दीबेको अग्नि ल्याये हैं सो जानौ ॥ ५ ॥ ६ ॥

मू०–महादेवकेनेत्रकीपुत्रिकासी । किसंग्रामकीभूमिमेंचंडिकासी ॥ मनोरत्नसिंहासनस्थाशचीहै । किधौंरागिनीरागपूरेरचीहै ॥ ७ ॥ गिरांपूरमेंहैपयोदेवतासी । किधौंकंजकीमंजु शोभाप्रकाशी ॥ किधौंपद्महीमेंसिफाकंदसोहै । किधौंपद्मकेकोषपद्माविमोहै ॥ ८ ॥ किसिन्दूरशैलाग्रमेंसिद्धकन्या । किधौंपद्मिनीसूरसंयुक्तधन्या ॥ सरोचासनाहैमनोचारुबानी । जपापुष्पकेबीचबैठीभवानी ॥ ९ ॥ मनोऔषधीवृन्दमेंरोहिणीसी । किदिग्दाहमेंदेखियेयोगिनीसी ॥ धरापुत्रज्योंस्वर्ण मालाप्रकाशै ॥ मनोंज्योतिसीतच्छकाभोगभासै ॥ १० ॥ सुरेन्द्रबज्राछंद ॥ आसावरीप्राणिककुंभशोभै अशोकलग्नाबनदेव तासी ॥ पालाशमालाकुसुमालिमध्येवसन्तलक्ष्मीशुभलक्षणासी ॥ आरक्तपत्राशुभचित्रपुत्रीमनोबिराजैअतिचारुवेषा ॥ संपूर्णसिन्दूरप्रभावसकैधौंगणेशभालस्थलचंद्ररेखा ॥ ११ ॥

टी०–जहां केवल रतनपद पाये तहां अरुणही रतनको बोध होत है यह कवि नियम है रागदीपकादि अथवा अनुराग प्रेम इति ॥ ७ ॥ गिरा सरस्वतीके पूर कहे जलसमूहमेंकी पयो देवता कहे जल देवता है औ कि गिरापूर में कंजकी शोभा है अर्थ कि कमल है सरस्वतीको जल अरुण प्रसिद्ध है ॥ "पूरो जलसमूहे स्यादिति मेदिनी" ॥ ८ ॥ सूर जे सूर्य हैं तिनसों संयुक्त मिली पद्मिनी कमलिनी है सूरसम अग्नि है कमलिनी सम सीता हैं इहां अरुण सरोज जानो ॥ ॥ ९ ॥ चन्द्रमा औषधीश है औ रोहिणी चंद्रमाकी स्त्री है ता संबंधसों जानो औषधिनको अग्निसम ज्वलन प्रसिद्ध है धरापुत्र मंगलके जैसे स्वर्णमाला प्रकाशै कहे शोभै, धरापुत्र सम अग्नि हैं स्वर्णमाला सम सीता हैं भोगिराग तक्षककी

अरुणवर्ण प्रसिद्ध है ॥ १० ॥ आसावरी रागिनी अशोक वृक्षमें लग्ना कहे संलग्न स्थित इति जो वनदेवता हैं ताके सम हैं अशोक वृक्षको अरुणवर्ण है ॥ ११ ॥

मू०–विजयछंद ॥ हैमणिदर्पणमेंप्रतिबिंबकिप्रीतिहियेअनुरक्तअभीता। पुंजप्रतापमेंकीरतिसीतपतेजनमेंमनोंसिद्धविनीता । ज्योंरघुनाथतिहारियेभक्तिलसैउरकेशवकेशुभगीता । त्यों अवलोकियआनँदकंदहुताशनमध्यसुवासनसीता ॥ १२ दोहा ॥ इन्द्रबरुणयमसिद्धसब, धर्मसहितधनपाल ॥ ब्रह्मरुद्रलैदशरथहि, आयगयेतेहिकाल ॥ १३ ॥ अग्नि–वसंततिलकाछंद ॥ श्रीरामचन्द्रयहसंततशुद्धसीता । ब्रह्मादिदेवसबगावतशुभ्रगीता ॥ ह्वैजैकृपालगहिजैजनकात्मजाया । योगीशईशतुमहौयहयोगमाया ॥ १४ ॥ श्रीरामचन्द्रहँसिअंकलगाइलीन्हों। संसारसाक्षिशुभपावकआनिदीन्हों । देवानदुंदुभिबजायसुगीतगाये । त्रैलोक्यलोचनचकोरनिचित्रभाये ॥ १५ ॥

टी०–कि अनुरक्त कहे अनुरागी हृदयमों अभीता (निश्चला) प्रीति है विनीता (उत्तमा) ॥ १२ ॥ १३ ॥ योगीश जे महादेव हैं तिनके ईश कहे स्वामी तुम हौ अर्थ विष्ण हौ औ यह जो सीताहै सो योगमाया [लक्ष्मी] है पुनरुक्ति, 'नित्यं वक्षसि योगं प्राप्नोतीति योगमाया लक्ष्मीः' अर्थ विष्णके वक्षस्थलमें सदा युक्त रहति है तासों योगमाया नाम है योगमाया कहि या जनायो कि यह तौ सदा तुम्हारे वक्षस्थलमें प्राप्त रहति है कहूं रंचहू भिन्न नहीं होति तासों अदोष है ॥ १४ ॥ श्रीरामचन्द्र कह्यो है तासों त्रैलोक्य लोचन चकोर कह्यो ॥ १५ ॥

मू०–ब्रह्मा–दोधकछंद ॥ रामसदातुमअन्तर्यामी । लोकचतुर्दशकेअभिरामी ॥ निर्गुणएकतुम्हैंजगजानै। एकसदागुणवन्त बखानै ॥ १६ ॥ ज्योतिजगैजगमध्यतिहारी । जाइकहीनसुनी ननिहारी ॥ कोउकहैपरिमाननताको। आदिनअन्तनरूपनजाको ॥ १७ ॥ तारकछंद ॥ तुमहौगुणरूपगुणीतुमठाये । तुमए

कतेरूपअनेकबनाये ॥ एकहैजोरजोगुणरूपतिहारो । त्यहिंसृ-
ष्टिरचीविधिनामबिहारो ॥१८॥ गुणसत्त्वधरेतुमरक्षतजाको ।
अबविष्णुकहैंसिगरेजगताको ॥ तुमहींजगरुद्रस्वरूपसँहारो ।
कहियेतिनमध्यतमोगुणभारो ॥ १९ ॥

टी०—अन्तर्यामी कहे सबके अन्तरमें व्याप्त रहतहौ अभिरामी कहे रमता अर्थ चौदहौं लोकमें रमत हौ या जगके एकै प्राणी (वेदांती) तुमको निर्गुण कहे रक्ष, रज सत्त्व तमोगुण तीनों करिकै रहित ज्योतिरूप जानत हैं औ एकै सदा रज सत्त्व तमोगुण युक्त ब्रह्मादिरूप बखानत हैं ॥ १६ ॥ यामें निर्गुण रूप कहतहैं कहो नहिं जाइ इत्यादिसों या जनायो जहां इन्द्रिनको गमन नहीं ॥ १७ ॥ अब सगुण कहत हैं सत्त्वादि तीनों गुणरूप तुमही हौ औ गुण ब्रह्मा-दिरूपतुमहीं हौ रजोगुणरूप कहे रजोगुणयुक्त रूप ॥ १८ ॥ जाको कहे जा सृष्टिको ॥ १९ ॥

मू०—तुमहींजगहौजगहैतुमहींमैं । तुमहींबिरचीमर्य्यादद्दु-
नीमैं ॥ मर्य्यादहिछोंड़तजानतजाको । तबहींअवतारधरोतुम
ताको॥ २० ॥तुमहींधरकच्छपवेषधरेजू । तुममीनह्वैवेदनको
उधरेजू ॥ तुमहींजगयज्ञबराहभयेजू ।क्षितिछीनिलईहिरण्या-
क्षहयेजू ॥ २१ ॥तुमहींनरसिंहकोरूपसँवारचो । प्रहलादको
दीरघदुःखबिदारचो॥ तुमहींबलिबावनवेषछल्योजू । भृगुनंद-
नह्वैक्षितिछत्रदल्योजू ॥ २२ ॥ तुमहींयहरावणदुष्टसँहारचो ।
धरणीमहँबूड़तधर्म्मउबारचो । तुमहींपुनिकृष्णकोरूपधरौगे ।
हतिदुष्टनकोभुवभारहरौगे ॥ २३ ॥ तुमबौद्धस्वरूपदयादि
धरौगे । पुनिकल्किह्वैम्लेच्छसमूहहरौगे ॥ यहिभाँतिअनेक
स्वरूपतिहारे । अपनीमर्य्यादकेकार्य्यसँवारे॥ २४ ॥महादेव-
पङ्कजबाटिकाछन्द ॥ श्रीरघुवरतुमहौजगनायक । देखहुद-

शरथकोसुखदायक ॥ सोदरसहितपितापदपावन । वंदनकि-
यतबहींमनभावन ॥ २९ ॥

टी०--विराटरूप सो जग तुमहीं हौ और यह जग तुमहींमें बसतहै "यथा कवि-प्रियायां, शेष धरे धरणी धरणी विधि केशव जीव रचे जग जेते । चौदह लोक समेत तिन्हैं हरिके प्रति रोमनमें चितये ते"॥ ताको कहै ताके वधको ॥२०॥ धर कहे पर्वत अर्थ समुद्र मथन--समय मंदराचलको कच्छरूप ह्वै पृष्ठमें धारण कियो ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ अनेक और स्वरूप व्यासादि जानो ॥ २४ ॥ २५ ॥

मू०-दशरथ-निशिपालिकाछंद ॥ रामसुतधर्म्मयुतसीयम-
नमानिये । बन्धुजनमातुगनप्रानसमजानिये ॥ ईशसुरईशज-
गदीशसमदेखिये । रामकहँलक्ष्मणविशेषप्रभुलेखिये ॥२६॥
रामचन्द्र-चञ्चलाछन्द ॥ जूझिजूझिकैगयेबानरालिऋक्ष-
राजि । कुम्भकरणलोकहरणभक्षियोजेगाजिगाजि ॥ रूपरे-
खस्योविशेषिजीउठैंकरौसोआज । आनिपाइँलागियोतिन्हैंस-
मेतदेवराज ॥ २७ ॥ दोहा॥ बानरराक्षसऋक्षसब, मित्रकल-
त्रसमेत ॥ पुष्पकचढ़िरघुनाथजू, चलेअवधिकेहेत ॥ २८ ॥

टी०-हे राम ! सुत ! सीताको धर्म्मयुत मनमें मानों अर्थ सीता निर्दोष हैं जो संदेह करो कि हम ग्रहण करैं हमारे बंधु आदि ग्रहजन कैसे ग्रहण करिहैं तौ वंधुजन भरतादि औ मातुगण कौशल्यादिकनकी सम जानों जैसे कोऊ प्राणनका त्याग आपुसों नहीं करत तैसे सीताको त्याग वे ना करिहैं या प्रकार रामचन्द्रको शिक्षा दै लक्ष्मणसों कहत हैं कि हे लक्ष्मण ! रामचन्द्रको ईश (महादेव) सुर-ईश (विष्णु) जगदीश (ब्रह्मा) के सम देखौ कहे जानों इनको विशेषिकै प्रभु स्वामी लेखौ अर्थ स्वामी सम इनकी सेवा करौ वंधुसम न जानों इति भावार्थः ॥ २६ ॥ रूप (स्वरूप) रेख (चिह्न) तिनसों स्यो कहे सहित जो उठें सो उपाय करौ या प्रकार रामचन्द्र देवराज जे इंद्र हैं तिनसों कह्यो सो रामचन्द्रकी आज्ञासों संजीवनी आदि उपायसों सबको जियाइकै रामचन्द्रके आइ पाइँ लगे ॥ २७ ॥ भरतकी प्रतिज्ञा है कि जो चौदह वर्षमें रामचन्द्र ना ऐहैं तौ हम नहीं जीहैं ता अवधि कहे मर्यादाके लिये पुष्पकमें चढि अतिशीघ्र अथवा अवधि चले (अयोध्या) ॥ २८ ॥

मू०–चञ्चरीछन्द ॥ सेतुसीतहिशोभनादरशाइपञ्चवटी गये। पाइँलागिअगस्त्यकेपुनिअत्रियैतेबिदाभये ॥ चित्रकूट बिलोकिकैतबहीप्रयागबिलोकियो। भरद्वाजबसैंजहांजिनते नपावनहैबियो ॥ २९ ॥ राम-तारकछन्द ॥ चिलकैद्युति सूक्षमशोभतिवारू। तनुह्वैजनुसेवतहैंसुरचारू ॥ प्रति बिम्बतदीपदिपैजलमाहीं। जनुज्वालमुखीनकेजालनहाहीं ॥ ॥३०॥ जलकीद्युतिपीतसितासितसोहै। चहुँपातकघातकरैय- ककोहै ॥ मदऐणमलैखसिकुंकमनीको। नृपभारतखण्डदियो जनुटीको ॥ ३१ ॥

टी०–वियोग कहे दूसरो ॥ २९ ॥ तनु कहे सूक्ष्म ॥ ३० एक कहे केवल जो वहुत पातक है ताके घात कहे नाश करैको कहे करिवेके अर्थ ऐणमद जो कस्तूरी है औ मलय [चंदन] औ कुंकुम [केशरिको] घसिकै भारतखंडरूपी जो नृप राजा है ताने मानों मारण तिलक दियो है जाको देखतही पातकनको नाश होत है औरों राजा शत्रुक नाश करिवेके मारण तिलक शिरमें देते हैं जाके देखतही शत्रु मरत हैं मारण मोहनोच्चाटनादि षट्कर्मकी तिलकादि क्रिया मंत्रशास्त्रमों प्रसिद्ध है भारतखंडवासिनको पातक दरिद्रादि पीडा करतहै सोइ शत्रुता जानों ॥ ३१ ॥

मू०–लक्ष्मण–दंडक ॥ चतुरवदनपंचबदनषटवदनसहस वदनहूसहसगतिगाईहै ॥ सातलोकसातद्वीपसातहूरसातल- निगंगाजीकीशोभासबहीकोसुखदाई है। यमुनाकोजलरह्योफै- लिकैप्रवाहपरकेशोदासबीचबीचगिराकीगोराई है। शोभान शरीरपरकुंकुमविलेपनकोश्यामलदुकूलझीनझलकतिझाईहै ॥ ॥ ३२ ॥ सुग्रीव–चंद्रकला ॥ भवसागरकीजनुसेतुउजागर- सुंदरता सिगरीसबकी। तिहुँदेवनकीद्युतिमीदरशैगतिशोपे- त्रिदोपनके रसकी ॥ कहिकेशववेदत्रयीमतिसीपरितापत्रयी-

तलकोमसकी । सबबंदैंत्रिकालत्रिलोकात्रिवेणिहिंकेतुत्रिविक्रमकेजसकी ॥ ३३ ॥

टी०–चतुरवदन [ब्रह्मा] पंचवदन [शिव] षटवदन [स्वामिकार्तिक] सहस्रवदन [शेष] तिनकरिकै सहसगति कहे सहस्र प्रकारसों गाई है अथवा सहसगति कहे सहस्रधारा सात लोक भू, अंतरिक्षादि, सात द्वीप जंबूद्वीपादि, सात रसातल अतल, वितलादि, ॥ ३२ ॥ सेतुसम जाके मग प्राणी भवसागर पार होत हैं तीनों देव ब्रह्मा, विष्णु, महेश. त्रिदोष वात, पित्त कफको जो रस कहे बल है ताकी गतिको शोषती है अर्थ कफ, पित्त, वात, दुःखद दोषकृत जो मृत्यु है तासों बचावति है ऐसी त्रिदेवनकी द्युतिहू है वेणीहू है वेदत्रयी ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामदेव, त्रयी, परिताप आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविकको तलको अधोभागको मसकी कहे दबायो है अर्थ पठायो है ऐसी वेद मतिहू वेणीहूहै त्रिविक्रम कहे वामनजू तीनि पैगसों तीनों लोक नाप्योंहै तिन तीनि पादविक्षेपको त्रिरूप पताकाहै ॥ ३३ ॥

मू०–बिभीषण–दंडक ॥ भूतलकीवेणीसीत्रिवेणीशुभशोभिजतिएककहैंसुरपुरमारगबिभातहै । एककहैंपूरणअनादि जोअनंतकोऊताकोयहकेशोदासद्रवरूपगातहै । सबसुखकर सबशोभाकरमेरेजानकौनोयहअद्भुतसुगंधअवदातहै । दरश परशहूतेथिरचरजीवनकोकोटिकोटिजन्मकीकुगंधमिटिजातहै ॥ ३४ ॥ भुजंगप्रायतछंद ॥ भरद्वाजकीबाटिकारामदेखी । महादेवकैसीबनीचित्तलेखी ॥ सबैवृक्षमंदारहूतेभलेहैं । छहू कालकेफूलफूलेफलेहैं ॥ ३५ ॥ कहूंहंसिनीहंससोंचित्तचोरैं । चुनैओसकेबुंदमुक्तानिभोरैं ॥ शुकालीकहूँसारिकालीविराजैं । पढैवेदमंत्रावलीभेदसाजैं ॥ ३६ ॥

टी०–कुगंध पदते पातक जानौं ॥ ३४ ॥ महादेवकी बाटिकासी बनी चित्तमें लेप्यो मंदार [कल्पवृक्ष-विशेष] छहू काल [छह ऋतु] ॥ ३५ ॥ कहूं हंससों कहे हंस सहित हंसिनी मुक्तानके भोरे कहे भ्रमसों ओसके बुंद चुनती हैं सो सबके चित्तको चोरावती हैं यासों हंसनकी मदमत्तता जनायो

वेदमंत्रावलीके जे भेद साजैं हैं तिन्हैं पढती हैं अर्थ अनेक प्रकारके मंत्र ऋषिनके पढत सुनत हैं तिन्हैं शिष्य ताही विधि आप पढत हैं ॥ ३६ ॥

मू०—कहूंवृक्षमूलस्थलीतोयपीवैं । महामत्तमातंगसीमानछाव ॥ कहूंविप्रपूजाकहूंदेवअर्चा । कहूंयोगशिक्षाकहूंवेदचर्चा ॥३७॥ कहूंसाधुपौराणकीगाथगावैं । कहूंयज्ञकीशुभ्रशालाबनावैं ॥ कहूंहोममंत्रादिकेधर्मधारैं । कहूंबैठिकैब्रह्मविद्याविचारैं ॥ ३८ ॥ आसु ईजहांदेखियेबक्ररागी । चलैपिप्पलैतिच्छबुध्यैसुभागी ॥ कँपैं श्रीफलैंपत्रहैंपत्रनीके । सुरामानुरागीसबैरामहीके ॥ ३९ ॥

टी०—कहूं महामत्त मातंग वृक्षकी मूलस्थली (थाल्हा) में तोय (जल) पीवत हैं परन्तु वृक्षनकी औ थाल्हनकी सीमा (मर्यादा) नहीं छुवत अर्थ वृक्ष औ थाल्हनको तोरते विदारते नहीं है ॥ ३७ ॥ पौराणसम्बन्धिनी ब्रह्मविद्या (वेदांत) ॥ ३८ ॥ वक्र कहे मुख हैं रागी कहे अरुण जिनके ऐसे शुक हैं और काहू ऋषिको मुख तांबूलके रागयुक्त नहीं है यतीको ताम्बूल भक्षण निषिद्धहै तासों ॥"विधवानां यतीनां च तांबूलं ब्रह्मचारिणाम् । एकैकं मांसतुल्यं स्यान्मिलितं मदिरासमम् ॥" सभागी कहे भाग्यवान् अर्थ अति वृद्ध युक्त अति वडे इति; श्रीफल कहे कदलीके जे पत्रहैं तेई जहां कांपत है यासों या जनायोकी सभागी तौ सब हैं ये और कोऊ काहू भयसों कंपत नहीं हैं औ सबै रामानुरागी हैं परन्तु रामा जो स्त्री हैं ताके अनुरागी नहीं हैं रामचन्द्रके अनुरागी हैं ॥३९॥

मू०—जहांवारिदैवृन्दवाजानिसाजै । मयूरजहांनृत्यकारीविराजैं ॥ भरद्वाजबैठे तहां विप्रमोहैं । मनोंएकहीवक्कलोकेशसोहैं ॥ ४० ॥ लक्ष्मण—दंडक ॥ केशोदासमृगजबछेरूचूपैंबाघिनीनचाटतसुरभिबाघबालकबदनहै । सिंहनकीसटाऐंचैंकलभकरनिकरिसिंहनकोआसनगयंदकोरदनहै । फणीकेफणनपरनाचतमुदितमोरक्रोधनविरोधजहांमदनमदनहै । बानरफिरतडोरडोरअंधतापशनिशिवकोसमाजकैधौंऋषिकोसदनहै ॥४१॥

टी०-तहां ता आश्रममों विप्रनके बीचमों बैठे अनेक इतिहासादि कहि विप्रनके मनको मोहतहैं इत्यर्थः लोकेश (ब्रह्मा) ॥४०॥मृग जव छेरू [मृगबालक] सटा [ग्रीवाके बार] डोरे डोरे कहे डोल डोल अंध तापस कहे बडे तपस्वी यासों वानरको ऋषिनके ताडनसों अति निर्भयता जनायो अथवा अंध कहे आंधरे जो तापस कहे तपस्वी हैं तिनके डोर कहे हाथको गहे अर्थ जहां जाइबेकी इच्छा करत हैं तहां वानर पठाइ आवतहैं, औ शिवके समाजमें मृगजवछेरू पदते चन्द्रमाके रथके हरिण जानौं अथवा और अनेक गणके मृगवाहन हैं यथा तुलसीकृत रामायणे "नानावाहननानावेषा। हरषेशिवसमाजनिजदेखा ॥" औ सुरभि पदते महादेवको वाहन वृषभ जानौं औ वाघबालक पदते काहू गणको वाहन वाघ जानौं औ सिंह पदते देवीको वाहन सिंह जानौं अथवा दूनों पदते सिंहही जानौं औ गयंदपदते गणेश जानौं औ फणी महादेव धारण करे हैं मोर स्वामिकार्त्तिकको वाहन है अंधतापस कहे तापस वेषधारी जे आंधरे गण हैं यथा तुलसीकृत रामायणे ॥ "विपुल नयन कोउ नयनविहीना॥"औ वानर पदते वानरमुखगण जानौ यथातुलसीकृतरामायणे। खरश्वानशूकरगृगालमुखगण वेषअगणित कोगनै। जैसे शिवके समाजमें स्वाभाविक विरोधी जीव अविरुद्ध रहत हैं तैसे आश्रमहूमें रहत हैं इति भावार्थः ॥ ४१ ॥

मू०-भुजंगप्रयातछन्द ॥ जहांकोमलैवल्कलैबाससोहैं । जिन्हैंअल्पधीकल्पसाषीबिमोहैं ॥ धरेशृंखलादुःखदाहैदुरंतै । मनोंशम्भुजीसंगलीनेअनंतै ॥ ४२ ॥

टी०--यामें आश्रमके ऋषिजननको वर्णन है जहां जा आश्रममें ऋषिनके कोमल वल्कलहीनके वस्त्र सोहत हैं परन्तु जिनको देखि अलपधी [लघुबुद्धि] अर्थ स्पर्द्धायुक्त है बुद्धि जिनकी ऐसे जे कल्पशाखी [कल्पवृक्ष] हैं ते विमोहैं. कहे मोहित होत हैं अथवा अलपकी धी कहे बुद्धिसों अर्थ हम इनसों लघु हैं या बुद्धिसों मोहत हैं केवल वचनहीसों एतो देत है जे तो कल्पवृक्षनहूंको मोह होत है कि हमहूं इनसम न भये; अथवा [कल्पसाक्षी] पाठ होइ तौ जिनको देखि अल्पकी धी करिकै अर्थ हम इनसों लघु हैं या बुद्धिसों कल्पासाक्षी जे कल्पांतयोनि [मार्कंडेय] आदि हैं ते मोहत हैं औ केवल शृंखला जो कठिन बंधन है ताको धारण करे हैं परन्तु दुरंत कहे बडे जे औरनके दुःख हैं तिनको दाहै कहे नाश करत हैं अर्थ ऐसे ऐसे आचार्य कृत्यनसों युक्त हैं । "शृंखला पुष्कटी वस्त्रबन्धे च निगडे त्रिषु इति मेदिनी ॥" महादेव, अनंत जे शेष हैं

तिनको संगमें लीन्हें हैं धारण करे हैं औ ऋषिजन अनंत जे भगवान हैं तिनके ध्यानसों अथवा कथन सों संगमें लीन रहते हैं ॥ ४२ ॥

मू०—मालिनीछंद ॥ प्रशमितरजराजैहर्षवर्षासमैसे । बिरलजठनशाखीस्वर्नदीकूलकैसे ॥ जगमगदरशाईसूरकेअंशु घेसे ॥ ४३ ॥ गहेकेजपाशैप्रियासीबखानों । कँपैशापकेत्रासते-गातमानों ॥ मनोंचंद्रमाचंद्रिकाचारुसाजैं । जरासोंमिलेयों-भरद्वाजराजैं ॥ ४४ ॥

टी०—फेरि कैसे हैं ऋषिजनसो कहत हैं वर्षासमयमें रज जो धूरि है सो प्रशमित कहे नष्ट राजाति है ऋषिनके रजोगुण सब ऋषि सत्त्वगुणी हैं इति भावार्थः स्वर्नदी [गंगा] के कूलको साखी [वृक्ष] विरल कहे प्रगट जटा जे जरे हैं तिनसहित हैं इहां स्वर्नदीकूलको साखी कहि अति पावन ताहू जनायो अथवा स्वर्नदी उपलक्षणमात्र है नदीमात्रके कूलको जानों नदीके प्रवाहके वेग-सों जरैं खुलि जाती हैं प्रसिद्ध है औ ऋषिजन जटा जे लग्न भये कच हैं तिन सहित हैं ॥ "जटा लग्नकचे मूले, इति मेदिनी ॥" सूरके अंशु [किरण] जगके जे मग [राह] हैं तिनके दरशाई [देखावनहार] हैं औ ऋषि यमलोकके जे ब्रह्म लोकादि स्वर्गलोक के यज्ञादि इत्यादि सब लोकनके मग दरशाई हैं राम नामके जपसों स्वर्ग नरकको भोग मिटत है मुक्ति होति है ऋषिजन ज्ञानोपदेश करि स्वर्ग नरकको भोग दूरि करि मोक्षको प्राप्त करत हैं औ जो सब चरणनके अंतमें सो, पाठ होइ तौ केवल भरद्वाजहीको वर्णन है ॥ ४३ ॥ जरा जो वृद्धता है सो भरद्वाजके केशपाश गहे है तासों प्रिया कहे अतिप्रिया स्त्रीसम बखानि-यत है प्रियाहु अतिप्यारसों धृष्टता करि पतिके केश गहति है सो केश गहिबो अनुचित समुझि ऋषि शाप न देहिं याही त्राससों मानों ताके गात कांपत हैं. जो कहो अंग तौ भरद्वाजके कांपत हैं वृद्धताके कैसे कह्यो तौ भरद्वाजके अंग-नमें मिले वृद्धताके अंग कांपत हैं ताहीसों भरद्वाजहूके अंग कांपत हैं काहेते भर-द्वाजके अंगनमें प्रथम कंप नहीं रह्यो तासों जानों चंद्रमम ऋषि हैं चंद्रिकासम शुक्ल जरा है अर्थ जरायुक्त शुक्ल बार हैं ॥ ४४ ॥

मू०—दोहा ॥ भस्मत्रिपुंडकशोभिजैं, वरणतबुद्धिउदार ॥ मनोत्रिस्रोतासोतद्युति, बंदतलगीलिलार ॥ ४५ ॥ भुजंगप्र-

यातछन्द ॥ मनोंअंकुरालीलसैसत्यकीसी । किधौंवेदविद्या प्रभाईभ्रमीसी ॥ रमैगंगकीज्योतिज्योंजह्नुनीकी । बिराजैसदाशोभदंतावलीकी ॥ ४६ ॥

टी०–त्रिस्रोता [गंगा] कहूं ''चंदति' पाठ है तहां या अर्थ कि त्रिस्रोताके सोतनकी द्युति लिलारमें लगी भरद्वाजको चंदति है अर्थ सेवति है ॥ ४५ ॥ सत्यको रंग श्वेत है प्रभा [शोभा] भ्रमी कहे भरद्वाजको मुखरूपी शुभस्थान पाइके आश्चर्ययुक्त ह्वै रहीहै अर्थ प्रसन्न ह्वै रहीहै ज्यों कहे जानां जन्हु ऋषिके मुखमें नीकी गंगाकी ज्योति रमति है जह्नु ऋषि गंगाको पान कियो है सो कथा प्रसिद्ध है ॥ ४६ ॥

मू०–गीतिकाछन्द ॥ भ्रुकुटीबिराजतिश्वेतमानहुँमंत्रअद्भुत सामके । जिनकेबिलोकतहीबिलातअशेषकर्मजकामके ॥ मुखबासआशप्रकाशकेशवभौंरभीरनसाजहीं । जनुसामके शुभस्वक्षअक्षरह्वैसपक्षबिराजहीं ॥ ४७ ॥ तनुकम्बुकण्ठत्रिरेखराजतिरज्जुसीउनमानिये । अविनीतइंद्रियनिग्रहीतिनके निबंधनजानिये । उपवीतउज्ज्वलशोभिजैउरदेखियोंबरणैसबै । सुरआपगातपसिंधुभेजसश्वेतश्रीदरशैअबै ॥ ४८ ॥

टी०–[सामवेद] काम जो कंदर्प है ताके जे कर्म हैं परस्त्री गमनादि तिनते ज कहे उत्पन्न जे वस्तु हैं अम (पातक) ते अशेष कहे संपूर्ण बिलात हैं अथवा काम जो हैं शुभ अशुभ अभिलाष तिनके जे कर्म हैं तिनते ज कहे उत्पन्न वस्तु हैं अर्थ स्वर्ग नरक भोग शुभ अभिलाषके कर्मनसों स्वर्गभोग उत्पन्न होतहैं, अशुभ अभिलाषके कर्मनसों नरक भोग उत्पन्न होत हैं, ते दुवौ बिलात हैं अर्थ जिनको देखि प्राणी स्वर्ग, नरकभोगसों भिन्न होत हैं अंतमें मुक्तिपावत हैं; प्रथम कह्यो है कि, स्वर्ग नरकहंतानामश्रीरामकैसो । औ सामके मंत्रके पुरश्चरणसों कामके कर्मज बिलात हैं इनके देखतही तासों अद्भुत कर्‌यो वास सुगंध ॥ ४७ ॥ कंबु सदृश कंठमें तनु सूक्ष्म त्रिरेख राजति है ताहि रज्जु कहे जेवरीसम अनुमानियत है सो जेवरी काहेके लिये है अविनीत कहे अशिक्षित अर्थ आज्ञा टारि अभिलषित बात कर्त्ता जे इंद्रिय नेत्रादि हैं तिनके निग्रही

कहे ताडन कर्त्ता अर्थ दुःखद निबंधन कहे बंधन है तपसिंधु (भरद्वाज) हैं सुरआपगा (गंगा) के तीनों सोतसम उपवीतके तीनों सूत्र हैं सिंधुमें मिलिबो नदीको धर्म है ॥ ४८ ॥

मू०—दोहा ॥ फटिकमालशुभशोभिजै, उरऋषिराजउदार ॥ अमलसकलश्रुतिवरणमय, मनोंगिराकोहार ॥ ४९ ॥ सुंदरीछंद ॥ यद्यपिहैरसरूपरस्यौतनु । दंडहिसोअवलंबितहैमनु ॥ धूमशिखानकेव्याजमनोंगुनि । देवपुरीकहँपंथरच्यौमुनि ॥ ५० ॥ रूपधरेबडवानलकोजनु । पोषतहैंपयपानहिंसोतनु ॥ क्रोधभुजंगममंत्रबखानहुँ । मोहमहातमकेरविमानहुँ ॥ ५१ ॥

टी०—श्रुतिवर्ण (वेदाक्षर) सम स्फटिक गुरिया हैं औ भरद्वाजकी वाणी (सरस्वती) डोरासम है अर्थ सरस्वतीमें गुहिकै मानों वेदाक्षरनहीकी माला पहिरे हैं ॥ ४९ ॥ वृद्धतासों चलिवेके लिये दंड लियेहैं तामें तर्क करतहैं कि ऋषिको तनुरूप रस पदते रूप, रस, गंध, शब्द, स्पर्श, पांचों इंद्रिनके पांचों विषय जानों तिनकरिकै कहे तिनकी वासना करिकै रह्यो कहे व्यै गयोहै रहित भयो है इति अर्थ वृद्धतासों नेत्रादि इंद्रिनसों रूपादि विषयकी वासना टरि गई है ताहूपर मानों दंडसों अवलंबित कहे युक्त है दंडपद श्लेष है दंड कहे निग्रह औ लकुट औ अग्निहोत्राग्निको आहुतिसों नित्यहीं प्रज्वलित कियो करत हैं तामें तर्क है कि धूमशिखा जो अग्नि है ताके व्याज मानों देवपुरीको पंथ (राह) बनायो है ॥ ५० ॥ पय (दुग्ध) औ (जल) ॥ ५१ ॥

मू०—सत्यसखाअसखाकलिकेजनु । पर्वतऔषधिसिद्धिनकेमनु ॥ पापकलापनकेदिनदूषण । देखिप्रणामकियोजगभूषण ॥ ५२ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ सीतासमेतशेषावतार । दंडवत कियेऋषिकेअपार ॥ नरवेषविभीषणजामवंत । सुग्रीवबालिसुतहनूमंत ॥ ५३ ॥ ऋषिराजकरीपूजाअपार । पुनिकुशलप्रश्न पूंछीउदार ॥ शत्रुघ्नभरतकुशलीनिकेत । नयमित्रन-

न्त्रिमातन समेत ॥ ५४ ॥ भरद्वाज ॥ कहकुशलकहौंतुम-आदिदेव। सबजानत हौसंसारभेव ॥ विधिविष्णुशंभुरविशशिउदार। सबपावकादिअंशावतार ॥ ५५ ॥ ब्रह्मादिसकल-परमाणुअंत। तुमहींहौरघुपतिअज अनंत ॥ अबसकलदान-देपूजिविप्र। पुनिकरहुबिजयबैकुंठक्षिप्र ॥ ५६ ॥

इतिश्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र
चंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यभरद्वाजाश्रमग-
मनंनामविंशःप्रकाशः ॥ २० ॥

टी०-सत्य कहे सत्ययुग औपधि सम जे आठों सिद्धि हैं तिनके पर्वत हैं जैसे पर्वतमें औपधी रहती हैं तैसे ऋषिमें आठों सिद्धि रहती हैं कलाप (समूह) जगभूषण [रामचंद्र] ॥ ५२ ॥ प्रथम दूरसों करनसों प्रणाम कियो यामें निकट जाइ दंडवत्प्रणाम कर्यौ ॥५३॥ पुनि कहे फिर ऋषिकी पूजा किये पर रामचंद्र कुशलप्रश्न पूछत भये ॥ ५४ ॥ अंशावतार कहे तुम्हारे अंशावतार हैं ॥ ५५ ॥ "जालांतरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः। तस्य षष्ठितमो भागः परमाणुः स उच्यते ॥" बिजय कहे हमारे इहां भोजन करौ बैकुंठ ! रामचन्द्रको संबोधन है ॥ "विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुंठो विष्टरश्रवाः इत्यमरः" ॥ ५६ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां
रामभक्तिप्रकाशिकायां विंशतितमः प्रकाशः ॥ २० ॥

मू०-दोहा ॥ इकईसयेंप्रकाशमें, कहऋषिदानविधान ॥ भरत मिलनकपिगुणनको, श्रीमुखआपबखान ॥ १ ॥ श्री-राम-सोमराजीछंद ॥ कहादानदीजै।सुकैभांतिकीजै॥ जहांहो-हिंजैसो। कहोविप्रतैसो ॥ २ ॥ भरद्वाज-दोहा ॥ सात्त्विक तामसराजसी, दानतीनिबिधिजानि ॥ उत्तममध्यमअधम पुनि, केशवदासबखानि ॥ ३ ॥ चंचरी छंद ॥ पूजियेद्वि-जआपनेकरनारिसंयुतजानिये। देवदेवहिथापिकैपुनिवेदमंत्र

बखानिये ॥ हाथलैकुशगोत्रउच्चरिस्वर्णयुक्तप्रमानिये । दान दैकछुऔरदीजहिदानसात्त्विकजानिये ॥ ४ ॥

टी०–॥१॥ कहा कहे कौन वस्तु कै भांति कहे कै प्रकारसों दान कीजै दान पदको संबंध याहूमों है ॥ २ ॥ ३ ॥ देवदेव जे विष्णु हैं तिनहिं स्थापिकै कहे तिनके अर्थ फल समर्पण करिकै अथवा ब्राह्मणको देवहि (विष्णुहि) थापिकै कहे मानिकै अथवा देवदेवकी स्थापना करिकै सुवर्णसों युक्त कुश हाथमें लैकै गोत्रको उच्चरिकै वेदके मंत्रसों दान फेरि कछू और दीजै अर्थ सांगतादान दीजै दानके बादि जो दान दियो जात है सो सांगतादान कहावतहै ॥ ४ ॥

मू०–दोधकछंद ॥ देहि नहींअपनेकरदानैं । औरकेहाथ जोमंगलजानै ॥ दानहिं देतजोआरसुआवै । सोवहराजसदानकहाव ॥ ५ ॥ बिप्रनदीजतहीनबिधानैं । जानहुँताकहँतामसदान ॥ बिप्रनजानहुँजैनररूपै । जानहुँयेसबविष्णुस्वरूपै ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ साचारो वा निराचारो साधुर्वासाधुरेव च । अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनुः ॥ ७ ॥ तोमरछंद ॥ द्विजधामदेहिं जो जाइ । बहुभाँतिपूजिसुराइ ॥ कछुनाहिंनैपरिमान । कहियेसोउत्तमदान ॥८ ॥ द्विजकोजोदेतबोलाइ । कहियेसोमध्यमराइ ॥ गुनियाचनामिसदानु । अतिहीनताकहँजानु ॥ ९ ॥

टी०–॥५॥विप्रनको जग रूपै कहे जगतके सदृशै जे कहे जनि जानहु ॥६॥ पाछे कह्यौ कि विप्रनको विष्णुस्वरूपै जानौं ताको विष्णु वाक्यसों पुष्ट करत हैं विष्णु कह्यो है कि ब्राह्मण कहे आचार सहित होइ और अर्थ सुगम है मामकी कहे हमारो तनु कहा है ॥ ७ ॥ ताकी उत्तमताको कछू प्रमाण नहीं है ॥ ८ ॥ अतिहीन कहे अधम ॥ ९ ॥

मू०–श्लोक ॥ अभिगम्योत्तमं दानमाहूतं चैव मध्यमम् । अधमं याच्यमानं स्यात्सेवादानं तु निष्फलम् ॥ १० ॥ दोहा ॥

प्रतिदिनदीजतनेमसों, ताकहँनित्यबखान ॥ कालहिपाइजो दीजिये, सोनैमित्तिकदान ॥ ११ ॥ श्लोक ॥ आश्रितं साधु कर्माणं ब्राह्मणं यो व्यतिक्रमेत् । तस्य पुण्यचयोप्याशु क्षयं याति न संशयः ॥ १२ ॥ तोटकछंद ॥ पहिलेनिजवर्तिनदेहु अबै । पुनिपावहिंनागरलोगसबै ॥ पुनिदेहुसबैनिजदेशिनको उबरोधनदेहुबिदेशिनको ॥ १३ ॥ दोधकछंद ॥ दानसकाम अकामकहेहैं । पूरिसबैजगमांझरहेहैं॥इच्छितहीफलहोतसकामैं । रामनिमित्ततेजानिअकामैं ॥ १४ ॥

टी०-अभिगम्य कहे ब्राह्मणके घरमें जाइकै जो दान है सो उत्तम है औ आहूत कहे ब्राह्मणको बोलायकै जो दान है सो मध्यम है औ याच्यमान कहे जब ब्राह्मण मांगै आइ तब जो दान है सो अधम है औ सेवादान कहे जब ब्राह्मण सेवा करै तब जो दान है सो निष्फल है अर्थ वामें कछू पुण्य नहीं है ॥ १० ॥ काल पाइ अर्थ चन्द्र सूर्य ग्रहणादि समयमों ॥ ११ ॥ अपनो आश्रित जो साधुकर्मा ब्राह्मण है ताको जो व्यतिक्रमेत् कहे व्यतिक्रम करत है अर्थ तिन्हैं छोडि औरको दान देत है ताको पुण्यचय कहे पुण्यसमूह आशु कहे शीघ्र ही "क्षयं याति" कहे क्षयको प्राप्त होता है यामें संशय नहीं अपि शब्दते या जनायो कि थोरी पुण्य तौ क्षयको प्राप्त होतिही है ॥ १२ ॥ आश्रितको व्यतिक्रम न कियो चाहिये तासों पहिले निज कहे आपने वर्ती कहे आश्रितनको देहु औ "निजवृत्तिन" पाठ होइ तौ निज कहे आपने इहां है दानहीसों वृत्ति कहे जीविका जिनकी नागर कहे नगरवासी ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०-दानतेदक्षिणबामबखानों । धर्मनिमित्ततेदक्षिणजानों ॥ धर्मबिरुद्धतेबामशुनौजू । दानकुदानसबैतेसुनौजू १५॥ देहुसुदानतेउत्तमलेखो । देहुकुदानतिन्हैंजनिदेखो ॥ छांडिसबै दिनदानहिं दीजै । दानहितेसबकेमतलीजै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ केशवदानअनंतहैं,बनैंनकाहूदेत ॥ यहैजानिभुवभूपसब, भूमि दानहीदेत ॥ १७॥ श्लोक ॥ यत्किंचित्कुरुते पापं ज्ञानतोज्ञा-

नतोपि वा ॥ अपि गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन शुध्यति ॥१८॥ सप्तहस्तेनदंडेनत्रिंशद्दंडैर्निवर्तनम् । दश तान्येव गोचर्म दत्त्वा स्वर्ग महीयते ॥ १९ ॥ अन्यायेन कृता भूमिर्यैर्नरैरपहारिता। हरंतो हारयंतश्च हन्यते सप्तमं कुलम् ॥ २० ॥ राम-दोहा ॥ कौनहिदीजैदानुभुव, हैंऋषिराजअनेक ॥ देहुसनाढ्यनआदि दै, आयेसाहितविवेक ॥ २१ ॥ श्रीराम--उपेंद्रवज्राछन्द ॥कहौ भरद्वाजसनाढ्यकोहैं । भयेकहांतेसबमध्यसोहैं ॥ हुतेसबैबिप्रप्रभावभीने । तजेतक्यौंयेअतिपूज्यकीने ॥ २२ ॥

टी०-मारणोच्चाटनादिके लिये जो दान है सो धर्मविरुद्ध जानौ अथवा वेश्यादिके अर्थ दान ॥ १५ ॥ सबके मीमांसकादिकनके मत कहे सम्मत अर्थ सम्मत फलको लीजै कहे पाइयत है अर्थ मीमांसकादिकनको मत है कि यज्ञादिसों ऐहिक पारलौकिक फल होत है सो सब फल दाननहीसों पाइयत है तासों सबको यज्ञादिकनको छोडिकै दिनप्रति दानहीको दीजै ॥ १६ ॥ १७ ॥ यत्कहे जो ज्ञानतः कहे जानिकै अज्ञानतः कहे विनजाने कोऊ प्राणी किंचित्कह कछु पापं कहे पाप जो है ताहि कुरुते कहे करत है, सो प्राणी गोचर्ममात्रेण भूमिदानेन कहे गोचर्ममात्र भूमिदान करत संते शुद्ध होत है अपि शब्दको अर्थ यह कि अधिक भूमिदान करै तासों तौ शुद्ध यामें गोचर्मको लक्षण कहत हैं ॥१८॥ सप्तहस्तेन दंडेन कहे सात हाथके दंडकरिकै त्रिंशद्दंडैःकहे तीसदंड करत संतेनिवर्तन संज्ञक भूमिक्षेत्र होत है हस्तप्रमाण दुइसैदश औ दश तान्येव कहे तेई निवर्त्तनहीं एक गोचर्म संज्ञक क्षेत्र होत है हस्तप्रमाण इकीससै २१०० सो गोचर्म प्रमाणहूं भूमिको दत्त्वा कहे दैकै स्वर्ग कहे स्वर्गको महीयते कहे जात है ॥ १९ ॥ यैर्नरः कहे जिन नरन करिकै अन्यायेन कहे न्याव विनाही भूमिहृता कहे हरि गई औ जिन नरन करिकै अपहारिता कहे हराई गई ता भूमि करिकै हरंतःकहे हरनहार औ हारयंतः [हरावनहार] ते हन्यते कहे पीडाको प्राप्त होत हैं अर्थ सो भूमि तिनको पीडा करती है औ "तेषां सप्तमं कुलमपि हन्यते" अर्थ ताही भूमि करिकै तिनके सातपुरत पर्यंत पितर पीडाको प्राप्त होत हैं अर्थ जे दानकी भूमिको निर्दोष ठौरत हैं औ वृथापवाद करि छोरावत हैं सो भूमि तिनको औ तिन हुतनके सप्तपुरत पर्यंत पितरनको पितृलोकमें पीडा करति है ॥ २० ॥ ऋषि कहौ सनाढ्यनको

दान देहु काहेते इन सनाढ्यनको आदिही सों अस अर्थ जबसों इनकी उत्पत्ति है तबहीसों तुम विवेक सहित दै आये हौ ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०-भरद्वाज ॥ गिरीशनारायणपैसुनीत्यों । गिरीशमोसों जो कहीकहौंत्यों ॥ सुनोसोसीतापतिसाधुचर्चा । करीसोजाते तुमब्रह्मअर्चा ॥ २३ ॥ नारायण-मोटनछंद ॥ मोतेजलनाभिसरोजवढ्यो । ऊंचोअतिउग्रअकाशचढ्यो ॥ तातेचतुराननरूपरयो ॥ ब्रह्मायहनामप्रगट्टभयो ॥२४॥ ताकेमनतेसुत चारिभये । सोहैंअतिपावनवेदमये ॥ चौहूंजनकेमनतेउपजे । भुवदेवसनाढ्यतेमोहिंभजे ॥ दीन्हौतुमहीतिनजोहितजू ॥ ह्वै हौ तुमब्रह्मपुरोहितजू ॥ २५ ॥

टी०-गिरीश (महादेव) जाति कहे जाकारणते तुम ब्रह्म अर्चा कहे सनाढ्य ब्राह्मणनकी पूजा करी है अथवा ब्रह्म जे तुम हौ ते सनाढ्यनकी अर्चा आदिहीसों करी है ॥ २३ ॥ २४ ॥ यह छंद छह चरणको है चारि सुत सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार वेदमये कहे वेदस्वरूप ये नारायणके वचन शिव प्रति हैं तिन्हें कहिके द्वै चरणनमों भरद्वाज रामचन्द्रसों कहत हैं कि हे रामचन्द्र ! नारायणरूप जे तुम हौ तिनहीं तिनको हितसों यह वचन दियो है वचन इतिशेषः ॥ कि तुम ब्रह्म कहे परब्रह्मके पुरोहित ह्वै हौ ॥ २५ ॥

मू०-गौरीछंद ॥ तातेऋषिराजसबैतुमछांडो । भूदेवसनाढ्यनकेपदमांडो ॥ दीन्होतुमहीतिनकोबरुरूरे । चौहूंयुगहोहुतपोबलपूरे ॥ २६ ॥ उपेंद्रवज्राछन्द ॥ सनाढ्यपूजाअघओघ हारी । अखंडआखंडललोकधारी । अशेषलोकावधिभूमिचारी । समूलनाशेनृपदोषकारी ॥ २७ ॥ श्रीराम-तोटकछंद ॥ हनुमन्तबलीतुमजाहुतहां । मुनिवेषभरत्थबसंतजहां ॥ ऋषिकैहमभोजनआजुकरैं । पुनिप्रातभरत्थहिंअंकभरैं ॥२८॥ चतुष्पदीछंद ॥ हनुमंतविलोकेभरतसशोकेअंगसकलमलधारी । बकलापहिरेतनशीशजटागणहैंफल-

मूलअहारी ॥ बहुमंत्रिनगणमें राजकाजमेंसबसुखसोहित-तोरे । रघुनाथपादुकातनमनप्रभुकारिसेवतअंजुलिजोरे ॥२९॥

टी०—ब्रह्मपुरोहित होबेको इन्हैं तुम्हारोई वर है औ तुम ब्रह्म हौ ताते कहे ता हेतुते ॥ २६ ॥ अखंड कहे पूर्ण आखंडललोकधारी कहे इन्द्रलोककी धरण हारी है जो कोऊ सनाढचनकी पूजा करत है ताको पूर्ण इंद्रलोक देतिहै इति भावार्थः अशेषलोकावधि कहे चौदहौं लोक पर्यन्त जो भूमि कहे स्थान हैं तिनमें चारी कहे गमनकारी है अर्थ चौदहौंलोकमें सनाढचनकी पूजा सब करत है अथवा चौदहौंलोकनमें नैनमारग, श्रवणमारग ह्वै गमन करति हैं अथ चौदहौं लोकनमें विदित है ॥ २७ ॥ बीसयें प्रकाशमें भरद्वाज कह्यो है कि अब करहु बिजय वैकुंठ छिप्र या प्रकार निमंत्रण दियो है तासों रामचन्द्र हनूमानसों कहत हैं कि आज ऋषिको निमंत्रण है तासों ऋषिके इहां भोजन करि प्रात भरतपास नन्दिग्राममें आइ हैं ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०—हनुमान ॥ सबशोकनिछाडौभूषणमांडौकीजेविविधि बधाये । सुरकाजसँवारेरावणमारेरघुनन्दनघरआये ॥ सुग्री-वसुयोधनसहितबिभीषणसुनहुँभरतशुभगीता । जयकीरति ज्योंसँगअमलसकलअँगसोहतलक्ष्मणसीता ॥ ३० ॥ पद्ध-टिकाछंद ॥ सुनिपरमभावतीभरतबात ।भयेसुखसमुद्रमैंमगन गात ॥ यह सत्यकिधौंकछुस्वप्नईश । अबकहाकह्योमोसन कपीश ॥ ३१ ॥ जैसेचकोरलीलेअँगार । त्यहिभूलिजाति सिगरीसँभार । जीउठतउबतज्यौंउदधिनंद । त्योंभरतभये सुनिरामचन्द्र ॥ ३२ ॥ ज्यों सोइरहतसबशूरहीन । अतिह्वै अचैतयद्यपिप्रबीन॥ ज्यों उबत उठतहँसिकरतभोग त्यों राम चन्द्रसुनिअवधिलोग ॥ ३३ ॥ मालिनीछंद ॥ जहँतहँगज-गाजैंदुंदुभीदीहबाजैं । बहुबरणपताकास्यंदनाश्वादिराजैं ॥ भरतसकलसेनामध्ययोंवेषकीने । सुरपतिजनुआये मेघमा-लानिलीने ॥ ३४ ॥ सकलनगरवासीभिन्नसेनानिसाजैं ।

रथसुगजपताकाझुंडझुंडानिराजैं ॥ थलथलसब शोभैंशुभ्र शोभानिछाई। रघुपतिसुनिमानोंऔधिसीआजआई ॥ ३५॥ चामरछंद ॥ यत्रतत्रदासईशव्योमतेविलोकहीं। बानरालिरीछराजिदृष्टिसृष्टिरोकहीं। ज्योंचकोरमेघओघमध्यचंद्रलेखहा। भानुकेसमानजानत्योंविमानदेखहीं ॥३६॥ मदनमनोहरदंडक ॥ आवतबिलोकिरघुबीरलघुबीरतजिव्योमगतिभूतलबिमानतबआइयो। रामपदपद्मसुखसद्मकहँबंधुयुगदौरितबषटमदसमानसुखपाइयो ॥चूमिमुखसूँघिशिरअंकरघुनाथधरिअश्रुजललोचननिपेखिउरलाइयो। देवमुनिवृद्धपरसिद्धसबसिद्धजनहर्षितनपुष्पवर्षानिबरषाइयो ॥ ३७ ॥

टी०-मॉडौ कहे पहिरौ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ उदधिनंद (चन्द्रमा) ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ स्यंदन (रथ) अश्व (घोडे] आदि पदते पालकी आदि और जानौं ॥ ३४ ॥ थल थलमें सकल नगरवासी कैसे शोभित हैं कि अनेक प्रकारके भूषण वस्त्रादिकी शोभानसों छायो रघुपतिको आगमन इतिशेषः सुनिकै मानों अवधपुरीहीसी आई है ॥ ३५ ॥ वानरनकी आलि कहे पंक्ति औ ऋक्षन की राजि पंक्ति है सो पुरवासिनकी दृष्टिकी जो सृष्टि कहे ताको रोकति है अर्थ आगे वानर ऋक्ष उडत आवत हैं तासों रामचंद्र नहीं देखि परत भानु कहे सूर्यरूपी जो यान कहे वाहे वाहन हैं तामों चढ्यो चंद्रमाको जैसे मेघ ओघ कहे मेघ समूहमें चकोर लेखै ताही विधि भानु (सूर्य) सम जान [पुष्पक] में रामचन्द्रको वानरनके मध्यमें पुरवासी देखत हैं यामें [अभूतोत्प्रेक्षा] है दूसरो अर्थ सुगम है ॥ ३६ ॥ अंक कहे गोदमें धरि लियो कहे बैठारि लियो फेरि लोचननमें अश्रु देखि अति प्रीतिसों उरमें लाइ लियो ॥ ३७ ॥

मू०-दोहा ॥ भरतचरणलक्ष्मणपरे, लक्ष्मणकेशत्रुघ्न ॥ सीतापगलागतदियो, आशिषशुभशत्रुघ्न ॥ ३८ ॥ मिलैभरतअरुशत्रुहन, सुग्रीवहिअकुलाइ ॥ बहुरिबिभीषणकोमिले, अंगदकोसुखपाइ ॥ ३९ ॥ आभीरछंद ॥ जामवंतनलनील। मिलेभर

तशुभशील॥गवयगवाक्षगयंद । कपिकुलसबसुखकंद ॥४०॥ ऋषिवशिष्ठकोदेखि । जन्मसफलकरिलेखि ॥ रामपरेउठिपाय लक्ष्मणसहितसुभाय ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ लैसुग्रीवबिभीषणहिं, करिकरिबिनयअनंत ॥ पाँयनपरेवशिष्ठकेकबिकुलबुधिबलवं- त ॥ ४२ ॥ श्रीराम–पद्धटिकाछंद ॥ सुनिजैवशिष्ठकुलइष्टदे- व । इनकपिनायककेसकलभेव ॥ हमबूड़तहैंबिपदासमुद्र । इन राखिलियोसंग्रामरुद्र ॥ ४३ ॥

टी०–जब भरत शत्रुघ्न सीताके पद लागे तब सीताजू आशिष दियो कि शत्रुघ्न कहे शत्रुनको मारौ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ कपिनायक (सुग्रीव) संग्राममें रुद्र कहे भयंकर ॥ ४३ ॥

मू०–सबआसमुद्रकीभूशोधाइ । तबदईजनकतनयाबताइ ॥ निजभाइभरतज्योंदुखहरण । अतिसमरअमरहत्यो कुँभक- रण ॥ ४४ ॥ इनहरेविभीषणसकलशूल । मनमानतहौंशत्रुघ्न तूल ॥ दशकंठहनतसबदेवसाखि । इनलियेएकहनुमंतराखि ॥ ॥ ४५ ॥ तजितियसुतसोदरबंधुईश । मिलेहमहिंकायमनबच ऋषीश ॥ दईमीचुइन्द्रजितकीबताय । अरुमंत्रजपतरावणदे- खाय ॥ ४६ ॥ तोटकछंद ॥ इनअंगदशत्रुअनेकहने । हम- हेतुसहेदिनदुःखघने ॥ बहुरावणकोसिखहीदुखलै । पुनिआये भलेसियभूषणलै ॥ ४७ ॥

टी०–शोधाइ कहे ढुंढाइके कुंभकर्णको तो रामचन्द्रही मारयो है परंतु कुंभ- कर्णकी नासा, श्रवण, प्रथम सुग्रीव काटि लियो है ताही समयमें रामचन्द्र मारयो है ताको मारिबो सुग्रीव ही पर स्थापित करत हैं अमर कहे काहूके मारिबे लायक नहीं ॥ ४४ जब मेघनाद ब्रह्मपाशमें हनुमानको बांधि लैगयो है तब रावण हनूमानके वध करिवेकी आज्ञा राक्षसनको दियो है तब विभीषण "दूत मारिये न राज छोडि दीगई" ऐसे वचन कहि हनूमानको बचायो है सो कथा चौदहें प्रकाशमां है ॥ ४५ ॥ सोदर [कुंभकर्ण] बंधु [ज्ञातिसमूह] ईश-

रावण के मंत्र जपत समय अंगदादि गये हैं ता समय विभीषणके कछू वचन नहीं हैं तौ इहां रामचन्द्रकी उक्तिसों जानो विभीषणहीके बतायेमों अंगदादि गये हैं ॥ ४६ ॥ हम हेतु कहे हमारे हेतु ॥ ४७ ॥

मू०-दशकंधकेजायजोगूढ़थली । तिनकेतनसोंबहुभांति दली ॥ महिमैंमयकीतनयाकर्षी । मतिमारिअकंपनकोहर्षी ॥ ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ मारयोमैंअपराधबिन, इनकोपितुगुणग्राम ॥ मनसावाचाकर्मणा, कीन्हेमेरेकाम ॥ ४९ ॥ गीतिकाछंद ॥ इनजा-मवंतअनेकराक्षसलक्षलक्षनहींहने । मृगराजज्यौंबनराजमैंग-जराजमारतनींगने ॥ बलभावनाबलवानकोटिकरावणादिकहा-रहीं । चढ़िव्योमदीहबिमानदेवदिवानआनिनिहारहीं ॥ ५० ॥ दोहा ॥ करैनकरिहैकरतअब, कोऊऐसोकर्म ॥ जैसेबांध्योनल उपल, जलनिधिसेतुसधर्म ॥ ५१ ॥ गीतिकाछंद ॥ हनुमन्त येजिनमित्रतारविपुत्रसोंहमसोंकरी । जलजालकालकरालमा-लउफालपारधराधरी ॥ निश्शंकलंकनिहारिरावणधामधामनि धाइयो । यकबाटिकातरुमूलसीनहिंदेखिकैदुखपाइयो ॥ ५२ ॥

टी०-गूढस्थली [जयस्थान] तिनके अंगदके तनसों कर्षी कहे खैंची कठोरि इति औ अकंपनको मारिकै इनकी मति हर्षि (प्रसन्न) भई ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ लक्षलक्षनहीं अर्थ एक एक बारमें लाख लाख मारयोहै बनराज कहे बडो वन बलभावता कहे बलक्रिया हारही कहे हारत भये यहां भूतार्थमों वर्त्तमान प्रत्ययको अर्थ है ॥ ५० ॥ उपल (पाषाण) सधर्म कहे यथोचित ॥ ५१ ॥ कालहूते कराल जे नक्रादि जंतु हैं तिनको है माल कहे समूह जामें ऐसो जो जलजाल कहे समुद्रको जलसमूह है ताके पारकी धरा पृथ्वीको उफाल कहे कूदिबो ताही सों धरी कहे प्राप्त भये अर्थ एतो बडो समुद्र ताके पार कूदिही कै गये काहू पोतादिमें नहीं गये इति भावार्थः ॥ ५२ ॥

मू०-तरुतोरिडारिप्रहारिकिंकरमंत्रिपुत्रसँहारियो । रणमारि अक्षकुमाररावणगर्वसोंपुरजारियो । पुनिसौंपिसीतहिंमुद्रिका-

मणिशीशकीजबपाइयो । बलवन्तनांघिअनंतसागरतैसही फिरिआइयो ॥ ५३ ॥ दशकंठदेखिबिभीषणैरणब्रह्मशक्तिचलाइयो । करिपीठित्यौंशरणागतैतबआपवक्षसिलाइयो । एक यामयामिनिमैंगयोहतिदुष्टपर्बतआनिकै । त्यहिकाललक्ष्मण कोजिआइजियाइयोहमजानिकै ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ अपने प्रभुकोआपनो, कियोहमारोकाज ॥ ऋषिजुकहौहनुमंतसों, भक्तनकोशिरताज ॥ ५५ ॥ चामरछन्द ॥ बीरधीरसाहसी बलीजेबिक्रमीक्षमी । साधुसर्वदासुखीतपीजपीजेसंयमी ॥ भोगभागयोगयागवेगवन्तहैंजिते । वायुपुत्ररामकाजवारिडारियेतिते ॥५६॥ दोहा ॥ सीतापाईरिपुहत्यो, देख्योतुमअरुगेहु रामायणजपसिद्धिको, कपिशिरटीकादेहु ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ यहिबिधिकपिकुलगुणनको, कहतहुतेश्रीराम ॥ देख्योआश्रम भरथको, केशवनन्दीग्राम ॥ ५८ ॥

टी०—अनंत कहे वडो ॥ ५३ ॥ दुष्टपदते कालनेमि जानो लक्ष्मणको जियाइ हम कहे हमैं जिआयो लक्ष्मणके मरे राम न जी हैं यह जानिकै ॥ ५४ ॥ सब भक्तनके शिरताज एई हैं इति भावार्थः ॥ ५५ ॥ विक्रमी (उपायी) भाग कहे (भाग्य) वतुप्रत्ययांतः भोगादिपांचौं शब्द जानौ राजकाजमें वायुपुत्र पर इत्यादिकन (वीरादिकन) को सबन वारि डारियत है अर्थ जो रामकाज वायुपुत्र सॅवारचो है सो इन वीरादिकनको काहूको सॅवारचो न सॅवरतो ॥ ५६ ॥ रामायण कहे रामकथा ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

मू०—सुन्दरीछंद ॥ पुष्पकतेउतरेरघुनायक ॥ यक्षपुरीपठये सुखदायक ॥ सोदरकोअवलोकितपोथलु । भूलिरह्योकपिराक्षसकोदलु ॥ ५९ ॥ कंचनकोअतिशुद्धसिंहासन । रामरच्यो त्यहिऊपरआसन ॥ कोपरहीरनकोअतिकोमल । तामहँकुंकुमचन्दनकोजल ॥६०॥ दोहा ॥ चरणकमलश्रीरामके, भरत

पखारेआप ॥ जातेगंगादिकनको, मिटतसकलसंताप ॥ ६१ ॥ पंकजबाटिकाछंद ॥ सूरजचरणबिभीषणकेअति । आपुहिभरतपखारिमहामति ॥ दुन्दुभिधुनिकरिकैबहुभेवनि । पुष्पवरषिहरषेदिविदेवनि ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ पीछेदुरिशत्रुघ्नसन, लक्ष्मणध्वायेपाइ ॥ चरणसौमित्रिपखारियो, अंगदादिकेआइ ॥ ॥ ६३ ॥ तोमरछन्द ॥ शिरतेजटानिउतारि । अँगअंगराग निधारि ॥ तनभूषिभूषणवस्त्र । कटिसोंकसेसबशस्त्र ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ शिरतेपावनपादुका, लेकरिभरतविचित्र ॥ चरणकमलतरहरिधरी, हँसिपाहिरीजगमित्र ॥ ६५ ॥

टी०–यक्षपुरी कुबेरपुरी ॥ ५९ ॥ कोमल कहे चिक्कण ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ सौमित्रि शत्रुघ्न ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ तरहरि कहे तरे ॥ ६५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यनंदिग्रामप्रवेशोनामैकविंशतितमःप्रकाशः ॥ २१ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकायामेकविंशतितम. प्रकाशः ॥ २१ ॥

मू०–दोहा ॥ याबाइसेंप्रकाशमें, अवधपुरीहिप्रवेश ॥ पुरवासिनमातानिसों, मिलिबोरामनरेश ॥ १ ॥ सुन्दरीछंद ॥ अवधपुरीकहँरामचलेजब । ठौरहिठौर बिराजतहैंसब ॥ भरत भयेशुभसारथिशोभन । चमरधरेरविपुत्रबिभीषन ॥ २ ॥ तोमरछंद ॥ लीनीछंरीदुहुंबीर । शत्रुघ्नलक्ष्मणधीर ॥ टारैंजहां तहँभीर । आनन्दयुक्तशरीर ॥ ३ ॥ दोधकछंद ॥ भूतलहूदिविभीरबिराजैं । दीहदुहूंदिशिदुन्दुभिबाजैं ॥ भाटभलेबिरदावलिगावैं । मोदमनोंप्रतिबिम्बबढावैं ॥ ४ ॥ भूतलकीरज

देवनशावैं । फूलनकीबरषाबरषावैं ॥ हीननिमेषसबैअवलो-कैं । होडपरीबहुधाहुहुँलोकैं ॥ ५ ॥

टी०–॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ देवतनके प्रतिबिंब सम अवधवासी अवधवासिनके प्रतिबिंब सम देवता मोद बढावत हैं अर्थ जो आनंद क्रिया हास्यादि अवधबासी करत हैं सोई देवता करत हैं ॥ ४ ॥ होड कहे वहस मानो अवधबासी वहस करि देवता लोकको धूरि उडावत हैं औ देवता ता धूरिको फूलनकी अति वृष्टि करि नशाइ देते हैं अर्थ दवाइ लेते हैं औ देवता तो अनिमेषही हैं औ रामचन्द्रके दर्शनमें अवधबासिनहूंकी पलक नहीं लागत सो मानों परस्पर होड किये हैं कि देखिये धौं काकी पलक लागति हैं यामें (असिद्ध विषय हेतूत्प्रेक्षा) है ॥ ५ ॥

मू०–तारकछंद ॥ सिगरेदलऔधपुरीतबदेखी । अमराव-तितेअतिसुन्दरलेखी ॥ चहुंओरबिराजतिदीरघखाई । शुभ देवतरंगिनिसीफिरिआई ॥ ६ ॥ अतिदीरघकंचनकोटबिरा-जैं । मणिलालकँगूरनकीरुचिराजैं ॥ पुरसुन्दरमध्यलसैछबि छायो । परिवेषमनोरबिकोफिरिआयो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ बिबि-धिपताकाशोभिजैं, ऊंचेकेशोदास ॥ दिविदेवनकेशोभिजैं, मानहुँव्यजनबिलास ॥ ८ ॥ बिजयछंद ॥ चढ़ीप्रतिमंदिर शोभबढ़ीतरुणीअवलोकनकोरघुनन्दनु । मनोंगृहदीपतिदेह धरेसुकिधौंगृहदेविबिमोहतिहैमनु ॥ किधौंकुलदेविदियेअति केशवकैपुरदेविनकोहुलस्योगनु । जहीं सोतहींयहिभांतिलसैं दिविदेविनकोमदघालतिहैमनु ॥ ९ ॥

टी०–देवतरंगिनी (गंगा) सम कह्यो तासों विमल जल युक्त जानो ॥ ६ ॥ रविसम अयोध्यापुरी है परिवेष सम कंचनकोट है ॥ ७ ॥ व्यजन (पंखा) ॥ ॥ ८ ॥ अपनी सुन्दरतादि देखाइ देविनकी सुन्दरतादिको मद दूरि करती हैं अवधपुरीकी स्त्री देविनहूंसो अधिक सुंदरी हैं इति भावार्थः ॥ ९ ॥

मू०–दोहा ॥ अतिऊंचेमंदिरनपर, चढीसुन्दरीसाधु ॥ दि-विदेवनकोकरतिहैं, मनुआतिथ्यअगाधु ॥१०॥ तोटकछंद ॥

नरनारिभलीसुरनारिसबै । तिनकोऊपरैपहिंचानिअबै ॥
मिलिफूलनकीबरषैंबरषा । अरुगावतिहैंजयकेकरषा ॥११॥
पद्मावतीछंद ॥ रघुनन्दनआयेसुनिसबधायेपुरजनजैसेतैसे॥
दर्शनरसभूलेतनमनफूलेबरणेजाहिनजैसे ॥ पतिकेसँगनारी-
सबसुखकारीरामहियोहगजोरी । जहँतहँचहुँओरनिमिलीझ-
कोरनिचाहतिचन्दचकोरी ॥ १२ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ बहुभां-
तिरामप्रतिद्वारद्वार । अतिपूजतलोगसबैउदार ॥ यहिभांति-
गयेनृपनाथगेह । युतसुन्दरिसोदरस्योसनेह ॥ १३ ॥ दोहा॥
मिलेजायजननीनकों, जबहीश्रीरघुराइ ॥ करुणारसअद्भुत
भयोमोपैकह्योनजाइ ॥ १४ ॥ सीतासीतानाथजू, लक्ष्मण
सहितउदार । सबनमिलेसबकेकिये, भोजनएकहिबार ॥१५॥

टी०-अति सुंदर रूप आतिथ्यसम है ॥ १० ॥ यासों या जनायो कि जेती दूरि देविनको बिमान है तेतेई ऊंचे अवध वासिनके गृह हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥ नृपनाथ (दशरथ) ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०-सोरठा ॥ पुरजनलोगअपार, यहईसबजानतभये ॥
हमहींमिलेअगार,आयेप्रथमहमारेही ॥१६॥ मदनहराछंद ॥
सँगसीतालक्ष्मणश्रीरघुनन्दनमातनकेशुभपाइपरेसबदुःखह-
रे॥ आँसुनअन्हवायेभागनिआयेजीवनपायेअंकभरेअरुअंक-
धरे ॥ तेबदननिहारैंसरबसुवारैंदेहिंसबैसबहीनघनोअरुलेहिं-
घनो । तनमनन्नसँभारैंयहैबिचारैंभागबडोयहहैअपनोकिधौं-
हैसपनो ॥ ॥ १७ ॥ स्वागताछन्द ॥ धामधामप्रतिहोति-
बधाई । लोकलोकतिनकीधुनिधाई ॥ देखिदेखिकपिअद्भुत-
लेखैं । जाहियत्रतित रामहिंदेखैं ॥ १८ ॥ दौरिदौरिकपिराव-

रआवैं । बारबारप्रतिधामनिधावैं ॥ देखिदेखितिनकोंदैतारी । भांतिभांतिबिहसैंपुरनारी ॥ १९ ॥

टी०—॥ १६ ॥ रामचन्द्रजू भागनसों आये तासों मातन जीवन समपाये सो अंकमें भरे कहे अति प्रेमसों छातीमें लगाये फेरि अंक जो गोद है तामें धरे कहे बैठारे तब आनंदाश्रुनसों सीता राम लक्ष्मणको अन्हवाये औ ते सबै कौशल्यादि माता रामादिके बदन निहारती हैं औ तिनपर सर्वस्व वारि वारि सबको अर्थ याचक नेगिनको देती हैं औ तिन याचकनसों आशीर्वाद करि घनो लेती हैं पावती हैं अर्थ याचक आशीर्वाद देते हैं कि जो हमको तुम दियो ताको कोटि गुणित तुम्हारे होय अथवा रामादिके बदन दर्शनहीसों घनो लेती हैं पावती हैं अर्थ मुखदर्शन करि घनो पायो सम मानती हैं ॥ १७ ॥ १८ ॥ रावर (स्त्री भवन) ॥ १९ ॥

मू०—श्रीराम—दोहा ॥ इनसुग्रीवविभीषणै, अंगदअरुहनुमान ॥ सदाभरतशत्रुघ्नसम, माताजीमैंजान ॥ २० ॥ सुमित्रा—सोरठा ॥ प्राणनाथरघुनाथ, जियकीजीवनमूरिहौ॥लक्ष्मणहेतुमसाथ, क्षमियहुचूकपरीजोकछु ॥ २१ ॥ राम-दंडक ॥ पौरियाकहौं कि प्रतीहारकहौंकिधौंप्रभुपुत्रकहौंमित्रकिधौंमंत्रीसुखदानिये । सुभटकहौंकिशिष्यदासकहौंकिधौंदूतकेशोदासहाथकोहथ्यारउरआनिये । नैनकहौंकिधौंतनमनकिधौं तन त्राण बुद्धिकहौंकिधौंबलबिक्रमबखानिये । देखिबेकोएकहैंअनेक भांतिकीन्हीसेवालक्ष्मणकेमातकौनकौनगुणगानिये ॥ २२ ॥

टी०—॥ २० ॥ २१ ॥ पौरियाजो मुख्यद्वारकी रक्षामें रहते हैं प्रतीहार जो राजसभाद्वारमें सुवर्णादिको दंडलै ठाढो रहत है बल जोर विक्रम यत्न ये सब एक एक आपनो आपनो कार्य करि सुख देत हैं सो लक्ष्मणन जहां जाको काज लाग्यो है तहां ताही विधि तौन काज करि हमको परम सुख दीन्हो है ॥ २२ ॥

मू०-मोटनकछंद ॥ शत्रुघ्नबिलोकतरामकहैं ॥ डेरानिस जौजहँसुःखलहैं ॥ मेरेवरसंपतिगुक्तसबै । सुग्रीवहिंदेहुनिवास अबै ॥ २३ ॥ साजेजोभरत्थसबैधनको । राखौतहँजाइबिभीषणको ॥ नैऋत्यनकोकपिलोगनको । राखौनिजधामनिभोगनको ॥ २४ ॥ दोहा ॥ एकएकनैऋत्यको, जितनेवानरलोग । आगेहीठाढेरहत, अमितइंद्रकेभोग ॥ २५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यायोध्यापुरप्रवेशोनामद्वाविंशः प्रकाशः ॥ २२ ॥

टी०-संपाति (अनेक भोग वस्तु) ॥ २३ ॥ २४ ॥ अमित कहे अप्रमाण ॥ २५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकाया द्वाविंशः प्रकाशः ॥ २२ ॥

मू०-दोहा ॥ या तेइसयेंप्रकाशमें ऋषिजनआगमलेषि ॥ राज्यश्रीनिंदाकही, श्रीमुखरामविशेषि ॥ १ ॥ मल्लिकाछंद ॥ एककालरामदेव । सोधुबंधुकरतसेव ॥ शोभिजैसबैसोऔर । मंत्रिमित्रठौरठौर ॥ २ ॥ बानरेशयूथनाथ । लंकनाथबंधुसाथ ॥ शोभिजैसबैसमीप । देशदेशकेमहीप ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सरसस्वरूपबिलोकिकै, उपजीमदनाहिंलाज ॥ आइगयेताहीसमय, केशवऋषिऋषिराज ॥ ४ ॥ असितअत्रिभृगुअंगिरा, कश्यपकेशव व्यास ॥ विश्वामित्रअगस्त्ययुत, बालमीकिदुर्बास ॥ ५ ॥

टी०-॥ १ ॥ २ ॥ बानरेश [सुग्रीव] यूथनाथ [अंगदादि] लंकनाथ जे बंधु बिभीषण अथवा बंधु जे ज्ञातिवर्ग हैं राक्षस गण इति ते हैं साथ जिनके ऐसे लंकनाथ ने बिभीषण हैं ते ॥ ३ ॥ सरस कहे आपनासों अधिक सुन्दर ॥ ४ ॥ ५ ॥

मू०–दोहा–वामदेवमुनिकण्वयुत, भरद्वाजमतिनिष्ठ। पर्वतादिदै सकलमुनि, आयेसहितवशिष्ठ ॥ ६ ॥ नगस्वरूपिणी छंद ॥ सबंधुरामचंद्रजूउठेबिलोकिकैतबै। सभासमेतिपाँपरेविशेपिपूजियेसबै ॥ विवेकसोंअनेकधादशेअनूपआसने। अनर्घअर्घआदिदैविनैकियेघनेघने ॥ ७ ॥ राम-रूपमालाछंद ॥ रावरेमुखकेविलोकतहीभयेदुखदूरि। सुप्रलापनहींरहे उरमध्यआनँदपूरि ॥ देहपावनह्वैगयोपदपद्मकोपयपाइ। पूज तैभयोवंशपूजितआशुहीमुनिराइ ॥ ८ ॥ संनिधानभरेतपोधनधामधीधनधर्म। अद्यसद्यसबैभयेनिरवद्यबासरकर्म ॥ ईशयद्यपिदृष्टिहीभइभूरिमंगलसृष्टि। पूंछिबेकहाँहोतिहैसोतथापिबाकविसृष्टि ॥ ९ ॥

टी०–निष्ठ कहे उत्कृष्ट है मति जिनकी ॥ "निष्ठोत्कर्षव्यवस्थयोरिति अभिधानचिंतामणिः" ॥ ६ ॥ विवेक. (विचार) सों अर्थ यथोचित अनर्घ कहे अमोल अर्घ पाद्यादि पूजाविधि प्रसिद्ध है ॥ "अर्घः पूजाविधौ मूल्ये इत्यभिधानचिंतामणिः" ॥ ७ ॥ द्वै छंदको अन्वय एक है तपोधन ! ऋषिनको संबोधन है सुप्रलाप कहे सुवचन ॥ "सुप्रलापः सुवचनमित्यमरः॥" पदपद्मको पय कहे चरणोदक रावरे पदको संबंध सुप्रलापादिकमों सर्वत्र है संनिधान कहे समीपसों अर्थ रावरे निकट प्राप्त भये सो हमरे धाम (घर) औ धी (बुद्धि) धन औ धर्मसों भरे अर्थ धाम धनसों भरे, बुद्धि धर्मसों भरी, अद्य कहे आज सद्य कहे शीघ्रही सबै जे बासर कर्म कहे रोज रोजके दानकर्म हैं निरवद्य कहे अनिंद्य भये औ हे ईश ! यद्यपि तुम्हारी दृष्टिहीसों अवलोकनहीं सों हमपर भूरि कहे बहुत मंगल कहे कल्याणकी दृष्टि भई अर्थ हमारो बडो कल्याण भयो परंतु कल्याणमें तो काहूकी तृप्ति होति नहीं तासों अधिक कल्याणके लिये तुमसों कछू पूछिवेको हमारे वाक जे वचन हैं तिनकी विसृष्टि कहे उत्पत्ति होति॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०–॥ दोहा ॥ गंगासागरसोंबड़ो, साधुनकोसतसंग ॥ पावनकरिउपदेशअति, अद्भुतकरतअभंग ॥ १० ॥

टी०–साधुनको जो सतसंग है सो गंगासागरहूसों बडो है काहेते अति अद्भुत

जो उपदेश शिक्षा है तासों पावन कहे पवित्र करिकै अभंग कहे नाशरहितके अर्थ मुक्त करत है अथवा उपदेशसों अति पावन करि अद्भुत अभंग कहे मुक्त करतहै अर्थ जीवन्मुक्त करत है उपदेश करि अभंगकरिवेकी शक्ति गंगासागरमों नहीं है तासों वडो कह्यौ एतो रामचंद्रके कहतही विरक्त वचन समुझि अगस्त्य वीचहीमें वोलि उठे तासों जो पूछिवो रहे सो नहीं पूछन पाये सो चौवीसयें प्रकाशमें कह्यौहै कि जो कछु जीव उधारनको मत जानत हौ तौ कहौ मनुहै कहिवेको हेतु यह कि हमको कछू ऐसो उपदेश करौ जासों संसार छूटै मुक्ति होइ ॥१०॥

मू०-अगस्त्य-नाराचछंद ॥ कियेविशेषसोंअशेपकाजदेवरायके । सदात्रिलोकलोकनाथधर्मविप्रगायके ॥ अनादिसिद्धिराजसिद्धिराजआजलीजई ॥ नृदेवतानिदेवतानिदीहसुक्ख दीजई ॥ ११ ॥

टी०-हे त्रिलोक लोकनाथ ! अर्थ तीनों लोकोंके जे लोक कहे जन हैं तिनके नाथ कहे स्वामी हौ अर्थ ईश्वर हौ यासों या जनायो कि तुम्हारो बंधन कौन है जासों छूटिबेकी इच्छा करत हौ रावणको मारिदेवराज जे इन्द्र हैं औ धर्म औ विप्र औ गाय इनके अशेष कहे पूर्ण काज करचौ अव अपनी अनादि सिद्धि अर्थ तुम्हारी परंपराकी सिद्धि है औ राजसिद्धि कहे राजनकी सिद्धि जो राजति है ताहि लीजै नृदेवता (राजा) ॥ ११ ॥

मू०-दोहा ॥ मारेअरिपारेहितू, कौनहेतरघुनंद ॥ निरानंदसेदेखियत, यद्यपिपरमानंद ॥ १२ ॥ श्रीराम-तोमरछंद ॥ सुनिज्ञानमानसहंस । जपयोगजागप्रशंस ॥ जगमांझहैदुखजाल । सुखहैकहायहिकाल ॥ १३ ॥ तहँराजहैदुखमूल । सबपापको अनुकूल ॥ अबताहिलैऋषिराय । कहकौननकेहिजाय ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ सोदरमंत्रिनकेजेचारित्र । इनकेहमपैसुनिमखमित्र ॥ इनहींलगेराजकेकाज । इनहींतेसबहोतअकाज ॥ १५ ॥

टी०-एक तौ तुम परमानंद रूपही हौ ताहूपर अरि (रावणादि) को मारे औ हितू (इन्द्रादि) को पालत भये ऐसे आनंदवर्द्धक काजऊ करे तहूपर तुम्हैं

निरानंदसे काहे देखियत है इत्यर्थः ज्ञानरूपी जो मानस (मानसर) है ताके हंस हौ औ जगमें योग औ जागकी है प्रशंसा (स्तुति) जिनकी दूनौ पद संवोधन हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०—राजभारनलभैयनिदयो । छलबलछीनिसबैतिनलयो ॥ जबलीन्होंसबराजबिचारि । नलदमयंतीदियोनिकारि ॥ ॥ १६ ॥ राजासुरथराजकीगाथ । सौंपीसबमंत्रिनकेहाथ ॥ संततमृगयालीनबिचारि । मंत्रिनराजादियोनिकारि ॥ १७ ॥ राजश्रीअतिचंचलतात । ताहूकीसुनिलीजैबात ॥ यौबनअरु अबिबेकीरंग । बिनस्यौकौनराजश्रीसंग ॥ १८ ॥ शास्त्रसुजलहूँधोवततात । मलिनहोतअतिताकेगात ॥ यद्यपिहैअतिउज्ज्वलदृष्टि । तदपिसृजतिरागनकीसृष्टि ॥ १९ ॥

टी०—नलकी कथा पुराणमों प्रसिद्ध है ॥ १६ ॥ मृगया (शिकार) सुरथहूकी कथा मार्कण्डेयपुराणमों प्रसिद्ध है ॥ १७ ॥ अति चंचल जो राजश्री है ताहूमें ऐसो दोष है ते सुनौ कहियत है यौवन औ अविवेकी रंग औ राजश्रीके संगमें को नहीं विनस्यौ ए तीनों सम हैं अथवा यौवन औ अविवेकी रंगयुक्त जो राजश्री है अर्थ सदा यौवन औ अविवेकसों युक्त रहति है ताके संगको नहीं विनस्यौ अथवा हितोपदेशमें कह्यो है कि ॥" यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता। एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥"यामें चारि कह्यौ है ता मतसों यह अर्थ—कि यौवन अविवेकी रंग औ राज औ श्री कहे संपत्ति इन चारिके संगमें को नहीं विनस्यौ ॥ १८ ॥ शास्त्रका उपदेश सुनिकै शास्त्रकी आज्ञा माफिक नहीं करत और तासों मलिन उदास होत है अथवा अनेक शास्त्र सुनावो ताहूपर पातकन कारि ताके गात मलिन होत हैं शास्त्रहू सुनिकै अनेक पातक करत ही है इत्यर्थः औ यद्यपि याकी उज्ज्वल (विमल) दृष्टि है अर्थ उत्तम पदार्थनपर दृष्टि है तौ अति उत्तम जो पदार्थ (ईश्वरपद) है तामें प्रीति वारेसों नहीं करति राग जो स्त्रक, चंदन, वनितादि विषे अभिलाप है ताको सृजाति कहे उत्पन्न कराति है "अभिमतविषयाभिलापो रागः" ॥ १९ ॥

मू०—महापुरुषसोंजाकीप्रीति । हरतिसोझंझामारुतरीति ॥ विषयमरीचिकानिकीज्योति ॥ इंद्रीहरिणहारिणीहोति ॥ २० ॥

गुरुकेबचनअमलअनुकूल । सुनतहोतश्रवणनकोशूल ॥ मैन बलितनवबसनसुदेश । भिदतनहींजलज्योंउपदेश ॥ २१ ॥

टी०–जा पुरुषकी प्रीति महापुरुष जे भगवान हैं तिनसों है ताके पास आइ झंझामारुत कहे अति जोर वायुकी रीतिसों हरति कहे तोरति है अर्थ जैसे झंझामारुत वृक्ष लतानिको तोरति है तैसे यह प्रीतिको तोरति है आशय यह कि आपु विष्णुकी स्त्री हैं तासों प्रीतिरूपी स्त्रीको विष्णुके पास जाति देखि सौतिधर्मसों तोरति है अर्थ राजनकी प्रीति ईश्वर पर नहीं होति रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द, ये जे पांचौं विषयरूपी मरीचिका कहे मृगतृष्णा हैं तिनकी ज्योतिमें इंद्रीरूपी जे हरिण हैं तिनकी हारिणी कहे लैजानहारी होति है अर्थ मृगतृष्णा सम मिथ्या जो पंचधा विषय हैं तामें राजनकी इंद्रिनको भ्रमावति है ॥ २० ॥ मैन कहे (मोम) ॥ २१ ॥

मू०–मित्रनहूकोमतोनलेति । प्रतिशब्दकज्योंउत्तरदेति ॥ पहिलेसुनैनशोरसुनंति । मातीकरनीज्योंनगनंति ॥ २२ ॥ दोहा ॥ धर्मवीरताबिनयता, सत्यशीलआचार । राजश्रीनग-नैकछू, वेदपुराणबिचार ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ सागरमेंबहुका-लजोरही । सीतवक्रताशशितेलही ॥ सूरतुरंगचरणनिते-तात । सीखीचंचलताकीबात ॥ २४ ॥ कालकूटतेमोहनरी-ति । मणिगणतेअतिनिष्ठुरप्रीति ॥ मदिरातेमादकतालई । मंदरउदरभईभ्रममई ॥ २५ ॥

टी०–प्रति शब्दक कहे झांईं शब्द अर्थ जैसे शब्दके साथही प्रति शब्दक होत है तैसे राजा मित्रके वाक्यमें शुभाशुभको विचार नहीं करत साथही उत्तर कहे जवाब देत हैं औ पहिले तौ हित वाक्यको सुनति नहीं शोर करि कहै सो सुनिबो करत है तौ माती करिनी सम गनति नहीं अर्थ जैसे माती करिनी महावतके हितके हित बचन नहीं गनति तैसे राज्यश्री मित्रादिके हित बचन नहीं गनति ॥ २२ ॥ २३ ॥ क्षीरसागरमें बहुत काल रही है तहाँ इनको संग रह्यौ तिनसों ए कर्म सीखे हैं शीतता कहे प्रसन्न ह्वै सेवकादिको धनादि दीबो

वक्रता क्रुद्ध ह्वै बंधादि करिबो सुरतुरंग (उच्चैःश्रवा) चंचलताकी बात कहे क्षणमें और क्षणमें और कहिबो (करिबो) ॥ २४ ॥ जैसे कालकूट भक्षणसों मोहित (मूर्छित) भये प्राणीको कछु सुधि नहीं रहति है तैसे राज्यश्रीमें मोहित राजनको ईश्वरादिकी सुधि भूलि जाति है इत्यर्थः निष्ठुरतावश राजनको जीव वधादिमें कछू दया नहीं आवति इत्यर्थः राज्यश्रीके वश मत्त ह्वै राजा हित वस्तुको बिचार नहीं करत इत्यर्थः औ विष्णु करिकै भ्रमायो जो मंदर है ताके संगसों राज्यश्रीके उदरमें भ्रममई कहे भ्रमाधिक्य मई अर्थ मंदरको भ्रमत देखिकै भ्रम सिख्यौ राजनके उरमें सदा बंधुमंत्र्यादिकनहूकी प्रतिकूलताको भ्रम रहत है इत्यर्थः ॥ २५ ॥

मू०–दोहा ॥ शेषदईबहुजिह्वता, बहुलोचनताचारु ॥ अप्सरानितैंसीखियो, अपरपुरुषसंचारु ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ दृढगुनबाँधेहूबहुभाँति । कोजानैकेहिभांतिबिलाति ॥ गजघोटकभटकोटिनअरैं । खड्गलतापंजरहूपरैं ॥ २७ ॥ अपनाइतिकीन्हेबहुभाँति । कोजानेकितह्वैभजिजाति ॥ धर्मकोसमंडित शुभदेश । तजतिभ्रमरिज्योंकमलनरेश ॥ २८ ॥

टी०–बहु जिह्वता कहे एक जिह्वासों अनेक जिह्वासम बात कहि बहुलोचनता कहे द्वै लोचनसों अनेक लोचनसम देखिबो अर्थ राजा चितवत कहा होत हैं औ चार दृष्टिसों सर्वत्र देखत हैं अपर कहे अन्य पुरुष प्रीति संचार अर्थ एक पुरुष राजाको छोंडि एक पास जाइबो ॥ २६ ॥ द्वै छन्दनको अन्वय एक है गुन पद श्लेष है शूरतादि औ डोरी गज औ घोटक (घोडे) औ भट कोटिन रक्षाके अर्थ अरैं कहे हठ करैं औ तिनकी खड्ग (तरवारि) रूपी जो लता हैं ताके पंजरहूमें परैं अर्थ तरवारि हाथमें लैकै अनेक गजादि चौकी दै रक्षा करैं ताहूपर और अनेकविधि आपनाइति कीन्हेंहू अर्थ प्रीति कीन्हें हू धर्म (राजधर्म) औ कोमलताकी सब जाना औ सिफा (कंद) तासों मंडित (युक्त) औ शुभदेश कहे सुन्दर है राज्यभूमि जाकी औ सुष्ठु है देश (उत्पत्ति स्थान) जाको औ कमलरूपी जो नरेश राजा है ताको तजति है औ को जानै कहां है भागि जाति है सुंदरतादिहूके वश नहीं होति इति भावार्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥

मू०-यद्यपिहोइशुद्धमतिसत्तु । फिरैपिशाचीज्यौंउन्मत्तु ॥ गुनवंतनिआलिंगतिनहीं । अपवित्रनिज्योंछांडतितहीं॥२९॥ शूरनिनाशतिज्योंअहिदेखि । कंटकज्योंबहुसाधुनलेखि ॥ सुधासोदरायद्यपिआप । सबहीतेअतिकटकप्रताप ॥ ३० ॥ यद्यपिपुरुषोत्तमकीनारि । तदपिसकलखलजनअनुहारि ॥ हित कारिनकीअतिद्वेषिनी । अहितलोगकोअन्वेषिनी ॥ ३१ ॥ मनमृगकोसुबधिककीगीति । विषयवेलिकीबारिदरीति ॥ मदपिशाचिकाकीसीअली । मोहनींदकीशय्या-भली ॥ ३२ ॥

टी०-सत्तु (प्राणी) अथ राजासों राज्यश्री युक्त ह्वै पिशाचाक्रांत पुरुषसम उन्मत्त फिरत हैं गुणवंतन कहे विद्यादि अनेक गुणको अपवित्र सम त्याग करति है इत्यर्थः ॥ "पंडिते निर्द्धनत्वामित्युक्तं माधवानलनाटके" ॥ २९ ॥ नाशति कहे छोडति है शूर औ साधुनको राज्यश्री नहीं प्राप्त होति अथवा शूर औ साधुनको संग्रह राजा नहीं करते इत्यर्थः सुधा जो अमृत है ताकी सोदरा (बहिन) ॥ ३० ॥ पुरुषोत्तम (विष्णु) द्वेषिणी कहे शत्रु है अन्वेषिणी कहे ढूंढनहारी है ॥ ३१ ॥ बधिकसम मनरूपी मृगको बांधि लेति है कहे काबू करि लेति है इत्यर्थः ॥ औ बारिद कहे मेघसम विषयरूपी बेलिको हरित करति है इत्यर्थः मदरूपी जो पिशाचिका (प्रेतिन) है ताकी अली कहे सखी है अर्थ सहायक है पठावनहारी इति मोह कहे अज्ञानरूपी जो नींद है ताकी शय्या जैसे शय्यामें नींद बढति है तैसे राज्यमें मोह बढ़त है इत्यर्थः ॥ ३२ ॥

मू०-आशीविषदोषनकीदरी । गुणसतपुरुषनकारणछरी ॥ कलहंसनकीमेघावली । कपटनृत्यकारीकीथली ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ बामकामकरिकीकिधौं, कोमलकदलिसुवेष । धीरधर्म-द्विजराजको, मनोराहुकीरेष । ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ मुखरोगी ज्योंमौनेरहै । बात बलायएकद्वैकहै ॥ बंधुबर्गपहिचानैंनहीं । मानोंसन्निपातहैगही ॥ ३५ ॥

टी०--दरी-(कंदरा) में आशीविष (सर्प) सम अनेक प्रजा पीडनादि दोष जामें वास करत हैं इत्यर्थः औ अनेक जे विद्यादिगुणरूपी सत्पुरुष हैं तिनके कारण कहे अर्थ छरी कहे ताडन दंड है जैसे राजद्वारमें ताडन दंड देखि सत्पुरुष नहीं आवत तैसे राज्यश्री युक्त पुरुषके पास विद्यादि गुण नहीं आवत तासों सत्पुरुष लोभवश दंडपात हंसहि भूप द्वारादि स्थलमें जातहीहैं कुपुरुष कह्यो राज्यसुखालस्यसों राजा गुणनको अभ्यास नहीं करत इति भावार्थः कल कहे अविन्नतासों चित्तइति हंसनको मेघावलीसम राजनके कलको राज्यश्री दूरि करति है इत्यर्थः अनेक शत्रु भयादि युक्त राजनको चित्र सदा रहत हैं इति भावार्थः शत्रुसैन्यभेदादि अनेक कपटयुक्त राजा होत हैं इति भावार्थः ॥ ३३ ॥ वाम कहे कुटिल जो काम (कंदर्प) रूपी करि, (हाथी) है ताको सुवेष कहे हरित कोमल कदली (केरा) है अर्थ गजको कदली सम कामको बलकर्ता है अथवा सुखद है राजा अति कामी होत हैं इति भावार्थः । कदली भक्षणसों गजको बल औ सुख होतहै यह प्रसिद्ध है औ धीर औ धर्मरूपी द्विजराज (चंद्रमा) को राहुरेखसम पीडाकर्ता है इत्यर्थः राजा बंधु-मंत्रीआदिमें भेद भय मानि सदा अधीर रहते हैं औ आलस्यवश दानादि धर्म विधिपूर्वक नहीं करत इति भावार्थः ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

मू०महामंत्रहूहोतनबोध । डसीकालअहिकरिजनुक्रोध ॥ पानबिलासउदितआतुरी । परदारागमनैचातुरी ॥ ३६ ॥ मृगया यहै शूरताबढी । बंदीमुखनिचापसोंपढी ॥ जोकेहूंचितवैयहदया । बातकहैतौबड़ीएमया ॥ ३७ ॥ दरशनदीबोईअतिदान । हँसि बोलैतौबड़सनमान ॥ जोकेहूसोंअपनोकहै । सपनेकीसीपदवी लहै ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ जोईअतिहितकीकहै, सोईपरमअमित्र । सुखबक्ताईजानिये, संततमंत्रीमित्र ॥ ३९ ॥

टी०–मंत्रिन करि दीन्हे जे महा कहे बडेबडे मंत्र हैं तिनहुसों जाको बोध ज्ञान नहीं होत सो मानों काल अहि कहे कालसर्प करिकै डसी कहे काटी गई है अर्थ मानों क्रोध करि कालसर्प काट्यो है जा प्राणीको कालसर्प काटत है ताहूको झारिबेके जे महामंत्र हैं तिनसों बोध (ज्ञान) नहीं होत अर्थ मूर्च्छा नहीं जागति पान कहे मद्यपानको जो विलास है ताहीमें उदित कहे प्रगट है आतुरी

शीघ्रता जाकी ॥ ३६ ॥ मृगया यहै शूरता बडी इत्यादिमें या जनायो कि यहीं विधि राजा थोरो करत हैं ताको बहुत मानि लेत हैं ॥ ३७ ॥ पदवी (राज्य) ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

मू०-चौपाई ॥ कहौंकहांलगिताकेसाज । तुमसबजानतहौ-ऋषिराज ॥ जैसीशिवमूरतिमानिये । तैसीराजश्रीजानिये ॥४०॥ सावधानह्वैसेबैजाहि ॥ सांचीदेतपरमपदताहि । जित-नेनृपयाकेवशभये । पेलिस्वर्गमगनर्कहिगये ॥ ४१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्र चंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांराज्यश्रीदूषणव-र्णनंनामत्रयोविंशःप्रकाशः ॥ २३ ॥

टी०-॥ ४० ॥ शिवमूरतिहूको सावधान ह्वै विधिपूर्वक सेवनो बनि परै तो स्वर्गप्राप्ति होत है ना बनै तौ चित्तविक्षेपादि ह्वै अंतमें नरकप्राप्ति होतहै तैसे याहूको सावधान ह्वै जनकादि सम सेवन करै तौ स्वर्ग जाई परंतु सावधान ह्वै सेवन नहीं बनि परत तासों केतने भूप वेनु आदिक स्वर्गमगसों पेलिकै नरकको गये हैं तासों हम राज्यश्री ग्रहण ना करि हैं इति भावार्थः ॥ ४१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद-निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां त्रयोविंशः प्रकाशः ॥ २३ ॥

मू०-दोहा ॥ चौबीसयेंप्रकाशमें, रामबिरक्तिबखानि ॥ बि-श्वामित्रबशिष्ठसों, बोधकहीशुभआनि ॥१॥ राम-अमृतगति-छंद ॥ सुमतिमहाऋषिसुनिये ।जगमहँसुक्खनगुनिये॥मरणहिं जीवनतजहीं। मरिमरिजन्मनभजहीं ॥ २ ॥ उदरनिजीवपरत है । बहुदुखसोंनिसरतहै ॥ अंतहुपीरअनतहीं। तनउपचारसह-तहीं ॥ ३॥ दोधकछंद ॥ पोचभलीनकछूजियजानै । लेसबब-स्तुनआननआनै॥शैशवतेकछुहोतबडेई।खेलतहैंतेअयानचढ़े

ई ॥ ४ ॥ हैपितुमातनितेदुखभारे । श्रीगुरुतेअतिहोतदुखारे ॥ भूखनप्यासननींदनजोवें । खेलनकोबहुभांतिनरोवें ॥ ५ ॥

टी०—वशिष्ठसों बोध जो ज्ञान है ताके कहिवेको विश्वामित्र कही कहे कह्यो है ॥ १ ॥ राजश्रीको दुख कहि अब यामें संसारको दुख देखावत हैं जीव जे हैं ते मरणको नहीं तजत मरिकै फिरि जन्मनको भजहीं कहे प्राप्त होत हैं ॥२॥ यामें जनन, मरण, जीवनको दुख देखावत हैं प्रथम तौ जीव उदरमें परत हैं गर्भमें आवत हैं तहांसे बहुत दुखसों निसरत हैं अर्थ जन्ममें बडो दुख होत है औ अंत जो मरण है ताहूमें बडी पीर कहे कष्ट होत है औ अनतही कहे जनन मरणते अन्यत्र अर्थ जीवतनमें तनके अनेक जे उपचार कहे व्योहार हैं तिनके सहित जीवको पीर है सो आगे कहैं ॥ "उपचारस्तु सेवायां व्यवहारोपचारयोरित्यभिधानचिंतामणिः"॥ ३ ॥ द्वैछंदनमों शिशुता अवस्थाके देहव्यवहारमें प्राप्ति जीवको दुख कहत हैं ते कहे तेई जीव शैशव कहे बाल्य अवस्थामें पोच कहे बुरो विषादि औ भली द्राक्षादि कछू जियमें नहीं जानत जो वस्तु पावत हैं ताको लैकै आनन कहे मुखमें आनै कहे डारि लेत हैं तहां विषादि ग्रहणमें जीवको पीडा होति है इति भावार्थः फेरि ते कहे तेई जीव कछू बडे होत कहे बडे होते अयान कहे अज्ञानमें चढे चढे गैलनमें खेलत फिरतहैं अज्ञानमें चढे कहि या जनायो कि जैसे वाहनमें चढिकै कोऊ धावै तौ थकत नहीं तैसे अज्ञानरूपी वाहनमें चढि खेलमें धावत जीव थकत नहीं है ॥ ४ ॥ ता खेलिवेके लिये माता पिता मने करत हैं तासों बडो दुख होतहै औ गुरु खेलिबो छडाई पढाइवो चाहत है तासों अति दुखी होतहैं औ भूख औ प्यास औ नींदको नहीं जोवत कहे देखत अर्थ अपने पास आई भूख प्यास नींदको नहीं गनत अथवा भूख प्यास नींदको नहीं जोवत कहे चाहत तैसे सब अवस्थाके ऐसे देहव्यवहारनमें जीवको ऐसी पीडा होतिहै इति भावार्थः॥ "शिशुत्वं शैशवं बाल्यमित्यमरः"॥५॥

मू०—जारतिचित्तचिताडुचिताई। दीहत्वचाअहिकोपचवाई। कामसमुद्रझकोरनिझूल्यो । यौबनजोरमहाप्रभुभूल्यो ॥ ६ ॥ धूमसोनीलनिचोलमैंसोहै । जाइछुईनविलोकतमोहै ॥ पावक पायशिखाबनचारी । जारतिहैनरकोपरनारी ॥ ७ ॥

टी०—तीनिछंदमें युवा अवस्थाके व्यवहारको दुःख कहतहैं यौवनके जोरमें अर्थ युवा अवस्थामें चित्तरूपी जो चिताहै तामें जीवको कहे दुचिताई जो संशयहै सो

जारति है जैसे चितामें जीवको दुचिताई जारतिहै इत्यर्थः औ अहि कहे सर्पसम जो कोप मरे प्राणीको जारियत है तैसे चित्तरूपी चितामें है सो दीह कहे बहुत अर्थनकी विधि जीवके त्वचाचर्मकी चवाई कहे चवातहै अर्थ काटतहै अथवा त्वचासम अहिकोप चवातहै अर्थ सर्पत्वचामें काटत है तब जीवको परम पीडा होति है औ कोप तौ जीवहीको काटत है ताको पीडा तौ अकथनीय है औ जब काम अथवा अभिलाषरूपी जो समुद्र है ताके तरंगके झकोरनमें झूलौ इत उत आयो गयो तब हेमहाप्रभु ! जीव जो है सो भूल्यो अर्थ अपनपा को भुलान्यो महाप्रभु ऋषिनको संबोधन है चिता (दाह) सर्प दंश समुद्र तरंगके झकोरनमें सबको विकलतासों आपनपाकी सुधि भूलि जात है ॥ ६ ॥ यौवन जोरमें और कहा होत है सो कहत हैं धूमसम जो नीलनिचोल कहे श्याम वस्त्र है तामें सोहति है इहां केवल धूमकी समताके लिये नीलनिचोल कह्यौ अग्नि दाहभयसों परनारी लोकभयसों छुई नहीं जाति देखतही मनको दुवौ मोहत हैं परनारी मोहति कहे वश करति है अग्नि मोहिति कहे भयसों अथवा तेजसों मूर्छित करतिहै सो पापरूपी यौवन है तामें चारि कहे गामी अर्थ जैसे अग्नि बनमें विहरति है तैसे पर नारी पापहीमें विहरति है ऐसी परनारी रूपी जो पावकशिखा है सो नरको जारति है परस्त्रीको देखि जीव विकल होत है इत्यर्थः ॥ ७ ॥

मू०—बंकहियेनप्रभासरसीसी । कर्दमकामकछूपरसीसी ॥
कामिनिकामकीडोरिग्रसीसी । मीनमनुष्यनकोबनसीसी ॥८॥

टी०—मनुष्यनके जे हिय हैं तिनकी जो प्रभा (शोभा) है सोई बंक कहे कुटिल अर्थ घाट रहित अथवा गहिर सरसी कहे तडागसी है अर्थ हृदय तडाग सम है औ काम अभिलाषरूपी जो कर्दम (कीच) है तासों कछू कहे कछुअर्थ थोरीहू परसी कहे युक्त है यासों या जनायो कि अधिक कामयुक्तकी कथा है ता सरसी कामिनि कहे स्त्रीरूपी जो काम (कंदर्प) शिकारीकी डोरी है सो ग्रसी है कहे लगी है ते स्त्री मीनरूपी जे मनुष्य हैं इहां मनुष्य पदते मनुष्यनके जीव जानौं तिनको कहे तिनके वसकरिबेकी बनसीसी है जैसे तडागमें कीच बीच बसे मीननको वंसी वश करति है तैसे हृदयरूपी तडागमें कामरूपी कीचमें बसे जे जीव हैं तिनकी वंसी डोरीसम हृदयमों ग्रसी जो कामिनी स्त्री है सो वश करती है इत्यर्थः अथवा बंक (कुटिल) जे हृदय कहे मन हैं तिनकरिकै प्रभा

(शोभा) सरसी कहे बढी है जाके अर्थ जैसे वंसी कुटिल लोहकंटकसों युक्त रहति है तैसे कुटिल हृदय करिकै युक्त स्त्री है औ काम कहे अभिलाष रूपी जो कर्दम कर्दम कहे पिशानका गंधादि युक्त कीच है सान्यौ पिसान तासों कछू परसी कहे युक्त है अथ जैसे कुटिल कंटक गंधादि युक्त साने पिसानसों युक्त होत है तैसे स्त्रीनके मन अभिलाषसों युक्त हैं औ कामिनी जो स्त्री हैं सोई काम (कंदर्प) शिकारीकी डोरीहै सो ग्रसी है कहे लगी है सो मीनसम मनुष्य-नको वंसीसम है अर्थ जैसे सागरमें बँसीके पिसानको गंध पाइ मीन वंसीके वश होतहै तैसे संसारसागरमें स्त्रीनके मनके अभिलाषको गंधपाइ अर्थ स्त्रीनकी अभिलाष समुझि मनुष्य वश होत है ॥ ८॥

मू०—बिजयछंद ॥ खैंचतलोभदशौंदिशिकोमहिमोहमहाइ-तपासिकैडारे । ऊंचेतेगर्वगिरावतक्रोधसोजीवहिलूहरलावत भारे॥ ऐसेमोंकोढकीखाजुज्योंकेशवमारतकामकेबाणनिनारे। मारतपाँचकरेपँचकूटहिंकासोंकहैंजगजीवबिचारे ॥ ९ ॥

टी०—यामें लोभादिक जो पोच हैं तिन करिकै प्राप्त जीवको दुःख कहते हैं लोभ तौ लक्ष्मीके लिये दशोंदिशिको खैंचत है औ इत कहे इहां स्थलमें स्त्री पुत्रादिकन प्रति जो मोह है सो पासिकै कहे फांसिकै डारेहै कहे डारि राख्योहै तासों जाइ नहीं सकत औ गर्व ऊँचमें संग जीव उन्मत्त ह्वै रह्यो है अपमाना-दिसों चढाइ गिरावतहै अर्थ गर्व संगजीव उन्मत्तह्वै गिरे सम दुःख पावत है तब क्रोध उत्पन्न ह्वै जीवहिजीवमें लूहर कहे लुकेठ लावतहै अधजरयौ ईंधन काठको लूहर कहत हैं अर्थ क्रोधसों जीव जरत है लोभ, मोह, गर्व कोधकी व्यथा कोढ-सम है कामबाण व्यथा खाजुसम है या प्रकार लोभादिक पांचौं पंचभूतको कूट (पर्वत) जो शरीर है तामें करे कहवारि पाये जीवको मारत हैं सो आपनी पीडा जीव विचारे कासों कहैं जैसे पर्वतमें पाइकै ठग बटोहीको मारत हैं तैसे शरीरमें पाइकै लोभादिक जीवको मारत हैं इत्यर्थः ॥ ९ ॥

मू०—भूलतहैकुलधर्मसबैतबहींजबहींबरुआनिग्रसैजू ।केश-ववेदपुराणनकोनसुनैसमुझैनत्रसैनहँसैजू ॥देवनितेनरदेवनिते नरतेबरबानरज्योंबिलसैजू॥यंत्रनमंत्रनमूरिगनैजगयौबनकाम पिशाचबसैजू ॥१०॥ ज्ञाननिकेतनज्ञाननिकोकहिफूलकेबाण

निबेधवकोतो । वाइलगाइबिबेकनकोबहुशोधककोकहिबाधक जोतो । औरकोकेशवलूटतोजन्मअनेकनकेतपसानकोयोतो । तौममलोकसबैजगजातोजोकामबड़ोबटपारनहोतो ॥ ११ ॥

टी०-यामें यौवनकृत दुःख कहत हैं वेद पुराणनको प्रथम तो सुनत नहीं औ सुनत है तौ समुझत नहीं औ समुझत है तौ त्रसत कहे डरत नहीं और वेद वचनही को निंदाकरि हँसत है वानरसम विलसत कहि या जनायो कि पशुसम बुद्धि ह्वै जाति है ॥ १० ॥ यामें काम व्योहारकृत पीडा कहत है साधक प्राणायामादि एतो कहे जहाज पचीसयें प्रकाशमें यकतालिसयें दोहामें रामचन्द्र कह्यो है मोहि न हतो जानाईबे सबहीं जान्यों आज यासों या जानौं रामचन्द्र ईश्वरत्वको छपाये रहे हैं औ यामें ममलोक सबै जग जातो या उक्तिसों ईश्वरत्व प्रगट होत है तहां कविको भ्रम जानब अथवा तौ ममलोक कहे ममता-विशिष्ठ जे लोक मत्य लोकादि हैं तिनसों सबै जग कहे सब जगतके जीव आपने स्थानको ब्रह्मपदको इतिशेषः जातो प्राप्त होतो ॥ ११ ॥

मू०-मकरंदबिजयाछंद ॥ कँपैबरबानीडगैडरडीठितुचातिकुचैसकुचैमतिबेली । नवैनवग्रीवथकैगतिकेशवबालकतेसँगहीसँगखेली ॥ लियेसबआधिनव्याधिनसंगजराजबआवैज्वराकीसहेली । भगैसबदेहदशाजियसाथरहैदुरिदौरिदुराशाअकेली ॥ १२ ॥

टी०-यामें वृद्धताको व्यवहार कहत हैं पुत्रादिके कटुवचनादिसों जनित जो आधि कहे मानसी व्यथा औ व्याधि शरीर व्यथा (ज्वरादि) तिनके संगमें लिये ज्वरा जो मृत्यु है ताकी सहेली सखी जो जरा (वृद्धता) है सो जबदेहमें आवति है तब ताके डरसों बाणी कांपै लागति है अर्थ मुखसों व्यक्त वचन नहीं कढत औ डीठि डगै कहे डगमगाति है औ त्वचा कहे चर्म अति कुचै कहे बहुत सिकुरि जाति है औ मति (बुद्धि) रूपी जो बेली (लता) है सो सकुचै कहे संकोचको प्राप्त होति है अर्थ बुद्धि हीन होति जाति है औ नव कहे नवीन प्रकारसों ग्रीवा नवै कहे नत होति है नवपद यासों कह्यौ कि और जो कोऊ काहूको नवत है अर्थ प्रणाम करत है सो नयोई नहीं रहत ग्रीवा जबसों नवति है तबसों नईही रहति है उठति ही नहीं अथवा भयसों अनित्यको छोंडि नत होति है

औ जो जीवके संगही संगमें बालकहीसे खेली है सो गति गमन जीवकी सहाय छोंडि जराके भयसों थकि रहति है औ देहकी जो दशा कहे शुभदशा है सुंदरतादि सो सब भागति है जियके साथमें दुरिकै केवल दुराशा कहे दुष्ट आशा रहिजाति है वृद्धतामें इनकी सबको सुभावहीसों यह होति है तामें जराके भयको तर्क है तासों असिद्ध बिषय हेतूत्प्रेक्षा है यह वस्तु हमको इते दिनमें मिलि है ऐसी जो बुद्धि है सो दुराशा कहावति है ॥ १२ ॥

मू०-बिलोकिशिरोरुहश्वेतसमेततनोरुहकेसबकोगुणगायो। उठेकिधौंआयुकेऔधिकेअंकुरशूलकीशुष्कसमूलनशायो ॥ जरैं किधौंकेशवव्याधिनकीकिधौंआधिकेआखरअंतनपायो । जराशरपंजरजीवजरेउकिजराजरकंबरसोंपहिरायो ॥ १३ ॥

मनोहरबिजयाछंद ॥ दिनहींदिनबाढतजाइहियेजरिजाइस-मूलसोऔषधिलैहै । किधौंयाहिकेसाथअनाथज्यों केशव आवतजातसदादुखसैहै ॥ जगजाकीतूज्योतिजगैजडजीवन-पायतुतापहँजाननपैहै । सुनिबालदशागईज्वानीगईजरि-जैहैजराऊदुराशानजैहै ॥ १४ ॥

टी०-यामें प्रसंगवश वृद्धताको वर्णन है तनोरुह कहे तनके रोम तिन सहित शिरोरुह (शिरके बारनको) श्वेत बिलोकिकै या प्रकारसों गुण गायो है कि आयुर्बलकी अवधि (मर्यादा) जो आई है ताके अंकुर उठे हैं औ कि शूलनामा आयुध विशेष है शूलहू लगै शुष्क समूल कहे पूर्ण नाशको प्राप्त होत है वृद्धता-हूमें तासों जानो औ कि अनेक जे व्याधी शरीरव्यथा हैं तिनकी तिनकी अनेक जरैं हैं औ कि अनेक आधी जे मानसी व्यथा लिखी हैं तिनके आखर (अक्षर) हैं जिनको अंत नहीं पाइयत अर्थ वात हैं वृद्धतामें अनेक आधि, व्याधि होती हैं इतिभावार्थः औ कि जरा जो बुढाई है ताने शर (वाण) तिनके पंजरमें जीवको जरयो कहे डारयो है औ कि जराजर कहे जरवाफी कंबर सो जीवको पहिरायो है ॥ १३ ॥ यामें जीवप्रति काहूको उपदेश है सो उपदेश कहि रामचन्द्र दुराशाकृत पोडा देखावत हैं जाकी कहे जा ब्रह्मकी ॥ १४ ॥

मू०-दोहा ॥ जहांभामिनीभोगतहँ, बिनभामिनिकहँभोग ॥ भामिनिछूटेजगछुटै, जगछूटेसुखयोग ॥ १५ ॥ जोईजोईजोकरै, अहंकारकेसाथ ॥ स्नानदानतपहोमजप, निष्फलजानौनाथ ॥ १६ ॥ तोटकछंद ॥-जियमांझअहंपदजोदमिये । जिनहींजिनहींगुणश्रीरमिये ॥ तिनहींतिनहींलखिलोभडसै । पटतंतुनिउंदुरज्योंतरसै ॥ १७ ॥

टी०-यामें स्त्री व्यवहार कृत पीड़ा कहत हैं तहां भामिनी (स्त्री) है तहांई दुःखरूपी संसारभोग हैं सो भामिनी जब छूटे जब संसार छूटै तब सुखको योग है अर्थ दुःखमय संसारको बंधन दुराशादि सम स्त्रीहू है ॥ १५ ॥ यामें अहंकारको व्यवहार कहत हैं अहंकारके साथ जो करिये सो निष्फल होत है ॥ १६ ॥ ताही अहंकारको जो काहू प्रकारसों दमिये (दूरिये) तो जिन जिन मिथ्याभावनादि गुणसों श्री जो द्रव्य है तासों रमिये अर्थ द्रव्यको प्राप्त हूजियत है तिन गुणनको देखिकै लोभ जो है सो जीवको डसत है (काटत है) अर्थ काहूको अनुत्तमकर्मसों पावत देखि लोभ जीवको प्रेरत है कि यहै कर्म करौ जामें द्रव्य लाभ होइ अहंकारहीन प्राणी योग्यायोग्यको विचार नहीं करत जा प्रकार द्रव्य मिलै सोई ऊंच नीच कर्म करत है इति भावार्थः लोभ कैसे डसत है जैसे पट (वस्त्र) के तंतु कहे सूत्रनको उंदुर कहे मूषक तरसै कहे काटत है आशय कि जैसे मूषक पटतंतुनको वृथा काटत है कछू ताको काम नहीं है तैसे लोभ वृथा जीवको सतावत है ॥ १७ ॥

मू०-बिजयछंद ॥ दानसयाननिकेकलपद्रुमटूटतज्योंऋणईशकेमांगे । सूखतसागरसेसुखकेशवज्योंदुखश्रीहरिकेअनुरागे ॥ पुण्यबिलातपहारनसेपलज्यौंअघराघवकीनिशिजागे । ज्योंद्विजदोषतेसंततिनाशतित्योंगुणभाजतलोभकेआगे ॥१८॥

टी०-सो लोभ कैसो है ताको व्यवहार कहत हैं जैसे ईश (महादेव) हैं तिनके मांगेते ऋण टूटि जात है अर्थ जब महादेव एते द्रव्य देते हैं जामें केतेऊ बड़ो ऋण होइ सो दूरि होतहै तैसे ता लोभके आगे दान औ सयाननके जे

कलपद्रुमहैं ते टूटि जातहैं अर्थ लोभसों दानको अभिलाष नशि जातहै औ उचिता-नुचितकारिवेमें जो सयानप (चातुरी) है सो नहीं रहति औ जैसे श्रीहरि जे विष्णुहैं तिनके अनुरागेसों भक्ति कियेसों सो सागरसो संसारदुःख सूखत है तैसे ता लोभके आगे जो जीवके सागरसे सुख सूखि जात हैं अर्थ लोभवश इत उत प्राणी धायो धायो फिरत है धन, पुत्र, कलत्रादिको सुख नहीं करन पावत औ जैसे राघवकी निशि कहे राघव संबंधी व्रत दिन रामनौमी आदिकी निशिमें पलहू भरि जागेते अघ (पाप) बिलात हैं तैसे लोभके आगे पहारसे वड़े वड़े पुण्य बिलात हैं अर्थ लोभसों ऐसे ब्रह्मद्रव्यहरणादि पातक प्राणी करत हैं जासों केतेऊ वड़े पुण्य होइँ तौ नशि जात हैं यामें केशवको रामोक्तिमें अपनी उक्तिको भ्रम है औ जैसे ब्रह्मदोषते संतति जो वंश है सो नशि जात है तैसे लोभके आगे अनेकगुण भागत हैं अर्थ अनेकगुणको त्याग करि प्राणी लोभवश जन जनसों दीन होत हैं ॥ "गुणशतमप्यर्थिताहरति इति प्रमाणात् "॥ १८ ॥

मू०—दानदयाशुभशीलसखाबिझुकैगुणभिक्षुककोबिझुकावैं । साधुसुधीसुरभीसबकेशवभाजिगईभ्रमभूरिभजावैं ॥ सज्जनसंगबछेरुडरैंबिडरैंवृषभादिप्रवेशनपावैं ।बारबड़ेअघबाघबँधे उरमंदिरबालगोविन्दनआवैं ॥ १९ ॥

टी०—यामें पापको व्यवहार कहत हैं उर रूपी जो मंदिर (घर) है ताके वार कहे द्वारमें वड़े पापरूपी अनेक वाघ बँधे हैं तासों उरमें जीवको परम सुखद वालगोविंद जे भगवान् हैं ते नहीं आवत युक्ति यह द्वारपै वाघ बँध्यो देखि वालक घरमें कैसे आइसकैं कैसे हैं अघवाघ कि दान औ दया औ शील ये जे जीवके साखा कहे हित हैं तिनको विझकै कहे डेरवाइकै आवन नहीं देत औ सूरतादि जे अनेक गुणरूपी भिक्षुक हैं तिनको बिझुकावैं क्रोधित करि देतेहैं अर्थ ऐसे डेरवावतहैं जासों गुणहू क्रुद्ध है फिरिजात हैं औ सुष्ठु जे धी बुद्धिहैं अर्थ पुण्यमार्गमें प्रवृत्त जे बुद्धि हैं तेई साधु सुरभी (गावैं) है ते सव भाजि गई ते कहेते भूरि कहे वडो भ्रम देखाइकै भजाइ देते हैं औ सज्जननके सतसंगरूपी जे वछेरू हैं तेऊ जिनको डरत हैं डरि है डर मंदिर मंदिरमें नहीं आवत औ वृषभपद (श्लेष) है वैल औ धर्म सो जैसे वावको देखिकै वैल

बिड़रे कहे भागि जात है तैसे अघ बाघनको देखि धर्मादि भागतहैं पापके संयोगते जीवके हितसाधक जे दान दयादि हैं ते सब नशि जात हैं इतिभावार्थः ॥ १९ ॥

मू०-दोहा ॥ आंखिनआछतआंधरो, जीवकरैबहुभांति ॥ धीरनवीरजबिनकरै, तृष्णाकृष्णाराति ॥ २० ॥ तृष्णाकृष्णा षट्पदी, हृदयकमलमोंबास ॥ मत्तदंतिगलगंडयुग, नर्क-अनर्कबिलास ॥ २१ ॥

टी०-तानि छंदनमें तृष्णाको व्यवहार कहत हैं तृष्णारूपी जो कृष्णाराति कहे कृष्णपक्षकी राति है सो आंखिन अक्षत कहे रहने पर जीवको आंधरो करति है अर्थ तृष्णायुक्त प्राणीको आंखिनसों आपनो अपमानादि नहीं देखि-परत औ कृष्णा रातिहूमें अंधकारमें घटपटादि वस्तु आंखिनसों नहीं देखि परत औ धीरनको धैर्य्य विना करिदेति है अर्थ कहूं कछू पाइबो होइ तौ तृष्णायुक्त प्राणी कैसोऊ धीर होइ तौ धीरता छोंडि धावतहै औ रातिमें अंधकारमें चौरादि भयसों बडे धीरऊ धैर्य बिन ह्वै जात हैं ॥ २०॥ कृष्णा कहे श्याम जो तृष्णा-रूपी षट्पदी (भ्रमरी) है ताको हृदयरूपी कमलमें बासहै ता तृष्णाको नर्क औ अनर्क कहे स्वर्गकी विलास दुवौ मत्तदंतीके गल कहे गलत अर्थ मदसों चुवत दुवौ गंडस्थल हैं अर्थ जैसे भ्रमरी कमलमों बसाति है औ गजनके गंड-स्थलन प्रति धायो करतिहै तैसे तृष्णा नरक भोग स्वर्गभोग प्रति धायो करति है सो उपाउ जीवको नहीं करन देति जासों जीव मुक्त होइ ॥ २१ ॥

मू०-बिजयछंद ॥ कौनगनैयहिलोकतरीजबिलोकिबिलो-किजहाजनबोरै । लाजविशाललतालपटीतनधीरजसत्यतमा-लनितोरै ॥ वंचकताअपमानअयानअलाभभुजंगभयानक-कृष्णा ॥ पाटुबडोकहूंघाटुनकेशवक्योंतरिजाइतरंगि-नितृष्णा ॥ २२ ॥

टी०-फेरि कैसी है तृष्णा सो कहत हैं कि ऐसी तृष्णारूपी जो तरंगिणी नदी है सो कौनी तरहसे जीवसों तरि कहे उतरि जाइ कैसी है तृष्णा नदी कि यही लोक कहे मृत्युलोककी जे तरी कहे नौका हैं तिन्हैं कौन गनै अर्थ तिनको तो बोरिही देति है ॥ "स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः इत्यमरः ॥"

इहां तरी पदते मनुष्यदेह जानो अर्थ मनुष्य देहको प्राप्त ह्वै कै तो जीव तृष्णाको पार पावतही नहीं है मनुष्यदेहमें तृष्णा कैसेहू नहीं मिटति इत्यर्थः ॥ बिलोकि बिलोकि कहे ढूंढि ढूंढि जहाजको बोरति है यहां जहाज पदते देवशरीर जानो अर्थ देवताहू तृष्णाको पार नहीं पावत अथवा लोकतरी पदते लोकव्यवहार युक्त मनुष्य देह जानो औ जहाज पदते संसारको त्यागकिये जे योगीजन हैं तिनके शरीर जानो अर्थ योगीजन तृष्णाको पार नहीं पावते संसारविशिष्ट प्राणिनकी कहा गिनती है औ लाजरूपी जो विशाल लता है सो लपटी है तनमें जिनके ऐसे धीर्य्य औ सत्यरूपी तमाल वृक्ष हैं तिन्हैं अति वेगसों तोरै कहे उखारि डारति है नदीहू कूलके वृक्ष उखारि डारति है इहां तमालपद उपलक्षण है तासों वृक्षमात्र जानो अर्थ तृष्णासों लाज औ सत्य प्राणीको दूर ह्वै जात है औ बंचकता कहे छल औ अपमान औ अयान (अज्ञानता) औ अलभ्भ कहे याचितवस्तुकी अप्राप्तिरूपी जे भुजंग (सर्प) हैं तिन करिकै अति भयानक है नदीहूमें सर्प रहतहैं अर्थ वंचकतादि जे चारों हैं तिनसों युक्त सदा तृष्णा रहति है औ कृष्णा कहे श्यामरूपाहै औ जाको पाटु बडो है अन्त नहीं पाइयत औ दुहू कूलमें कहूं घाट नहीं है जहां विश्रामहू पावैं ॥ २२ ॥

मू०–पैरतपापपयोनिधिमैंमनमूढमनोजजहाजचढोई। पेलतऊनतजैजड़जीवजऊबड़वानलक्रोधडढोई ॥ झूठतरंगिनिमें उरझैसुइतेपरलोभप्रबाहबढोई ॥ बूड़तहैतोहितेउबैरकाहिकेशव काहेनपाठपढोई ॥ २३ ॥

टी०–यामें जीवप्रति काहूकी शिक्षा है सो प्रसंग पाइ रामचन्द्र कहत हैं हे मन ! मूढ ! जड ! जीव ! तू मनोज-(कन्दर्प) रूपी जो जहाज है तामें चढ्यो पापरूपी पयोनिधि समुद्रमें पैरत है अर्थ कामवश परस्त्री गमनादि पाप करत फिरत है तहां अनेक अपमानादिते उत्पन्न जो क्रोधरूपी बडवानल है तामें जऊ कहे यद्यपि डडोई कहे जरिहू गयो है तऊ कहे ताहूपर मनोज जहाजमें चढि कामसमुद्रमें परिबो यह जो खेल है ताको तू नहीं तजतो एतेहूपर लोभ रूप प्रवाह बढ्यो है जामें ऐसी जो झूठरूपी तरंगिणी नदी पापसमुद्रमें मिली है तामें उरझत है अडिजात है अर्थ लोभवश अनेक झुटाई करत फिरत सो या प्रकार है या

समुद्रमें तुम बूडत हो सो जासों उबरै कहे निकरै सो केशव यह जो पाठ है ताको आजुतक काहे न पढ्यौ अर्थ भगवानको ना कहे न जप्यो अबहूं भगवानको नाम जपिबो तोको उचित है इति भावार्थः ॥ केशव पदके कहिबेको आशय यह कि "के जले शेते इति केशवः" अर्थ वे समुद्रके जलहीमें सोयो करत हैं तासों समुद्रसों उबारिबो उनको सहज है और नामके जपहूसों या समुद्रसों ना कढि है इतिभावार्थः ॥ २३ ॥

मू०-दोहा ॥ जोकेहूसुखभावना, काहूकोजगहोति ॥ कालआखुपटतंतुज्यों, तबहींकाढतज्योति ॥ २४ ॥ ब्रह्माबिष्णुशिवआदिदै, जेतनेदृश्यशरीर ॥ नाशहेतुधावतसबै, ज्योंबडवानलनीर ॥ २५ ॥

टी०-यामें समयके व्यवहार कहत हैं जो केहु कहे कौनेहू प्रकारसों सुखभावना कहे मोक्षकी वासना जगमें काहू प्राणीके होति है तो काल कहे समयरूपी जो आखु (मूषक) है सो ता भावनाकी ज्योति कहे डोरि अथवा अंकुरको पट वस्त्रके तंतु (सूत्र) सम तबहीं कहे ताही समय काढि देत है अर्थ समौ भति फेरि देत है जासों सुखभावना दूरि ह्वै जाति है ॥ २४ ॥ देह व्यवहार कहि अब यामें मृत्युकृत पीडा कहत हैं ब्रह्मा औ बिष्णु औ शिव आदिक जितने दृश्य शरीर हैं ते अनेक यज्ञादि कर्म करि उत्पत्ति पालन संहार करनादि प्रभुत्व पाइ पुनि पुनि या संसारमें नाशहीके हेतु धावत हैं कहे प्राप्त होत हैं अर्थ या संसारमें इनको सबको नाश होतहै मृत्युकृत पीडाको ये सब प्राप्त होतहैं इतिभावार्थः कैसे धावत हैं जैसे बडवानलमें समुद्रको नीर (जल) नाशके हेतु धावत है यथा योग वाशिष्ठे-"ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वे ये भूतजातयः। मृत्युर्नश्यति भूपाल सलिलानीव वाडवः ॥ २५ ॥

मू०-सुन्दरीछन्द ॥ दोषमयीजोदवारिलगीअति । देखतहीत्यहितजोजरीमति ॥ भोगकीआशनगूढउजागर । ज्योंरजसागरमैंमुनिनागर ॥ २६ ॥ बिजयाछन्द ॥ माछीकहैअपनोघरमाछरुमूसोकहैअपनोघरऐसो । कोनेघुसीकहैघूसिघिरैराबिलारिऔव्यालबिलेमहँवैसो ॥ कीटकश्वानसोपक्षि-

औभिक्षुकभूतकहैभ्रमिजासहजैसो । हौंहूकहौंअपनोघरतैस्य-
हिताघरसों अपनोघर कैसो ॥ २७ ॥

टी०–हे मुनिनागर ! या संसारमें दोषमयी कहे दूषण (अपवाद)इति तत्
स्वरूप जो दवारि डाढा है अथवा दोषमयी कहे दूषणाधिक्यरूपी जो दवारि है
सो अति लगी है अति कहि या जनायो कि सब संसारभरेमें लगी है ऐसो
स्थान या संसारमें कोऊ नहीं है कि जहां प्राणीको दोष न लगै अथवा जहां
कोहूको दोष न लगावै अर्थ या संसारमें वृथा सब सबको दोष लगावत है
अथवा दोष कहे परस्पर विरोधमयी जो दवारि लगी है ताको देखतही तासों
हमारी मति जरि गई है दवारिके लुयेसों जरियत हैं याके देखतही जरी कहे
अति तेज जनायो ता मतिमें या संसारमें राज्यादि भोगकी आश कहे इच्छा न
गूढ कहे अंतरमें है न उजागर कहे प्रसिद्ध है जैसे सागर-(समुद्र) में रज धूरि
गूढ उजागर नहीं है जा स्थानमें जो जीव दवारिमें जरत है ता स्थानमें ताके
भोगकी इच्छा नहीं होति यह रीतिही है ॥ २६ ॥ जैसे ये सब अपनो अपनो
घर कहत हैं तैसे ता घरसो कहे ताही घरको होहू अपनो कहौं सो घर अपनो
कैसो कहे कौनविधि है या संसारमें कछु काहूको नहीं है वृथा ममत्व है इति
भावार्थः ॥ २७ ॥

मू०–सुन्दरीछन्द ॥ जैसहिहौंअबतैसहिहौंजग । आपद-
सम्पदकेनचलौंमग ॥ एकहिदेहतियागबिनासुनि । हौंनकछू
अभिलाषकरौंमुनि ॥ २८ ॥ जोकछुजीवउधारणकोमत ।
जानतहौ तौ कहौ तनुहैरत ॥ यों कहिमौनगहीजगनायक ।
केशवदासमनोबचकायक ॥ २९ ॥ चामरछन्द ॥ साधुसा-
धुकैसभाअशेषहर्षहर्षियो । दीहदेवलोकतेप्रसूनवृष्टिबर्षियो ॥
देखिदेखिराजलोकमोहियोमहाप्रभा । आइयोतहाँतुरन्तदेव-
कीसबैसभा ॥ ३० ॥

टी०–राज्यादि जे आपद विपत्ति औ संपद संपत्तिके मग यह हैं तिनमें हौं न
चलिहौं हे मुनि ! एक देह त्याग विना और कछू अभिलाप नहीं करतो अर्थ

केवल देह त्याग करिबेहीकी इच्छा है ॥ २८ ॥ रत कहे अनुरक्त ॥ २९ ॥ देवकी सबै सभा आइयो कहे आवत भई सो राजलोक कहे राजभवनकी प्रभा देखि मोहियो कहे मोहित भई ॥ ३० ॥

मू०-विश्वामित्र ॥ व्यासपुत्रकेसमानशुद्धबुद्धिजानिये। ईशकोअशेषतत्त्वतत्त्वसोबखानिये ॥ इष्टहौबशिष्ठशिष्टनित्यवस्तुशोधिये। देवदेवरामदेवकोप्रबोधबोधिये ॥ ३१ ॥

टी०-विश्वामित्र वशिष्ठसों कहत हैं कि हम तुमको व्यासपुत्र जे शुकाचार्य हैं तिनके समान शुद्ध बुद्धि कहे ज्ञानयुक्त है बुद्धि जिनकी ऐसे जानियत हैं अर्थ अतिज्ञानी हौ औ ईश जे ईश्वर हैं तिनको जो अशेष कहे संपूर्ण तत्त्व कहे स्वरूप है ताको तत्त्व कहे सिद्धांत सो अर्थ निश्चयात्मक बखानि एक हेतु कहत हौं ॥ "तत्त्वस्वरूपेपरमात्मनीतिमेदिनी ॥" हे शिष्ट कहे श्रेष्ठ ! वशिष्ठ ! तुम इष्ट कहे रघुवंशके गुरु हौ औ नित्य जो वस्तु है ताको शोधिये कहे ढूंढो करत हौ सो सब विधिसों तुमको उचित है तासों देवके देव जे राम देव हैं तिनको प्रबोध जो ज्ञान है तासों बोधिये कहे बोध करौ अर्थ जीवोद्धारको मत रामचंद्र पूछत हैं सो कहौ ॥ ३१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांजगनिन्दावर्णनं नाम चतुर्विंशतितमः प्रकाशः ॥ २४ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां चतुर्विंशतितमः प्रकाशः ॥ २४ ॥

मू०-दोहा ॥ कथापचीसप्रकाशमें, ऋषिबशिष्ठसुखपाइ ॥ जीवउधारणरीतिसब, रामहिंकह्योसुनाइ ॥१॥ बशिष्ठ-पद्धटिकाछन्द ॥ तुमआदिमध्यअवसानएक। अरुजीवजन्मसमुझौअनेक ॥ तुमहींजोरचीरचनाबिचारि। त्यहिकौनभांतिसमुझौमुरारि ॥ २ ॥ सबजातिबूझियतमोहिंराम। सुनियेजोकहौंजगब्रह्मनाम ॥ तिनकेअशेषप्रतिबिम्बजाल। त्यइजीवजा

निजगमेंकृपाल ॥३॥ निशिपालिकाछन्द ॥ लोभमदमोहब-शकामजबहींभयो । भूलिगयेरूपनिजबेधितिनसोंगयो ॥ राम ॥ बूझियतबातयहकौनविधिउद्धरै ॥ बशिष्ठ ॥ वेदबिधिशोधिबुधयत्नबहुधाकरै ॥४॥ राम—दोहा ॥ जितलैजैहैबासना, तिततितह्वैहैलीन ॥ यत्नकहौकैसेकरै, जीवबापुरोदीन ॥ ५ ॥ बशिष्ठ—दोधकछन्द ॥ जीवनकीयुगभांतिदुराशा ॥होतिशुभाशुभरूपप्रकाशा । यत्ननसोंशुभपन्थलगावै । तौअपनोतबहींपदपावै ॥ ६ ॥

टी०— १ जीवनके जे अनेक जन्म हैं तिनको समुझौ कहे जानत हौ अथवा अनेक जे जीव हैं तिनके जन्मको अर्थ जा प्रकारसों जीवनकी उत्पत्ति है ताको समुझौ कहे मोसों बूझत हौ ॥ २ ॥ सब वस्तु जानिहूकै जो हमसों बूझियत कहे पूंछतहौ तौ सुनौं हम कहियत हैं जगमें जो ब्रह्मनाम कह्यो है अर्थ जिनको ब्रह्मनाम है तिनके जे प्रतिबिंब जा प्रतिबिंब समूह हैं तेई जीव हैं यह मत प्रतिबिंबवादिनको वेदांतमें प्रसिद्ध है ॥ ३ ॥ अपनो जो रूप ब्रह्म है ताको भूलिगये तिनसों लोभादिसों ॥ ४ ॥ वासना (दुराशा) ॥ ५ ॥ शुभ दुराशा जो ईश्वर पूजनादिकी आशा है ताके पंथमें जीवको अथवा मनको लगावै तो अपनो जो पद (स्थान) है ब्रह्मस्थान ताको पावै अर्थ शुभवासनाको ग्रहण करै ताके बाद ताहू वासनाको त्याग करि ब्रह्मपदको प्राप्त होय ॥ ६ ॥

मू०—हौंमनतेनिधिपुत्रउपायो । जीवउधारणमंत्रबतायो ॥ हैपरिपूरणज्योतितिहारी । जाइकहीनमुनीननिहारी ॥ ७॥ दोहा ॥ ताकीइच्छातेभये, नारायणमतिनिष्ठ ॥ तिनतेचतुराननभये, तिनतेजगतप्रतिष्ठ ॥ ८ ॥ दोधकछंद ॥ जीवसबैअवलोकिदुखारे । आपनचित्तप्रयोगबिचारे ॥ मोहिंसुनाये तुम्हैंतेसुनाऊं । जीवउधारणगीतगुनाऊं ॥ ९ ॥ दोहा—मुक्तिपुरीदरबारके, चारिचतुरप्रतिहार । साधुनकोसतसंगसम,

अरुसंतोषविचार ॥१०॥ यहजगचक्राव्यूहकिय, कज्जलक-लितअगाधु ॥ तामहँपैठिजोनीकसै, अकलंकितसोसाधु॥११॥

टी०-ज्योति (ब्रह्मज्योति) ॥ ७ ॥ ८ ॥ तिन चतुरानन जगत्के जीवनको संसारमें दुखार देखिकै अपने चित्तमें तिन जीवनके उद्धारको प्रयोग कहे यत्न विचारयो सो सब हमको सुनायो है सो तुमको सुनाइयतहै ॥ ९ ॥ १०॥ यामें साधुको लक्षण कहत हैं जैसे कज्जल कलित चक्रव्यूहमें शपथार्थ पैठिकै अकलंकित कहे कज्जल चिह्न रहित निकसै सो साधु कहे दोषरहित होत है तैसे कज्जल सम दोषयुक्त जो संसार है तामें पैठि अकलंकित कहे अदोष निकसै सो प्राणी साधु है ॥ ११ ॥

मू०-दोधकछंद ॥ देखतहूंएककालछियेहूं । बातकहैसुनै भोगकियेहूं ॥ सोवतजागतनेकनक्षोभै । सोसमतासबहीमहँ शोभै ॥ १२ ॥ जोअभिलाषनकाहुकोआवै । आयेगयेसुख दुःखनपावै । लैपरमानँदसोंमनलावै । सोसबमांझसँतोषक-हावै ॥ १३ ॥ आयोकहाँअबहौंकहिकोहौं । ज्योंअपनोपद-पाऊंसोठोहौं ॥ बंधुअबंधुहियेमहँजानैं । ताकहँलोगबिचार-बखानैं ॥ १४ ॥

टी०-यामें समताको लक्षण कहत हैं संसारको जो स्रक् चंदन वनितादि विषयभोग है ताको देखत हू औ छुयेहू औ ताहीकी बात कहै औ सुनै औ भोगहू करै परंतु सोवत औ जागते नेकहू तामें क्षोभै नहीं अर्थ लीन न होय औ सबहीमें कहे अग्नि जलादिमें समता शोभै सोई समता है ॥ १२ ॥ यामें संतोषको लक्षण कहतहैं जो काहू वस्तुको अभिलाष जीमें न आवै औ काहू वस्तुके आयेसों प्राप्त भयेसों सुख न पावै औ गयेसों दुःख न पावै औ मनको लैके परमानंद जो ब्रह्महै तामें लगावै सोई सबमांझ कहे चारोंके मध्यमें संतोष कहावत है॥ ॥ १३ ॥ यामें विचारको लक्षण कहत हैं मैं कौन हौं औ कहां आयो हौं अब जा उपायसों अपने पद-(स्थान) को पाऊँ सोउ ठोहौं कहे ढूंढौं या प्रकारसों विचार करै औ बंधु कहे हित शम दमादि अबंधु कहे अहित काम क्रोधादिको हियेमें जानै सोई विचार है ॥ १४ ॥

मू०—चारिमेंएकहुजोअपनावै । तौतुमपैप्रभुआवनपावै ॥ राम ॥ ज्योतिनिरीहनिरंजनमानी। तामहँक्योंऋषिइच्छबखानी ॥ १५ ॥ वशिष्ठ-दोहा ॥ सकलशक्तिअनुमानियै, अद्भुत ज्योतिप्रकाश ॥ जातेजगकोहोतहै, उत्पतिस्थितिअरुनाश॥ ॥ १६ ॥ श्रीराम—दोधकछंद ॥ जीवबँधेसबआपनिमाया ॥ कीन्हेंकुकर्ममनोवचकाया ॥ जीवनचित्तप्रबोधनआनो । जीवनमुक्तकेभेदबखानो ॥ १७ ॥

टी०—जैसे चोपदारको अपनाइकै राजाके पास सब जात हैं तैसे इन चारिमें एकहूको अपनावै तौ तुमपै जान पावै फेरि राम ऋषिसों पूंछ्यो कि ज्योतिको तौ निरीह कहे इच्छा रहित औ निरंजन कहे रागरहित मान्यौ औ कह्यो कि "ताकी इच्छाते भये, नारायण मतिनिष्ठ" तौ ज्योतिमें इच्छा क्यों कही सो कहौ ॥ १५ ॥ वशिष्ठ कह्यो कि अद्भुत जो ज्योतिको प्रकाश है तामें इच्छादि कहैं तौ नहीं परंतु इच्छादिकनकी सबकी शक्ति अनुमानियतहै जा शक्तिसों संसारकी उत्पत्ति स्थिति नाश होत है ॥ १६ ॥ जीव जे हैं ते अपनीमायामें बँधे मनसा वाचा कर्मणा कुकर्म (कुत्सितकर्म) कीन्हे हैं तिन जीवनको जो प्रबोधन कहे ज्ञान तुम कह्यो सो हम चित्तमें आन्यो अर्थ भ्यास जान्यो इति अब जीवन्मुक्तके भेद कहौ ॥ १७ ॥

मू०—वशिष्ठ ॥ बाहेरहूअतिशुद्धहियेहू । जाहिनलागतकर्म कियेहू ॥ बाहेरमूढसोअंतसयानो। ताकहँजीवनमुक्तबखानो॥ ॥ १८ ॥ दोहा ॥ आपुनसोअवलोकिये, सबहीयुक्तायुक्त ॥ अहंभावमिटिजाहिजो,कौनबद्धकोमुक्त ॥ १९ ॥ श्रीराम-दोधक ॥ सोसिगरेगुणहोतसोजानो । स्थावरजीवनमुक्तबखानो ॥ वशिष्ठ ॥ जानिसबैगुणदोषनछंडै । जीवनमुक्तनकेपदमंडै ॥ २० ॥ राम—दोहा ॥ साधुकहावतकरतहैं, जगमेंसबव्योहार ॥ तिनकोमीचुनछ्वैसकै, कहिप्रभुकौनाविचार ॥ २१ ॥

टी०—यामें जीवन्मुक्तको लक्षण कहते हैं बाहर कहे तनमें औ हियहूमें कहे मनहूमें शुद्ध होय औ पाप पुण्य कर्म करै सो लागै नहीं औ बाहर मूढ

अज्ञान रहै अर्थ बावरे सम रहै औ अंतमें सयानो रहै ताहीको जीवन्मुक्त कहियत हैं॥ १८ ॥ युक्त कहे योग्य मनुष्यादि अयुक्त कहे अयोग्य मूकादि तिनको आपुनसों कहे आपने सम अवलोकिये (देखिये) अर्थ अपने सम सबको जानिये औ अहंभाव मिटि जाय तौ कौन बद्ध है कौन मुक्त है अर्थ सबही मुक्त हैं ॥१९॥ योग्यके गुण अयोग्यके दोष जानिकै त्याग करै ॥२०॥ रामचन्द्र कहत हैं कि ज्ञानसों जीवनकी मुक्ति कह्यो सो जान्यो अब यह कहौ कि जे प्राणी साधु कहावत हैं औ जगमें स्त्री पुत्रादिके सब व्यौहार करत हैं तिनको मीचु नहीं छुइ सकति अर्थ तिनकी मृत्यु नहीं होति है ताको विचार हे प्रभु! हे वशिष्ठ! कहौ ॥ २१ ॥

मू०-वशिष्ठ-पद्धटिकाछन्द ॥ जगजिनकोमनतवचरणली-न । तनतिनकोमृत्युनकरतिक्षीन ॥ तेहिक्षणहींक्षणदुखक्षीण होत । जियकरतअमितआनँदउदोत ॥ २२ ॥ जोचाहैजीवन अतिअनंत । सोसाधैप्रणायामयंत्र ॥ शुभरेचकपूरकनामजा-नि । अरुकुम्भकादिसुखदानिमानि ॥ २३ ॥ जोक्रमक्रमसाधै साधुधीर । सोतुमहिंमिलैयाहीशरीर ॥ राम ॥ जगतुमतेनाहैं सर्वज्ञआन । अबकहौदेवपूजाविधान ॥ २४ ॥

टी०-हे राम! जिन प्राणिनको मन तुम्हारे चरणमें लीन है ते साधु जगमें सब व्यवहारहू करत हैं ताहूपर तिनके तनको मृत्यु क्षीण नहीं करि सकति औ तिहि प्राणीके क्षणमें संसाररूपी दुःख क्षीण होत हैं औ मुक्तिरूपी जो अमित आनन्द है सो उदोत (प्रकाश) करत है ॥ २२ ॥ अंगुष्ठ ते तृतीय अंगुलीको नाम अनामिका है तासों नासाको बाम रंध्र अंगुष्ठसों रोंकि वाम रंध्रसों वायुको छोडिये सो पूरक प्राणायाम है; औ दक्षिण रंध्र अंगुष्ठसों औ बामरंध्र अंगुष्ठसों औ बामरंध्र अनामिकासों साथही रोंकि वायुको हृदयमें स्थापन करिये सो कुम्भक है औ यथा वायुपुराणे। "प्राणायामस्त्रिधा प्रोक्तो रेचकः पूरकस्तथा ॥ कुम्भको रेचकस्तत्र नासारंध्राच्च दक्षिणात् ॥ निरुध्य वामरंध्रश्चानामिकया विसर्जनम् ॥ निरुध्य दक्षिणं रंध्रं वामरंध्राच्च पूरणम् ॥ तथैवानामिकांगुल्या पूरणं तु तदुच्यते ॥ रेचकात्पूरणात्पश्चाद्द्वैपुटनाशयोस्तथा । सन्निरुध्य हृदि-स्थाप्य वायुं तिष्ठत्स कुम्भकः" ॥ २३ ॥ २४ ॥

मू०—वशिष्ठ-तारकछंद ॥ हमएकसमयनिकसेतपसाको । तवजाइभजेहिमवंतरसाको ॥ बहुभांतिकरयोतपक्योंकहि आवै । शितकण्ठप्रसन्नभयेजगगावै ॥ २५ ॥ दंडक ॥ ऊजरे उदारउरबासुकीबिराजमान हारकेसमानआनउपमानटोहिये। शोभिजैजटानबीचगंगाजूकेजलबुंदकुंदकीसीकलीकेशोदासम-नमोहिये।नखकीसीरेखाचंद्रचन्दनसीचारुरजअंजनशृंगारहू-गरलरुचिरोहिये। सबसुखसिद्धिशिवासोंहैशिवजूकेसाथजाव-कसोपावकलिलारलाग्योसोहिये ॥ २६ ॥

टी०—रसा (पृथ्वी) जग गावै अर्थ जिनको जगत्‌के प्राणी गान करत हैं ॥ २५ ॥ उजरे औ उदार कहे बडे उरमें हार मालाके समान वासुकी नाम सर्प विराजमानहै और उपमाको नहीं टोहिये कहे ढूंढियत अर्थ और उपमाके सदृश नहीं हैं तासों खोज नाहीं करियत रज कहे विभूति अंजन जो शृंगार है ताकी रुचि गरल जो विष है ता करिकै रोहिये कहे धारण करियत है अर्थ लगि-गयो पार्वतीके नेत्रांजन सम गरल शोभित है सब सुखकी सिद्धिशिवा जो पार्वतीजी हैं ते संगमें शोभती हैं औ जावक कहे महाउर सम लिलारमें लाग्यो पावक (अग्नि) शोभित है ऐसे सदा सुरत चिह्नयुक्त प्रसन्न ह्वै हमारे समीप आये इतिशेषः ॥ २६ ॥

मू०—महादेव-तारकछन्द ॥ बरमाँगिकछूऋषिराजसयाने । बहुभांतिचलेतपपंथपयाने ॥ वशिष्ठ ॥ पुजवोपरमेश्वरभोमन इच्छा । सिखवोप्रभुदेवप्रपूजनशिक्षा ॥ २७ ॥ शिव-दोहा ॥ रामरमापतिदेवनाहिं, रंगनरूपनभेव ॥ देवकहतऋषिकौनको, सिखऊंजाकीसेव ॥ २८ ॥वशिष्ठ-तोमरछंद ॥ हमकहाजान-हिंअज्ञ । तुमसर्वदासर्वज्ञ ॥ अबदेवदेहुबताइ । पूजाकहौस-मुझाइ ॥ २९ ॥ शिव ॥ सतचित्प्रकाशप्रभेव । तेहिवेद-मान तदेव ॥ तेहिपूजिऋषिरुचिमंडि । सबप्राकृतनकोछंडि

॥ ३० ॥ पूजायहैउरआनु । निर्व्याजधरियेध्यानु ॥ योंपूजिघटिकाएक । मनुकियोयाजअनेक ॥ ३१ ॥

टी०–चले तपपंथमें अर्थ उचित तपपंथमें तुम बहुभांति पधाने कहे गमन करयौ है अर्थ बडो तप करयो है ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ सत कहे सत्यरूप चित् कहे चैतन्यरूप जो प्रकाश कहे ज्योति जो रामचन्द्रको प्रभेव कहे भेद है अर्थ रूपांतर है ताको देव वेद मानत हैं प्राकृत कहे लघु गणेशादि ॥ ३० ॥ निर्व्याज कहे निष्कपट ध्यानको धरिये यहै ता देवकी पूजा है अर्थ ताकी पूजा ध्यानही है और नहीं है ॥ ३१ ॥

मू०–जियजानयहईयोग । सबधर्मकर्मप्रयोग ॥ सबरूप पूजिप्रकाश । तबभयेहमसेदास ॥ यहबचनकरिपरमान । प्रभुभयेअंतर्द्धान ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ यहपूजाअद्भुतअगिनि, सुनिप्रभुत्रिभुवननाथ ॥ सबैशुभाशुभवासना, मैंजारीनिजहाथ ॥ ३३ ॥ झूलनाछंद ॥ यहिभांतिपूजापूजिजीवजोभक्तपरमकहाइ । भवभक्तिरसभागीरथीमहँदेहिदुखबहाइ ॥ पुनिमहाकर्त्तामहात्यागीमहाभोगीहोइ । अतिशुद्धभावरमैरमापतिपूजिहैसबकोइ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ रागद्वेषबिनकैसहूं, धर्माधर्मजोहोइ॥हर्षशोकउपजैनमन,कर्त्तामहासोलोइ ॥३५॥

टी०–धर्मके जे दानादि कर्म हैं तिनको प्रयोग कहे यत्न सब प्राणी प्रकाश जो रूप है ज्योतिरूप ताको पूजिकै हमारे सम दास भये हैं परिमाण कहे निश्चय ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ जो जीव या प्रकारसों पूजा पूजिकै परमभक्त कहायकै भव जो संसार है ताके दुःखनको भक्तिरसकी जो भागीरथी गंगा हैं तामें बहाइ देइ अर्थ दूरि करै फेरि महाकर्त्ता औ महात्यागी औ महाभोगी होइ औ शुद्धभावसों रमापति (ईश्वर) में रमैं कहे प्राप्त होइ औ ताको सब कोउ पूजन करिहैं ॥ ३४ ॥ महाकर्तादिकनके तीनहूके लक्षण क्रमसों कहत हैं जाके राग कहे प्रीति विना जीव रक्षणादि कछू धर्म आकस्मात् ह्वै जाइ ताको हर्ष कहे सुख न होइ औ द्वेष कहे विरोध बिना जीवहिंसादि अधर्म होइ ताको शोक दुःख ना होइ सो प्राणी महाकर्ता हैं ॥ ३५ ॥

मू०-दोहा ॥ भोजअभोजनरतविरत, नीरससरससमान ॥ भोगहोइअभिलाषबिन, महाभोगतामान ॥ ३६ ॥ जोकछु आंखिनदेखिये, बाणीबर्ण्योजाहि ॥ महातियागीजानिये, झूठोजानौताहि ॥ ३७ ॥ तोमरछंद ॥ जियज्ञानबहुव्यौहार । अरुयोगभोगबिचार ॥ यहिभांतिहोइजोराम । मिलिहैंसोतेरेधाम ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ निशिबासरबस्तुबिचारकरैमुखसांचहियेकरुणाधनुहै । अघनिग्रहसंग्रहधर्मकथानपरिग्रहसाधुनकोगनुहै । कहिकेशवयोगजगैहियभीतरबाहरभोगनसोंतनुहै । मनुहाथसदाजिनकेतिनकोबनहीघरहैघरहीबनुहै ॥ ३९ ॥

टी०-भोज कहे भक्ष्य औ अभोज (अभक्ष्य) पदार्थमें रत (अनुरक्त) औ विरत (विरक्त) न होइ अर्थ भोज्य अभोज्यको समान भक्षण करै औ निरस कहे स्वादरहित सरस (स्वादयुक्त) बस्तु जाको समान होइँ औ भोग जाको अभिलाष विना होइ सो महाभोक्ता है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ जाके जियमें ज्ञानको बहुत प्रकारको व्यौहार है औ योग औ भोगको बहु विचार है ऐसो जब होइ तब तुम्हारो जो धाम (तेज) है ज्योतिरूप ताको मिलिहै अथवा धाम कहे घर वैकुंठ ताको मिलि है (प्राप्त) ह्वै है ॥ ३८ ॥ वस्तुविचार कहे ब्रह्मविचार अथवा सत् असद्वस्तुको विचार निग्रह (ताडन) परिग्रह कहे परिजन (निकटवासी) इति ॥ " परिग्रहः परिजने इति मेदिनी " ॥ ३९ ॥

मू०-॥ दोहा ॥ लेइजोकहियेसाधुअन, लीन्हेकहियेबाम ॥ सबकोसाधनएकजग, रामतिहारोनाम ॥ ४० ॥ राम ॥ मोहिं नहुतोजनाइबे, सबहीजान्यौआजु ॥ अबजोकहैसोकरिबनै, कहेतुम्हारेकाज ॥ ४१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांजीवोद्धारवर्णनं नाम पंचविंशः प्रकाशः ॥ २५ ॥

टी०-वाम कहे कुटिल साधन कहे उपाय अर्थ मुक्तिको उपाय केवल तुम्हारे नामको जप है ॥ ४० ॥ जो आपनो ईश्वरत्व मोहि काहूको जनाइबोई नहीं रह्यौ सो सवही जान्यौ तासों जो कहौ सो अब करिहै अर्थ राज्य लेबेको कहत हौ सो लैहैं ॥ ४१ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां पंचविंशः प्रकाशः ॥ २५ ॥

मू०-दोहा ॥ कथाछब्बीसप्रकाशमें, कह्योवशिष्ठविवेक ॥ रामनामकोतावअरु, रघुबरकोअभिषेक ॥१॥ मोटनकछंद ॥ बोलेऋषिराजभरत्थतबै । कीजैअभिषेकप्रयोगसबै ॥ शत्रुघ्न-कह्योचुपह्वैनरहौ । श्रीरामकेनामकोतत्त्वगहौ ॥ २ ॥

टी०-जब रामचन्द्र राज्य अंगीकार करयौ तब ऋषिराज-(वशिष्ठ) सों भरत बोले प्रयोग (यत्न) शत्रुघ्न भरतसों कह्यो कि चुप क्यों नहीं ह्वै रहते अर्थ राज्याभिषेक तौ रामचन्द्र अंगीकार करयौ है तौ ह्वैहैई ॥ १ ॥ जो ऋषि-राज कह्यो है कि सबको साधन एक जग, राम तिहारो नाम ॥ तारामनामको तत्व ऋषिसों गहौ अर्थ सुनिकै धारण करौ ॥ २ ॥

मू०-राम-मोटनकछन्द ॥ श्रद्धाबहुधाउरआनिभई ।ब्रह्मासु-तसोंबिनतीबिनई ॥ श्रीरामकोनामकहौरुचिकै ।मतिमानमहा मनकोशुचिकै ॥ ३ ॥ वशिष्ठ--स्वागताछंद ॥ चित्तमांझजब आनिअरूझी । बाततातकहँमैंयहबूझी ॥ योगयागकरिजाहिन आवै । ज्ञानदानविधिमर्मनपावै ॥ ह्वैअशक्तसबभांतिबिचारो । कौनभांतिप्रभुताहिउधारो ॥ ४ ॥

टी०-शत्रुघ्नके उरमें बडी श्रद्धा भई ॥ ३ ॥ अरुझी अर्थ संदेह भई तात (ब्रह्मा) मर्म (सिद्धान्त) ॥ ४ ॥

मू०-ब्रह्मा-भुजंगप्रयातछन्द ॥ जहींसच्चिदानन्दरूपैधरैंगे । सुत्रैलोक्यकोतापतीन्योंहरैंगे । कहैंगोसबैनामश्रीरामताको । सदासिद्धहैशुद्धउच्चारजाको ॥५ ॥ कहैनामआधोसोआधोन

शावै । कहैनामपूरोसोबैकुंठपावै ॥ सुधारैंदुहूंलोककोवर्णदोऊ । हियेछद्मछांड़ैकहैवर्णकोऊ ॥ ६ ॥ सुनावैसुनैसाधुसंगीकहावै । कहावैकहैपापपुंजैनशावै ॥ स्मरावैस्मरैबासनाजारिडारै । तजैछद्मकोदेवलोकैसिधारै ॥७॥ तामरसछंद ॥ जबसबवेदपुराणनशैहैं । जपतपतीरथहूमिटिजैहैं ॥ द्विजसुरभीनहिंकोउबिचारै । तबजगकेवलनामउधारै ॥ ८ ॥ दोहा ॥ मरणकालकाशीविषे-महादेवनिजधाम ॥ जीवनकोउपदेशिहैं,रामचन्द्रकोनाम॥९॥ मरणकालकोऊकहै, पापीहोइपुनीत ॥ सुखहीहरिपुरजाइहै, सबजगगावैगीत ॥ १० ॥

टी०–और मंत्र पुरश्चरणादिसों सिद्ध किये जात हैं औ याके शुद्ध उच्चार सदाही सिद्ध हैं ॥ ५ ॥ आधो नाम रा अथवा म अधोगति (नरक) इति, पूरे नामके जपसों वैकुंठ प्राप्तिहोतिहै मृत्युलोकमें कहा होत है ता लिये फेरि कहत हैं कि राम ये जे दुवौ अंक (वर्ण) हैं ते मृत्युलोक, स्वर्गलोक दुवौ सुधारत हैं मृत्युलोकमें यश गौरवादिको लाभ होत है, वैकुंठमें देवसुख प्राप्त होत है इत्यर्थः ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०–रामनामकेतत्त्वको, जानतवेदप्रभाव, ॥ गंगाधरकैधरणिधर, बालमीकिमुनिराव ॥ ११ ॥ दोधकछंद ॥ सातहुसिंधुनकेजलल्यूरे । तीरथजालनिकेपयपूरे ॥ कंचनकेघटबानरलीने । आइगयेहरिआनँदभीने ॥ १२ ॥ दोहा ॥ सकलरत्नमयमृत्तिका, शुभऔषधीअशेष ॥ सातद्वीपकेपुष्पफल, पल्लवरसविशेष ॥ १३ ॥ दोधकछंद॥आंगनहीरनकोमनमोहै ॥ कुंकुमचन्दनचर्चितसोहै ॥ हैसरसीसमशोभप्रकाशी । लोचनमीनमनोजविलाशी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ गजमोतिनयुतशोभिजैं, मरकतमणिकेथार ॥ उदकबुन्दसोंजनुलसत, पुरइनिपत्रअपार ॥ १५ ॥ विशेषकछंद ॥ भांतिनभांतिनभाज-

नराजतकौनगनै । ठौरहिठौररहेजनुफूलिसरोजवनै ॥ भूपन-केभांतिविम्बविलोकतरूपरसै । खेलतहैंजलमांझमनोजलदेव-वसै ॥ १६ ॥ पद्धटिकाछंद ॥ मृगमदमिलिकुंकुमसुरभिनीर। घनसारसहितअम्बरउसीर । घसिकेशरिसोंबहुविधिनीर । क्षितिछिरकेचरथावरशरीर ॥ १७ ॥ बहुवर्णफूलफलदलउ-दार । तहँभरिराखेभाजनअपार ॥ तहँपुष्पवृक्षशोभैंअनेक । मणिवृक्षस्वर्णकेवृक्षएक ॥ १८ ॥ त्यहिंउपररच्योएकैवितान। दिविदेखतदेवनकेबिमान । दुहुँलोकहोतपूजाविधान ।अरुनृ-त्यगीतवादित्रगान ॥ १९ ॥

टी०—धरणिधर (शेष) ॥ ११ ॥ हरि जे रामचन्द्र हैं तिनके अभिषेको-त्सवके आनंदमें भीने इत्यर्थः ॥ १२ ॥ रस (घृतादि) ॥ १३ ॥ भांतिन भांति तीनि छंदमें एक वाक्यता है सरसी तडाग ता आंगनमें प्रतिबिंबित जे सबके लोचन हैं तेई मनोजके (कामके) मीन (मत्स्य) हैं अथवा मनोजवि-लासी कहे कामके खेलिवेके मीन हैं ॥ १४ ॥ ताही तडागमें पात्र पुरइनि पत्र समहैं ॥ १५ ॥ ताही तडागमें भाजन कहे पात्र सरोज सम फूलि रहे हैं प्रति-बिंब जलदेव सम हैं ॥ १६ ॥सुरभि (सुगंधित अथवा सुंदर) "सुरभिर्हेम्नि चंप-के जातीफले मातृभेदे रम्ये चैत्र वसंतयोः॥ सुगंधौ गवि शल्लक्यामिति हेमचंद्रः॥" अम्बर सुगन्ध वस्तुविशेष ॥" अंबरंनद्वयोर्व्योम्निसुगन्ध्यंतरवस्त्रयोरिति मेदिनी॥" सरिसों (बराबरिसों) अर्थ मृगमदादि सब सम घसिकै ॥ १७ ॥ दलपत्र (भाजन पात्र) ॥ १८ ॥ एकै अपूर्व वादित्र (बाजने) ॥ १९ ॥

मू०—तरुऊपरिकोआसनअनूप । बहुरचितहेममयविश्वरू-प ॥ तहँबैठेआपुनआइराम । सियसहितमनोरतिरुचिरकाम ॥ २० ॥ जनुघनदामिनिआनन्ददेत । तरुकल्पकल्पबल्लीस-मेत । हैकैधौंविद्यासहितज्ञान । कैतपसंयुतमनसिद्धिजाल ॥ ॥२१॥ कैबिक्रमयुतकीरतिप्रवीन । कैश्रीनारायणशोभलीन॥ कैअतिशोभितस्वाहासनाथकैसुन्दरताशृंगाररसाथ ॥ २२ ॥

सुन्दरीछंद ॥ केशवशोभनछत्रबिराजत । जाकहँदेखिसुधाधरलाजत ॥ शोभितमोतिनकेमतिकेगन । लोकनकेजनुलागिरहेमन ॥ २३ ॥ दोहा ॥ शीतलताशुभतासबै, सुन्दरताकेसाथ ॥ अपनीरविकीअंशुल, सेवतजनुनिशिनाथ ॥ २४ ॥

टी०--ऊमरि (गूलरि) हैममय कहे सुवर्णमयी विश्व कहे संसारके रूप अर्थ संसारके वस्तु स्वरूपन करिके रचित है (चित्रित) है ॥ २० ॥ कै तपसंयुत सिद्धि कहे तपसिद्धि यह मनमें जानु इत्यर्थः ॥ २१ ॥ श्री (लक्ष्मी) सनाथ कहे अग्नि सहित शृंगाररस अथवा भूषणको शृंगार कियेसों सुन्दरता बढति है तासों जानों ॥ २२ ॥ २३ ॥ ताही छत्रमें तर्क है शीतलता औ शुभता कहे मांगल्य औ सुन्दरता जो सब कहे पूर्ण है तिनके संग अपनी औ रविकी अंशु (किरणि) लैके मानों निशिनाथ (चन्द्रमा) रामचन्द्रको सेवत है चन्द्रकिरणि सम मुक्तनकी किरणि हैं रविकिरणि सम औ जटित जे माणिकादि मणिहैं तिनकी किरणि हैं औ शीतलतादि हैंही ॥ २४ ॥

मू०—सुन्दरीछन्द ॥ ताहिलियेरविपुत्रसदारत । चमरबिभीषणअंगदढारत ॥ कीरतिलैजगकीजनुवारत । चन्द्रकचंदनचंदसवारत ॥ २५ ॥ लक्ष्मणदर्पणकोदेखरावत । पाननिलक्ष्मणबंधुखवावत ॥ अर्थलैलैनरदेवसदारत । देवअदेवनिपायनपारत ॥ २६ ॥ दोहा ॥ जामवंतहनुमंतनल, नीलमरातिबसाथ ॥ छरीछबीलीशोभिजै, दिक्पालनकेहाथ ॥ २७ ॥ रूपबहिक्रमसुरासिसम, वचनरचनबहुभेव ॥ सभामध्यपहिचानिये, नरनरदेवनदेव ॥ २८ ॥ आईजबअभिषेककी, घटिका केशवदास ॥ बाजेएकहिबारबहु, दुंदुभिदीहअकाश ॥ २९ ॥

टी०—रत कहे अनुरक्त है कीर्तिसम चमरहै फिरि चमर कैसे हैं कि चंद्रक जो कपूर है औ चंदन औ चंद्रमा है सदा आर्त कहे पीडित जिनसों अर्थ जिनकी,

श्वेततासों अपनी श्वेतताही न समुझि चंद्रकादि दुःखी होतहैं ॥ २५ ॥ २६ ॥ माही (मरातिब) प्रसिद्ध है छरी (आशा) ॥ २७ ॥ सुरभि (सुगंधि) ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०-झूलनाछंद ॥ तबलोकनाथविलोकिकैरघुनाथकोनिजहाथ । सविशेषसोंअभिषेककीपुनिउच्चरीशुभगाथ ॥ ऋषिराजइष्टवशिष्ठसोंमिलिगाधिनन्दनआइ। पुनिवालमीकिवियासआदिजितेहुतेमुनिराइ ॥ ३० ॥ रघुनाथशंभुस्वयंभुकोनिजभक्तिदीसुखपाइ । सुरलोककोसुरराजकोकियदीहनिर्भयराइ । बिधिसोंऋषीशनसोंबिनयकरिपूजिऔपरिपाइ । बहुधादईतपवृक्षकीसबसिद्धिसिद्धसुभाइ ॥ ३१ ॥

टी०-लोकनाथ जे ब्रह्मा हैं तिन अभिषेककी वाटिका आई विलोकिके निज हाथसों रघुनाथको अभिषेक की कहे करयो पुनि फेरि शुभ गाथ कहे वेदविहित गाथको उच्चार करयो इत्यर्थः पुनि कहे ब्रह्माके अभिषेक किये बाद वशिष्ठादिक जेते मुनिराय ता ठौर हुते तिनहुँन अभिषेक करि शुभगाथ उच्चरी इत्यर्थः ३०॥ स्वयंभू कहे ब्रह्मा ॥ ३१ ॥

मू०-दोहा ॥ दीन्हींमुकुटबिभीषणै,अपनोअपनेहाथ ॥ कंठमालसुग्रीवको,दीन्हीश्रीरघुनाथ॥३२॥चञ्चरीछन्द॥ मालश्रीरघुनाथकेउरशुभ्रसीतहिसोदई । आफियोहनुमन्तकोतिनदृष्टिकैकरुणामई ॥ औरदेवअदेववानरयाचकादिकपाइयो । एकअङ्गदछोड़िकैज्वइजासुकेमनभाइयो ॥ ३३ ॥ अंगद ॥ देवहौनरदेवबानरनैऋतादिकधीरहौ । भरतलक्ष्मणआदिदैरघुवंशकेसबबीरहौ ॥ आजुमोसनयुद्धमाडहुएकएकअनेककै । बापको तबहौंतिलोदकदीहदेहुबिबेककै ॥३४॥ राम-दोहा ॥ कोउमेरे वंशमें, करिहैतोसोंयुद्ध ॥ तबतेरोमनहोइगो, अंगदमोसों-

शुद्ध ॥ ३५ ॥ बिधिसोंपाँयपखारिकै, रामजगतकेनाह ॥ दीन्हे-उगाउंसनौढियन, मथुरामण्डलमाह ॥ ३६ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र चंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांरामस्यराज्याभिषेकवर्णननामषड्विंशःप्रकाशः ॥ २६ ॥

टी०-॥ ३२ ॥ आफियो कहे दियो तिन सीवाजू ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकाया षड्विंशः प्रकाशः ॥ २६ ॥

मू०-दोहा ॥ सत्ताइसेंप्रकाशमें, रामचन्द्रसुखसार ॥ ब्रह्मादिकअस्तुतिबिविधि, निजमतिकेअनुसार ॥ १ ॥ ब्रह्मा-झूलना छन्द ॥ तुमहौअनन्तअनादिसर्बगसर्वदासर्वज्ञ । अबएकहौ कि अनेकहौमाहिमानजानतअज्ञ ॥ भ्रमिबोकरैंजगलोकचौदहलोभमोहसमुद्र । रचनारचीतुमताहिजानतहौंनब्रह्मनरुद्र ॥ २ ॥

टी०-॥ १ ॥ सर्वग कहे सर्वत्र व्याप्त लोभ मोहके समुद्र अर्थ लोभ मोहसों भरे जे चौदहलोक कहे चौदहौं लोकके प्राणी जा रचनामें भ्रमिवो करत हैं अर्थ संदेहको प्राप्त भयो करत हैं ता रचनाको नहीं जानत हौं न ब्रह्म (वेद) जानत हैं न रुद्र जानत हैं अथवा चौदहलोकमें लोभ औ मोहके समुद्रमें हम भ्रम्यो करत हैं तासों तुम्हारी रचनाको नहीं जानत ॥ २ ॥

मू०-शिव--दण्डक ॥ अमलचरिततुमबैरिनमालिनकरौसाधुकहैंसाधुपरदाराप्रियअतिहौ । एकस्थलस्थितपैबसतजगजनाप्रियकेशोदासद्विपदपैबहुपदगतिहौ ॥ भूषणसकलयुतशीशधरेभूमिभारभूतलफिरतपैअभूतभुवपतिहौ । राखौगाइब्राह्मणनराज सिंहसाथचिरुरामचन्द्रराजकरौअदभुतगतिहौ ॥ ३ ॥ इन्द्र ॥ बैरीगाइब्राह्मणकोग्रन्थनमेंसुनियतुकविकुलहीकेसुवरणहरकाजहे । गुरुशय्यागामीएकबालकैविलोकियतुमातं-

गनहींकेमतवारे कैसोसाजहै ॥ अरिनगरीनप्रतिहोतहैअगम्या गौनदुर्गनहिंकेशोदासदुर्गतिसीआजहै । देवताईदेखियतुगढ़ निगढोईजीवो चिरु चिरु रामचन्द्रजाकोऐसोराजहै ॥ ४ ॥

टी०-याहूमें विरोधाभास है अनल (निर्मल) चरितनसों वैरिनको मलिन करत हौ इत्यर्थः पर कहे उत्कृष्ट दार अर्थ लक्ष्मीजू । "राघवत्वे भवेत्सीता रुक्मिणी कृष्णजन्मनीति पुराणात्॥" जा भूमिको शीशमें धरे हैं ताही पर गिरिवो विरोध है गाय सदृश जे ब्राह्मण हैं तिनहूंको राखत हौ रक्षा करत अथवा गाय औ ब्राह्मणनको राखत हौ औ राजसिंह कहे राजरूपी जे सिंह हैं तिनसों साथ कहे मित्रता है तौ सिंहसों मित्रता औ गायकी रक्षा यह विरोध है ॥ ३ ॥ यामें परिसंख्यालंकार है ग्रंथनमें लिख्यो है कि गाइ ब्राह्मणके वैरसों ऐसो पाप होत है सुंदर वर्ण (अक्षर) कवितामें धरिवेको देवताई कहे देवताकी प्रतिमाही टांकी आदिकी गढनि सों गढी देखियत है और कोऊ प्राणी नहीं गड्यो जात अर्थ ताडनाको नहीं प्राप्त होत ॥ ४ ॥

मू०-पितर । बैठेएकछत्रतरछाँहसबछितिपरसूरकुलकलश सुराहुहितमतिहौ । त्यक्तबामलोचनकहतसबकेशोदासविद्य मानलोचनद्वैदेखियतुअतिहौ ॥ अकरकहावतधनुषधरेदेखि-यतुपरमकृपालुपैकृपाणकरपतिहौ । चिरुचिरुराजकरोराजा-रामचंद्रसबलोककहैंनरदेवदेवदेवगतिहौ ॥५॥ अग्नि । चित्र-हीमें आजबर्णसंकरविलोकियतुब्याहहीमेंनारिनकेगारिनसों-काजहै । ध्वजैकंपयोगीनिशिचक्रैहैबियोगीद्विजराजामित्रद्वेषी एकजलदसमाजहै । मेघैतोगगनपरगाजतनगरघेरिअपयश डरयशहीको लोभआजहै । दुःखहीकोखंडनहैमंडनसकल-जगचिरुचिरुराजकरौजाकोऐसोराजहै ॥ ६ ॥

टी०-यामें विरोधाभास है विरोधपक्ष राहु (ग्रह) अविरोध सुराह, कहे सुमार्ग त्यक्त कहे त्यागे वामलोचन औ वाम कहे कुटिल लोचन अर्थ काहूसों टेढे लोचन करि नहीं ताकत विद्यमान कहे प्रत्यक्ष अकर कहे दंडरहित अर्थ

काहूको तुम दंड द्रव्य नहीं देते कृपाण जो करवाल[1] है सो है करमें हाथमें जिनके ॥ ५ ॥ यामें परिसंख्या है वर्ण जे अरुणादि हैं तिनको संकर मिलाइवो द्विजराज (चन्द्रमा) मित्र (सूर्य) जाको राज सकल जगको मंडन (भूषण) है ऐसे जे तुम हौ ते चिरु चिरु कहे वहु काल पर्यंत राज करौ ॥ ६ ॥

मू०—वायु । राजारामचंद्रतुमराजहुसुयशजाकोभूतलकेआसपाससागरकोपाससो । सागरमेंबड़भागबेपशेषनागजूकोजपैसुखदानिसोईबिष्णुकोनिवाससो ॥ बिष्णुजूमेंभूरिभावभावकोप्रभावजैसोभवजूकेभालमेंबिभूतिकोबिलाससो । भूतिमाहचंद्रमासोचंद्रमेंसुधाकोअंशुअंशुनिमेंकेशोदासचंद्रिकाप्रकाशसो ॥७॥ देवगण । राजारामचंद्रतुमराजकरोसबकालदीरघदुसहदुखदीनन्कोदारिये । केशोदासमित्रदोषमंत्रदोषग्रहदोषदेवदोषराजदोषदेशतेनिकारिये ॥कलहकृतघ्नमहिमंडलकेवरिबंडपाखंडअखंड खंडखंडकरिडारिये। वंचककठोरठेलिकीजैबाटआटझूठपाठकंठ पाठकारीकाउमाहिंमारिये॥८॥ऋषिगण। भोगभारभागभारकेशवविभूतिभारभूमिभारभूरिअभिषेकनकेजलसे ।दानभारगानभार सकलसयानभारघनभारधर्मभारअक्षतअमलसे ॥ जयभारयशभारराजभारराजतहैरामशिरआशिषअशेषमंत्रबलसे । देशदेश यत्रतत्रदेखिदेखितेहिदुखफाटतहैंदुष्टनकेशीशदाह्योफलसे ॥ ९ ॥

टी०—पास कहे फांस अंशु (किरणि) ॥ ७ ॥ दारिये कहे नाश करत हौ वंचक (ठग) कठोर (निर्दय) झूंठरूपी जो पाठहै ताके जे कंठपाठकारी हैं अर्थ जे गूढ़ही कह्यौ करत हैं विभूति (ऐश्वर्य) ॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०—केशव—विजयाछंद ॥ जाइनहींकरतूतिकहीसबश्रीसविताकविताकरिहारो । याहीतेकेशवदासअशीषपढ़ैअपनोकरिनेकुनिहारो।कीरतिदेवनिकीदुलहीयशदूलहश्रीरघुनाथति-

[1] तलवार.

हारो । सातौंरसातलसातहुलोकनसातहुसागरपारबिहारो १०॥ किन्नर, यक्ष, गन्धर्व-रामलीलाछंद ॥ अजरअमरअनन्तजय जयचरित श्रीरघुनाथ । करतसुरनरसिद्धअचरजश्रवणसुनि सुनि गाथ॥कायमनवचनेमजानतशिलासमपरनारि॥शिलाते सुनि परमसुन्दरिकरतनेक निहारि ॥ ११ ॥ चमरढारतमातु ऊपर पाणिपीडा होइ।विशदंडज्योंकोदंडहरकोट्रकक्कीन्होंहोइ॥ साधु होइअसाधुराखतद्विजनहीकोमान । सकसमुनिगणमु- कुटमणिको मर्दियोअभिमान ॥ १२ ॥

टी०-सविता (सूर्य) ॥ १० ॥ शिलाते सुंदरी-(अहल्या) को करचो ॥ ११॥ विशदंड कहे पौनारीको दंड मुनिगणमुकुट-(मुनिनारद) की कथा तुलसी- कृतरामायणमें प्रसिद्ध है वानर सदृश मुख करिदियो है अथवा परशुराम छंद उपजाति है ॥ १२ ॥

मू०-सुरसुन्दरसरसरविरतिकरतरतिकहँलालि । एकपत्नी ब्रतनिवाहतमदनकोमदघालि॥सुखदसुहृदसपूतसोदरहनतनृ- पजाकाज । पलकमेंसोइराजछांड़चोमातुपितुकीलाज॥१३॥ मंथरासोंमोदमानतबिपिनपठयोपेलि । सूर्पनखाकीनाककाटी करनआईकेलि ॥ चंचुचापतअंगुरीशुकऐंचिलेतडेराइ।बन्धु सहितकबन्धकेउरमध्यपैठेधाइ॥१४॥ सर्वथासर्बज्ञसबंगसर्ब- दारसएक । अज्ञज्योंसीताबिलोकीव्यग्रभ्रमतअनेक॥बाणचू- कतलक्ष्यकोकोगनैकेतिकबार ।तालसातौंबेधियोशरएकएक- हिबार ॥१५॥ सापराधअसाधुअतिसुग्रीवकीन्होंमित्र ।अपरा- धबिनअतिसाधुबालिहिहन्योजानिअमित्र॥ चलतजबचौगा- नको लैचलतदलचतुरंग।देवशत्रुहिचलेजीतनऋक्षबानरसंग ॥१६॥ भूलिहूजातानिहारतगुरुसोंगिरिनसमान । निगरुदेखो

भयेगिरिगणजलधिमेंज्योंपान ॥ यतनयतननितरणसरथूडो-
डिलोलतडीठि । गयेसागरपारदैपगुप्रगटपाहनपीठि ॥ १७ ॥

टी०–सब पर रति (प्रीति) रचिकै सब कीर्तिकी (प्रीति) लालि कहे लालसा इच्छा करत हौ औ आश्चर्य पक्षमें रति जो कामकी स्त्रीहै ताको लालि कहे लालसा करत हौ अर्थ रतिकी लालसा करत हौ औ मदनको मद घालत हौ यह आश्चर्य है ताही सोदरके लिये अर्थ भरतके लिये राज्यही छांड्यौ इतिशेषः ॥ १३ ॥ मंथरा (कूबरी) ॥ १४ ॥ व्यग्र (विकल) अनेक स्थाननमों इतिशेषः भ्रमत कहे घूमत तौ सर्वग औ सर्वज्ञकी अज्ञसम स्थल ढूंढिवो आश्चर्य है औ सर्वदा एक रस कहे आनंद रूप जो रहनि है ताको विकल ह्वैवो आश्चर्य है लक्ष्य (निशाना) वार कहे चोट ॥ १५ ॥ १६ ॥ निगरु कहे हरुये पानपात्र ॥ १७ ॥

मू०–बाजिगजरथबाहिनीचढ़िचलतश्रमितसुभाय । लंकमें
बिनपानहींनिजगयेअपनेपाय । यज्ञकोफलगहतयत्ननियज्ञ-
पुरुषकहाय । बेरजूंठेदियोसेवरीभक्षियोसुखपाय ॥ १८ ॥
कुसुमकन्दुकलगतकाँपतमूंदिलोचनमूल।शत्रुसन्मुखसहेहँसि
हँसिशैलअसिशरशूल ॥ दूरिकरतनदयादर्शतदेरदंशतदंश ।
भईबारनकरतरावणबंशकोनिर्वंश ॥ १९ ॥ बाणबेझहिआन-
कोलगिनामअपनोलेत । कालसोरिपुआयुहतिजयपत्रऔर-
हिंदेत॥पुण्यकालनदेतविप्रनतौलितौलिकनंक । शत्रुसोदरको
दईसबस्वर्णहीकीलंक॥२०॥होइमुक्तसोजाहिइनकोमरत्तआवै
नाम।मुक्तएकनभयेवानरमरेकरिसंग्राम॥एकपलबिनपानखाये
वारबारजम्हात । वर्षचौदहनींदभूखपिआसछोड़ीगात ॥२१॥
क्षमैबरुअपराधअपनेकोटिकोटिकराल । अपराधएकनक्षम्यो
गोद्विजदीनकोसबकाल ॥ यदपिलक्ष्मणकरीसेवासर्वभाँति
सभेव । तदपिमानतसर्वथाकरिभरतहीकीसेव ॥ २२ ॥

टी०– १८ ॥ कुसुम जे फूल हैं तिनको कंदुक (गेंद) ॥ १९ ॥ बेझा (निशाना) ॥ २० ॥ मुक्त कहे मुक्ति और मरे ॥ २१ ॥ छंद उपजाति है ॥ २२ ॥

मू०-कहतइनकोसर्बसाँचेसकलरानाराय। तनकसेवादासकीकैहैकोटिगुणितबनाय॥ डरनयकअपलोकतेयेजीवचौदहलोक। ठौरजाकहँकहुँनताकहँदेतअपनोओक॥ २३॥ छाँडिऋषिद्विजदेवऋषिऋषिराजसबसुखपाइ। प्रगटसकलसनौढियनकेग्रथमपूजेपाइ॥ छोडिपितरत्रिशंकुहैविपरीतथापिदेह। अवधकेशवजातसूकरश्वानस्वर्गसदेह॥ २४॥ एकपलउरमांझआयेहरतसबसंसार। आयकैसंसारमेंइनहरेउभूतलभार॥ शेषशम्भुस्वयम्भुआपतनिगमनेतिनजास। ताहिलघुमतिबरणिकैसेसकतकेशवदास॥ २५॥ यहिविधिचौदहभुवनकेगावमुनियशगाथ। प्रेमसहितपहिराइसबकोविदाकियरघुनाथ॥ २६॥ झूलनाछंद॥ अभिषेककीयहगाथश्रीरघुनाथकीनरकोइ। पलएकगावतपाइहैबहुपुत्रसम्पतिसोइ॥ जरिजाहिंगीसबबासनाभवबिष्णुभक्तकहाइ। यमराजकेशिरपाउँदैसुरलोकलोकनिजाइ॥ २७॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायां इंद्रजिद्विरचितायांब्रह्मादिस्तुतिवर्णननामसप्तविंशः प्रकाशः॥ २७॥

टी०-अपलोक कहे अपगत लोक अर्थ छोटो लोक औ कलंक॥ २३॥ ऋषि सामान्य तपस्वी द्विजऋषिकहे ब्राह्मणश्रेष्ठ देव ऋषि, ब्रह्मऋषि राजवशिष्ठादि॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सप्तविंशः प्रकाशः॥ २७॥

मू०—दोहा ॥ अट्ठाइसेंप्रकाशमें, वर्णनबहुविधिजानि ॥ श्रीरघुबरकेराजको, सुरनरकोसुखदानि ॥ १ ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ अनन्तासबैसर्वदाशस्ययुक्ता । समुद्रावधिःसप्तईतीवि-मुक्ता ॥ सदावृक्षफूलेफलेतत्रसोहैं । जिन्हैंअल्पधीकल्पसाखी विमोहैं ॥ २ ॥ सबैनिम्नगाक्षीरकेपूरपूरी । भईकामगोसीसबै धेनुरूरी ॥ सबैबाजिस्वर्बाजितेतेजपूरे । सबैदन्तिस्वर्दन्तितेदर्प रूरे ॥ ३ ॥ सबैजीवहैं सर्वदानन्दपूरे । क्षमीसंयमीविक्रमी साधुशूरे ॥ युवासर्वदासर्वविद्याविलाशी। सदासर्वसम्पतिशो-भाप्रकाशी ॥ ४ ॥ चिरंजीवसंयोगयोगीअरोगी । सदाएक पत्नीव्रतीभोगभोगी ॥ सबैशीलसौंदर्यसौगन्धधारी । सबै ब्रह्मज्ञानीगुणीधर्मचारी ॥ ५ ॥

टी०—॥१॥ जा रामचन्द्रके राज्यमें समुद्रावधि कहे समुद्रपर्यंत अनंता जो पृथ्वी हैसो सप्त जे शुकादि ईती हैं तिनसों विमुक्ता (रहित) शस्य (धान्य) सों युक्त है ॥ "अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषकाः शलभाः शुकाः । स्वचक्रं परचक्रश्च सप्तैते ईतयः स्मृताः ॥" जिन वृक्षनको देखि अल्पबुद्धि जे कल्पसाखी (कल्पवृक्ष) हैं ते विमो-हैं कहे मोहित होतहैं कि ऐसे हम न भये अथवा अल्पकी बुद्धिसों अर्थ हमइनसों लघु हैं या बुद्धिसों मोहत हैं ॥ २ ॥ निम्नगा (नदी) क्षीर (जल) स्वर्बाजि (उच्चैःश्रवा) स्वर्दंति (ऐरावत) दर्प (मद) ॥३॥ संयोगी कहे सदा स्त्रीसंयोगसों युक्त सौगंधपदते स्वाभाविक अंग सुगंधि जानौ ॥ ४ ॥ ५ ॥

मू०—सबैन्हानदानादिकर्म्माधिकारी । सबैचित्तचातुर्य्यचिं-ताप्रहारी ॥ सबैपुत्रपौत्रादिकेसुक्खसाजैं । सबैभक्तमातापिता-केबिराजैं ॥ ६ ॥ सबैसुन्दरीसुन्दरीसाधुसोहैं । शचीसीसती सीजिन्हैंदेखिमोहैं ॥ सबैप्रेमकीपुण्यकीसद्मिनीसी । सबैचि-त्रिणीपुत्रिणीपद्मिनीसी ॥ ७ ॥ भ्रमैसंभ्रमीयत्रशोकैसशोकी । अधर्म्मैंअधर्मीअलोकैअलोकी ॥ दुखैतौदुखीतापतापाधिका-

री। दरिद्रैदरिद्रीबिकारैबिकारी॥८॥चौपाई॥होमधूममलिनाई जहां ।अतिचंचलचलदलहैतहां ॥ बालनाशहैचूडाकर्म्म। तीक्षणताआयुधकेधर्म्म॥९॥ लेतजनेऊभिक्षादानु । कुटिलचालसरितानिवखानु ॥ व्याकरणैद्विजवृत्तिनहरै । कोकिलकुलपुत्रनपरिहरै॥१०॥ फागुहिनिलजलोगदेखिये। जूवादेवारीकोलेखिये॥ नितउठिबेझोईमारिये । खेलतमेंकेहूं हारिये॥११॥

टी०-चित्तकी चातुर्य करिकै औरको चिंताके प्रहारी कहे हर्त्ता हैं॥६॥ सुंदरी (स्त्री) कहे सुंदरता युक्त साधु कहे पतिव्रता सद्मिनी कहे हवेली चित्रिणी कहे चित्रिणी जाति है पुत्रिणी कहे पुत्रवती हैं औ पद्मिनी कहे पद्मिनी जाति है यासों या जनायो कि हस्तिनी, शंखिनी एको नहीं हैं ॥ ७ ॥ अलोक कहे अपलोक ॥ ८ ॥ चलदल (पिप्पलवृक्ष) बार (शिरोरुह) इति औ बालक चूडाकर्म (क्षौरकर्म) ॥ ९ ॥ द्विज जे ब्राह्मण हैं तेई व्याकरण शास्त्रहीमें वृत्तिको हरत हैं हारिलेत हैं अर्थ पढत हैं और कोऊ काहूकी वृत्ति जीविकाको नहीं हरत व्याकरणशास्त्रमें सूत्र वृत्ति प्रसिद्ध है ॥ १० ॥ वेझा (निशाना) खेलतहीमें काहू विधिसों हारि होति है अन्यत्र हारि नहीं होति ॥ ११ ॥

मू०-दंडक॥ भावैजहांबिभिचारीवेद्यरमैंपरनारी द्विजगन दंडधारीचोरीपरपीरकी। मानिनीनहींकेमनमानियतमानभंग सिंधुहिउलंघिजातिकीरतिशरीरकी॥मूलैतौअधोगतिनपावतैंहैकेशोदासमीचुहीसोहैबियोगइच्छागंगानीरकी । बंध्याबासनानिजानुबिधवासुबाटिकाईऐसीरीतिराजनीतिराजैरघुबीरकी॥१२॥ दोहा॥ कबिकुलहीकेश्रीफलन, उरअभिलाष समाज ॥ तिथिहीकोक्षयहोतहै, रामचंद्रकेराज ॥ १३ ॥ दंडक॥ लूटिबेकेनातेपापपट्टनैतौलूटियतुतोरिबेकोमोहतरुतोरिडारियतुहै। घालिबेकेनातेगर्वघालियतुदेवनकेजारिबेकेनातेअघओघजारियतुहै॥ बांधिबेकेनातेतालबांधियतुकेशोदास

मारिबेकेनातेतौदारिद्रमारियतुहै । राजारामचन्द्रजूकेनामजग जीतियतुहारिबेकेनातेआनजन्महारियतुहै ॥ १४ ॥

टी०-निर्वेदादिते इति सविभिचारी भाव रस ग्रंथनमें प्रसिद्ध है नारी (नाडिका) (दंड) ब्रह्मलकुट औ (डांड) अर्थ और कोऊ काहूसों डॉड नहीं लेत मीचुसों वियोग कहि जनायो कि सबकी मुक्ति होति है वासनाई वंध्या है अर्थ वासनाको जो शुभाशुभ फल स्वर्ग नरकादि भोग है सो काहू प्राणीको नहीं होत सब प्राणी मुक्त होत हैं ॥ १२ ॥ १३ ॥ पाप कहे कष्ट पट्टन (शहर) पाप नाम कष्टको विहारीकी सतशैयां में है ॥ "सीरे यत्ननि शिशिर निशि, सहि विरहिनि तनताप ॥ विसिवेकी ग्रीषमदिननि, परचौ परोसिनि पाप ॥" सम नामसों एक संसारहीको सब जीतत हैं अर्थ संसारबंधनसों छूटि जात हैं और कोऊ काहूको हरावत नहीं ॥ १४ ॥

मू०-चंद्रकलाछंद ॥ सबकेकल्पद्रुमकेबनहैंसबकेबरबारनगाजतहैं । सबकेघरशोभतिदेवसभासबकेजयदुंदुभिबाजतहैं॥ निधिसिद्धिबिशेषअशेषनिसोंसबलोगसबैसुखसाजतहैं । कहिकेशवश्रीरघुराजकेराजसबैसुरराजसेराजतहैं ॥ १५ ॥ दंडक ॥ जूझहिमेंकलहकलहप्रियनारदैकुरूपहैकुबेरैलोभसबकेचयनको । पापनकीहानिडरगुरुनकोबैरीकामआगिसर्बभक्षीदुखदायकअयनको । बिग्राहीमेंबादुबहुनायकहैबारिनिधिजारजैहैहनुमंतमीतउदयनको ॥ आंखिनआछतअंधनारीकेरकुशकटिऐसोराजराजैरामराजीवनयनको ॥ १६ ॥

टी०-कल्पद्रुमके अर्थ कल्पद्रुम सरिसद्रुम वृक्षनके वन हैं देवसभा सम सभा महापद्मादि जे नवौं निधि हैं औ अणिमादि जे अष्ट सिद्धि हैं तिन अशेपन पूर्वन सहित विशेप पूर्वक सब लोग और जे सबै सुख हैं तिन्हें साजत हैं अर्थ करत हैं ॥ १५ ॥ पार्वतीके शापसों कुबेर कुरूप भये हैं सो कथा वाल्मीकीय रामायण उत्तरकांडमें प्रसिद्ध है चयन कहे आनंद अयन कहे घरको दुखदायक अर्थ दारुन औ सर्वभक्षी आगिही है बहुनायक बहुत स्त्रीनको अर्थ नदिनको नायक स्वामी औ सब एकपत्नीभोगी हैं इति भावार्थः सबके उदयन (प्रकाशन)

को मीत कहे हित है अर्थ सबके शुभकांक्षी हैं नारिकेर कहे नारिकेरके फल औ कटिही कृश (दुर्बल) है ॥ १६ ॥

मू०-दोहा ॥ कुटिलकटाक्षकठोरकुच, एकैदुःखअदेय ॥ द्विस्वभावअश्लेषमें, ब्राह्मणजातिअजेय ॥ १७ ॥ तोमरछंद ॥ बहुशब्दबंचकजानि । अलिपश्यतोहरमानि ॥ नरछांहईअपवित्र । शरखड्गनिर्दयमित्र ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ गुणतजिऔगुणजाल, गहतनित्यप्रतिचालनी ॥ पुंश्चलीतितेहिकाल, एकैकीरति जानिये ॥ १९ ॥ दोहा ॥ धनदलोकसुरलोकमय, सप्तलोककेसाज । सप्तद्वीपवतिमहिबसी, रामचंद्रकेराज ॥ २० ॥ दशसहस्रदशसैबरस, रसाबसीयहिसाज ॥ स्वर्गनर्ककेमग थके, रामचंद्रकेराज ॥ २१ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्र
चंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांरामराज्यवर्णननामाष्ट-
विंशःप्रकाशः ॥ २८ ॥

टी०--द्विस्वभाव कहे द्वै प्रकारको स्वभाव श्लेष कवितामें है एकसमय और अर्थ कहत हैं एक समय और कहत हैं औ सबको एकई स्वभाव है इति भावार्थः ॥ १७ ॥ बहु कहे बहुत विधिसों शब्द जो है सोई बंचक कहे ठग है अर्थ बंचक यह जो शब्द है सोई है और कोऊ प्राणी ठग नहीं है अथवा बहुत जे परस्पर कोमल भाषित शब्द हैं तेई ठग हैं अर्थ ठगसम मोहित करतहैं औ अलि जे भ्रमर हैं तेई पश्यतोहर कहे देखतहू चोरी करत हैं अर्थ सबके देखत भ्रमर पुष्पनसों मधु चोरत हैं ॥ १८ ॥ गुणरूप पिसानको त्यागि अवगुणरूपी भूसीको ग्रहण करति है पुंश्चली (परकीया) ॥ १९ ॥ २० ॥ रसा (पृथ्वी) स्वर्ग नरकके मग थके कहे नहीं चलत अर्थ न कोऊ प्राणी स्वर्ग जाइ, न नरक जाइ सब मुक्तिपुरीको जात हैं ॥ २१ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद-
निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायामष्टाविंशः प्रकाशः ॥ २८ ॥

मू०--उनतीसयेंप्रकाशमें, बरणिकह्यौचोगान ॥ अवधिदीपशुककीबिनति, राजलोकगुणगान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ एककालअतिरूपनिधान । खेलनकोनिकरेचौगान ॥ हाथधनषशरमन्मथरूप । संगपयादेसोदरभूप ॥ २ ॥ जाकोजबहींआयसुहोइ । जाइचढैगजबाजिनसोइ ॥ पशुपतिसेरघुपतिदेखिये । अनुगतशेषमहालेखिये ॥ ३ ॥ बीथीसबअसवारिनभरी । हयहाथिनसोंसोहतिखरी ॥ तरुणुंजनसोंसरिताभली । मानोंमिलनसमुद्रहिचली ॥ ४ ॥

टी०-॥ १ ॥ २ ॥ जा गजपर औ जा बाजिपर चढिकै चलिवेको रामचंद्रको आयसु जाको होत है सो तापर चढत है रामचंद्रके अनु कहे पाछे गत कहे प्राप्त शेष (लक्ष्मण) हैं औ महादेवके पश्चाद्भागमें गत प्राप्त शेष कहे शेषनाग हैं शेषको महादेव ग्रीवामें पहिरे हैं सो पृष्ठभागमें उरमत हैं इत्यर्थः कहूं अनुगण सैन पाठ है तौ अनुपश्चाद्गणसमूह सैनको पेखियत है औ महादेवके अनु पश्चाद्गणवीरभद्रादिकनकी महासैन पेखियत ॥ ३ ॥ बीथी (गली) ॥ ४ ॥

मू०--यहि बिधिगयेरामचौगान । सावकाशसबभूमिसमान ॥ शोभनएककोशपरिमान । रचोरुचिरतापरचौगान ॥ ५ ॥ एककोदरघुनाथउदार । भरतदूसरेकोदबिचार ॥ सोहतहाथेलीन्हेंछरी । कारीपीरीरातीहरी ॥ ६ ॥ देखनलग्यौसबैजगजाल । डारिदियोभुवगोलाहाल ॥ गोलाजाहजहाँजहँजबै । होततहींतितहींतितसबै ॥ ७ ॥ मनोरसिकलोचनरुचिरचे । रूपसंगबहुनाचनिनचे ॥ लोकलाजछांडिअँगअंग । डोलतजनुजनमनकेसंग ॥ ८ ॥ गोलाजाकेआगेजाइ । सोईताहिचलैअपनाइ ॥ जैसेतियगणकोपतिरयो । जेहिपायोताहीकोभयो ॥ ९ ॥ उततेइतइततेउतहोई ॥ नेकउडोलनपावैसोई ॥ कामक्रोधमदमढ्योअपार ॥ मानोजीवभ्रमैसंसार ॥ १० ॥

टी०—सावकाश कहे फैलाव सहित और समान कहे नीच उच्च रहित ॥ ५ ॥ कोद कहे ओर ॥ ६ ॥ जाहीं कहे तबै ॥ ७ ॥ रुचि इच्छारूपसुंदरता ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ १० ॥

मू०—जहांतहांमारैसबकोइ । ज्योंनरपंचविरोधीहोइ ॥ घरी घरीप्रतिठाकुरसवै । बदलतबासनबाहनतवै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ जबजबजीतैंहालहरि,तबतबबजतानिशान ॥ हयगयभूषणभूरि पट, दीजतलोगनिदान ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ तबतेहिसमयएक बेताल । पढ्योगीतगुनिबुद्धिबिशाल ॥ गोलनकीबिनती सुखपाई । रामचन्द्रसोंकीन्हीआई ॥ १३ ॥ दंडक ॥ पूरपूर बंकीपूरापूरीपापरपुरीसेतनबापुरीवैदूरिहीतेपायनपरतिहैं । दक्षि णकोपक्षिनीसीगच्छैअंतरिक्षमगपक्षिमकोपक्षहीनपक्षीज्योंउ- रतिहैं। उत्तरकीदेतीहैंउतारिशरणागतनिबातनउतायलीउतार- उतरतिहैं। गोलनकीभूरतिनदीजियेजूअभैदानरक्षबैरकहांआ- इबिनतीकरतिहैं ॥ १४ ॥

टी०—बासन (वस्त्र) ॥ ११ ॥ १२ ॥ वेताल (भाट) गोलनकी विनती कहे गोलनकी तरफसों विनती रामचन्द्रसों करचो ॥ १३ ॥ यामें समय विचारि स्तुतिपूर्वक गोलनकी बिनतिनके व्याज खेल खेलियों मने करत हैं कहत हैं कि हे राम ! पापर (पूरी भेद) प्रसिद्ध हैं औ पुरी कहे पूरीसम है तन जिते कहे ऐसी जे पूर्वदिशाको पूरी कहे ग्रामपुरी कहे लघु ग्राम हैं ते वा पुरी दूरिही ते भयसों तुम्हारे पायन परती हैं औ दक्षिणकी पूरनपूरी अंतरिक्ष आकाशके मग पक्षिनी सम गच्छती हैं पक्षहीन कहि या जनायो कि उडि जाइबो चाहती हैं पै पक्षहीन हैं तासों रहि जाती हैं औ उत्तरकी पूरा पूरी तुम्हारो विरोधी जो शरणागत है ताको उतारि देती हैं अथवा उत्तरमें पर्वत पर बसती हैं सो पर्वतसों उतारि देती हैं कैसे उतारि देती हैं कि बातनहूं करिकै उतायली जो जल्दी है ताके उतारमें उतरती हैं अर्थ यह कहती हैं कि तुम यहांसे जल्दी जाउ नाहीं तौ रामचन्द्र जानि हैं तौ हमको विदारि हैं यासों या जनायो कि उत्तरकी पुरी दुर्गम पर्वतनहूं पर हैं तहांऊ तुम्हारे बैरीको नहीं राखि सकते तासों गोलनकी

मूर्ति बिनती करती हैं कि राम वैरसों हम कहां जाईं तासों हे राम ! अभयदान दीजै खेलको समय ह्वै आयो तासों अब खेल बंद करौ इति भावार्थः ॥१४॥

मू०—चौपाई ॥ बोलनकीबिनतीसुनिईश । घरकोगमनकह्योजंगदीश ॥ पुरपैठतअतिशोभाभई । बीथनअसवारीभरिगई ॥ १५ ॥ मनोंसेतुमिलिसहितउछाह । सरितनकेफिरिचलेप्रबाह॥ताहीसमयद्यौसनशिगयो।दीपउदोतनगरमहँभयो॥१६॥ नखतनकीनगरीसीलसी । मानोंअवधिदेवारीबसी॥ नगरअशोकवृक्षरुचिरयो । मधुप्रभुदेखिप्रफुल्लितभयो ॥१७॥ अधअधफरऊपरआकाश । चलतदीपदेखियतप्रकाश । चौकीदैजनुअपनेभेव । बहुरेदेवलोकके देव ॥ १८ ॥ बीथीबिमलसुगंधसमान । दुहुंदिशिदीसतदीपप्रमान ॥ महाराजकोमहितसनेह । निजनैननजनुदेखतगेह॥१९॥बहुबिधिदेखतपुरकेभाइ । राजसभामहँबैठेजाइ ॥ पहरएकनिशिबीतीजहीं । बिनतीकोशुकआयेतहीं ॥ २० ॥

टी०—॥ १५ ॥ प्रथम जात समय कह्यो है कि ॥ "तरुपुंजनसों सरिता भली । मानहुँ मिलनसमुद्रहिचली ॥ " सो अब आवतमें ताहीमें तर्क करत हैं कि मानो सेतुमें मिलिकै उछाह आनंद सहित सरितनके तेई प्रवाह फिरि चले हैं जैसे लंका जातमें रामचंद्र सेतु बांध्यो है तामें लगिकै सरितनके प्रवाह फिरि चले हैं तैसे जानौ ॥ १६ ॥ रुचि कहे सुंदरतासों युक्त नगररूपी जो अशोकवृक्ष है सो मधु कहे वसंतसम जे रामचन्द्र हैं तिन्हैं देखि प्रफुल्लित भयो है ॥ १७ ॥ यामें आकाशदीपनको वर्णन है एकै आकाशके अध कहे अधोभागमें हैं औ एकै अधफर कहे मध्यभागमें हैं एकै ऊपर हैं या प्रकार ज्यों ज्यों क्रम क्रम डोरि खींची जाति है त्यों त्यों आकाशको चलत प्रकाश दीप देखियत है सो मानो ये सब दीप नहीं देवता हैं अवधपुरीकी चौकी देत हैं तिनके मध्य मानो अपने भेव कहे समय प्रमाण चौकी दैकै ये देव आपने लोक जात हैं ॥ १८ ॥ विमल तृणादि रहित सुगंध (गंधयुक्त) समान (उच्च नीच रहित) दुहुँ दिशि कहे गैलके याहू ओर वाहू ओर सनेह (प्रेम) औ तेल॥१९॥भाइ कहे चेष्टा॥२०॥

मू०—शुक्र—हरिप्रियाछंद ॥ पौढ़ियेकृपानिधानदेवदेवराम चंद्रचंद्रिकासमेतिचंद्रचित्तरैनिमोहैं। मनहुँसुमनसुमतिसंगरचे रुचिरशुकृतरंगआनंदमैंअंगअंगसकलसुखनिसोहैं ॥ ललि-तलतनकेविलासभ्रमरवृंदह्वैउदासअमलकमलकोशआसपास वासकीन्हें। तजितजिमायातुरंतभक्तराविरेअनंततवपदकरनैन वैनमानहुँमनदीन्हें ॥ २१ ॥ घरघरसंगीतगीतबाजेबाजैंअजी-तकामभूपआगमजनुहोतहैंबधाये । राजभौनआसपासदीपवृ-क्षकेविलासजगतिज्योतियौवनजनुज्योतिवंतआये ॥ मोतिन-मयभींतिनईंचंद्रचंद्रिकानिमईपंकअंकअंकितभवभूरिभेदसो-करी। मानहुंशशिपंडितकरिजोन्हज्योतिमंडितश्रीखंडशैलकी अखंडशुभ्रसुंदरीदरी ॥ २२ ॥ एकद्वीपद्युतिविभातिदीपतिम-णिदीपपांतिमानहुँभुवभूपतेजमंत्रिनमयराजै।आरेमणिखचित-खरेबसनबहुबासभरेराखतगृहगृहअनेकमनहुँमैनसाजै ॥ अम-लसुमिलजलनिधानमोतिनकेशुभवितानतापरपलिकाजराय-जड़ितजीवहरषै।कोमलतापररसालतनसुखकीसेजलालमनहुँ सोमसूरजपरसुधाविंदुबरषै ॥ २३॥ फूलनकेबिबिधिहारघोरि-लनिउरमतउदारबिचबिचमणिश्यामहारउपमाशुकभाषी । जीत्यौसबजगतजानितुमसोंहारिहारिमानिमनहुँमदनधनुषनि-तेगुनउतारिराखी॥ जलथलफलफूलभूरिअंबरघटबासधूरिस्व-च्छयच्छकर्दमहियदेवनिअभिलाषे । कुंकुमभेदौयनादिमृगमद कर्पूरआदिबीरावनितनिबनाइभाजनभरिराखे॥२४॥पन्नगीन-गीकुमारिआसुरीसुरीनिहारिबिबिधिवीनकिन्नरीनाकिन्नरीबजावैं। मानोनिष्कामभक्तिशक्तिआयआपनीनदेहनधरिप्रेमनभरिभ-जनभेदगावैं ॥ सोदरसामंतसूरसेनापतिदासदूतदेशदेशकेनरेश

मंत्रिमित्रलेखिये । बहुरेसुरअसुरसिद्धपंडितमुनिकबिप्रसिद्ध केशवबहुरायराजराजलोकदेखिये ॥ २५ ॥

टी०–पांच छंदको अन्वय एक है रैनिमें चंद्रिका समेत चंद्रचित्तको मोहत है प्रसन्न करत है अर्थ रात्रिके संगसों चन्द्रिका समेत ह्वै चंद्र चित्त मोहत है सो मानों सुधु जो मति है ताके संगसों सुठु जो मन है ताके अंग आनंदमय कहे स्वच्छ सुकृत सुकर्मके रंगसों रचे हैं सुकृतको रंग श्वेत कविप्रियामें श्वेतगणनामें कह्यो है ॥ "शेष सुकृत शुचि सत्त्वगुण, संतनके मन हास ॥" सो मन सकल कहे पुत्र धनादिके सुखन सहित सोहत है सुकृतीको सब सुख प्राप्त होत हैं यह प्रसिद्ध है सुमतिसम रात्रि है सुमनसन चन्द्रमा है सुकृतसम चांदनी है ललित लतनके विलाससों उदास ह्वैके अर्थ त्याग करिकै मायासम लता है भक्तसम भ्रमर हैं कर औ नयन औ बैनसम कमल हैं बैन पदते इहां मुख जानौ छंद उपजातिहै आस-पास जे दीपवृक्ष कहे झाऊ हैं तिनके बिलासमों राजभवनकी ज्योति जगतिहै जानों यौवनके आये शरीरकी ज्योति जगति है इतिशेषः ॥ ताही राजभवनकी चंद्र चंद्रिकानिमयी कहे चंद्रिकनसों युक्त जो मोतिनमय भींति है ताहि भव जो संसार है ताके जे भूरि भेद हैं अर्थ अनेक विधि चित्र हैं तिन सहित पंक जो चंदन पंक है तासों सेवकन चित्रित करी है अर्थ भीतिनमें चित्र विचित्र चंदन पंक लग्यौ है सो श्रीखंड जो चंदन है ताको शैल मलयाचल अथवा चंदनहीको निर्मित जो शैल है ताकी शुभ्र कहे श्वेत औ सुंदरी रुचिर दरी (कंदरा) को पंडित कहे चतुर जो शशि है सो जोन्ह ज्योतिसों मंडित करी है चंदन लेपसों युक्त है तासों राजभवनको श्रीखंडशैल सम कह्यौ है दरी सम गृहको उदर है ता भूपभवनमें ये दीपकी द्युति बिभाति कहे शोभित है औ मणिदीप कहे भीति-नमें जटित मणिनमें प्रतिबिंबित जे दीप हैं तिनहूंकी पांति दीपति है सो मानों भुवनं अर्थ भुवमंडलमें मंत्रिनमय कहे मंत्रिनके तेजमय अर्थ मंत्रिनके प्रतापसों युक्त राजाको तेज राजत है भूपतेजसम एकदीप है मंत्रिनके तेजसम प्रतिबिंब दीप हैं मंत्रिनको तेज राजतेजके प्रतिबिंब सम होतही है अथवा मानो राजाको तेज है मंत्रिनमें व्याप्त राजत है मंत्रिन सम मणि हैं भूपतेज सम दीप हैं औ भौरे कहे ताख मणिन करिकै खरे कहे नीकी विधि चित्रित हैं तिनमें बहुत बास कहे सुगंधनसों भरे अनेक बासन कहे पात्र गृह गृहमें कहे स्थान स्थानमें भाजन भाजनी हैं ते मानों मैन जो काम है ताकी नाजें हैं अर्थ कामके उद्दीपक सुगंध

हैं औ अमल कहे निर्मल सुमिल कहे गोल औ जल कहे पानीके निधान जे मोती हैं तिनके शुभ वितान कहे चंदोवा हैं तनसुख तन जो लाल (अरुण) साम सम मोतिनको वितान है सुधाबिंदु सम मोती हैं सूरज सम अरुण सेज है धोरिला धनुषके गोसा सदृश होत हैं औ धनुषसों गुण उनारचो जात है तब एक गोसामें लग्यो रहतहै "रोदाभौर्वीज्यासिंजिनीगुणः इत्यमरः॥" औ जल औ थलके भूरि कहे अनेक विधिके फल औ फूल औ अंबर (वस्त्र) औ पट वास कहे सुगंध चूर्ण ताकी धूरि ॥ "पिष्टातः पटवासकः इत्यमरः" औ जाको हियमें देवता अभिलाष करत हैं सो ऐसो स्वच्छ यक्षकर्दम ॥ "कर्पूरागरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्ष-कर्दमः ॥" औ कुंकुम (केशरी) औ मेद जवादि कहे उवटन औ मृगमद (कस्तूरी) औ कर्पूर आदि औ बीरा बनाइ बनाइके भिन्न भिन्न भाजन (पात्रन) में वनिता जे दासीजन हैं तिन भरि राखे हैं किन्नरीन कहे सारंगीनकी आपनी आपनी शक्तिसों कहे अणिमादि सिद्धिके बलसों देहनको धरिकै बहुरे कहे आज्ञा पाइ रावरी सभासों अपने धामनको जात हैं तासों अब आपहू चलिकै राजलोकको देखिये औ तहां पौढिये इत्यन्वयः॥२१॥२२ ॥ २३ ॥२४ ॥२५॥

मू०—दोहा॥कहिकेशवशुकके वचन, सुनिसुनिपरमविचित्र। राजलोकदेखनचले, रामचन्द्रजगमित्र॥ २६ ॥ नराचछंद॥ सुदेशराजलोकआसपासकोटुदेखियो। रचीविचारिचारिपौरि पूरबादिलेखियो॥ सुवेशएकसिंहपौरिएकदंतिराजहै। सुएक बाजिराजएकनंदिवेषसाजहै॥ २७॥ दोहा॥ पांचचौकमध्य-हिरच्यौ, सातलोकतरहारि॥ षटऊपरतिनकेतहां, चित्रेचित्र बिचारि॥ २८॥ चामरछन्द॥ भोजएकचौकमध्यदूसरेरची सभा। तीसरेबिचारमंत्रऔरनृत्यकीप्रभा॥ मध्यचौकमेंतहां बिदेहकन्यकाबसै। सर्बभावरामचन्द्रलीनसर्बथालसै॥ २९॥

टी०--राजलोक कहे राजभवन ॥ २६ ॥ रामचंद्रजू राजलोकके आसपास सुदेश कहे आछो कोट देखत भये अर्थ आसपास कोट है ताके मध्यमें राजलोक है ता कोटके पूर्वादिदिशामें क्रमसों चारों ओर चारि पौरि कहे द्वार हैं पूर्वदिशा-में सिंहपौरि है दक्षिण दिशामें दंतिपौरि है पश्चिम दिशामें वाजिपौरि है उत्तर

युक्त पौरि जानौ ॥ दिशामें नंदिपौरि है इहां सिंहादि पौरिसों सिंहादि स्वरूप ॥ २७ ॥ ताकोटके मध्यहि कहे मध्यमें सात लोकके तरहारि कहे सतमहलाके तरे पांच चौक अँगनाई रची है अर्थ अँगनाई विशिष्ट पृथक् पांच भवन बने हैं ते सतमंजिला हैं तिनके कहे तिन भवननके षट ऊपर कहे छठे लोकके जे ऊपर कहे छत हैं तहां विचारिकै कहे जहां जैसो चाहिये तैसा तहां समुझिकै चित्र चित्रे हैं और अर्थ पांच चौक मध्यमें रच्यो है ते कैसे हैं तासों लोकके अतल १ बितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ हैं तरहारि कहे अधन्यून जिनते अर्थ सातौं लोकमें ऐसे धाम नहीं हैं औ षटके छे लोक जे भू १ अंतरिक्ष २ स्वर्ग ३ ब्रह्मलोक ४ पितृलोक ५ सूर्यलोक ६ तिनहूंके ऊपर है अर्थ श्रेष्ठ है यासों या जनायो सातवॉ लोक जो बैकुंठ है ताके सदृश है तहां बिचारिकै अर्थ यथोचित स्थानमें चित्र चित्रेहैं अथवा सात लोक जे तरहारि कहे तरेके हैं अत-लादि औ षट् जे भूलोकादि हैं तिनहूं के ऊपर जो लोक है वैकुंठ सो विचारिकै तिनके कहे ता वैकुंठके धामनके चित्र सम चित्रे हैं अर्थ वैकुंठधामनके प्रतिमा वने हैं अथवा बिचारिकै तिनके वैकुंठधामनके चित्र चित्रे हैं अर्थ जे चित्र वैकुंठ धामनमें हैं तेई इनमें चित्रेहैं ॥ २८ ॥ यामें पांचहूं चौकनको प्रयोजन कहतहैं और चौथे चौकमें नृत्यकी प्रभा रची इत्यर्थः ॥ २९ ॥

मू०—दोधकछन्द ॥ मन्दिरकञ्चनकोयकसोहै । श्वेततहांछ-तुरीमनमोहै ॥ सोहतशीरषमेरुहमानो । सुन्दरदेवदिवानबखा-नो ॥ ३० ॥ मंदिरलालनकोयकसोहै । श्यामतहांछतुरीमनमो-है ॥ ताहियहैउपमासबसाजै । सूरजअंकमनोशनिराजै ॥ ३१ ॥ मन्दिरनीलनकोयकसोहै । श्वेततहांछतुरीमनमोहै ॥ मानहुहंस-नकीअवलीसी । प्राविटकालउड़ाइचलीसी ॥ ३२ ॥ मंदिरश्वे-तलसैअतिभारी । सोहतिहैछतुरीअतिकारी ॥ मानहुईश्वरके शिरसोहै । सूरतिराघवकीमनमोहै ॥ ३३ ॥ तोटकछन्द ॥ सब धामनमेंयकधामवन्यो । अतिसुन्दरश्वेतस्वरूपसन्यो ॥ शनिम्‌ रबृहस्पतिमण्डलमें । परिपूरणचन्द्रमनोंवलमें ॥ ३४ ॥ चौपा ई ॥ बहुधामन्दिरदेखेभले । देखनशुभ्रशालिकाचले ॥ सीतभी

तज्योंनेकनत्रसे । पलुकवसनशालामहँलसे ॥ ३५॥ जलशाला चातकज्योंगये । अलिज्योंगन्धशालिकाठये ॥ निपटरङ्कज्यों शोभितभये । मेवाकीशालामेंगये ॥ ३६ ॥

टी०-तिन पांचहू मंदिरनको रूप क्रमसों पांच छंदनमों कहत हैं मेरुह कहे मेरुके शीर्ष कहे अग्रभागमें देव दिवान कहे देवसभा है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मेघन करि आच्छादित श्याम प्रावृट काल कहे वर्षाकाल सम नीलमणिको मंदिर है हंसावली सम श्वेत छतुरी है ॥ ३२ ॥ ईश्वर (महादेव) ॥ ३३ ॥ शनैश्चरादिके मंडलमें परदृष्ट्यादि दोपसों संयुक्त ह्वै के चंद्रमा हीन बल हू ह्वै जात है तासों बलमय कहे बलाधिक्यसों युक्त कह्यो इहां शनि सूर बृहस्पति मंडलमें कहे शनि सूर बृहस्पति आदिके मंडलमें जानौ श्याममंदिर शनैश्चर है अरुणमंदिर सूर्य है सुवर्ण मंदिर बृहस्पति है श्वेतमंदिर शुक्र है ॥ ३४ ॥ शीत जो जाडो है तासों भीत जो प्राणी हैं सो जैसे अनेक वस्त्रनमें प्रसन्नचित्त होत हैं या प्रकार वस्त्रनके देखिवेमें न त्रसे कहे न ऊंचे अर्थ प्रसन्न चित्त ह्वै सब वसनशालाके वस्त्र देख्यो इत्यर्थः याही विधि जलशालादिमें चातकादि सम जाइवेमें केवल चित चोपकी समता जानौ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मू०-चतुरचोरसेशोभितभये । धरणीधरधनशालागये ॥ माननीनकैसेमनभेव । गयेमानशालामेंदेव ॥ ३७ ॥ मंत्रिनस्यो बैठेसुखपाइ । पलुकमंत्रशालामेंजाइ ॥ शुभशृंगारशालाकोदेखि । उलटेललितबयनसेलेखि ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द ॥ जबरा-उरमेंरघुनाथगये । बहुधाअवलोकतशोभभये ॥ सबचन्दनकी शुभशुद्धकरी । मणिलालशिरानिसुधारिधरी ॥ ३९ ॥ बरंगाअतिलालसुचन्दनके । उपजेबनसुन्दरनन्दनके ॥ गजदन्तनकी शुभसींकनई । तिनबीजनबीचनस्वर्णमई ॥ ४० ॥ तिनकेशुभ छप्परछाजतहैं । कलशामलिलालबिराजतहैं ॥ अतिअद्भुतथ-म्भनकीदुगई । गजदन्तसुचन्दनचित्रमई ॥ तिनमाँझलसैंबहुभायनके । शुभकंचनफूलजरायनके ॥ ४१ ॥

टी०-मानिनीनके सदृश इत्यर्थः ॥ ३७ ॥ जा शालामें स्त्री जन शृंगार करत

हैं अथवा भूषणादि शृंगार वस्तु जा शालामें धरे हैं ताको देखतही प्रेमातुर ह्वै रावरमें जाइवेकी इच्छा करि नयन सम कहे नयनपूतरीसम उलटे कहे फिरे नयन पूतरी अति शीघ्र फिरति है तैसे अतिशीघ्र फिरे जानौ ॥ ३८ ॥ रावर स्त्री भवन शिरा (टोपी) ॥ ३९ ॥ ४० ॥ तिनके कहे गज दंत सुवर्णादिके अथवा तृणक दुगई द्विकनाई अथवा द्वै खंभ एकमें मिलाइ लागत हैं सो दुगई कहावत हैं ॥ ४१ ॥

मू०—रूपमालाछन्द ॥ बर्णबर्णजहाँतहाँबहुधातनेसोबिताान। झालरैंमुकतानकीअरुझूमकाबिनमान॥चौकठैंमणिनीलकीफटिकानकेसुकपाट । देखिदेखिसोहोतहैंसबदेवताजनुभाट ॥४२॥ श्वेतपीतमणीनकीपरदारचीरुचिलीन । देखिकैतहँदेखियेजनुलोललोचनमीन ॥ शुभ्रहीरनकोसुआँगनहैहिंडोराकाल । सुन्दरीजहँझूलहींप्रतिबिम्बकैजहँजाल ॥४३ ॥ स्वागताछन्द ॥ धामधामप्रतिआसनसोहैं॥ देखिदेखिरघुनाथबिमोहैं ॥ बरणिशोभकबिकौनकहैजू। यत्रतत्रमनभूलिरहैजू ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ जाकेरूपनरेखगुण, जानतवेदनगाथ॥ रंगमहलरघुनाथगे, राजश्रीकेसाथ ॥ ४५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांलोकवर्णनं नामैकोनत्रिंशः प्रकाशः ॥ २९ ॥

टी०—झूमका (झब्बा) विनमान कहे वहुत ॥ ४२ ॥ तिनको देखिके सबके लोचन मीनसम लोल होत हैं यह देखियत है ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ जाके रूपादि एकौ नहीं है ते राजश्रीके साथ ह्वै रंगमहल गये तो रूपादियुक्त प्राणिनको तौ लैजायाई चाहै इति भावार्थः ॥ ४५ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायामेकोनत्रिंशः प्रकाशः ॥ २९ ॥

मू०—दोहा ॥ या तीसयेंप्रकाशमें, बरण्योबहुविधिजानि ॥ रङ्गमहलसंगीतअरु, रामशयनसुखदानि ॥ १ ॥ पुनिसारिकाजगाइबो, भोजनबहुतप्रकार ॥ अरुबसन्तरघुवंशमणि, वर्णनचन्दउदार ॥ २ ॥ चतुष्पदीछन्द ॥ द्युतिरंगमहलकी सहसवदनकीवर्णैंमतिनविचारी । अधऊरधरातीरंगसँवाती रुचिबहुधासुखकारी ॥ चित्रीबहुचित्रनिपरमविचित्रनिरघुकुलचरितसुहाये । सबदेवअदेवनिअरुनरदेवनिनिरखिनिरखिशिरनाये ॥ ३ ॥ आईबनिबालागुणगणमालाशुचिचलरूपनबाढी । शुभजातिचित्रनीचित्रगेहतेनिकसिभईजनुठाढी ॥ आनोंगुणसंगनियोंप्रतिअंगनिरूपकरूपविराजै । वीणानिबजावैंअद्भुतगावैंगिरारागिनीलाजै ॥ ४ ॥

टी०—॥ १ ॥ २ ॥ संवाती कहे सवन है रुचि (शोभा) ॥ ३ ॥ मानों गानादि जे गुण हैं तिनके संगनि-(समूहनि) सों युक्त जे प्रति अंग हैं तिनसों युक्त रूप जो सुंदरताके रूपक कहे विचित्र विराजत हैं ॥ ४ ॥

मू०—पद्धटिकाछन्द ॥ स्वरनादग्रामनृत्यतिसताल । सुखबर्गाबिबिधिआलापकाल ॥ बहुकलाजातिमूर्छनामानि । बढभागगमकगुणचलतजानि ॥ ५ ॥

टी०—षडजादि जे सप्त स्वर हैं तिनको जो कल, मंद्र औ तार तीनि प्रकारको नाद है औ तीनि प्रकारके जे ग्राम हैं औ देशी आद जे अनेक विधि ताल हैं तिन सहित नृत्याति कहे नाचतीहैं ॥ "स्वरादीनांसर्वेषांलक्षणमुक्तं संगीतदर्पणे ॥" तत्र लक्षणम् ॥ "श्रुत्यनंतरभावित्वंयस्यानुरणमात्मका । स्निग्धश्चरंजकश्चासौस्वरइत्यभिधीयते ॥ १ ॥ अथवा ॥ स्वयंयोराजतेनादःसस्वरः परिकीर्तितः ॥ २ ॥ श्रुतिभ्यः स्युः स्वराःषड्जर्षभगांधारमध्यमाः । पंचमोधैवतश्चाथनिषादइति सप्तते ॥ ३ ॥ अथत्रिधानादः ॥ ध्वनौतुमधुरास्फुटे ॥ कलोमंद्रस्तुगंभीरेतारोत्युच्चैस्त्रयस्त्रिषु इत्यमरः ॥ अथग्रामलक्षणम् ॥ ग्रामःस्वरसमूहःस्यान्मूर्छनादेःसमाश्रयः । तौद्वौधरातलेतत्रस्यात्षड्जग्रामआदिमः । द्वितीयोमध्यमग्रामस्तयोर्लक्षणमुच्यते । षड्जग्रामःपंचमेचचतुर्थश्रुतिसंस्थिते । स्वीयांत्यश्रुतिसंस्थो-

सिन्मध्यमग्रामइष्यते । यद्वाधस्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे च चतुःश्रुतिः । ऋषयोः श्रुतिमेकैकांगांधारश्चेत्समाश्रयेत् । यःश्रुतिन्धोनिषादस्तुधश्रुतिंसश्रुतिंस्तुतः ॥ गांधारग्रामग्रामाचष्टेतदातंनारदोमुनिः । प्रवर्त्ततेस्वर्गलोकेग्रामोसौ न महीतले ॥ अथताललक्षणंविनोदाचार्येणोक्तम् ॥ हस्तद्वयस्यसंयोगेवियोगेवापिवर्तते । व्याप्तिमान्योदशप्राणैः सकालस्तालसंज्ञकः ॥ तथाचसारोद्धारे ॥ कालस्तालइतिप्रोक्तः सोऽवच्छिन्नोद्रुतादिभिः । गीतादिमानकर्त्तास्यात्सद्वेधाकथितोबुधैः ॥ तथाच संगीतार्णवः । कालः क्रियाचमानश्चसंभवंतियथासह ॥ तथातालस्यसंभूतिरितिज्ञेयंविचक्षणैः ॥ मार्गदेशीमतत्वेन तालोसौद्विविधोमतः । शुद्धशालंगसंकीर्णास्तालभेदाः क्रमान्मताः । तालः कालक्रियामानमित्यमरः ॥ १ ॥" औ आलापके कालमें कहे समयमें मुख विविधि वग कहे अनेक रूप होत हैं ॥ आलापलक्षणम् ॥"रागालपमालप्तिः प्रकटीकरणंमतम् ॥२॥" औ बहु कहे बहुत प्रकारकी जे कला हैं औ पांच जे जाति हैं औ एकईस जे मूर्छना हैं औ वड कहे बडे अर्थनको जो चारिप्रकार को भाग है औ पंचदश प्रकारकी जो गमक हैं इनके सरकेतेगुण हैं तिनसहित नृत्यमें चलति कहे चलति हैं यह जानि कहे जानौ ॥ अथ कलाचूडामणिः ॥ दक्षिणोवार्त्तकश्चिश्चेभुवचित्रतरस्तथा ॥ अथचित्रतमश्चेतिषण्मार्गाशास्त्रसंमताः । ध्रुवादिककलाष्टौचमार्गेदक्षिणसंज्ञके । ध्रुवकासर्पिणीचैवपताकापतितास्तथा । चतस्रोवार्तिकेज्ञेयाश्चित्रेथपुनरुच्यते । ध्रुवकापतिताचेतियोजनीयाविशेषतः । ध्रुवेकलैकाविज्ञेयाशार्ङ्गदेवनकीर्तिता । अथचित्रतरे मार्गेकलाचद्रुत संमिता । मार्गेचित्रतमेज्ञेयाकलाकरजसंज्ञिता । अथजातयः ॥ चतुरस्रस्तथातिस्रः खंडोमिश्रस्तथैवच । संकीर्णाःपंचविज्ञेयाजातयः क्रमशोबुधैः । चतुर्वर्णैस्त्रिभिर्वर्णैः पंचवर्णैस्तथैवच ॥ सप्तवर्णैश्चनवभिर्जातयः क्रमशोदिताः ॥ अथमूर्च्छनालक्षणम् ॥ क्रमात्स्वराणांसप्तानामारोहश्चावरोहणम् ॥ मूर्च्छनेत्युच्यतेग्रामप्रयेताः सप्तसप्तच । अथभागलक्षणम् ॥ धातुप्रबन्धोवयवः सचोद्ग्राहादिभेदतः । चतुर्धाकथितोभागस्त्वदानुद्ग्राहसंज्ञकाः । आदाउद्ग्राह्यतेगीतं येनोद्ग्राहस्ततोभवत् । मेलापकोद्वितीयस्तुग्राहकध्रुवमेलनात् ॥ ध्रुवत्वाध्रुवसंज्ञस्तुतृतीयोभागउच्यते । आभोगस्त्वंतिमोभागोगीतपूर्णत्वसूचकः॥ अथगमकलक्षणम् ॥ स्वरस्यैकोयोगमकः श्रोतृचित्तसुखावहः । भेदाः पञ्चदशैवास्यकथितास्तिरिपादयः ॥ ५ ॥

मू०–बहुवर्णविविधिआलापकालि । मुखचालिचारुअरुशब्दचालि ॥ बहुउडुपतियंगपतिपतिअडाल । अरुलागधाउ-

रायरंगाल ॥ ६ ॥ उलथाटेंकीआलमसादिण्ड । पदपलटि-हुरुमयीनिशंकचिण्ड । असुतिनकीभ्रमनिदेखिमतिधीर । भ्रमिसीखतहैं बहुधासमीर ॥ ७ ॥ मोटनकछन्द ॥ नाचैंर-सवेषअशेषतवै । बरपैंसुरसैंबहुभांतिसबै ॥ नवहूरसमिश्रित-भावरच । कौनोंनहिंहस्तकभेदबचैं ॥ ८ ॥ दोहा ॥ पाइँप-खाउजतालसों, प्रतिधुनिसुनियतुगीत ॥ मानहुँचित्रविचित्र मति, पढ़तसकलसंगीत ॥ ९ ॥ अमलकमलकरअंगुली, सकलगुणनिकीमूरि ॥ लागतमठमृदंग मुख, शब्दरहतभ-रिपूरि ॥ १० ॥

टी०-प्रथम गानको विषय निरूपणकरि अब द्वै छन्दमें नृत्यको विषय निरूपण करत हैं द्वै छन्दको अन्वय एकहै आलापकालि कहे आलापकालीअर्थ आलापकालके योग्य बहु वर्ण कहे अनेकरंग की अथ अनेकतरहकी औ विवि धै कहे अनेक जे चारु कहे सुंदर मुखचालि नृत्यहैं औ शब्द चालि औ बहुत प्रकारके जे उडपहैं औ तिर्यगपाति कहे पक्षिशार्दूल नृत्य औ पाति औ अडाल औ, डलथा औ टेकी औ अलम नृत्य सदिंड कहे दिंडनृत्यसहित औ पदपलटी औ हुरुमई औ निशंक औ चिंड जे जे नृत्यहैं औ कहूँ उडमनि रियगति वट अडाल पाठ है तौ तिरिय औ वट येऊ नृत्यके भेद जानौ तिनमें तिन स्त्रिनकी असु कहे शीघ्र भ्रमनि कहे घूमनि देखिकै मतिधीर कहे धीरमतिसों अथ मतिमें धीर्य्य धरिकै एकाग्रचित्त ह्वैकै इति भ्रमि कहे बघरुराके व्याज घूमि कै समीर जे वायु हैं ते सीखत हैं अथवा तिनकी भ्रमनि देखिकै अपनी शीघ्रताके गरूर करिकै मति है धीर जिनकी ऐसे जे समीरहैं ते भ्रमि कहे सन्देहको प्राप्त ह्वैकै अर्थ अपनासों अधिकजानि आतुर ह्वैकै शीघ्रता सीखतहैं । "नृत्यानांलक्षणमुक्तंसंगीतदर्पणे ॥ अथमुखचालिः । नृत्यादौप्रथमंनृत्यंमुखचालिरितिस्मृतः ॥ १ ॥ अथ शब्दचालिः ॥ प्रागवत्कृत्वास्थानहस्तौमध्यसश्चेननर्तकः यत्रास्थित्वैकपादेनशब्दवर्णानुगामिनी । गतिंनयेद्द्वितीयेनदक्षिणाद्धानिशोभनाम् । तद्वत्पादांतरेणाथक्रमेणैतद्द्वयोर्यदा। पर्यायेणगतिंकुर्याद्धातिकादिषुपंचसु । प्रागेष्वसौशब्दचालिःपंडितैश्चनिरूपिता॥२॥ अथोडुपानि॥ नेरिःकरणनेरिश्चमित्रंचित्रंतथाभवेत् ॥नत्रंचजारमानंचमुरुरीडमुरुतं-तथा ॥ हुल्लंचलावणज्ञिया कर्त्तरीतुल्लकंतथा । प्रसरंचद्वादशस्युरुडुपानियथाक्र-

मात् ॥ ३ ॥ अथपक्षिशार्दूलनृत्यलक्षणम् ॥ यदिमंडिमधिष्ठायप्रसृतौभ्रमतःकरौ । तदानंतरशार्दूलाःपक्षिशार्दूलमूचिरे ॥ ४ ॥ अथ पतिनृत्यलक्षणम् ॥ कटाक्षराभ्यां कान्यांचिन्निमित्तात्यंतकोमलाः ॥ एकरूपाक्षरःपंचपुटतालानुगापदा । वाद्यतेयो वाद्यखंडोविरामैर्भूरिभिर्मुहुः । योनिर्मितोवाद्यपाठैर्वाद्यभेदापतिःस्मृता ॥ ५ ॥ अथाडाललक्षणम् ॥ सुलुंबद्धातदोत्प्लुत्यचरणैःपक्षिपक्षवत् । भ्रमित्वानियतेभूमौत- दडालमितीरितम् ॥ ६ ॥ अथलागनृत्यलक्षणम् ॥ लागशब्देनकर्णाटभाषयाउत्प्लुती रिति ॥ ७ ॥ अथधाउनृत्यलक्षणम् ॥ आकाशचारीद्वित्रोश्चेत्ततश्चातिरियंभवेत् । अंतेमुरुतदोदिष्टंधाउनृत्यंनटोत्तमैः॥८॥अथरापरंगालनृत्यलक्षणम् ॥ शूलंबद्धैकपा- देनसहैवानुपतेद्यदि । द्वितीयोऽपितदारापरंगालंतद्विदोविदुः ॥ ९ ॥ अथउलथानृ- त्यलक्षणम् । उत्प्लुत्याद्यैर्यदानृत्येत्करणैस्तालसंमितैः । तदोत्प्लुत्याद्यकरणनृत्यंनृत्य विदोविदुः ॥ अथवा—उलथानृत्यकोलक्षणनामर्थहीहै ॥१०॥ अथटेंकीनृत्यलक्ष- णम् ॥ पादौसमौयदान्यस्मिन्पार्श्वेचापरपार्श्वतः॥उत्क्षिप्योत्पादयेच्चित्रंतदाटेंकीतिक- थ्यते ॥ ११ ॥ अथासलनृत्यलक्षणम् ॥ भ्रमविक्रमसमास्थायद्वितीयंपूर्ववद्यदा ॥ पातयेच्चरणंचारुतंवीशंचतुराविदुः ॥ याहीको नामान्तरअमलहै ॥ १२ ॥ अथ दिंडनृत्यलक्षणम् ॥ उत्प्लुत्यचरणद्वंद्वंवक्षनिष्पीडनोपक्रमम्॥परिभ्राम्यावनीयातियदि तद्दिंडमुच्यते ॥ १३ ॥ अथपदपलटीनृत्यलक्षणम् । पुरःप्रसार्यचरणंलंघयेत्परां- घ्रिणा । सूलूपूर्वंतदान्वर्थाप्रोक्तलंवितजंघिका ॥ याहीकीअन्वर्थपदपलटीहै १४ ॥ अथहुरमयीनृत्यलक्षणम् । अलातंपरिवृत्त्यांगंपादपृष्ठंगतंयदा । अलातांघ्रौपृष्ठगते शीघ्रमन्यांघ्रिलंघयेत् । लंघयेद्दक्षिणोऽन्येनप्रोक्ताहुरुमयीनटैः ॥ १५ ॥ अथानःशं- कनृत्यलक्षणम् ॥ सुलूपूर्वंयदोत्प्लुत्य मिलितौचरणौसमौ । दूरंभूमौनिपततः सनिः शंकः प्रकीर्तितः ॥ १६ ॥ अथ चिंडनृत्यलक्षणम् ॥ विडचिंडः । कालचरी इतिचिंडर्द्विधाभवेत् । यत्पिल्लमुरूयत्रनिबद्धोविडाचिंडकः ॥तत्तज्जात्यनुकारेणकाल चारीतिकीर्तितः । तालतानसुलूतुंग थवंगीध्वनिपेशलम् । वाद्यतेतुडके चिंडगीते नयतिपूर्वकम् ॥ तत्तज्जातियुतंनृत्यंनानागतिविचित्रितम् ॥चारुपाटानुचंचयत्किंक- णीध्वनिपेशलम् । कालासैरपिलास्यांगैरंकजेरंतरांतरा ॥ धृतहस्तत्रिशूलादि यत्र नृत्यं समाचरेत् । तदाधीरैः समाख्यातं चिंडनृत्यंमनोहरम् ॥ १७ ॥ ६ ॥ ७ ॥

रसवेष कहे रस स्वरूप अर्थ शृंगारादि जे नवरस हैं तिनमें जा रसको प्रबंध गावती ता रसके रूप आप ह्वै जानहि औ बहुत प्रकारसों रस स्वादको वर्णनि हैं भाव और चेष्टा हस्तक (हस्तक्रिया) रंगमहलन छिनके पांवकी औ पग्यावनकी ताल सहित मानी ध्वनि जो होई तासूंह ताहूके गीत सुनयत है सो मानो विचित्र

मति जे स्त्री पुरुषनके चित्र हैं ते ताही विधिपोवकी औ पखावजकी ताल देकै ताही विधि गीतको गाइ सब संगीतको पढत हैं ॥ ८॥ ९॥ १०॥

मू०-घनाक्षरी ॥ अपवनवायनबिलोकियतुघायलनिघनो सुखकेशोदासप्रगटप्रमानहै । मोहैमनभूलैतननयनरुदनहोत सूखैशोचपोचदुखमारनविधानहै ॥आगमअगमतंत्रशोधिसब यंत्रमंत्रनिगमनिवारिबेकोकेवलअपानहै । बालनिकोतनत्राण अमितप्रमाणसबरीझिरामदेवकामदेवकैसोबानहै ॥ ११ ॥

टी०-रीझि रामदेव कहत हैं इतिशेषः ॥ कहा कहत हैं कि कामदेवके बाणको त्राण है बख्तर बालकनको तन है अर्थ जबलों जीव बालकनके तनरूपी त्राणमें रह्यो तबलों कामबाण नहीं लागत औ गान जो है ताको त्राण बालकनहूको तनही है अथ बालकनहूको व्याप्त होत है यतनोई भेद है और अमित कहे अनंत सब बातप्रमाण कहे तुल्य है तासां गान कामदेवको ऐसो बाणहै कैसोहै कामदेव-को बाण औ गान जाके वायु अपवन जो शरीर है तामें नहीं बिलोकियत औ घायलनके घनो सुख होत है औ मन मोहको मूर्च्छाको प्राप्त होत है औ तनकी सुधि भूलि जाति है औ नयननमें रोदन होतहै औ पोच कहे नागा जो राज्या-दि वस्तुको शोच है सो सूखि जात है औ मारणही है विधान जाको ऐसो दुःख होत है अथवा दुःखको मारण कहे नाश कर्त्ता है विधान जाको औ अगम कहे अनंत आगम जे धर्मशास्त्र हैं औ अगम जे तंत्रशास्त्र हैं तिनके जे शोधि कहे ढूंढिकै अथवा शुद्ध करिकै मंत्र औ यंत्र हैं औ निगम जे वेद हैं ताके जे यंत्र मंत्र हैं ते सब ताके निवारण करिबेको केवल अयान (अज्ञान) हैं केवल पदको अर्थ यह किया कि निवारणकी बिधि वे जानत नहीं ॥ ११ ॥

मू०-दोहा ॥ कोटिभांतिसंगीतसुनि, केशवश्रीरघुनाथ ॥ सीताजूकेघरगये, गहेप्रीतिकोहाथ ॥१२॥ सुन्दरीछन्द ॥ सुन्दरिमन्दिरमेंमनमोहति। स्वर्णसिंहासनऊपरसोहति॥ पङ्कजकेकरहाटकमानहुँ । हैंकमलाबिमलायहजानहुँ ॥१३॥ फूलनकोसोबितानतन्योबर। कञ्चनकोपलिकायकतातर ॥ ज्योतिजराथजरेउअतिशोभनु ॥ सूरजमण्डलतेनिकस्योजनु॥१४॥

टी०—जैसे सखीको हाथ गहि स्त्रीके पास जात है तैसे प्रीतिरूपी सब जो सखी हैं ताको हाथ गहे रामचन्द्र सीताके घर गये ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥

मू०—कुसुमबिचित्राछन्द। दर्शतहीनयननिरूचिबनै। वसनबिछायेसबसुखसनै।अतिरुचिसोहैंकबुहुंनसुन्यो।मानोतनुलै शशिकरचुन्यो। ॥१५॥ चम्पकदलद्युतिकेगेंडुये। मनहुंरूपकेरूपकउये॥ कुसुमगुलाबनकीगलसुई। बरणीजायननैंनन करिछुई ॥१६॥ दोहा॥ रामचन्द्ररमणीयतर, तापरपौढ़ेजाइ। पदपंकजपरवराइकै, कहिकेशवसुखपाइ ॥१७॥ तोमरछन्द॥ जिनकेनरूपनरेष।तेपौढ़ियोंनरवेष॥ निशिनाशयोत्यहिंवार। बहुबंदिबोलतद्वार ॥ १८ ॥

टी०—शुचि कहे श्वेतमानों शशिको (चन्द्रमाको) तनु कहे त्वचा लै चुन्यो कहे बनायोहै अथवा मानो शशि जो चन्दमा है तेंही तनु कहे सूक्ष्म जे कहे किरणिहैं तिनको लैकै ता वसन को बनायोहै ॥ १५ ॥ गेंडुआ (तकिया) चंपकदल द्युतिके गेंडुआ धरिवेको हेतु यह कि सीताजू पद्ममुखी हैं तासों मुखको पद्म जान सोवतमें गेंडुआनको देखि चम्पकदलके भयसों भ्रमर मुखमें दंश ना करैं चंपकदलके निकट भ्रमर नहीं जात यह प्रसिद्ध है रूपक कहे प्रतिमा कुसुम कहे फूल जे गुलावनके हैं तिनकी गलसुई (गेंडुआ भेद) है ते वचनकरि बरणी नहीं जातीं औ नैंनन करि छुई नहीं जातीं अर्थ अति सुन्दरी है ॥ १६ ॥१७॥१८॥

मू०—दोहा ॥ राजलोकजाग्योसबै, बन्दीजनकेशोर ॥ गये जगावनरायपै, सारिकादिउठिभोर ॥१९॥ सारिका—हरिप्रिया छन्द॥ जागियोत्रिलोकदेवदेवदेवरामदेवभोरभयोभूमिदेवभक्तदर्शपावै।ब्रह्मामनमंत्रवर्णविष्णुहृदयचातकघनरुद्रहृदयकमल मित्रजगतगीतगावै॥गगनउदितरविअनन्तशुक्रादिकज्योतिवन्तक्षणक्षणछविक्षीणहोतलोंनपीनतारे। मनहुंपरदेशदेशब्रह्मदोषकेप्रवेशठौरठौरतेबिलातजातभूपभारे ॥ २० ॥

टी०—राजलोक कहे राजलोकके सबजन जागे ॥ १९ ॥ पांच छंदको अन्वय एक है भूमिदेव अर्थ हे भूपति ! ब्रह्माको मनरूपी जो मंत्र है ताके तुम वर्ण कहे

अंक हो जैसे अंकनमें गंध बस्यो रहत है तैसे ब्रह्माको मन तुममें सदा बसो रहत है औ विष्णुको जो हृदयरूपी चातक यह है ताके घन कहे सजल मेघ हौ जैसे घन चातककी तृषा बुझावत है तैसे तुम विष्णुके हृदयकी तृषा बुझावत हौ औ रुद्रको हृदयरूपी जो कमलहै ताके मित्र (सूर्य) हौ जैसे कमलको सूर्य प्रफुल्लित करत हैं तैसे तुम रुद्रहृदयको प्रफुल्लित करत हौ या प्रकारसों तुम्हारो गीत जगत गान करत है गगनमें रवि उदित भये तासों अनंत कहे अनेक जे शुक्रादिक ज्योतिवंतनके पीन कहे बडे तारे नक्षत्र हैं ते क्षण क्षणमें छवि क्षीण ह्वै गगनमें लीन होत जात हैं अर्थ बिलात जातहैं मानों ब्रह्मदोषके प्रवेशसों जे भूप भय मानि परदेश गये हैं तेऊ औ जे आपने देशमें हैं तेऊ बिलात जातहैं तैसे जे नक्षत्र स्थानमें हैं ध्रुवादि औ स्थानसों चलित हैं ते सब बिलात जातहैं इत्यर्थः ॥ २० ॥

मू०--अमलकमलतजिअमोलमधुपलोलटोलटोलबैठतउडि करिकपोलदानमानकारी । मानहुंमुनिज्ञानवद्धछोडिछोडिगृहसम्बद्धसेवतगिरिगणप्रसिद्धसिद्धिसिद्धिधारी ॥ तरणिकिरणिउदितभईदीपज्योतिमलिनगईसदयहृदयबोधउदयज्योंकुबुद्धिनाशै । चक्रवाकनिकटगईचकईमनमुदितभईजैसेनिजज्योति पाइजीवज्योतिभासै ॥ २१ ॥ अरुणतरणिकेविलाशएकदोइ उडुअकाशकलिकैसैसन्तईशदिशनअंतराखै । दीखतआनन्द कन्दनिशिबिनद्युतिहीनचंदज्योंप्रवीनयुवतिहीनपुरुषदीनभाखै ॥ निशिचरचपकेविलासहासहोतहैनिराशशूरकेप्रकाशत्रासनाशततमभारे । फूलतशुभसकलगातअशुभशैलसेबिलात आवतज्योंसुखदरामनामसुखतिहारे॥२२॥ सारोशुकशुभमरालकेकीकोकिलरसालबोलतकलपारावतभूरिभेदगुनिये । मनहुंमदनपंडितऋषिशिष्यगुणनमंडितकरि अपनीगुदरैनदैनपठयप्रभुसुनिये ॥ सोदरसुत मंत्रिमित्रदिशि दिशिकेनृपविचित्रपंडित मुनिकविप्रसिद्धसिद्धद्वारठाढे । राम-

चन्द्रचन्द्रओरखानहुँचितवतचकोरकुबलयजलजलधिजोर-चोपचित्तबाढे ॥ २३ ॥ नचतरचतरुचिरएकयाचकगुण-गणअनेकचारणमागधअगाधबिरदबन्दिटेरे । मानहुँमंडूक-मोरचातकचपकरतशोरतडितबसनसंयुतघनश्यामहेततेरे ॥ केशवसुनिबचनचारुजागेदशरथकुमारु रूपप्याइज्याइलीन-जनजलथलओकके । बोलिहँसिबिलोकिबीरदानमानहरी-पीरपूरेअभिलापलाखभाँतिलोकलोकके ॥ २४ ॥

टी०—टोल टोल कहे झुंड झुंड कैसे हैं करिदान जो मद है ताके कर्त्ता औ श्लेषसों दाता औ मान कहे आदर कर्त्ता भ्रमर जात हैं तिन्हैं शिरपर बैठावत हैं दाता ह्वै आदर करै ताके समीप सब प्रसन्न ह्वै जात हैं इतिभावार्थः॥ समृद्ध कहे संपतियुक्त कैसेहैं मुनिगण सिद्ध कहे आपने वश्य जो सिद्धि कहे तपसिद्धि अथवा अष्टसिद्धि हैं तिन्हैं धरे हैं अथवा गिरिगणनहींको विशेषण है सिद्धि जो सिद्धि (तपसिद्धि) है तिनको धरे हैं अर्थ जिन पर्वतनमें जातही बिन तप कियेही तपसिद्धि प्राप्त होति है मलिन गई कहे मलिनताको प्राप्त भई बोध कहे ज्ञान सम तरणि जे सूर्य हैं तिनकी किरणें हैं कुबुद्धि सम दीपज्योति है हृदय सम भूमंडल जानों निज ज्योति अर्थ ब्रह्मज्योति उडु (नक्षत्र) आनं-दकंद चंद्रको विशेषण है सूर्यके प्रकाशके त्राससों निशिचर कहे चोर. परस्त्री-गामी कुलटादिके जे बिलास औ हास हैं ते निराश कहे नाश होत हैं औ भारजे तम अन्धकार हैं ते नाशत हैं औ शुभ कहे तपस्वी आदि प्राणी पूजादि कर्म तिनके सकल गात फूलत कहे प्रफुल्लित होत हैं हे राम ! जैसे तिहारे नामको सुखमें छल शुभ जे मंगलादि हैं तिनके गात प्रफुल्लित होत हैं औ शैल कहे पर्वत सम अशुभ अमंगल बिलातहैं मदनरूपी जो पण्डित ऋषि कहे पण्डित श्रेष्ठहैं गुदरैनि परीक्षा रामचन्द्ररूपी जे चन्द्र तुम हौ तिनकी ओर दर्शनके चोप चित्तनमें जोर कहे अति बाढे हैं जिनके ऐसे चकोर औ कुबलय कोई औ जलधि के जरहैं मानो या प्रकारसो दरादिद्वार पर ठाढे चितवत हैं एक अर्थ नृत्यकारी नचतहैं औ और जे अनेक याचक हैं ते अपने गुणगण रचतहैं छंद उपजाति है ॥ २१ ॥ २२ ॥ ॥ २३ २४ ॥

मू०—दोहा ॥ जागतश्रीरघुनाथके, बाजेएकहिबार ॥ निगर नगरेनगरके, केशवआठहुद्वार ॥ २५ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ दिन दुष्टनिकन्दनश्रीरघुनन्दनआँगनआयेजानि। आईनवनारीसुभगशृँगारीकञ्चनझारीपानि ॥ दाँत्योंनिकरतहैंमननगहतहैं औरिबोरिघनसार । सजिसजिविधिमूकनिप्रतिगं पनिडारत गहतअपार ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सन्ध्याकरिरविपाँयपरि, बाहरआयेराम ॥ गणकचिकित्सकआशिपा, बन्धुनकियेप्रणाम ॥ २७ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ सुनिशत्रुमित्रकीनृपचरित्रकीरय्यतिरावतबात । सुनियाचकजनकेपशुपक्षिनकेगुणगणअति अवदात ॥ शुभतनमज्जनकरिस्नानदानकरिपूजेपूरणदेव । मिलिमित्रसहोदरबन्धुशुभोदरकीन्हेभोजनभेव ॥ २८ ॥

टी०—निगर कहे मौन विधिको सजिकै प्रतिगंडूषनि कहे प्रति कुल्लनको डारत हैं औ गहतहैं असार अनेक अथवा प्रतिगंडूषनि कहे कुल्लाकुल्ला प्रति अर्थ हरि कुल्ला मूकनि कहे कुल्लाके त्यागनकी विधिको सजिकै डारत हैं त्यागत हैं फेरि और गहत है ॥ २५ ॥ २६ ॥ गणक (ज्योतिषी) चिकित्सक (वैद्य) ॥ ॥ २७ ॥ मज्जन कहे उबटनादि सहोदर (भरतादि) बंधु जातिजन (बिरादरी) इति शुभोदर कहे नीकी विधि उदरपूर्ति करिकै अथवा शुभोदर बडे भोजन कर्त्ता ॥ २८ ॥

मू०—दण्डक ॥ निपटनवीनरोगहीनबहुक्षीरलीनवक्षपीनतनतापदानसोंहरतुहैं। ताँबेमढीपीठिलागेरूपकेखुरनडीठिडीठि स्वर्णशृंगमनआनंदभरतुहैं ॥ काँसेकीदोहनीश्यामपाटकीललितनोइघटनसोंपूजिपूजिपाँयनिपरतुहैं ॥ शोभनसनौढ़ियनरामचन्द्रदिनप्रति गोशतसहस्रदैकभोजनकरतुहैं ॥ २९ ॥ तोटकछन्द ॥ तहँभोजनश्रीरघुनाथकरैं । षट्रीतिमिठाइनचित्तहरैं ॥ पुनिखीरसोंचौविधिभातबन्यो । तकितीनिप्रकार-

निशोभसन्यो ॥ ३० ॥ षट्भांतिपहीतिबनाइसची । पुनि पांचसोव्यंजनरीतिरची ॥ बिधिपांचसोरोटिनमांगतहैं । विधि पाँचबराअनुरागतहैं ॥ ३१ ॥

टी०-॥ २९ ॥ चौविधिको अन्वय दूनौं ओर है अर्थ चारिविधिकी खीर बनीहै औ चारि विधिको भात बन्यो है ॥ ३० ॥ सची कहे सञ्चित कर्यौ अर्थ एकत्र कर्यौ ॥ ३१ ॥

मू०-विधिपांचअथानबनाइकियो । पुनिद्वैविधिक्षीरसों-मांगिलियो ॥ पुनिझारिसोद्वैविधिस्वादघने । विधिदोइपछ्छा-वरिसातपने ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ पांचभांतिज्योनारसब, षट्-रसरुचिरप्रकास ॥ भोजनकरिरघुनाथजू, बोलेकेशवदास ॥ ॥ ३३ ॥ हरिलीलाछन्द ॥ बैठेबिशुद्धगृहअग्रजअग्रजाइ । देखीबसन्तऋतुसुन्दरमोददाइ ॥ बौरेरसालकुलकोमलकेलि-काल । मानोंअनंगध्वजराजतश्रीबिशाल ॥ ३४ ॥

टी०-अथान (अचार) झारि आम्रके चूर्णमें जीरछंकादिडारि जलमें घोरि बनाति है पश्चिममों प्रसिद्ध है पछ्यावरि पकवानको भेदहै या सब प्रकार भोजन-के मिलाइ छप्पन होत हैं ॥ ३२ ॥ शर्करादि (मधुर) ॥ १ ॥ अम्रादि (अम्ल) २ करैला आदि (तिक्त) ३ मरिचादि (कटु) ४ लवणादि (लवण) ५ हर्रादि (कषाय) ६ ये जे षट् छः रस हैं तिनकी है रुचिर प्रकाश जामें ऐसी जो चोष्य (आम्रादि) १ पेय (दुग्धादि) २ भोज्य (भक्तादि) ३ लेह्य (अवलेहादि) ४ चर्व्य (पिस्ता बादामादि) ५ पांच भांतिकी जेवनार है ताको भोजन करिकै रामचन्द्र बोले भोजनसमयमें बोल्यो न चाहिये यह धर्म शास्त्रोक्त है ॥ ३३ ॥ रामचन्द्रजू भोजन करिकै गृह अग्रज कहे गृहमें अग्रज श्रेष्ठ जो गृह (घर) है ताके अग्रभागमें बसंत बहार देखिबेको जाइकै बैठत भये कोमल कहे सुगंधयुक्त रसाल (आम्र) वृक्ष बौरे हैं सो मानों यह केलिको काल कहे समय है या प्रसिद्ध करिबेके लिये मानों अनंग जो काम है ताके बिशाल ध्वजा राजत हैं जा कछू वस्तु प्रसिद्ध करिबो होत है ता लिये सब ध्वजा बांधत हैं प्रसिद्ध है ॥ ३४ ॥

मू०-दोहा ॥ जागतश्रीरघुनाथके, बाजेएकहिबार ॥ निगर नगारेनगरके, केशवआठहुद्वार ॥ २५ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ दिन दुष्टनिकन्दनश्रीरघुनन्दनआँगनआयेजानि। आईनवनारीसुभगशृँगारीकञ्चनझारीपानि ॥ दाँत्योंनिकरतहैंमननगहतहैं औरिबोरिघनसार । सजिसजिविधिमूकनिप्रतिगं पनिडारत गहतअपार ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सन्ध्याकरिरविपाँयपरि, बाहरआयेराम ॥ गणकचिकित्सकआशिषा, बन्धुनकियेप्रणाम ॥ २७ ॥ मरहट्टाछन्द ॥ सुनिशत्रुमित्रकीनृपचरित्रकीरय्यतिरावतबात । सुनियाचकजनकेपशुपक्षिनकेगुणगणअति अवदात ॥ शुभतनमज्जनकरिस्नानदानकरिपूजेपूरणदेव । मिलिमित्रसहोदरबन्धुशुभोदरकीन्हेभोजनभेव ॥ २८ ॥

टी०-निगर कहे मौन विधिको सजिकै प्रतिगंडूषनि कहे प्रति कुल्लनको डारत हैं औ गहतहैं असार अनेक अथवा प्रतिगंडूषनि कहे कुल्लाकुल्ला प्रति अर्थ हरि कुल्ला मूकनि कहे कुल्लाके त्यागनकी विधिको सजिकै डारत हैं त्यागत हैं फेरि और गहत है ॥ २५ ॥ २६ ॥ गणक (ज्योतिषी) चिकित्सक (वैद्य) ॥ ॥ २७ ॥ मज्जन कहे उबटनादि सहोदर (भरतादि) बंधु जातिजन (बिरादरी) इति शुभोदर कहे नीकी विधि उदरपूर्ति करिकै अथवा शुभोदर बडे भोजन कर्त्ता ॥ २८ ॥

मू०-दण्डक ॥ निपटनवीनरोगहीनबहुक्षीरलीनवक्षपीनतनतापदानसोंहरतुहैं। ताँबेमढीपीठिलागेरूपकेखुरनडीठिडीठि स्वर्णशृंगमनआनंदभरतुहैं ॥ काँसेकीदोहनीश्यामपाटकीललितनोइघटनसोंपूजिपूजिपांयनिपरतुहैं ॥ शोभनसनौढ़ियनरामचन्द्रदिनप्रति गोशतसहस्रदैकभोजनकरतुहैं ॥ २९ ॥ तोटकछन्द ॥ तहँभोजनश्रीरघुनाथकरैं । षट्रीतिमिठाइनचित्तहरैं ॥ पुनिखीरसोंचौविधिभातबन्यो । तकितीनिप्रकार-

निशोभसन्यो ॥ ३० ॥ षट्भांतिपहीतिबनाइसची । पुनि पांचसोव्यंजनरीतिरची ॥ बिधिपांचसोरोटिनमांगतहैं । विधि पाँचबराअनुरागतहैं ॥ ३१ ॥

टी०—॥ २९ ॥ चौविधिको अन्वय दूनौं ओर है अर्थ चारिविधिकी खीर वनीहै औ चारि विधिको भात वन्यो है ॥ ३० ॥ सची कहे सञ्चित करचौ अर्थ एकत्र करचौ ॥ ३१ ॥

मू०—विधिपांचअथानबनाइकियो । पुनिद्वैविधिक्षीरसों-मांगिलियो ॥ पुनिझारिसोद्वैविधिस्वादघने । विधिदोइपछ्छा-वरिसातपने ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ पांचभांतिज्योनारसब, षट्-रसरुचिरप्रकास ॥ भोजनकरिरघुनाथजू, बोलेकेशवदास ॥ ॥ ३३ ॥ हरिलीलाछन्द ॥ बैठेबिशुद्धगृहअग्रजअग्रजाइ । देखीबसन्तऋतुसुन्दरमोददाइ ॥ बौरेरसालकुलकोमलकेलि-काल । मानोंअनंगध्वजराजतश्रीबिशाल ॥ ३४ ॥

टी०—अथान (अचार) झारि आम्रके चूर्णमें जीरछंकादिडारि जलमें घोरि बनाति है पश्चिममें प्रसिद्ध है पछ्यावरि पकवानको भेदहै या सब प्रकार भोजन-के मिलाइ छप्पन होत हैं ॥ ३२ ॥ शर्करादि (मधुर) ॥ १ ॥ अम्लादि (अम्ल) २ करैला आदि (तिक्त) ३ मरिचादि (कटु) ४ लवणादि (लवण) ५ हर्रादि (कषाय) ६ ये जे षट् छः रस हैं तिनकी है रुचिर प्रकाश जामें ऐसी जो चोष्य (आम्रादि) १ पेय (दुग्धादि) २ भोज्य (भक्तादि) ३ लेह्य (अवलेहादि) ४ चर्व्य (पिस्ता बादामादि) ५ पांच भांतिकी जेवनार है ताको भोजन करिकै रामचन्द्र बोले भोजनसमयमें बोल्यो न चाहिये यह धर्म शास्त्रोक्त है ॥ ३३ ॥ रामचन्द्रजू भोजन करिकै गृह अग्रज कहे गृहमें अग्रज श्रेष्ठ जो गृह (घर) है ताके अग्रभागमें बसंत बहार देखिबेको जाइकै बैठत भये कोमल कहे सुगंधयुक्त रसाल (आम्र) वृक्ष बौरे हैं सो मानों यह केलिको काल कहे समय है या प्रसिद्ध करिबेके लिये मानों अनंग जो काम है ताके बिशाल ध्वजा राजत हैं जो कछू वस्तु प्रसिद्ध करिबो होत है ता लिये सब ध्वजा बांधत हैं प्रसिद्ध है ॥ ३४ ॥

मू०–फूलीलवंगलवलोलतिकाविलोल। भूलेजहांभ्रमरवि-
भ्रममत्तडोल॥ बोलैंसुहंसशुककोकिलकेकिराज। मानोंवस-
न्तभटबोलतयुद्धकाज॥ ३५ ॥ सोहैपरागचहुँभागउडैसुग-
न्ध। जातेविदेशविरहीजनहोतअन्ध॥ पालासगाछविनपत्र
विराजमान। मानोंवसन्तदियकामहिंअग्निवान॥ ३६ ॥
सवैया॥ फूलेपलासविलासथलीबहुकेशवदासप्रकाशनथोरे।
शेषअशेषमुखानलकीजनुज्वालविशालचलीदिविओरे॥ किंशु-
कश्रीशुकतुंडनकीरुचिराचेरसातलमोंचितचोरे। चोंखनचापि-
चहूँदिशिडोलतचारुचकोरअँगारनभोरे॥ ३७ ॥ मौक्तिकदा-
मछन्द॥ जरैंविरहीजनजोवतगात। उवरैउरशीतलसेजलजात
किधौंमनमीननकोरघुनाथ। पसारिदियोजनुमन्मथहाथ॥ ३८ ॥

टी०–लवली हरफारयोरी पुष्प रस पानसों मत्त जे भ्रमर हैं ते विभ्रममें भूले डोल कहे डोलत हैं ॥ ३५ ॥ ३६ विलास स्थलिनमें बहुत पलाश फूले हैं रसातल भूतल दिवि आकाश किंशुक कहे पलाश अर्थ पलाशपुष्प ॥ ३७ ॥ सीताजूकी उक्ति रामचन्द्र प्रति है उवरे हैं कहे हृदय अर्थ सिफाकंद जिनके ऐसे जे शीतलसे कहे शीतल जलजात कमल हैं तिनको देखत विरही जननके गात जरत हैं सो हे रघुनाथ! मनमीननके गहिवेके अर्थ मानो मन्मथ (काम) हाथ पसारि दियो है अर्थ जाको जन कमलनमें जात हैं ताको गहि राखत हैं मन्मथ हाथ सम कहि कमलनकी अति सुन्दरता जनायो छंद उपजाति है ॥ ३८ ॥

मू०–जितेनरनागरलोगबिचारि। सबैबरनैंरघुनाथनि-
हारि॥ किधौंपरमानँदकोयहमूल। विलोकतहीसोहरैसबशूल॥
॥ ३९ ॥ किधौंबनजीवनकोमधुमास। रचेजगलोचनभौंर
विलास॥ किधौंमधुकोसुखदेतअनंग। धरेउमनमीननिकारण
अंग॥ ४० ॥ किधौंरतिकीरतिबेलिनिकुंज। बसैगुणपक्षिनको
जहँपुंज॥ किधौंसरसीरुहऊपरहंस। किधौंउदयाचलऊपरहंस

॥४१॥ दोहा ॥ प्राचीदिशिताहीसमय, प्रगटभयोनिशिनाथ ॥ वर्णतताहिविलोकिकै, सीतासीतानाथ ॥ ४२ ॥

टी०—नागर लोग कहे नगर श्रेष्ठ जो नर हैं ते रामचन्द्रको बैठे देखि परस्पर वर्णत हैं मूलके भक्षणसों शूल दूरि होत है औ रामरूपी जो आनन्दमूल है ताके देखतही शूल दूरि होत है॥३९॥कि वनरूपी जे जीव प्राणी हैं तिनको मधुमास (चैत्रमास) है जैसे चैत्र बनको फलावनको फुलावत है तैसे रामचन्द्र जगत्के प्राणिनको प्रफुल्लित करत हैं औ मधुमासमें भ्रमर अनुरागत हैं इहां जगके लोचन भ्रमरके विलाससों रचे कहे अनुरागे हैं औ कि रामचन्द्र नहीं हैं अनंग (काम) हैं वनमें विराजमान जो मधु (वसंत) ताको दरश दैके सुख देत हैं कैसो है अनंग सबके मनरूपी जे (मीन-मत्स्य) हैं तिनके कारण कहे गहिवेके अर्थ अंगनको धारण करचो है देखतहीं रामचन्द्र सबके मनको गहि राखतहैं तासों जानो ॥ ॥ ४० ॥ रति प्रीति औ कीर्ति यशरूपी जो वेलि हैं तिनको निकुंजहैं कुंजमें पक्षी वसत हैं रामचन्द्रमें गुणरूपी जे पक्षी हैं तिनके पुञ्ज (समूह) वसत हैं ॥ "निकुञ्जकुञ्जौवाक्लीविलतादिपिहितोदरे इत्यमरः ॥" सरसीरुह औ उदयाचल सम गृह है हंस (पक्षी) औ हंस (सूर्य्य) सम रामचन्द्रहैं ॥४१॥ प्राची (पूर्व) ॥४२॥

मू०—हरिणीछंद ॥ फूलनकीशुभगेंदनई । सूंघिसचीजनुडारिदई ॥ दर्पणसोशशिश्रीरतिको । आसनकाममहीपतिको ॥ ॥४३॥ मोतिनकोश्रुतिभूषणभनो । भूलिगईरविकीतियमनो ॥ अंगदकोपितुसोसुनिये । सोहततारहिंसंगलिये ॥ भूपमनोभवछत्रधरेउ । लोकवियोगिनकोबिडरेउ ॥ ४४ ॥ देवनदीजल रामकह्यो । मानहुफूलिसरोजरह्यो ॥ फेनकिधौंनभसिंधुलसै । देवनदीजलहंसवसै ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ चारुचंद्रिकासिंधुमें, शीतलस्वच्छसतेज ॥ मनोशेषमयशोभिजै, हरिणाविछितसेज ॥ ४६ ॥

टी०—शशि जो चन्द्र है सो श्रीरति जो कामकी स्त्री है ताको दर्पणसो है ॥ ४३ ॥ तारा (नक्षत्र) औ बालिकी स्त्री मनोभव (काम) वियोगी स्त्री पति

परस्पर वियोगी औ विरोधी छंद उपजाति है ॥ ४८ ॥ या प्रकार सीताको वर्णन सुनिकै रामचन्द्र कह्यो नभसिंधु (आकाश गंगा) ॥ ४९ ॥ हरिणाधिष्ठितहै तासों चारु चन्द्रिकारूपी जो सिंधु कहे क्षीरसिंधुहै तामें शीतल औ स्वच्छ मलरहित सतेज कहे कान्तियुक्त मानो शेषमय कहे शेषस्वरूप सेज है शेषमयसेज-हरि (विष्णु) करसन्ते अधिष्ठित युक्तहै हरि वा तृतीयांत पदहै चन्द्रमा हरिण करिकै अधिष्ठितहै मृग अंकमें प्रसिद्ध है ॥ ४६ ॥

मू०-दण्डक ॥ केशोदासहैउदासकमलाकरसोकरशोषक प्रदोषतापतमोगुणतारिये। अमृतअशेषकेविशेषभाववरषतकोकनदमोदचण्डखण्डनविचारिये ॥ परमपुरुषपदविमुखपरुषरुखसुमुखसुखदविदुषनउरधारिये । हरिहैरीहियेमेंनहरिणहरिणनैनीचन्द्रमानचन्द्रमुखीनारदनिहारिये ॥ ४७ ॥

टी०-सीतासों रामचन्द्र कहत हैं कि, हे हरिणनयनी ! यह चन्द्रमा नहीं है नारद हैं औ याके हियमें यह हरिण नहीं है हरि (विष्णु) हैं सो श्लेषसों कहत हैं कैसा है चन्द्रमा कमलनको जो अकार समूह है तासों उदास हैं कर (किरण) जाके चन्द्रकिरण स्पर्शसों कमल संकुचित होत हैं औ प्रदोष जो रजनीमुख है औ ताप जो उष्ण है औ तमोगुण जो अन्धकार है तिनको शोषक (दूरि करनहार) है यह तारिये कहे जानियत है पूर्णिमाको चन्द्र जब उदित भयो तब रात्रिको प्रवेश होत है रजनीमुख काल व्यतीत होत है तासों शोषक कह्यो ॥ "प्रदोषोरजनीमुखमित्यमरः" ॥ औ अशेष कहे पूर्ण जो अमृत है ताके जे भाव कहे विभूति हैं वृद्धि इति ॥ ताको विशेषसो वर्षत है अमृतकी बडी वर्षा करत है इत्यर्थः ॥ औ कोक जे चक्रवाक हैं तिनको जो नद (शब्द) है ताको जो मोद है अर्थ परस्पर स्त्री पुरुष संभाषणानन्द है ताको चण्ड कहे उग्र अर्थ नीकी विधि खंडन कहे खंडन कर्त्ता है अर्थ चक्रवाकनको वियोगी करि परस्पर स्त्रीपुरुष संभाषणानन्दको दूरि करत हैं अथवा प्रथम कमलाकर पद कह्यो है तहां श्वेतादि कमल जानो इहां कोकनद कहे अरुण कमलको जो मोद है ताको चण्डखण्डन है ॥ "रक्तोत्पलं कोकनदम्-इत्यमरः" ॥ औ परम पुरुष जो पति है ताके पदसों जे स्त्री विमुख हैं अर्थ मान किये हैं तिन्हें परुष रुख कहे कठोर रुख है अर्थ ताप कर्त्ता है औ जे लोगन पतिसों सुमुख हैं

तिनको सुखद है औ विदुष जे प्रवीण लोग हैं तिन करिकै उरमें धारियत है प्रवीणके सदा चन्द्रोदयकी इच्छा रहति है चौरादिक चंद्रोदय नहीं चाहत इति भावार्थः॥ नारद कैसेहैं कि कमला जो लक्ष्मीहैं अर्थ द्रव्य ताके आकर (समूह) सों उदासहैं कर (हाथ) जाको अर्थ बहुतहू द्रव्य कोऊ देइ ताको ग्रहण नहीं करत अल्पकी का कथाहै इतिभावार्थः ॥ औ प्रकर्ष जे दोषहैं गोवधादि औ ताप जे दैहिक, दैविक, भौतिक त्रैतापहैं औ तमोगुणके शोषक दूरि कर्त्ता हैं तमोगुणके शोषक कहि या जनायो कि सदा सत्त्वगुणयुक्त रहत हैं औ अमृत कहे नाहींहै मृत्यु जिनकी अशेष कहे पूर्ण ऐसे जे विष्णुहैं तिनके जे भाव कहे अनेक लीलाहैं तिनको विशेषसों वर्षतहैं अर्थ भगवानकी अनेकलीला विशेषसों गान करतहैं अथवा भाव कहे अभिप्राय ताको वरषतहैं कहतहैं अर्थ भूत, भविष्य वर्त्तमान तीनों कालमें जो ईश्वरके अभिप्रायके कृत्यहैं ताहि जानतहैं सो सब-सों कहतहैं त्रिकालज्ञ हैं इत्यर्थः ॥ "भावोभिप्रायवस्तुनोस्वभावजन्मसत्तात्मक्रि-यालीलाविभूतिषु-इत्यभिधानचिन्तामणिः" ॥ औ कोक जो शास्त्र विशेषहै ताको जो नद (शब्द) है वचन इति ताको जो मोद (आनंद) है ताके खंडन कहे खंडन कर्त्ता हैं अर्थ कोकशास्त्रमें अनेक काम वार्त्ता हैं तिनको निंदत हैं औ परम पुरुष जे भगवानहैं तिनके पदसों जे प्राणी विमुख हैं अर्थ विष्णुकी भक्ति नहीं करत तिन्हें परुपरुख (कठोररुख) हैं औ जे सुमुख हैं अर्थ विष्णुभक्तहैं तिन्हें सुखद हैं औ विदुष जे पण्डितहैं तिन करिकै जिनको उरमें धारियतहैं अथवा विशेषसों दुःख नहीं जिन करिकै उरमें धारियत अर्थ सदा आनंद युक्त रहैं ॥ ४७ ॥

मू०—दोहा ॥ आईजानिवसंतऋतु, बनहिंविलोकतराम ॥
धरणिधसेसीतासहित, रतिसमेतजनुकाम ॥ ४८ ॥

इति श्रीसकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजि-
द्विरचितायां वसंतदर्शनं नामत्रिंशः प्रकाशः ॥ ३० ॥

टी०—बनको देखत वसंत ऋतु आई जानिकै वनविहार करिबो मनमें निश्चय करि सीता सहित गृह अग्रसों धरणिको धर्म कहे उनंग ॥ ४८ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां
रामभक्तिप्रकाशिकायां त्रिंश प्रकाश ॥ ३० ॥

मू०-दोहा ॥ इकतीसयेंप्रकाशमें, रघुवरवागपयान ॥ शुकमुखसियदासीनको, वर्णनविविधविधान ॥ १ ॥ ब्रह्मारूपक छंद ॥ भोरहोतहीगयोसोराजलोकमध्यवाग। वाजिआनियोसो एकइंगितज्ञसानुराग ॥ शुभ्रशुद्धचारिहूनअंशुरेणुकेउदार । सीखिसीखिलेतहैंतेचित्तचंचलाप्रकार॥२॥ तोमरछंद ॥ चढ़िवाजिऊपरराम । वनकोचलेतजिधाम ॥ चढ़िचित्तऊपरकाम ।जनुमित्रकोसुनिनाम ॥ ३ ॥ मगमेंविलम्बनकीन ॥वनराजमध्यप्रवीन । सबभूपरूपदुराइ ॥ युवतीविलोकीजाइ ॥ ४ ॥

टी०-॥ १ ॥ वनविहारके अर्थ भोर होतही राजलोक कहे रनिवास प्रथम वागके मध्य गयो फेरि इंगितज्ञ कहे सवारकी चेष्टाको जाननहार अर्थ जेहे सवारको मन देखे ताही विधि ताड़न विनाहीं गमन कर्त्ता, सानुराग कहे अपने अनुराग प्रेम सहित अर्थ जाके ऊपर अपनो वड़ो प्रेम है ऐसो वाजि रामचन्द्र आनियो कहे मँगायो अथवा वन जाइवेके अनुराग सहित जे रामचन्द्र हैं तिन इंगितज्ञ वाजि आनियो अथवा इंगितको जाननहार जो कोऊ अनुचर है सो रामचन्द्रको वाजिपर चढिकै वाग जाइवेको इंगित जानिकै सानुराग कहे प्रेम सहित वाजि आनियो (लायो) कैसो है वाजि जाके शुभ्र कहे सुंदर शुद्ध कहे निर्दोष चारिहू चरणमें इति शेषः ॥ रेणु जो धूरि है ताके अंश कहे कण चलतमें लगि गये हैं ते मानों उदार कहे चतुरचित्त हैं चरणनमें लगिकै चंचला प्रकार कहे चंचलताको प्रकार सीखिलेत हैं जिनके चरणनमें चित्तहूसों अधिक चंचलताहै इति भावार्थः ॥ २ ॥ वनमें आयो मित्र जो वसंत है ताको नाम सुनिकै मानों चित्त पर चढ़िकै धाम छोड़ि कामबनको चल्यो है इत्यर्थः ॥ चित्तसम चंचल वाजि है कामसम सुंदर राम हैं ॥ ३ ॥ भूपरूप छत्र चामरादिको दुराइ छिपे छिपे युवतिनको विलोक्यो जाइ ॥ ४ ॥

मू०-स्वागताछंद ॥ रामसंगशुकएकप्रवीनो । सीयदासिगुणवर्णनकीनो ॥ केशपाशशुभश्यामसनेही । दासहोतप्रभुजीवविदेही ॥ ५ ॥ भाँतिभाँतिकबरीशुभदेषी । रूपभूपतरवारिविशेषी ॥ पीयप्रेमप्रणरासनहारी । दीहदुष्टछलखंडनकारी ॥ ६ ॥

किधौंशृँगारसरितसुखकारि । वंचकतानिबहावनिहारि ॥
कंचनपत्रपांतिसोपान । मनौंशृँगारलोकक्केजान ॥ ७ ॥

टी०–स्नेही स्नेह तैलयुक्त प्रभु रामचन्द्रको संबोधनहै विदेही कहे ज्ञानी जे जनकादिसम जन देह धरेहैं अथवा जिनको देखि जीव उदास होतहैं औ विदेही होतहैं अर्थ देहकी सुधि भूलि जाति हैं ॥५॥ कवरी (वेणी) "कवरी केशविन्याशशांकयोरिति हेमचन्द्रः" ॥ अनेक दासी हैं तासों भाँति भाँति पद कह्यो काहू दासीकी वेणी और विधिहै काहूकी और विधिहै कैसीहै कवरी रूप कहे सौंदर्य्यरूपी जो भूप राजाहै ताकी विशेष निश्चय तरवारिहै कैसी हैं तरवारि पीय जो स्वामी रूप है ताके प्रेमकी राखनहारी है अर्थ अति प्रेमसों सौंदर्य्य जिनको एकहु क्षण त्याग नहीं करत औ सबके मनको वश्य करिबो यह जो रूप भूपको प्रण है ताहूकी राखनहारी है सबके मनको वश्य कराति औ द्रोह (दुष्ट) सम जो छल है ताकी खंडनकारी है अर्थ जैसे तरवारि दुष्ट जे विरोधी हैं तिन्हैं खंडन करि प्रजानको राजाके वश्य करि प्रण राखती है तैसे छलको खंडन करि सबके मनको रूपके वश्य करि प्रण राखती है ॥ ६ ॥ और नदी वृक्षादि बहावति है तैसे यह चंचलता छलताकी बहावनहारीहै कंचनपत्र जे वेणीपानहैं तिनकी पांतिहै सो मानों शृंगारलोकके जान कहे जाइवेको सोपान कहे सीढीहै शृंगाररसके लोकसम केशपाशयुक्त शीशहैं ॥ ७ ॥

मू०–शीशफूलअरुबेंदालसै । भागसोहागमनोंशिरबसै॥पाटिनचमकचितचौंधिनी । मानोंदमकतिघनदामिनी॥८॥सेंदुरमाँगभरीअतिभली । तिनपरमोतिनकीअवली॥ गंगगिरातनसोंतनजोरि। निकसीजनुयमुनाजलफोरि ॥ ९ ॥ शीशफूलशुभजरयोजराय।माँगफूलशोभैशुभभाय॥ वेणीफूलनकीबरमाल । भालभलेबेंदायुतलाल । तमनगरीपरतेजनिधान। बैठेमनोंबारहोंभान ॥ १० ॥ भृकुटिकुटिलबहुभायनभरी । भाललालद्युतिदीसतिखरी ॥ मृगमदतिलकरेखयुगबनी । तिनकी

शोभाशोभतिघनी । जनुयमुनाखेलति शुभगाथ । परसनपित-
हिपसारचोहाथ ॥ ११ ॥

टी०-चंदा भालमें रहत है सो भाग कहे भाग्यसम है शीशफूल सोहाग सम है इहां स्थानमें वसिबेकी उत्प्रेक्षा है तासों क्रमहीन दूषण नहीं है ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ तमनगरीसम शीशके वार हैं बारहों भानु सम शीशफूलादि हैं इहां संख्या करि उत्प्रेक्षा है ॥ १० ॥ यमुना सम भ्रुकुटी हैं हाथ सम कस्तूरीके तिलककी द्वै ऊर्द्धरेखा हैं पिता जे सूर्यहैं तिनके सम भाल लाल है भ्रुकुटिनको बहु भावन भरी कह्योहै तासों यमुनाको खेलत कह्यो ॥ ११ ॥

सू०-पंकजवाटिकाछंद ॥ लोचनमनहुँमनोभवयन्त्रनि ।
भ्रुजुगउपरमनोहरसंत्रनि॥सुन्दरसुखदसोअंजनअंजित।बाणम-
दनमिपसोंजनुरंजित ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ सुखदनासिकाजगमो-
हियो । मुक्ताफलनियुक्तसोहियो ॥ आनँदलतिकामनहुँसफूल।
सूधितजतशशिसकलकुशूल ॥ १३ ॥ पद्धटिकाछन्द ॥ जनु
भालतिलकरविव्रतहिलीन।नृपरूपअकाशहिदीपदीन ॥ ताटंक
जटितमणिश्रुतिबसंत । रविएकचक्ररथसेलसंत॥ अतिझुलमु-
लीनसहझलकलीन । फहरातपताकाजनुनवीन ॥ १४ ॥

टी०-॥ १२ ॥ मुक्ताफलनयुक्त अर्थ मुक्ताफलसहित नासिका भूषण युक्त फल सहित आनंद लतिका कोकै मानों शशि जो चंद्र हैं सो सब शूल जो दुःख है ताको दूरि करत हैं आनंदलतिका सम नासिका भूषण है फूलसम मोती है शशि सम मुखहै ॥ १३ ॥ भालमें तिलक कहे टीका मणिजटित ऊर्ध्वपुंड्र होतहै सो जानों रूप कहे सौंदर्यरूपी जो नृपराज है सो रविके व्रतनें लीन ह्वै कै रविके अर्थ आकाशको दीप दीन्हों है जे प्रथम शीशफूलादि कह्यो है तेई रवि हैं केश युक्त शीश आकाश है औ मणिजटित ताटंक कहे ढार श्रुतिमें (श्रवणमें) लस तहैं ते मानों रविके एक चक्र कहे एक पहियाके रथसे हैं रविको रथ एकही पहियाको है औ झुलमुली जे पात नामा कर्णभूषणहैं तिनकी झुलक (शोभा) सह कहे साथ अर्थ ताटंकनके साथ लीनहै युक्तहै मानों ताही एक चक्ररथकी

पताकाहैं अथवा रूपानूप जो है सो रविको दीप दीन्हों है औ या प्रकारके पताकासों युक्त एक चक्र रथहू दीन्हों समर्पण करयौहै इत्यर्थः ॥ १४ ॥

मू०—अतितरुणअरुणाद्विजद्युतिलसंति । निजदाडिमबीजनकोहसंति ॥ संध्याहिउपासतभूमिदेव । जनुवाकदेवकीकरतसेव शुभतिनकेसुखमुखकेविलास । भयोउपवनमलयानिलविलास । ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ मृदुमुसुकानिलतामनहरैं । बोलतबोलफूलसेझरैं ॥ तिनकीवाणीसुनुमनहारी । बाणीबीणाधरेउउतारी १६ ॥ लटकैंअलिकअलकचीकनी । सूक्षमअमलचिलकसोंसनी ॥ नकमोतीदीपकद्युतिजानि । पाठीरजनीहीउनमानि ॥ १७ ॥

टी०—तरुण कहे नवीन द्विजदंत मानों भूमिदेव ब्राह्मणहैं ते मुखमें वास किये वाग्देवी जो सरस्वतीहै ताकी सेवा करतहैं ते ब्राह्मण संध्या समयमें संध्याकी उपासना करतहैं इहां दांतनकी औ ब्राह्मणनकी द्विज शब्दसों साम्य है संध्यासम दांतनकी अरुणद्युतिहै दांतन पक्ष वाग्देवी (जिह्वा) जानौ ॥ १५ ॥ ताही मुसकानि लताके फूलेसे जानौ ॥ १६ ॥ द्वैछंदको अन्वय एकहै अलिक (लिलार) दशा (वाती) मानों रविसींक पसारिकै ज्योति बढावतहै रविपदको संबंध याहूसे है कवि जे शुक्रहैं तिनके हित कहे चढाई लेबेके अर्थ इत्यर्थः ॥ शुक्रसम नाकमोती हैं रविसम शीशफूल हैं ॥ १७ ॥

मू०—ज्योतिबढ़ावतदशाउतारि । मानहुँश्यामलसींकपसारि ॥ जनुकविहितरविरथतेछोरि । श्यामपाटकीबांधीडोरि ॥ १८ ॥ रूपअनूपरुचिररसभीनि । पातुरनैननकीपुतरीनि ॥ नेहनचारतहितरतिनाथ । मरकतलकुटलियेजनुहाथ ॥ १९ ॥ दोहा । गगनचन्द्रतेअतिबडो, तियमुखचन्द्रविचार । दईविरंचिविचारिचित, कलाचौगुनीवारु ॥ २० ॥

टी०—॥ १८ ॥ तारी अलकमें दूसरी (उत्प्रेक्षा) करति है पुतरिनको जो अनूप रूप है ता मति जो रुचिर रस कहे प्रेम है तामें भीनि कहे भीनिके अर्थ

वश्य ह्वैके पातुर कहे वेश्या अर्थ कामकी वेश्यारूपी जे नयनकी पुतरी हैं तिनको रतिनाथ जो काम है ताके हितसों आनों मर्कत कहे श्यामलकुट हाथमें लैके स्नेह नचावत है शिक्षक लकुटके तालमें वेश्याको नृत्य सिखावत हैं यह प्रसिद्ध है अथवा कहूं भीनी पाठ है तौ अनूप रूप कहे आन सुंदर औ रुचिर जो रस प्रेमहै तामें भीनी कहे युक्त पातुररूपी जे नयनकी पुतरीहैं तिनको रतिनाथके हितसों नेह नचावतहैं इत्यर्थः ॥ १९ ॥ चन्द्रमामें सोरह कलाहैं मुखमें चौंसठिहैं चौंसठि कला प्रसिद्धहै ॥ २० ॥

मू०—दंडक ॥ दीन्होईशदंडबलदलबलद्विजबलतपबलप्र-बलसमेतिकुलबलकी । केशवपरमहंसबलबहुकोशबलकहाक हौवढीपैबड़ाईदुर्गजलकी । विधिबलचंद्रबलश्रीकोबलश्रीशब-लकरतहैंमित्रबलरक्षापलपलकी । मित्रबलहीनजानिअबला-मुखनिबलनीकेहीछड़ाइलईकमलाकमलकी ॥ २१ ॥ दोहा ॥ रमनीमुखमंडलनिरखि, राकारमणलजाइ ॥ जलदजलधिसि-वसूरमैं,राखतबदनदुराइ ॥ २२ ॥

टी०—ईश जे ईश्वर हैं तिन दण्ड जो नाल है ताको बल दीन है औ श्लेषसों परिघादि दण्ड आयुध जानों दलपत्र औ चमूद्विज चक्रवाकादि पक्षी अथवा दंत इहां दंत पदते बीज जानों औ ब्राह्मण जलशायित्वादि तप जानों, कुल कहे ज्ञाति समूह परम हंस (पक्षी) औ तपस्वी विशेष कोश कहे सिफाकन्द औ खजाना औ दुर्ग (कोट) रूपी जो लता है ताके बलकी कहा बड़ाई कहौं इत्यर्थः ॥ विधि (ब्रह्मा) को आसन है ता संबंधसों विधि बल जानों जलज (चन्द्र) हू है (कमल) हू है तासों ता संबंधसों चन्द्रबल जानौं लक्ष्मीको कमलमें सदा बास रहतहै तासंबंधसों श्रीको बल जानौं श्रीश (विष्णु) सदा करमें लिये रहत हैं तासों श्रीशबल जाना औ मित्र जे सूर्य हैं तिनहूंको बल पल पलमें रक्षा करत है यद्यपि येते सब बल हैं परंतु मित्र जे तुम हो तिनके बलसों कमलनको हीन जानिकै ये जे अबला सीय दासीहैं तिनके मुखन बलसों कमलकी जो कमला कांति रूपा (लक्ष्मी) है ताहि बड़ाई लीन्हों है अबला पद कहि राम बलकी

अति उत्कृष्टता जनायो ॥ २१ ॥ पूर्ण चन्द्र युक्त जो पूर्णिमाकी रात्रिहै सो राका कहावतीहै॥ "पूर्णेराकानिशाकरे इत्यमरः" ॥ याहूमें असिद्ध विषय हेतूत्प्रेक्षा है ॥ २२ ॥

मू०–विशेषकछंद ॥ भूषणग्रीवनकेबहुभाँतिनसोहतहैं । लालसितासितपीतप्रभामनमोहतहैं ॥ सुंदररागनकेबहुबालकआनिबसे। सीषनकोबहुरागिनिकेशवदासलसे॥२३॥चौपाई ॥ हरिपुरसीसुरपूरदूषिता । मुक्ताभरणप्रभाभूषिता ॥ कोमलशब्दनिवंतसुवृत्त । अलंकारमयमोहनमित्त ॥ काव्यापद्धतिशोभागहे । तिनकेबाहुपाशकविकहे ॥ २४ ॥

टी०–राग भैरवादि ॥ २३ ॥ आपनी छवि करिकै सुरपुरकी अथ सुरपुरकी स्त्रिनकी दूषिता कहे निंदा करनहारी हैं औ मुक्ताजे मोती हैं तिनके जे आभरण (भूषण) हैं तिनकी प्रभासों भूषित हैं तासों हरिपुर (विष्णुलोक) सो हैं हरिपुर कैसोहै कि आपनी छविसों देवलोकको निंदत है अर्थ देवलोकसों अधिक है औ मुक्त कहे मुक्तिको प्राप्त जे जीव हैं तेई हैं आभरण भूषण तिनकी प्रभासों भूषित है अर्थ अनेक मुक्त जीवनसों युक्त है फेरि कैसीहैं कि कोमल शब्दनिवंतहैं अर्थ मधुर वचन बोलती हैं औ सुष्ठुहैं सुवृत्त कहे चरित्र जिनको औ माल्यादि अलंकार युक्तहैं औ मित्त जो स्वामीहैं ताको मोहन कहे मोहकर्ताहैं औ तिनके बाहुनको पाश कहे फांस सम कविजन कहतहैं यासों काव्यकी जो पद्धति रीति है ताकी शोभाको गहैहै काव्य पद्धति कैसीहै कोमल कहे कोमलाक्षर युक्त ज शब्द हैं तिनसों युक्तहै सुष्ठु वृत्त पद जाके औ उपमादि अलंकारसों युक्तहै औ मित्त जे काव्यपाठीहैं तिनको मोहनहै औ तिनके बाहुनको कवि पाशसमकहतहैं अर्थ बाहुपाश सम होत नहींहै परन्तु कविनको नियमहै कि काव्य रीतिमें स्त्री पुरुषके बाहु पाशसम कहतहैं ॥ "वृत्तश्छंदचारित्रवृत्तिषु इति मेदिनी" ॥ २४ ॥

मू०–नवरंगबहुअशोकक्केपत्र । तिनमेंराखतराजकलत्र ॥ देखहुदेवदीनकेनाथ । हरतकुसुमकेहारतहाथ ॥ २५ ॥ सुंदर अंगुरिनसुंदरीचनी । मणिमयसुबरणशोभासनी ॥ गजलेककै मनरुचिरचे । मानोंकामिनिकरकरिलचे ॥ २६ ॥ अतिसुंदर

उरमेंउरजात।शोभासरमेंजनुजलजात ॥अखिललोकजलमयकरिधरे। वशीकरणचूरणनयभरे॥कामकुँवरअभिषेकनिमित्त । कलशरचेजनुयौवनमित्त ॥ २७ ॥ दोहा ॥ रोमराजशृंगारकी, ललितलतासीराज ॥ ताहिफलेकुचरूपफल, लैजग ज्योतिसमाज ॥ २८ ॥

टी०–द्वे छंदको अन्वय एक है हे देव ! हे दीनोके नाथ ! यह देखो जे हाथ कुलुम–(फूलन) के हरतमें तोरतमें हारत कहे थकतहैं अर्थ जिनसों फूलऊ नहीं तूरि जात ऐसे कोमल जे हाथ हैं तेई नवरंग बहुत अशोकके पत्र हैं तिनमें कहे तिन हाथनमें राजकलत्र जे सीताहैं तिनकोराखतीहैं तामों मानो सुन्दर जे अंगुरी हैं तिनमें सुवरण शोभासों रानी मणिमय मुंदरी बनीहैं तेई रुचि कहे सुंदरतासों रये (युक्त) राजलोक कहे अंतःपुरके अर्थ सीतादिकनके मनहैं तिनको मानों करमें (हाथमें) करि लीन्हों है अतिसेवा करि सीतादिकनकेमन मानों आपने हाथमें करि लीन्हों है इत्यर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

मू०–चौपाई ॥ सूक्ष्मरोमावलीसुवेष । उपमादीन्हीशुकसविशेष ॥ उरमेंमनहुँमदनकीरेष । ताकीदीपतिदिपतिअशेष ॥ ॥ २९ ॥ दोहा ॥ कटिकेतत्त्वनजानिये,सुनिप्रभुत्रिभुवनराव॥ जैसे सुनियतुजगतके, सतअरुअसतसुभाव ॥ ३० ॥नाराच छन्द ॥ नितंबबिंबफूलसेकटिप्रदेशक्षीणहै। विभूतिलूटिलीसबै सोलोकलाजलीनहै ॥ अमोलऊजरेउदारजंघयुग्मजानिये । मनोजकेप्रमोदसोंविनोदथंभमानिये ॥ ३१ ॥

टी०–रेख कहे लीक अर्थ हृदयमें मदन बस्यो है ताकी छवि बाहेर काढिकै देखि परत है कामको रूप श्यामहै ॥ २९ ॥ तत्त्वस्वरूप ॥ "तत्त्वं स्वरूपे परमात्मनीतिमेदिनी ॥" सत सुभावपुण्यादि ॥३०॥ नितम्ब बिंब कहे नितम्बमण्डल नितम्ब स्वरूप इति ॥ " बिंबं तु प्रतिबिंबे स्यान्मण्डले पुंनपुंसकमितिमेदिनी" ॥ फूलसे कहे प्रफुल्लित हैं अर्थ आनन्द सहित हैं औ कटि प्रदेश अति क्षीण हैं सो मानों नितंबन कटिकी विभूतिसंपति लूटिलीन्हीहै तासों आनन्दसहित हैं औ कटि लोकके जालसों लीन कहे छपीहै ऊजरे(मलरहित) प्रमादसों कहे प्रसन्नता

सहित अर्थ अतिप्रशस्त मनोज जो काम है ताके मानों विनोदयंत्र कहे विनोदके अर्थ यंत्र है औ यंत्रके बंधनसों आनन्द होतहै इनके देखतही आनंद होत है ॥ ३१ ॥

मू०—छवानकीछुईनजातिशुभ्रसाधुमाधुरी । विलोकिभूलिभूलिजातिचित्तचालिआतुरी ॥ विशुद्धपादपद्मचारुअंगुलीननखावली । अलक्तयुक्तमित्रकीसोचित्रबैठकीभली ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ कठिनभूमिअतिकोबरे, जावकयुतशुभपाइ ॥ जनुमाणिकतनत्राणकी, पहिरीतरीबनाइ ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ बरणबरणअँगियाउरधरे । मदनमनोहरकेमनहरे ॥ अंचलअतिचंचलरुचिरचैं । लोचनचलजिनकेसँगनचैं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ नखशिखभूषितभूषणनि, पठिसुवरणमयमंत्र ॥ यौवनश्रीचलजानिजनु, बांधेरक्षायंत्र ॥ ३५ ॥ चित्रपदाछंद ॥ मोहनशक्तिनऐसी । मकरध्वजध्वजजैसी ॥ मंत्रवशीकरसाजैं । मोहनमूरिविराजैं ॥ ३६ ॥

टी०—छवा कहे ऍडी तिनकी शुभ्र कहे मलरहित साधु कहे श्रेष्ठ माधुरी कहे सुन्दरता नयननकरि छुई नहीं जाति अर्थ. अतीन्द्रिय है अति सुन्दरताहै इति भावार्थः ॥ जिनको विलोकिकै चित्तकी जो आतुरी शीघ्र चालि कहे चालहै सो भूलिजातहै अर्थ चित्त अचल ह्वै जातहै पाद औ अंगुली औ नखावली चित्र विचित्र अलक्त कहे महावरसों युक्तहै ते मानो मित्रको कहे मित्र जो स्वामी है ताके मनकी बैठकीहैं इत्यर्थः ॥ अथवा मित्र कहे सूर्यकी मूर्य सम नख हैं ॥ ॥ ३२ ॥ जानों माणिककी तनत्राणके अर्थ पहिरे हैं इत्यर्थः ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ भूषण सुवर्णमय पद्दे कंचनमयीहैं औ मन्त्रपक्ष सुष्ठुवर्णमय (अक्षर) मय जानों ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मू०—रूपमालाछन्द ॥ भालमेंभवराखियोशशिकोकलाशुभएक । तोपताउपजावहींमृदुहासचन्दअनेक । मारु(?)नविलोकिकैहरजारिकैकियोछार । नयनकोणचितैकरैपतिनि(?)तना-रजपार ॥ ३७ ॥ चौपाई ॥ कंटककटकनफटिकफटिजात ।

उड़िउड़िवसनजातबशवात ॥ तकनतिनकेतनलखिपरे । मणिगणअंगअंगप्रतिधरे ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ उपमागणउपजाइहरि, बगरायेसंसार ॥ तिनकोपरसदरोपमा, रचिराखी करतार ॥ ३९ ॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां सीतासखीजनवर्णनं नामैकत्रिंशः प्रकाशः॥ ३१ ॥

टी०-तोषता कहे संतोषके लिये इत्यर्थः ॥ नतिवादीसों अधिक को करिये तब संतोष होतहै यह प्रसिद्ध है औ महादेव एक मार जारचौ तालिये नयन कोरसों चितैकै पतिनके चित्तमें अपार मार कहे काम उत्पन्न करतीहैं अथवा महादेव कामको एकई मार करचौ कि जारिहि डारचौ औ ये काम सरिस जे पति हैं तिनके चित्तमें अपार कहे अनेक विधिको मार (ताडन) करती हैं ॥ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ हे हारि ! कर्ता और उपमा गण उपजाइकै संसारमें बगरायो (फैलायो)है औ तिन दासिनको परस्पर उपमा कहे एकदासीकी उपमा एकको एकको एककी रचि राख्योहै और उपमा इनके सादृश्य नहीं है इत्यर्थः ॥३९॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायामेकत्रिंशः प्रकाशः ॥ ३१ ॥

मू०-दोहा ॥ बत्तीसयेंप्रकाशमें, उपवनवर्णनजानि ॥ अरु बहुविधिजलकेलिको, करेहुरामसुखदानि ॥ १ ॥ सुन्दरीछंद ॥ अचानकदृष्टिपरेरघुनायक । जानकिकेजियकेसुखदायक ॥ ऐसेचलेसबकेचललोचन । पंकजबातमनोमनरोचन ॥ २ ॥ रामसोंरामप्रियाकह्योहँसि । बागदेखावहुलोकनकेशशि ॥ रामविलोकतबागअनन्तहि । ज्योंअवलोकतकामदसन्तहि ॥ ३ ॥ बोलतमोरतहाँसुखसंयुत । ज्योंबिरदावलिभाटनकेसुत ॥ कोमलकोकिलकेकुलबोलत । ज्ञानकपाटकुचीजनुखोलत ॥ ४ ॥ फूलतजैबहुभूषनकोगहु । छोडत

आनँदआँसुनकोजनु ॥ दाडिमकीकलिकामनमोहति । हेम कपीजनुबन्दनसोहति ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मधुबनफूल्योदेखिशुक, वर्णतहैंनिःशंक ॥ सोहतहाटकघटितऋतु, युवतिनकेताटंक ॥ ६ ॥ दोधकछन्द ॥ बेलकेफूललसैंअतिफूले । भौंर भवैंतिनकेरसभूले ॥ योंकरबीरकरीवनराजे । मन्मथबाणनकीगतिसाजै ॥ ७ ॥ केतकपुंजप्रफुल्लितसोहैं । भौंरउडैंतिनसैंअतिमोहैं ॥ श्रीरघुनाथहिंआवतभागे । जेअपलोकहुतेअनुरागे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ श्यामशोणद्युतिफूलकी, फूलेबहुतपलास ॥ जरैकामकैलामनो, मधुऋतुवातविलास ॥ ९ ॥

टी०—॥ १ ॥ रामचंद्र भूप दुराइकै ये छपे जो युवतिनको देखत रहे सो उपवनकी छबि निरखत अचानक सीतादिकनकी दृष्टिमों परे सो रामचंद्रकी ओर सबके चंचल लोचन ऐसे चलत भये जैसे वात कहे वायुसों मनरोचन कहे मनको सुखद पंकज (कमल) चलै ॥ २ ॥ ३ ॥ कुंजीसों मानों ज्ञानके कपाट खोलतहैं ज्ञानिनके कामोद्भव करि ज्ञानको दूरि करतहैं इत्यर्थः ॥ ४ ॥ वंदन (रोरी) ॥ ५ ॥(मधु जो वसंतहै तामें वन जो वाग है ताके मध्य दाडिमको फूले देखिकै शुक निशंक वर्णत हैं दाडिम पदको संबंध इहांऊंहै मानों हाटक जो सुवर्ण है तासों घटित कहे रचित पट् ऋतुरूपी जे युवती स्त्रीहैं तिनके ताटंक हारहैं भाषामें ऋतु शब्द स्त्रीलिंगहै ॥ यथा रसराज काव्ये ॥ "आई ऋतु सुरभि सोहाई प्रीति वाके चित्त, ऐसे में चलै तौ लाल रावरी वडाईहै "॥ अथवा ऋतु करिकै घटित वनाये ॥ ६ ॥ वेल कहे वेला करवीर (कनेर) ॥ ७ ॥ केतक कहे केरावते भ्रमर श्रीरामचंद्रको निकट आवत देखिकै भागत भये जे भ्रमर प्राणीमें अपलोक पापके सम केतक पुंजमें अनुरागे हैं जैसे ध्यानमें अथवा साक्षात् रामागमनसों प्राणीके अपलोक दूरिहोत हैं ते केतकके निकट आवत भ्रमर भागत भये इत्यर्थः ॥ ८ ॥ शोण (अरुण) मधु कहे वसंत ऋतुरूपी जो वायु है ताके विलाससों मानों महादेव करिकै जारयो जो काम है ताके कला फेरि जरें कहे सुपचतहैं ॥ ९ ॥

सू०—तोटकछंद ॥ बहुचम्पककीकलिकाहुलसी । तिनमें अतिश्याममहाद्युतिलसी ॥ उपमाशुकसारिकचित्तधरी । जनु-

हेमकुपीरससोंधभरी ॥ १० ॥ चौपाई ॥ अलिउडिधरतमंजरीजाल। देखिलाजसाजतिसबबाल ॥ अलिअलिनीकेदेखत भाई। चुम्बतचतुरमालतीजाई ॥ ११ ॥ अद्भुतगतिसुन्दरी विलोकि। विहँसतिहैंघुंघुटपटरोकि ॥ गिरतसदाफलश्रीफल-ओज।जनुधरधरतदेखिवक्षोज॥१२॥तारकछंद ॥ उदरेउरदा-डिमदीहबिचारे। सुदतीनकेशोभनदन्तनिहारे ॥ अतिमंजुल-बंजुलकुंजविराजैं। बहुगंजनिकेतनपंजनिसाजैं॥ नरअन्धभयेदरशेतरुभौरे। तिनकेजनुलोचनहैंयकठौरे ॥ १३ ॥

टी०–हुलसी कहे फूली शृंगाररस सदृश भ्रमरहैं औ सोंध (सुगंध) हैहीहै चंपक पै भँवर बैठिबेको वर्णन कवि नियम विरुद्धहै परंतु केशव बडे कविहैं कछू विचारहीकै कह्यौ ह्वै है तासों दोष नहींहै अथवा गंधही न होति है कली तासों कह्यौ है ॥ १० ॥ ११ ॥ सदाफल जे श्रीफल बिल्वहैं ते गिरत हैं सो मानो तिन स्त्रीनके वक्षोजको ओज कहे प्रताप कांतिको देखिकै भयसों मानों उन्नत आसनको त्याग करि धर (पृथ्वी) को धरत हैं अर्थ नत होतहैं ॥ १२ ॥ दाडिम फलनके उर पाकि कै उदरे कहे फाटे गयेहैं सो मानों सुदती कहे सुन्दरहैं दंत जिनके ऐसी जे सीताकी दासी हैं तिनके सुंदर दंतही निहारिकै स्पर्द्धासों फाटि गये हैं बंजुल (अशोक) गुंजनके तन कहैं भ्रमर भौरे कहे बौरे अर्थ अशोक वृक्षनके दरशे नर अंध कहे कामांध भये तिन नरनके मानों लोचनहीं एक ठौरहै बौरे अशोक वृक्षनको जिन देख्यो तिनके लोचन तहांई लागि रहे ताहीसों ते अधम भयेहैं इत्यर्थः ॥ १३ ॥

मू०–थलशीतलतास्वभावनिसाजैं॥ शशिसूरजकेजनुलोकविराजैं ॥ जलयंत्रविराजतभाँतिभलीहै। धरतेजलधारअकाशचलीहै ॥ यमुनाजलसूक्ष्मवेषसँवारेउ। जनुचाहतहैरविलोकविहारेउ ॥ १४ ॥ चंचरीछंद ॥ भाँतिभाँतिकहौंकहाँलगिबाटिकाबहुधाभली। ब्रह्मघोषघनेतहांजनुहैगिरावनकीथली ॥ नीलकंठनचैंवनेजनुजानियेगिरिजाबनी। शोभिजैबहु

धासुगन्धमनोंमिलैवनकीधनी ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ करुणामयबहुकामनिफली । जनुकमलाकीवासस्थली ॥ शोभेरम्भाशोभासनी । मनोशचीकीआनँदबनी ॥ १६ ॥

टी०–उष्णसमय बैठिबेके जे स्थलहैं ते शीतल स्वभावको साजतहैं शीतसमय बैठि कहे तप्त सुभाव साजतहैं शशिको लोक शीतल है सूर्यको तप्त है जलयंत्र (फुहारे) ॥ १४ ॥ वाटिकामें ब्रह्मघोष कहे वेदशब्द (पाठशाला) वनीहैं तिनमें शिष्य पढतहैं अथवा तपस्वी टिकेहैं ते वेदपाठ करत हैं अथवा अन्यत्र ऋषिनके आश्रमनमें शिखि शुकादि पक्षी वेद इहां आइ पढत हैं औ गिरा (सरस्वती) के उपवनमें ब्रह्माको शब्द नीलकंठ वाटिकामें मोर गिरिजावनीमें महादेवधनी कहे रानी ॥ १५ ॥ वाटिका करुणा जे वृक्षविशेषहैं तिनसों युक्तहै औ वहुत जे काम कहे अभिलषित फलहैं तिनसों फलीहै कमलाकी वासस्थली कैसीहै करुणामय जे भगवानहैं तेहैं जहाँ औ वहुत जे काम्य पदार्थ तिनसों फली युक्तहै अर्थ जहाँ सव अभिलषित पदार्थ मिलत हैं॥ "कामःस्मरेच्छाकाम्येषु इतिहेमचन्द्रः" ॥ वाटिका । पक्षरंभा (केरा)आनंद वनी पक्ष अप्सरा ॥ १६ ॥

मू०–कमलछंद ॥ तरुचन्दनउज्ज्वलतातनधरे । लपटीनवनागलतामनहरे॥ नृपदेखिदिगम्बरवन्दनकरे । चितचन्द्रकलाधररूपनिभरे ॥ १७ ॥ अतिउज्ज्वलतासबकालहुबसै । शुककेकिपिकादिककंठहुलसै ॥ रजनीदिनआनँदकंदनिरहै । मुखचन्दनकीजनुचंदनिअहै ॥ १८ ॥

टी०–जा वाटिकामें चन्दनवृक्ष चिरकहे वहुत कालसों चन्द्रकलाधर जे महादेव हैं तिनके रूपनको धरे हैं कैसे हैं चंदनवृक्ष औ महादेव उज्ज्वलता जो श्वेतता है ताको तनमें धारण करे हैं चंदन वृक्षहू श्वेतहैं महादेवके अंगऊ श्वेत हैं नागलता कहे नागवेली औ नाग सर्परूपी लता और दिगंवर नग्न दुवौ हैं महादेवको ईश्वरतासों औ वृक्षनको अति अद्भुततासों नृप सव वंदना करत हैं ॥ १७ ॥ फेरि वाटिका कैसी है कि जानो सीताकी दासिनके मुख चंदनकी चाँदनीहै कैसी है वाटिका औ चाँदनी सव कालहू कहे सव समयमें उज्ज्वलता कहे स्वच्छता औ शुक्लता वसतिहै कैसीहै वाटिका शुकादि पक्षिनके कंठ कहे शब्द सहित लसति है अर्थ अनेक शुकादि पक्षी जामें वोलतहैं औ चाँदनी शुकादिकनके शब्द सहित

जे अनेक विधि परस्पर बोलतीहैं तिन सहितहै औ रातौदिन दुवो आनंदकी कंदनी कहे जरहैं ॥ अर्थ रातौदिन सुखदहै वा चंदकी चाँदनी रातिहीको सुखद होती है मुखचंदकी चांदनी रातौदिन सुख देतिहै इतिभावार्थः । शुक कोकि पिकादिकके मुख बसै कहूं यह पाठ है तहांऊ मुख कहे शब्द जानो अर्थ वहीहै ॥ "मुखंनिश्शरणेवक्त्रेप्रारम्भोपाययोरपि । संध्यन्तरेनाटकादिःशब्देपिचनपुंसकमिति मेदिनी" ॥ १८ ॥

मू०-तोटकछन्द ॥ सबजीवनकोबहुसुक्खजहां । विरहीज-नहींकहँदुःखतहाँ ॥ जहँआगमपौनहिंकोसुनिये । नितहानि असौंधहिकोगुनिये ॥ १९ ॥ दोहा ॥ तपहीकोताउनजहां, तृषचातकके चित्त॥ पातफूलफलदलनिको, भ्रमभ्रमरनिकेमि-त्त ॥२०॥ तारकछंद । तिनमेंयककृत्रिमपर्वतराजै। मृगपक्षि-नकीसबशोभहिसाजै । बहुभाँतिसुगंधमलयगिरिमानों । कलधौतस्वरूपसुमेरुबखानों ॥ २१ ॥ अतिशीतलशंकरको गिरिजैसो । शुभश्वेतलसैउदयाचलऐसो ॥ द्युतिसागरमेंमैना-कुमनोहै । अजलोकमनोंअजलोकबनोहै ॥२२॥ तोटकछंद॥ सरितातिनतेशुभतीनिचली । सिगरीसरितानकीशोभदली ॥ इकचंदनकेजलउज्ज्वलहै । जगजह्नुसुताशुभशीलगहै ॥२३॥ चौपाई ॥ सुरगजकीमारगछबिछायो । जनुदिवितेभूतलपर आयो ॥ जनुधरणीमेंलसतिविशाल । त्रुटितजुहीकीधनवन माल ॥ २४ ॥ दोहा ॥ तज्यौनभाँवैएकपल,, केशवसुखदस-जीप ॥ जासोंसोहतातिलक्सो, दीन्हेंजंबुद्वीप ॥ २५ ॥ दोधकछंद ॥ एणनकेमदकैजनुदूजी । हैयमुनाद्युतिकैजनु-दूजी ॥ धारमनोरसराजविशाला । पंकजजालमईजनुमाला॥ ॥ २६ ॥ दोहा ॥ दुखखंडनतरवारिसी,किधौंशृंखलाचारु ॥ क्रीडागिरिमातंगकी, यहैकहैसंसारु ॥ २७ ॥ क्रीडागिरि-

तेअलिनकी अवलीचलीप्रकाश ॥ किधौंप्रतापानलनकी, पद्वीकेशवदास ॥ २८ ॥ दोधकछंद ॥ औरनदीजलकुंकुम सोहै । शुद्धगिरामनमानहुँमोहै ॥ कंचनकेउपवीतहिसाजै । ब्राह्मणसोंयहखंडविराजै ॥ २९ ॥

टी०–सब जीवनको असौंध (दुर्गंध) ॥ १९ ॥ पात कहे पतन ॥ २० ॥ कृत्रिम बनायो कलधौत स्वरूप कहे सुवर्णमयहै ॥ अर्थ सुवर्णहीको वन्योहै २१॥ मैनाक जागरमें है यह द्युति शोभारूपी सागरमेंहै अज जे दशरथके पिताहैं तिनके लोकमें मानो अज जे ब्रह्माहैं तिनको लोक ब्रह्मलोक वन्योहै ॥ २२ ॥ शील कहे स्वभाव ताप दूरि करणादि ॥ २३ ॥ सुरगज ऐरावतकी राह आकाशमें रात्रिके उवतिहै प्रसिद्ध है जुही कहे जाहीजूही पुष्प विशेषहै ॥ २४ ॥ तिलकसों अर्थ राज्याभिषेक तिलकसों ॥ २५ ॥ एणनको मद (कस्तूरी) पूजी कहे पूरित अर्थ मानों यामें यमुनाकी शोभा आइ बसीहै रसराज शृंगार रस पंकज इहां श्याम कमल जानौ ॥ २६ ॥ क्रीडा गिरिरूपी जो मातंगहै ताकी शृंखला क्षुद्रघंटिकाहै अथवा आँदूहै ॥ २७ ॥ किधौं रघुवंशिनके इतिशेषः प्रतापाग्निकी पदवी राह है अग्निकी राह श्याम होतीहै ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०–स्वागताछन्द ॥ लौंगफूलमयसेवटिलेखी । एलवीजबहुबालकदेखी । केरिफूलदलनावनमाहीं । श्रीसुगन्धतहँ है वहुधाहीं ॥ ३० ॥ दोहा ॥ खेवतमत्तमलाहअलि, कोवरणै बहुज्योति ॥ तीन्योसरितामिलितजहँ, तहाँत्रिवेणीहोति ॥ ॥ ३१ ॥ सीताश्रीरघुनाथजू, देखोअमितशरीर । द्रुमअवलोकनछोडिकै, गयेजलाशयतीर ॥ ३२ ॥ चौपाई ॥ आईकमलनाहसुखदेन । सुखवासनआगेह्वैलेन ॥ देख्योजाइजलाशयभाउ । शीतलसुखदसुगन्धअपारु ॥ ३३ ॥ मत्तहंसाछन्द ॥ मनश्रीकोदर्पणचन्द्रातपजनुकिधौंशारदअभिराम । मुनिजनगभमनमनोंनिर्दोषनिर्मलविमलनिविकाम ॥ प्रतिबिम्बित-

थिरचरजीवमनोहरमनुहरिउदरअनन्त । बन्धुनयुतसोहैंत्रिभुवन मोहैंमानोंबलियशवन्त ॥ ३४ ॥

टी०-नदिनमें सेवटि परि जाति है कहूं सेवटा करि प्रसिद्धहै एला (इलायची) केरि कहे केराके फूलके जे दल (पत्र) हैं तेई नाव हैं तिनमें सुगंध जो है सोई श्री कहे वाणिज्य द्रव्य है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ जलाशय (तडाग) ॥ ॥ ३२ ॥ जब कोऊ बडो आपने इहां आवत है ताको आगे चलिके लेवो उचितहै ॥ ३३ ॥ वनकी जो श्री (लक्ष्मी) है ताको दर्पण है कि चन्द्रातप कहे चाँदनीहै कि शरद ऋतुको आवास घरहै मुनिजनके मनसम विमलहै इत्यर्थः ॥ तडाग विश जो कमलकी जरहै ताके वलय समूह युक्तहै औ विरही शीतलताके लिये अनेक कमल जर धारण करेहैं हरिके उदरहूमें चौदहों लोक बसतहैं तडाग पाषणादिसों बाँध्योहै बलिको वामन बाँध्योहै ॥ ३४ ॥

मू०-चौपाई ॥ विषमैयहसबसुखकोधाम । शम्बररूपबढ़ावैकाम ॥ कमलनमध्यभ्रमरसुखदेत । सन्तहृदयजनुहरिहिसमेत ॥ ३५ ॥ बीचबीचसोहैंजलजात । तिनतेअलिकुलउड़िउड़िजात ॥ सन्तहियनसोंमानहुँभाजि । चञ्चलचलीअशुभकीराजि ॥ ३६ ॥ दण्डक ॥ एकदमयन्तीऐसीहरैहँसिहंसवंशएकहंसिनीसीबिशहारहियेरोहिये । भूषणागिरतएकैलेतींबूडिबूड़िबीचमीनगतिलीनहीनउपमानटोहिये ॥एकपतिकण्ठलागिलागिबूड़िबूड़िजातिजलदेवतासीदृगदेवताविमोहिये । केशोदासआसपासभँवरभँवतजलकेलिमेंजलजमुखीजलजसीसोहिये ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ क्रीडासरवरमेंनृपति, कीनीबहुविधिकेलि ॥ निकसेतरुणिसमेतजनु, सूरजकिरणिसकेलि ॥ ॥ ३८ ॥ हाकलिकाछन्द ॥ नीरनितेनिकसींतियसबै । सोहतिहैंविनभूषणतबै ॥चन्दनचित्रकपोलननहीं । पंकजकेशरशोभततहीं ॥ ३९ ॥

टी०-द्वै चरणमें विरोधाभासहै विषजल शंबररूप कहे शंबर जो मत्स्यभेद है तनमयहै अर्थ अति शंबर मत्स्य युक्तहै । " शंबरो दैत्यहरिणमत्स्यशैलजिनां-

तरे । इतिमेदिनी" ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ हरैं कहे गहि लेतीहैं दमयंतीहू राजा नलको पठायो जो हंसहै ताको गहि लियो है हंसहू पौनारीको काढि गरेमें डारि लेतहै॥ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ तहीं अर्थ कपोलनमें लगे कमलनके केशर (किंजल्क) सोहतहैं ॥ ३९ ॥

मू०—मोतिनकीविथुरीशुभछटैं । हैंउरझीउरजातनलटैं ॥ हासश्रृँगारलतामनुबनी । भेंटतिकल्पलताहितघनी ॥ ४० ॥ केशनिओरनिसीकररमैं । ऋक्षनकोतमयीजनुबमैं ॥ सज्जल अम्बरछोड़तबने । छूटतहैजलकेकणघने ॥ भोगभलेतिनसों मिलिकरे । बिछुरतजानितेरोवतखरे ॥ ४१ ॥ भूषणजेजलमध्यहिरहे । तेवनपालवधूटिनलहे ॥ भूषणवस्त्रजबैसजिलये । चारिहुद्वारनदुन्दुभिभये ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ गूंगेकुब्जेबावरे, बहिरेबामनवृद्ध ॥ यानलयेजनआइगें, खोरेखंजप्रसिद्ध ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ सुखदसुखासनबहुपालकी । फीरकवाहिनिसुखचालकी ॥ एकनजोंतेहयसोहिये । वृषभकुरङ्गअङ्गमोहिये ॥ तिनचढिराजलोकसवचल्यो । नगरनिकटशोभाफलफल्यो ॥४४॥

टी०—हासरस लता सम मोतिनकी लरैं हैं शृंगार रस लता सम लटैं हैं कल्प लता सम स्त्री हैं ॥ ४० ॥ केशनके ओरन कहे अंतमें सीकर जे अंबुकण हैं ते रमे कहे शोभित हैं ऋक्ष (नक्षत्र) ॥ ४१ ॥ वाटिकाके चारिहू द्वारनमें कूचके नगारे भये इत्यर्थः ॥ ४२ ॥ स्त्रीजनके निकट ऐसेही जन चाहिये जिनपै स्त्री जन प्रीति न करैं ॥ ४३ ॥ सुखासन कहे कोमल बिछावने युक्त फिरक वाहिनी (सेजगाडी) एकन फिरक वाहिनीनमें जोते हय शोभितहैं एकनमें वृषभ शोभितहैं ते आपने अंगन करि कुरंग अंगनको मोहतहैं अर्थ अति चंचलहैं ॥ ४४ ॥

मू०—मणिमयकनकजालिकावनी । मोतिनकीझालरिअति घनी ॥ घण्टाबाजतचहुँदिशिभले । रामचन्द्रत्यहिगजचढ़ि चले ॥ चपलाचमकतचारुअगूढ़ । मनहुँमेघमघवाआरूढ़ ॥ ॥ ४५ ॥ आसपासनरदेवअपार । पाँइँपियादेराजकुमार ॥

बन्दीजनयशपढ़तअपार । यहिविधिगयेराजदरबार ॥ ४६ ॥
विजयाछन्द ॥ भूपितदेहविभूतिदिगम्बरनाहिंनअम्बरअंगनवीने । दूरिकैसुन्दरसुन्दरिकेशवदौरीदरीनमैंआसनकीने ॥
देखियेमण्डितदण्डनसोंभुजदण्डदुवौअसिदण्डविहीने । राजनश्रीरघुनाथकेवैरकुमण्डलछोंड़िकमण्डललीने ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कमलकुलनमैंजातज्यों, भँवरभयोरसचित्र ॥ राजलोकमैंत्योंगये, रामचन्द्रजगमित्र ॥ ४८ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायां इंद्रजिद्विरचितायां वनविहारवर्णनं नामद्वात्रिंशः प्रकाशः ॥ ३२ ॥

टी०–हौदामें मणिमयी कनकजालिका (झांझरी) वनी हैं इत्यर्थः ॥ अथवा झालरिकी जारी मणिमयी कनककी वनी वनी हैं अगूढ (प्रसिद्ध) ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ असिदंड (तरवारि) कुमंडल (पृथ्वीमंडल) ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां द्वात्रिंशः प्रकाशः ॥ ३२ ॥

मू०–दोहा ॥ त्रयतीसयेंप्रकाशमें, ब्रह्माविनयबखानि ॥
शम्बुकवधसियत्यागअरु, कुशलवजन्मसोजानि ॥ १ ॥

टी०–शंबुक नामा (शूद्र) ॥ १ ॥

मू०–त्रिभंगीछंद ॥ दुर्जनदलघायकश्रीरघुनायकसुखदायकत्रिभुवनशासन । सोहैंसिंहासनप्रभाप्रकाशनकर्मविनाशनदुखनाशन ॥ सुग्रीवबिभीषनसुजनबंधुजनसहिततपोधनभूपतिगन । आयेसँगमुनिजनसकलदेवगनमृगतपकाननचतुरानन ॥ २ ॥ तोटकछंद ॥ उठिआरदसोंअकुलाइतयो । अतिपूजनकैबहुधाविनयो ॥ सुखदायकआसनशोभरये । सब-

कोसोयथाविधिआनिदये ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सबनपरस्परबू-झियो, कुशलप्रश्नसुखपाइ ॥ चतुराननबोलेवचन, श्लाघा विनयबनाय ॥ ४ ॥ ब्रह्मा—मनोरमाछन्द ॥ सुनियेचितदैज-गकेप्रतिपालक ॥ सबकेगुरुहौहरियद्यपिबालक ॥ सबकोस-बभाइसदासुखदायक । गुणगावतवेदमनोवचकायक ॥ ५ ॥

टी०—त्रिभुवनके शासन कहे शिक्षक पाप पुण्य कर्मको नाश कै आपने धाम पठावत हैं इत्यर्थः ॥ तपरूपी जो कानन वन है ताके मृग कहे अरण्य पशु जैसे अरण्यको मृग अवगाहन करत हैं तैसे अनेक तपस्याके अवगाहन कर्त्ता इत्यर्थः ॥ १ ॥ २ ॥ आनि कहे मँगाइकै ॥ ३ ॥ श्लाघा (स्तुति) ॥ ४ ॥ ५ ॥

मू०—तुमलोकरचेबहुधारुचिकैतब ॥ सुनियेप्रभुऊजरहैंसि-गरेअब ॥ जगकोउनभूलिहुजाइनिरयमग। मिटिगेसबपापनपु-ण्यनकेनग ॥ ६ ॥ दोहा॥बरुणपुरीधनपतिपुरी, सुरपतिपुरसु-खदानि ॥ सत्तलोकवैकुंठसब, वस्यौअवधमेंआनि ॥७॥ तोम-रछन्द ॥ हँसियोंकह्योरघुनाथ । समुझिसबविधिगाथ ॥ ममइ-च्छएकसुजानि।कबहूंनहोइसुआनि ॥८॥ तवपुत्रजेसनकादि । ममभक्तजानहुआदि ॥ सुतमानसिकातिनकेति । भुवदेवभुव प्रगटेति ॥९॥ हमदियोतिनशुभठाँउँ । कछु और दीबिगाँउँ ॥ अबदेहिहमकेहिठौर । तुमकहौसुरशिरमौर॥१०॥ब्रह्मासरहट्टा छंद ॥ सबवैमुनिरूरेतपबलपूरेविदितसनाढ्यसुजाति । बहुधा-बहुवारनिप्रतिअवतारनिदैआयेबहुभाँति ॥ सुनिप्रभुआखंडल-मथुरामंडलमैंदीजैशुभग्राम ।बाढ़ैबहुकीरतिलवणासुरहतिअति अजेयसंग्राम ॥ ११ ॥ दोहा ॥ जिनकेपूजेतुमभये, अन्तर्यामी श्रीप ॥ तिनकीबातहमैंकहा,पूछततृिभुवनदीप॥१२॥द्विजआ-योताहीसमै, मृतकपुत्रकेसाथ ॥ करतविलापकलापहा, राम-चंद्ररघुनाथ॥ १३ ॥ मल्लिकाछन्द ॥बालकैमृतैसोदेखि । धर्म-

राजसोंविशेखि ॥ बातयोंकहीनिहारि । कर्मकौनकोविचार ॥ ॥१४॥धर्मराज-मनोरमाछंद ॥ निजसूदनकीतपसाशिशुघालक। बहुधाभुवदेवनकेसबबालक। करिबेगिबिदासिगरेसुरनायक । चढ़िपुष्पकआशुचलेरघुनायक ॥ १५ ॥

टी०-नग (पर्वत) ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ आखंडल (इन्द्र) ॥ ११ ॥ श्रीपति कहे लक्ष्मीपति ॥ १२ ॥ कलापकहे समूह ॥ १३ ॥ धर्मराज (न्यायदर्शी) अथवा यमराज ॥ १४ ॥ १५ ॥

मू०-दोधकछन्द ॥ रामचलेसुनिशूद्रकीगीता । पंकजयोनिगयेजहँसीता ॥ देखिलगीपगरामकीरानी। पूजिकैबूझतिकोमलबानी ॥ १६॥ सीता ॥ कौनहूंपुरवपुण्यहमारे । आजुफलेजोइहाँपगुधारे ॥ ब्रह्मा ॥ देवनकोसबकारजकीन्हों । रावणमारिबडोयशलीन्हों ॥ १७॥ मैंविनतीबहुभाँतिनकीनी । लोकनकीकरुणारसभीनी॥ उत्तरुमोहिंदियोसुनिसीता। जाकिनजानिपरैजियगीता ॥ १८॥ माँगतहौंबरमोकहँदीजै। चित्तमेंऔरविचारनकीजै॥ आजुतेचालचलौतुमऐसे । रामचलैंवैकुंठहि जैसे ॥१९॥सीयजहींकछुनैननवाये।ब्रह्मतहींनिजलोकसिधाये॥ रामतहींशिरशूद्रकोखंड्यो । ब्राह्मणकोसुतजीवनमंड्यो ॥ ॥ २० ॥ सुन्दरीछंद ॥ एकसमयरघुनाथमहामति । सीतहिं देखिसगर्भबढीरति ॥ सुन्दरिमाँगुजोजीमहँभावत । मोमनतो निरखेसुखपावत ॥२१॥ सीता ॥ जोतुमहोतप्रसन्नमहामति । ऐसेबढैतुमहींसोंसदारति ॥ अंतरकीसबबातनिरंतर। जानतहौ सबकीसबतेपर ॥ २२ ॥ राम-दोहा ॥ निर्गुणतेमैंसगुणभो, सुनुसुंदरितवहेत॥औरकछूमांगैासुमुखि,रुचैजोतुम्हरेचेत २३॥

टी०-॥ १६ ॥ द्वै छन्दको अन्वय एकहै उत्तरु कहे जवाब दियो अर्थ वैकुंठ चलिबेको न कह्यो ॥ १७॥ १८॥ १९ ॥ नयन नवायेते ब्रह्माको कह्यो अंगी-

कार करचो जानो ॥ २० ॥ यह कह्यो इतिशेषः ॥ २१ ॥ हमारे तुमहींसों सदा रति (प्रीति) बढे यह वर हमको दीजै इत्यर्थः ॥ २२ ॥ २३ ॥

मू०—सीताजू—सुन्दरीछंद ॥ जोसबतेहितमोकहँकीजत । ईशदयाकरिकैबरुदीजत ॥ हैंजितनेऋषिदेवनदीतट । हौंतिनकोपहिरायफिरौंपट ॥२४ ॥ राम—दोहा ॥ प्रथमदोहदैक्यों करौं, निष्फलसुनियहबात ॥ पटपहिरावनऋषिनको, जैयो सुन्दरिप्रात ॥ २५ ॥ सुन्दरीछंद ॥ भोजनकैतबश्रीरघुनंदन । पौढ़िरहेबहुदुष्टनिकंदन ॥ बाजेबजेअधरातभईजब । दूतनआइप्रणामकरीतब ॥२६॥ चंचलाछंद ॥ दूतभूतभावनाकहीकहीनजायबैन । कोटिधाविचारियोपरैकछूविचारमैन॥ सूरकेउदोतहोतबंधुआइयोसुजान । रामचंद्रदेखियोप्रभातचंद्रकेसमान॥२७॥संयुताछंद ॥ बहुभाँतिवंदनताकरी । हसि बोलियोनदयाधरी॥हमतेकछूद्विजदोषहै। जेहितेकियोप्रभुरोषहै॥ २८ ॥ दोहा ॥ मनसावाचाकर्मणा, हमसेवकसुनुतात। कौनदोषनहिंबोलियतु, ज्योंकहिआयेबात ॥ २९ ॥

टी०—देवनदी (गंगा) ॥ २४ ॥ दोहद कहे गर्भ ॥ २५ ॥ २६ ॥ यामें केशव कहत है कि दूतकी कही जो भूत कहे व्यतीत भावना कहे क्रिया है रजक वचनादि कथा सो कहिबेको हम कोटि प्रकारसों विचारचो कछू विचारमें नहीं परत तासों वैनसों हमसों नहीं कही जाति इत्यर्थः ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥

मू०—राम—संयुताछंद ॥ कहियेकहानकहीपरै । कहिये तौज्योंबहुतैडरै ॥ तबदूतबातसबैकही । बहुभाँतिदेहदशादही ॥ ३० ॥ भरत—दोहा ॥ सदाशुद्धअतिजानकी, निन्दत त्योंखलजाल ॥ जैसेश्रुतिहिसुभावही, पाखण्डीसबकाल ॥ ॥३१॥ भवअपवादनितेतज्यो, ज्योंचाहतसीताहि ॥ ज्योंजगकेसंयोगते, योगीजनसमताहि ॥३२॥ झूलनाछंद ॥ मनमा-

निकैअतिशुद्धसीतहिंआनियोनिजधाम।अवलोकिपावकअंक ज्योंरविअंकपंकजदाम ॥ कयहिंभाँतिताहिनिकारिहौअपवाद वादिबखानि । शिवब्रह्मधर्मसमेतश्रीपितुसाखिबोल्यहुआनि॥ ॥ ३३ ॥ यमनादिकेअपवादक्योंद्विजछोडिहैकपिलाहि । बिरहीनकोदुखदेतक्योंहरडारिचन्द्रकलाहि ॥यहहैअसत्यजोहोइगोअपवादसत्यसुनाथ। प्रभुछोंडिशुद्धसुधानपीवहुआपनेविषहाथ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ प्रियपावनिप्रियवादिनी, पतिव्रता अतिशुद्ध ॥जगकोगुरुअरुगुर्बिणी, छाँडतवेदविरुद्ध ॥३५॥ वेमातावैसेपिता, तुमसोंमैयापाइ ॥ भरतभयेअपवादको, भाजनभूतलआइ ॥ ३६ ॥

टी०-॥ ३० ॥ पाखंडी (नास्तिक)॥ ३१ ॥ अपवाद (निंदासमताको) लक्षण पचीसवें प्रकाशमें कह्यो है ॥ ३२ ॥ दाम (जेवरी) वादि (वृथा) ॥ ३३ ॥ यह जो ब्रह्मादिकनकी साक्षी है सोई जो असत्यहै तो हे नाथ ! रजककृत यह अपवाद कैसे सत्य ह्वै है इत्यर्थः ॥ सुधा सम ब्रह्मादिकनकी साक्षीहै विषसम रजकको अपवादहै ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मू०-राम-हरिलीलाछन्द ॥ साचीकहीभरतबातसबसुजान । सीतासदापरमशुद्धकृपानिधान ॥ मेरीकछूअबहिंइच्छयहैसोहेरि । मोकोंहतौबहुरिबातकहौजोफेरि ॥३७॥ लक्ष्मण-दोधकछन्द ॥ दूषतजैनसदाशुभगंगा । छोडहुगेबहुतुंग तरंगा ॥ मायहिनिन्दतहैसबयोगी । क्योंतजिहैंभवभूपतिभोगी ॥ ३८ ॥ ग्यारसिनिन्दतहैमठधारी ॥ भावतिहैहरिभक्तनि भारी ॥ निन्दतहैतवनामनिबामी । काकहियेतुमअन्तर्यामी ॥३९॥ दोहा ॥ तुलसीकोमानतप्रिया, गौतमतियअतिअज्ञ । सीताकोछोडनकहौ, कैसेकैसर्वज्ञ ॥ ४० ॥ शत्रुघ्न-रूपमाला छन्द ॥ स्वमहूनहिंछोडियेतियगुर्विणीपलदोइ । छोडियोत

बशुद्धसीताहिंगर्भसोचनहोइ ॥ पुत्रहोइकिपुत्रिकायहबातजा-
निनजाइ । लोकलोकनमेंअलोकनलीजियेरघुराइ ॥ ४१ ॥
दोहा ॥ रामचन्द्रजगचन्द्रतुम, फलदलफूलसमेत ॥ सी-
तायाबनपद्मिनी, न्यायनहींदुखदेत ॥ ४२ ॥

टी०-फेरि कहे पलटिकै ॥ ३७ ॥ जैन (नास्तिक) ॥ ३८ ॥ ग्यारसि
(एकादशी) वामी (वाममार्गी) ॥ ३९ ॥ ४० ॥ अलोक (निंदा) ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

मू०-घरघरप्रतिसबजगसुखीरामतुम्हारेराज ॥ अपनेहिघर
करतकतहोशोकअशोकसमाज ॥ ४३ ॥ राम-तोटकछन्द ॥
तुम बालकहौबहुधासबमैं । प्रतिउत्तरदेहुनफेरिहमैं ॥ जोक-
हैंहमबात सोजाइकरौ । मनमध्यनऔरविचारधरौ ॥ ४४ ॥
दोहा-और होइतौजानिजै, प्रभुसोंकहाबसाइ ॥ यहविचारि-
कैशत्रुहा, भरत उठेअकुलाइ ॥ ४५ ॥ राम-दोधकछन्द ॥
सीतहिलैअबसत्वरजैये । राखिमहाबनमेंपुनिऐये ॥ लक्ष्मण-
जोफिरिउत्तरदैहौ ॥ शासनभंगकोपातकपैहौ ॥४६॥ लक्ष्म-
णलैवनसीताहिंधाये । स्थावरजंगमहूदुखपाये ॥ गंगहिंदेखि-
कह्योयहसीता । श्रीरघुनायककीजनगीता ॥ ४७ ॥

टी०-अशोक जो आनंदहै ताके समाज कहे समूहमें ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ जानिजै
अर्थ दोष अदोषको निर्णय समुझिये ॥ ४५ ॥ शासन (आज्ञा) राजाको
आज्ञाभंग वधके सम होतहै यथा । माधवानल नाटके ॥ "आज्ञाभंगोनरेंद्राणां
विप्राणांमानखंडनम् । पृथक्शय्यावरस्त्रीणामशस्त्रवधउच्यते" ॥ ४६ ॥ सीताको
लैकै लक्ष्मण वनहूंको गये तहांपर्यंत कहूं कौशल्या वशिष्ठादिके वचन नहीं हैं
सो ऋष्यशृंग ऋषिके यज्ञ रह्यो तहाँ कौशल्यादि माता औ अरुंधती सहित
वशिष्ठ सब निमंत्रणमें गये रहैं यह कथा उत्तर रामचरित्र नाटकमें लिख्योहै सो
जानो ॥ ४७ ॥

मू०—पारभयेजबहींजनदोऊ। भीमबनीजनजन्तुनकोऊ॥ निर्ज्जलनिर्ज्जनकाननदेख्यो। भूतपिशाचनकोवरलेख्यो॥ ॥ ४८ ॥ सीताजू-नगस्वरूपिणीछंद॥ सुनोंनज्ञानकारिका॥ शुकीपढ़ैंनसारिका॥ नहोमधूमदेखिये। सुगन्धबन्धुलेखिये ॥ ४९ ॥ सुनोंनवेदकीगिरा। नबुद्धिहोतिहैथिरा॥ ऋपीन कीकुटीकहाँ। पतिव्रताबसैंजहाँ॥ ५० ॥ मिलैनकोउएककहूं। नआवतेनजातहूं॥ चलेहमैंकहाँलिये। ड्यरातिहैमहाहिये॥ ॥ ५१ ॥ दोहा॥ सुनिसुनिलक्ष्मणभीतअति, सीताजूकेबैन॥ उत्तरमुखआयेनहीं, जलभरिआयेनैन॥ ५२ ॥ नाराच-छन्द॥ विलोकिलक्ष्मणैभई विदेहजाविदेहसी। गिरीअचेत-ह्वैमनोघनैबनैतडीतसी॥करीजोछाँहएकहातएकबातवाससों। सिंच्योशरीरबीरनैननीरहींप्रकाशसों॥ ५३ ॥

टी०—जन कहे मनुष्य जंतु कहे जीव अर्थ मनुष्य जीव केवल वनजीवही देखि परतहैं इतिभावार्थः॥ ४८ ॥ सुगन्धको बंधु कहे हित अर्थ सुगन्धयुक्त होम धूम नहीं देखियत अथवा सुगन्ध बंधु कहे दुर्गंध कहूं सुगंधबंध पाठहै तहां अर्थ सुगन्धकी बंध कहे बन्धनहै यामें ऐसो होमधुम नहीं देखियत ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ मानों घनैवनै, कहे घन वनको देखि तडित जो बिजुरीहै सोई बसी कहे डरीहै सो डरिकै अचेत ह्वै गिरिपरी है इत्यर्थः॥ कहूं घने घने तडी त्रसी पाठहै अर्थ मानों घने जे घन मेघ हैं॥ ५३ ॥

मू०—रूपमालाछंद॥ रामकीजपसिद्धिसीसियकोचलेवन छांडि। छांहएकफनीकरीफनदीहमालनिमांडि॥ वालमीकि विलोकियोवनदेवताजनुजानि। कल्पवृक्षलताकिधौंदिविते गिरीभुवआनि॥ ५४ ॥ सींचिमंत्रसजीवजीवनजीउठीतेहि काल। पूंछियोमुनिकौनकीदुहिताबहूअरुबाल॥ सीताजू॥ हौंसुतामिथिलेशकीदशरत्थपुत्रकलत्र। कौनदोपतजीनजान

तिकौनआपुनअत्र॥५५॥ मुनि ॥ पुत्रिकेसुनि मोहिंजानहिवा-लमीकिद्विजाति । सर्वथामिथिलेशकोगुरुसर्वदाशुभभाँति ॥ होहिंगेसुतद्वैसुधीपगुधारियेममओक । रामचन्द्रक्षितीशकेसुत जानिहैतिहुँलोक ॥ ५६ ॥ सर्वथागुणिशुद्धसीतहिलैगयेमुनि राइ । आपनीतपसानकीशुभसिद्धिसीसुखपाइ ॥ पुत्रद्वैभयेए-कश्रीकुशदूसरोलवजानि । जातकर्महिआदिदैकियवेदभेदब-खानि ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ वेदपढ़ायोप्रथमही, धनुर्वेदसविशेष । अस्त्रशस्त्रदीन्हेघने, दीन्हेमंत्रअशेष ॥ ५८ ॥

इतिश्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्र-चंद्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांजानकीत्यागव-र्णनंनामत्रयस्त्रिंशःप्रकाशः ॥ ३३ ॥

टी०—तिनमें त्रसी कहे डेरानी तडी अचेत है्व गिरी है मेघ सम वन हैं विजुरी सम सीता है ॥ ५४ ॥ सजीवमंत्रसों जीवन जल सींच्यो तब सीताजी उठीं अत्र कहे या स्थानमें आपनो कौन दोष है जासों मोको तजी यह हौं नहीं जानति इत्यर्थः ॥ ५५ ॥ ओक कहे घर ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद-निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां त्रयस्त्रिंशः प्रकाशः ॥ ३३ ॥

मू०—दोहा ॥ आयोश्वानफिरचादिको, चौंतीसयेंप्रकाश ॥ अरुसनाढ्यद्विजआगमन, लवणासुरकोनाश॥ १ ॥दोधकछंद॥ एकसमयहरिधर्मसभामें । बैठेहुतेनरदेवप्रभामें ॥ संगसबैनृपि राजविराजैं ॥ सोदरमंत्रिनमित्रनसाजैं ॥ २ ॥ कूकरएकफिरा-दिहिआयो । दुंदुभिधर्मदुवारबजायो ॥ बाजतहीउठिलक्ष्मण-धाये । श्वानहिंकारणबूझनआये॥ ३ ॥ कूकुरु ॥ काहुकेक्रोध विरोधनदेख्यो । रामकोराजतपोमयलेख्यो॥ तामहँमैंदुखदीख

पायो । रामहिंहौंसोनिवेदनआयो ॥४॥ लक्ष्मण ॥ धर्मसभा महँरामहिंजानो ॥ श्वानचलोनिजपीरबखानो ॥ श्वान ॥ हौं अबराजसभानहिंआऊं । आऊंतोकेशवशोभनपाऊं ॥ ५ ॥ दोहा ॥ देवअदेवनृदेवघर, पावनथलसुखदाइ । विनबोलेआनंदमति, कुत्सितजीवनजाइ ॥ ६ ॥

टी०–धर्मसभा (न्यायसभा) ॥ १ ॥ २ ॥३॥ निवेदन (कहन)॥४॥५॥६॥

मू०–दोधकछंद ॥ राजसभामहँश्वानबोलायो । रामहिंदेखत हीशिरनायो ॥ रामकह्योजोकछुदुखतेरे । श्वाननिशंककहो पुरमेरे ॥ ७ ॥ श्वान–तारकछंद ॥ तुमहौसर्वज्ञसदासुखदाई । अरुहौसबकोसमरूपसदाई ॥ जगसोवतहैजगतीपतिजागे । अपनेअपनेसबमारगलागे ॥ ८ ॥ नरदेवनपायँपरैपरजाको । निशिवासरहोइनरक्षकताको ॥ गुणदोषनकोजबहोइनदर्शी । तबहींनृपहोइनिरयपदपर्शी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ निजस्वारथही सिद्धिद्विज, मोकोंकरयोप्रहार ॥ बिनअपराधअगाधमति, ताकोकहाविचार ॥ १० ॥ तारकछंद ॥ तबताकहँलेनतहीजनधाये । तबहींनगरीमहँतेगहिल्याये ॥ राम ॥ यहकूकरक्यों बिनदोषहिमारयो । अपनेजियत्रासकछूनविचारयो ॥ ११ ॥ ब्राह्मण–दोहा॥यहसोवतहोपंथमें,हौंभोजनकोजात ॥ मैंअकुलाइअगाधमति, याकोकीन्होंघात ॥१२॥राम–स्वागताछंद ॥ ब्रह्मब्रह्मऋषिराजबखानो । धर्मकर्मबहुधातुमजानो ॥ कौनदंडद्विजकोद्विजदीजै ॥ चित्तचेतिकहियेसोइकीजै ॥ १३ ॥

टी०–पुर कहे (अयोध्या) ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ हे ब्रह्म ! ऋषिराज ! जो वेद वदैहै ताको मन हमसों बखानौ (कहौ) ॥ १३ ॥

मू०—कश्यप ॥ हैअदण्डचप्रभुवेदवसदाई । यन्तमुनियेर-घुराई ॥ ईशशीलअवयाकहँदीजै । चूकहीनअरिकोउनकीजै॥ ॥ १४ ॥ राम—तोमरछंद॥सुनिश्वानकहितूदंड । हमदेहिंयाहि अखंड ॥ कहिबाततूडरडारि॥जियमध्यआपुविचारि ॥१५॥ श्वान-दोहा ॥ मेरेभायोकरहुजो, रामचन्द्रहितमंडि । कीजै द्विजयहिमठपती, औरदंडसबछंडि ॥ १६ ॥ निशिपालिका छंद । पीतपहिराइपटबाँधिशिरसोंपटी । बोरिअनुरागअरुजो-रिबहुधा गटी ॥ पूजिपरिपायँमदुताहितबहींदयौ । मत्तगज-राजचढिविप्रमठकोगयो ॥१७॥ दोहा ॥ भयेरंकतेराजाद्विज, श्वानकीन करतार । भोगनलाग्यैभोगवै, दुंदुभिबाजतद्वार ॥ १८ ॥ सुंदरीछंद ॥ बृक्षतलेगसभामहँश्वानाहिं । जानत-नाहिंनयापरिमानहिं ॥ विप्रहितैंजोदईपदवीवह । हैयहनिग्रह कैधौंअनुग्रह ॥ १९ ॥ श्वान-दोधकछंद ॥ एककनोजहुतो-मठधारी।देवचतुर्भुजको अधिकारी॥मन्दिरकोउबडोजबआवै। अंगभलीरचनानिबनावै ॥ २० ॥ जादिनकेशवकोउनआवै। तादिनपालिकतेनउठावै ॥ भेटनिलैबहुधाधनकीनो । नित्य करैबहुभोगनवीनो ॥२१ ॥ एक दिनायकपाहुनआयो । भोजनतौबहुभांतिबनायो ॥ ताहिपरोसनकोपितुमेरो । बोलि लियेहितहौंसबकेरो ॥ २२ ॥ ताहितहांबहुभांतिपरोस्यो । केहूंकहूंनखमाहँरह्योस्यो ॥ ताहिपरोसिजहींवरआयो । रोव-तहौंहँसिकण्ठलगायो ॥ २३ ॥ चामरछन्द ॥ मोहिंमातुत-तदूधभातभोजकोदियो । बातसोंसिराइताततछीरअंगुलीछियो॥ ध्योद्रयोभष्योगयोअनेकनर्कवासभो । हौंभ्रम्योंअनेकयोनि-अवधआनिश्वानभो ॥ २४ ॥ दोहा ॥ ताकोथोरोदोषमैं,

दीन्हौंदण्डअगाध॥रामचराचरईशतुम, क्षमियोयहअपराध ॥
॥ २५ ॥ लोककरेउअपवित्रवहि, लोकनरककोवास ॥ छुवै
जोकोऊमठपतिहि, ताकोपुण्यविनाश॥ २६ ॥

टी०-बिनदोष काहूको घात न करै ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ गजरथअश्वादि की गढी कहे समूह जोरि यत्नकरिकै दियो औ मठ दियो कृपा दुहूं ओर लगति है अथवा मठधारिनकी गढीमें जोरि कहे मिलाइकै कालंजर दुर्ग जो प्रसिद्ध है ताको मठपति कियो यह वाल्मीकीयरामायणमें लिख्योहै यथा ॥ "कालंजरे महाराज कौलपत्यंप्रदीयताम्। एतच्छ्रुत्वा तु रामेण कौलपत्येऽभिषेचितः ॥१७॥ ॥ १८ ॥ या जो मठपतिहै ताके प्रमाणको नहीं जानत ॥ १९ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

मू०-रामायणे-यथा ॥ ब्रह्मस्वं देवद्रव्यञ्च स्त्रीणां बालधनं च यत् ॥ दत्तं हरति यो मोहात्सपचेन्नरके ध्रुवम् ॥ २७ ॥ स्कन्दपुराणे-यथा ॥ हरस्य चान्यदेवस्य केशवस्य विशेषतः ॥ मठपत्यञ्च यः कुर्य्यात्सर्वधर्म्मबहिष्कृतः ॥ २८ ॥ पद्मपुराणे-यथा ॥ पत्रं पुष्पं फलंतोयं द्रव्यमन्नं मठस्य च ॥ यो श्नाति स पचेद्धोरान्नरकानेकविंशतिः ॥ २९॥ देवीपुराणे-यथा॥अभोज्यं मठिनामन्नं भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥ स्पृष्ट्वा मठपतिं विप्रं सवासा जलमाविशेत्॥ ३० ॥ दोहा ॥ औरौ एक कथा कहौं, विकलभूपकी राम ॥ वहौअयोध्यावसतहै, वंशकारकेधाम ॥ ३१ ॥ वसन्ततिलकाछंद ॥ राजाहुतोप्रबलदुष्टअनेकहारी। वाराणसीविमलक्षेत्रनिवासकारी ॥ सोसत्यकेतुयहनामप्रसिद्धशूरो।विद्याविनोदरतधर्म्मविधानपूरो ३२॥

टी०-ब्रह्मस्व (ब्राह्मणको द्रव्य) औ देवताको द्रव्य और स्त्रीको द्रव्य और बालकको द्रव्य और आपनी दीन्ही जो द्रव्य है इनको मोहवश ह्वैकै जो हरतहैं सो प्राणी ध्रुव कहे निश्चय करि नरके कहे नरकमें पचेत् कहे पाकत है अर्थ जरतहै दुःख पावतहै इति ॥ कहिवेको हेतु यह कि देव द्रव्यहारी (मठपति) है

सो नरकको प्राप्त होतहै ॥ २७ ॥ जो प्राणी काहू देवको मठपति होइ सो धर्म रहित ह्वै जातहै इत्यर्थः ॥ २८ ॥ अश्नाति कहे भोग करत है घोरभयानक जे एकविंशति नरक हैं तिनमें पाकतहै ॥ २९ ॥ मठिनको अन्न अभोज्य है खाइ- वे योग्य नहीं है जो खाइये तो चान्द्रायणव्रतको करिये औ मठपति ब्राह्मणको स्पृष्ट्वा कहे छुइकै सवासा कहे वस्त्रसहित जलं कहे जलमें आविशेत् कहे प्रवेश करिये वस्त्र सहित स्नान करिडारिये इत्यर्थः ॥ ३० ॥ जो पाछै कह्योहै कि "गुणदोषनको जब होइ न दर्शी । तब नृप होइ निरयपदपर्शी " ॥ सो बात पुष्ट करिवेके लिये सत्यकेतुकी कथा कहतहैं जो वंशकार कहे डोमके घरमें विकले कष्टयुक्त बसतहै ता भूपकी कथा कहत हौं ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

मू०-धर्माधिकारपरएकद्विजातिकीन्हों । संकल्पद्रव्यबहु- धात्यहिंचोरिलीन्हों ॥ बंदीविनोदगणिकादिविलासकर्त्ता । पा- वैदशांशद्विजदानअशेषहर्त्ता ॥ ३३ ॥ राजाविदेशबहुसाजिच- मृगयोहो । जूझेउतहाँसमरयोधनसोंभयोहो ॥ आयेकरालकिल दूतकलेशकारी । लीन्हेगयेनृपतिकोजहँदण्डधारी ॥ ३४ ॥ धर्मराज-भुजंगप्रयातछन्द ॥ कहाभोगवैगोमहाराजहूमैं । कि पापैकिपुण्यैकरेउभूरिभूमैं ॥ राजा ॥ सुनौदेवमोकोंकछूशुद्धि- नाहीं । कहौआपहीपापजोमोहिंमाहीं ॥३५॥ धर्मराज ॥ कियो तैंद्विजातीजोधर्माधिकारी । सुतोनित्यसङ्कल्पवित्तापहारी॥ द्वि- योदुष्टरण्डानिमुण्डानिलैले । महापापमाथेतिहारेसोदैदै ॥३६॥

टी०-बन्दी जननकी जो विनोद कहे स्तुतिहैं तामें औ गणिकादिकनको अनेक विलासको कर्त्ता रह्यो औ जो दान द्रव्य राजाके इहाँसों कढत रह्यो है तामें दशांश ब्राह्मण पावैं औ अशेष सम्पूर्णको हर्त्ता आप रह्यो॥ ३३॥ ३४॥ ३५ ॥ ३६ ॥

मू०-हुतोतैंसबैदेशहीकोनियन्ता । भलेकीबुरेकीकरीतैंन चिन्ता ॥ महासूक्ष्महैधर्म्मकीबातदेखो । जेतोदानदीन्होंते- तोपापलेखो ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ कालसर्प्पसेसमुझिये, सबैराजके कर्म्म ॥ ताहूतेअतिकठिनहै, नृपतिदानकेधर्म्म ॥ ३८ ॥

भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ भयोकोटिधानर्कसंपर्कताको ॥ हुतेदो-पसंसर्गके शुद्धजाको ॥ सबैपापभेक्षीणभोमुक्तलेखी । रह्योअ-वधमेंआनि ह्वैकोलबेखी ॥ ३९ ॥ तारकछन्द ॥ तवबोलिउठो दरबारविलासी ॥द्विजद्वारलसैयमुनातटवासी॥अतिआदरसोंते-सभामहँबोल्यो । बहुपूजनकैमगकोश्रमखोल्यो ॥ ४० ॥ राम-रूपमालाछन्द ॥ शुद्धदेशयेरावरेसोंभयेसवैयहिवार । ईशआगमसङ्गमादिकहीअनेकप्रकार ॥ धामपावनह्वैगयेपद-पद्मकोपयपाय । जन्मशुद्धभयेछुयेकुलदृष्टिहीमुनिराय॥४१॥

टी०-॥ ३७ ॥ ३८ ॥ जाको जा शुद्ध राजाको केवल संसर्ग हीके दोष रहे तासों नरकको संपर्क कहे संयोग भयो यासों राजाको भले बुरेकी चिन्ता करिवो उचित है इति भावार्थः। जब नरक भागसों सबै पाप क्षीण भये तब नरकते मुक्त भयो छूट्यो तब अवधमें कोल कहे चाण्डाल भेद अथवा शूकरवेषी रूपधारी रह्योहै ॥ ३९ ॥ दरबार जो बहिर्द्वारहै ताको विलासी द्वारपाल खोल्यो दूरि कर्यो ॥ ४० ॥ रामचन्द्र ब्राह्मणसों कहत हैं किं, हे ईश ! रावरे आगम आइ-वेसों औ संगम बैठिबो पौढिबो आदिसों तिन्हैं आदि जे और स्नान भोजनादि हैं तिनसों ये हमारे देश अनेक प्रकारसों शुद्ध भये औ तुम्हारे पदपद्मके छुये सों जन्म शुद्ध भये औ तुम्हारी दृष्टिसों कुल शुद्ध भयो अथवा आगमसों देश शुद्ध भये औ संगम जो स्पर्श है त्यहिं आदि दै सो जन्मादि अनेक प्रकारसों शुद्ध भये ते आगे कहतहैं ॥ ४१ ॥

मू०-पादपद्मप्रणामहीभयेशुद्धसीरसहाथ। शुद्धलोचनरूप देखतहीभयेमुनिनाथ ॥ नासिकारसनाविशुद्धभयेसुगन्धसु-नाम । कर्नकीजतशुद्धशब्दसुनाइपीयूषधाम ॥ ४२ ॥ दोध-कछन्द ॥ आयेकहाँसोंआयसुदीजै । आजुमनोरथपूरणकीजै॥ ब्राह्मण ॥ जीवतिसोंसबराज्यतिहारी । निर्भयह्वैभुवलोक-विहारी ॥ ४३ ॥ ऋषि-मरहट्टाछन्द ॥ तुमहौसबलायक-श्रीरघुनायक उपमादीजैकाहि । मुनिमानसरंताजगतानियंता-

आदिनअन्तन जाहि ॥ मारौलवणासुरजैसेमधुसुरमारेश्रीरघुनाथ ॥ जगजयरसभीनेश्रीशिवदीन्हेशूलहिलीन्हेहाथ ॥४४॥ दोहा ॥ जाके मेलतशूलयह, सुनियेत्रिभुवनराय ॥ ताहिभस्मकरिसर्वथा, वाहीकेकरजाय ॥ ४५ ॥ दोधकछन्द ॥ देवसबैरणहारिगयेजू। औरजितेनरदेवभयेजू॥ श्रीभृगुनन्दनयुद्धन माँडयो । श्रीशिवकोगनिसेवकछाँडयो ॥ ४६ ॥

टी०—॥ ४२ ॥ तुम्हरो जो सव राज्यहै अर्थ राजवासीहैं सो जीवति जीवन तों निर्भय ह्वै कै भुवलोकमें विहारो कहे विहार करतहैं । अर्थ तुम्हारे राजवासीको कहूं भय नहीं है तामें हमको जीवितकी भय प्राप्त है इति भावार्थः ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

मू०—दोहा ॥ पादारघहमकोदियो, मथुरामंडलआप ॥ वासोंवसनन्नपावहीं, बिनाबसेअतिपाप ॥ ४७ ॥ राम ॥ रक्षहिंगेशत्रुघ्नसुत, ऋषितुमकोसबकाल ॥ वासुदेवह्वैरक्षिहौं, हँसिकहदीनदयाल ॥ ४८ ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ चलोबेगिशत्रुघ्नताकोसँहारो । वहैदेशतौभावँतोहैहमारो । सदाशुद्धवृन्दावनीभूभलीहै । तहाँनित्यमेरीविहारस्थलीहै ॥ ४९ ॥ यहै जानिभूमैंद्विजन्मानदीनी । वसैयत्रवृन्दाप्रियाप्रेमभीनी ॥ सनाख्यानकीभक्तिजोजीयजागै ॥ महादेवकोशूलताकेनलागै ॥ ॥ ५० ॥ बिदाह्वैचलेरामपैशत्रुहंता । चलेसाथहाथीरथीयुद्धरंता ॥ चतुर्द्धाचमूचारिहूओरगाजैं । बजैंदुन्दुभीदीहदिग्देवलाजैं ॥५१॥ दोहा ॥ केशववासरबारहैं, रघुपतिकेशववीर । लवणासुरकेयमनिज्यों, मेलेयमुनातीर ॥ ५२ ॥ मनोरमाछंद ॥ लवणासुरआइगयोयमुनातट । अवलोकिहँस्योरघुनन्दनकेभट ॥ धनुबाणलियेनिकसेरघुनन्दनु । मदकेगजको

सुतकेहरिकोजनु ॥ ५३ ॥ लवणासुर-भुजंगप्रयातछंद ॥ सुन्यौतैंनहींजोइहाँभूलिआयो। बड़ोभागमेरोबड़ोभक्षपायो। शत्रुघ्न ॥ महाराजश्रीरामहैंक्रुद्धतोसों। तजैदेशकोकैसजौयुद्धमोसों ॥ ५४ ॥

टी०-पाप (कष्ट) अथवा पातक ॥ ४७ ॥ वासुदेव (कृष्ण) ॥ ४८ ॥ वृन्दा (तुलसी) ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ लवणासुरके यमनि कहे यमराजनके सम ॥ ५२ ॥ मदके गजको कहे मदयुक्त गजको ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

मू०-लवणासुर ॥ वहैरामराजादशत्थीवहंता। सोतोबन्धुमेरोसुरस्त्रीनरंता ॥ हतौंतोहिंवाकोकरौंचित्तभायो ॥ महादेवकीसोंबडोभक्षपायो ॥ ५५ ॥ भयेक्रुद्धदोऊदुवोयुद्धरंता। दुवोअस्त्रशस्त्रप्रयोगीनिहंता ॥ बलीविक्रमीधीरशोभाप्रकाशी। नश्योहर्षदोऊसबर्षैविनाशी ॥ ५६ ॥ शत्रुघ्न ॥ दोहा ॥ लवणासुरशिवशूलबिन, औरनलागैमोहिं। शूललियेबिनभूलिहूं, हौंनमारिहौंतोहिं ॥ ५७ ॥

टी०-रंता (भोगी) सरस्वती उक्तार्थः। सुरस्त्रीनरंता कहि या जनायो जो रावण इन्द्रहूको जीति देवांगननको लै आयो ताहूको रामचन्द्र मारयो तो अति बली हैं तिनके तुम बंधुही हौ तो कहे तौही कहे निश्चय करि हमको हतौ मारौ वाको रामचन्द्रको चित्तभायो करो महादेवकी सौंह है जो तू रामचन्द्रको बंधुही है तो बडो भक्ष्य कहे मेरे जे भक्ष या ठौरके वासीहैं तिनको पालनहार तू आयो है ॥ ५५ ॥ प्रयोगी कहे चलावनहार सवर्षै कहे वाण वर्षा सहित जे दोऊ विनाशी कहे परस्पर हंताहैं तिनको हर्ष नशि गयोहै अर्थ विकल हैं ॥५६॥५७॥

मू०-मोटनकछंद ॥ लीन्हौंलवणासुरशूलजहीं। मारेउरघुनन्दनबाणतहीं ॥ काट्योशिरशूलसमेतगयौ। शूलीकरसुःखत्रिलोकभयो ॥ ५८ ॥ बाजेदिविदुन्दुभिदीहतबै। आयेसुरइंद्रसमेतसबै ॥ देव ॥ कीन्हौंबहुविक्रमयारणमें।माँगौवरदानरुचै

मनमें॥ ५९॥ शत्रुघ्न ॥ प्रमाणिकाछंद ॥ सनाढ्यवृत्तिजोहरैस-दासमूलसोजरै । अकालमृत्युसोमरैअनेकनर्कसोंपरै ॥६०॥ सनाढ्यजातिसर्वदा । यथापुनीतनर्मदा । भजैंसजैंजेसंपदा । विरुद्धतेअसंपदा ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ मथुरामंडलमधुपुरी, केशवस्वबशवसाइ ॥ देखेतबशत्रुघ्नजू, रामचंद्रकेपाँइ ॥ ६२ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिका-यामिन्द्रजिद्विरचितायांलवणासुरवधवर्णननामचतु-स्त्रिंशःप्रकाशः ॥ ३४ ॥

टी०-॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ कहिबेको हेतु यह कि ऐसे जे सनाढ्यहैं तिनकी भक्ति हमको वर दीजै ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

इतिश्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसाद-निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां चतुस्त्रिंशः प्रकाशः ॥ ३४ ॥

मू०-दोहा ॥ पैंतीसयेंप्रकाशमें, अश्वमेधकियराम ॥ मोहनलवशत्रुघ्नको, ह्वैहैसंगरधाम ॥ १ ॥ विश्वामित्रवसिष्ठसों, एकसमयरघुनाथ॥ आरंभोकेशवकरन, अश्वमेधकीगाथ ॥२॥ ॥ राम-चामरछंद ॥ मैथिलीसमेतितौअनेकदानमैंदियो ॥ राजसूयआदिदैअनेकजज्ञमैंकियो ॥ सीयत्यागपापतेहियेसौहौमहाडरौं । औरएकअश्वमेधजानकीविनाकरौं ॥ ३ ॥

टी०-संगरधाम कहे समरभूमिमें ॥ १ ॥ २ ॥ सीताके त्याग पापके मोचनार्थ विना जानकी एक अश्वमेध करतहौं इत्यर्थः ॥ ३ ॥

मू०-कश्यप-दोहा ॥ धर्मकर्मकछुकीजई, सफलतरुणिकेसाथ ॥ ताबिनजोकछुकीजई, निष्फलसोईनाथ ॥ ४ ॥ तोटकछंद ॥ करियेयुतभूषणरूपरयी । मिथिलेशसुताइकस्वर्णमयी ॥ ऋषिराजसबैऋषिबोलिलिये । शुचिसो-

सबयज्ञविधानकिये ॥ ५ ॥ हयशालनतेहयछोरिलियो ॥ शशिवर्णसोकेशवशोभरयो ॥ श्रुति श्यामलएकविराजतुहै ॥ अलिस्योसरसीरुहलाजतुहै ॥ ६ ॥ रूपमालाछंद ॥ पूजि-रोचनस्वच्छअक्षतपट्टबांधियभाल ॥ भूपि भूपणशत्रुदूप-णछोडियोतेहिकाल ॥ संगलैचतुरंगहैनहिशत्रुहंता साथ । भाँतिभाँतिनमानदैपठयेसोश्रीरघुनाथ ॥ ७ ॥ जातहैं जित-वाजिकेशवजातहैंतितलोग । बोलिविप्रनदानदीजतयत्रतत्र-सभोग॥ बेणुबीणमृदंगबाजतदुंदुभीबहुभेव । भाँतिभाँतिनहो-तमंगलदेवसेनरदेव ॥ ८ ॥ कमलछंद ॥ राघवकीचतुरंगचमू-चयकोगनकेशवराजसमाजनि॥शूरतुरंगनकेउरझैंपगतुंगपता-कनकीपटसाजनि । टूटिपरैंतिनतेमुक्ताधरणीउपमावरणीकवि-राजनि । बिंदुकिधौंमुखफेननकेकिधौंराजश्रीश्रवैमंगललाजनि ॥ ९ ॥

टी०--शुचिसों (पवित्रता) सों ॥ ४ ॥ ५ ॥ श्वेत कमल जानो ॥ ६ ॥ शत्रु दूषण (रामचन्द्र) ॥ ७ ॥ सभोग कहे अनेक भोग्य वस्तु सहित ॥ ८ ॥समाज समूह श्रवै कहे वर्षतिहैं राजनके प्रयाणमें पुरस्त्री लाज कहे लावा मंगलार्थ वर्षति हैं यह प्रसिद्ध है ॥ ९ ॥

मू०--राघवकीचतुरंगचमूचपिधूरिउठीजलहूथलछाई । मानौ प्रतापहुताशनधूमसोकेशवदासअकाशनमाई ॥ मेटिकैपंचप्र-भूतकिधौंविधुरेणुमयीनवरीतिचलाई । दुःखनिवेदनकोभव भारकोभूमिकिधौंसुरलोकसिधाई ॥ १० ॥ दंडक ॥ नादपूरि धूरिपूरितूरिवनचूरिगिरिशोपिशोपिजलभूरिभूरिथलगाथकी । केशोदासआसपासठौरठौरराखिजनातिनकीसंपतिसबआपने-हीहाथकी ॥ उन्नतनवाइनतउन्नतबनाइभूपशत्रुनकीजीविका-

तिमित्रनकेहाथकी ॥ मुद्रितसमुद्रसातमुद्रानिजमुद्रितकैआई दिशिदिशिजीतिसेनारघुनाथकी ॥ ११ ॥

टी०—पंचप्रभूत पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश ॥ १० ॥ नाद (कोलाहल) नदी तडागादिकनकी भूरि जल शोशिकै औ भूरिजलहीकी थलमें गाथ प्रसिद्धता करचो अर्थ चमूके चरणसों चपि मेवादिकनको जल शोषि गयो औ थल दबात भये तासों पातालसों जल कढि आयो औ ठौरठौर कहे देशदेशमें जन कहे आमिल राखिकै तिन देशनकी संपति आपने हाथ कहे काबूमें कीन्हों अर्थ तिन देशनमें अमल कियो औ तिन देशनके उन्नत कहे बडे भूप रहैंन तिन्हैं नवाइ दियो जासों समय पाय विरुद्ध करिवे लायक न रहैं औ नत कहे छोटे जे भूप रहैं तिन्हैं उन्नत वनायो जासों तावेदार वने रहैं औ शत्रु राजनकी जीविका राज्य अतिमित्र राजा हैं तिन्हैं सौंपि दियो औ सातों समुद्रनसों मुद्रित (चिह्नित) जो पृथ्वीहै अर्थ सप्तसमुद्र पर्य्यंत पृथ्वीमें आपनी मुद्रा जो मोहरहै ताको मुद्रितकै कहे छापिकै अर्थ गज सिक्का चलाइकै ॥ ११ ॥

मू०—दोहा ॥ दिशिविदिशनिअवगाहिकै, सुखहीकेशवदास, वालमीकिकेआश्रमहि, गयोतुरंगप्रकाश ॥ १२ ॥ दोधकछंद ॥ दूरिहितेमुनिबालकधाये । पूजितवाजिविलोकनआये ॥ भालकोपट्टजहींलवबाँच्यो । बाँधितुरंगमजयरसराँच्यो ॥ १३ ॥ श्लोक ॥ एकवीरा च कौशल्या तस्याः पुत्रो रघूद्वहः ॥ तेन रामेण मुक्तोसौ वाजी गृह्णात्विमं बली ॥ १४ ॥ दोधकछंद ॥ वीरचमूचहुँओरतेगाजी । कौनेहिरेयहबाँधियवाजी ॥ बोलिउठेलवमैंयहबाँध्यो । योंकहिकैधनुसायकसाँध्यो ॥ मारिभगाइदियेसिगरेयों । मन्मथकेशरज्ञानघनेज्यों ॥ १५ ॥

टी०—अवगाहि (मँझाइ) कै ॥ १२ ॥ १३ ॥ "एको वीरः पतिर्यस्याः सा एकवीरा" अर्थ भूमंडलमें जेते प्रसिद्ध वीर हैं तिनके मध्यमें एकवीर मुख्यवीर अर्थ सवसों अधिकवीर है पति जाको औ फेरि कैसी हैं कौशल्या कोशलाधिपकी कन्या हैं तिनके पुत्र रघूद्वह कहे रघुवंशके राज्यादि भारके धारणकर्त्ता रामचन्द्र हैं इतिशेषः ॥ इन तीनों पदनसों एकवीरात्मजत्व सुकुलजातमज राज्याभिषिक्तत्व

जनायो तेन रामेण कहे तिनराम करिकै असौ कहे यह वाजी मुक्तः कहे छोडोगयो है जो बली होय सो इमं कहे याको गृह्णातु कहे ग्रहण करै अथवा बाँधै ॥ १४॥ १५॥

मू०-धीरछंद ॥ योधाभगेवीरशत्रुघ्नआये । कोदंडलीन्हे महारोषछाये ॥ ठाढोतहाँएकबालैविलोक्यो ॥ रोंक्योतहींजो-रनाराचमोक्यो ॥ १६ ॥ शत्रुघ्न-सुन्दरीछंद ॥ बालकछाँडि-देछाँडितुरंगम । तोसोंकहाकरौंसंगरसंगम ॥ ऊपरबीरहिये करुणारस । वीरहिविग्रहतेनकहूँयश ॥ १७ ॥ लव-तारक-छंद ॥ कछुबातबडीनकहौमुखथोरे । लवसोंनजुरौलवणासुर भोरे ॥ द्विजदोषनहींबलताकोसँहारचो ॥ मारिहीजोरहोसोक हातुममारचो ॥ १८ ॥ चामरछंद ॥ रामबन्धुबाणतीनिछो-डियोत्रिशूलसे॥ भालमेंविशालताहिलागियोतेफूलसे ॥ लव॥ घातकीनराजतातगाततैंकिपूजियो । कौनशत्रुतैंहत्यौजो नाम शत्रुहालियो ॥ १९ ॥

टी०-मोकों कहे छोडिहीसे चुके रहैं ता नाराचको रोंक्यो ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ १८॥ १९ ॥

मू०-निशिपालिकाछंद ॥ रोषकरिबाणवहुभाँतिलवछंडि-यो । एकध्वजसूतयुगतीनिरथखंडियो । शस्त्रदशरत्थसुतअ-स्त्रकरजोधरै । ताहिसियपुत्रतिलतूलसमखंडरै ॥ २०॥ तार-कछंद ॥ रिपुहाकरबाणवहैकरलीन्हो । लवणासुरकोरघुनंदन दीन्हो ॥ लवकेउरमेंउरझ्योवहपत्री । मुरझाइगिरचोधरणीम-हँक्षत्री ॥ २१ ॥ मोटनकछंद ॥ मोहेलवभूमिपरे जबहीं । जयदुंदुभिबाजिउठेतबहीं ॥ भुवतेरथऊपरआनिधरे । शत्रुघ्न सोंयोंकरुणानिभरे ॥ २२ ॥ घोडोतबहींतिनछोरिलयो । शत्रुघ्नहिंआनंदचित्तभयो । लैकेलवकोतेचलेजबहीं ॥ सीता पहँबालगयेतबहीं ॥२३॥बालक-झूलनाछंद ॥ सुनुमैथिली-

नृपएकको लवबाँधियोवरबाजि। चतुरंगसैनभगाइकैतबजीति योवहआजि।।उरलागिगोशरएककोभुवमेंगिरचो मुरझाइ।।वह बाजिलै लवलैचल्योनृपदुंदुभीनबजाइ।।२४।।दोहा ।। सीतागी तापुत्रकी,सुनिसुनिभईअचेत।। मनोंचित्रकीपुत्रिका, मन क्रम वचनसमेत ।।२५।। सीता–झूलनाछन्द।।रिपुहारिश्रीरघुनाथके सुतक्योंपरैंकरतार ।। पतिदेवतासबकालजोलवजो मिलैयहि बार । ऋषिहैंनहींकुशहैनहींलवलेइकौनछडाइ । बनमाँझटेर सुनीजहींकुशआइयोअकुलाइ ।। २६ ।।

टी०–एक वाणसों ध्वजा खंडचो औ द्वै वाणसों सूत (सारथी) खंडचो औ तीन वाणसों रथ खंडचो तिल औ तूल (रुई) समखंडरै कहे खंडनकरतहै।।२०।। पत्री (वाण) ।। २१ ।। २२ ।। २३ ।। २४ ।। २५ ।। २६ ।।

मू०–कुश–दोहा।। रिपुहिमारिसंहारिदल,यमतेलेउँछुडाई ।। लवहिमिलैहौंदेखिहौं, मातातेरेपाँइ ।। २७ ।। सवैया ।। गहि-योसिंधुसरोवरसोजेहिवालिबलीबरसोबरपेरचो। ढाहिदियेशिर रावणकेगिरिसेगुरुजातनजातनहेरचो । शूलसमूलउखारिलि-योलवणासुरपीछतेआइसोटेरचो। राघवकोदलमत्तकरीसुरअं-कुशदैकुशकैसबफेरचो ।। २८ ।। दोहा।। कुशकीटेरसुनीजहीं, फूलिफिरेशत्रुघ्न।। दीपविलोकिपतंगज्यों, यदपिभयोबहुविघ्न।। ।। २९ ।। मनोरमाछंद।। रघुनन्दनकोअवलोकतहींकुश । उर माँझहयोशरशुद्धनिरंकुश ।। तेगिरेरथऊपरलागतहींशर । गिरि ऊपरज्योंगजराजकलेवर।। ३० ।। सुंदरीछंद ।। जूझिगिरेजब-हींअरिहारन । भाजिगयेतबहींभटकेगन ।। काढ़िलियेजबहीं लवकोशर । कंठलग्योतबहींउठिसोदर ।। ३१ ।। दोहा ।।

मिलेजोकुशलवकुशलसों, वाजिबाँधितरुमूल ॥ रणमहिठाढ़े शोभिजैं, पशुपतिगणपतितूल ॥ ३२ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचंद्रिकायामिन्द्रजिद्विरचितायांशत्रुघ्नसम्मोहोनामपंचत्रिंशःप्रकाशः ॥ ३५ ॥

टी०--यमते लेउँ छुडाइ कहि या जनायो जो मरचो ह्वै है तो यमपुरते फेरि ल्याइ हौं ॥ २७ ॥ मत्त करिसम कह्यो सो मत्तकरिको कृत रावव दलमें स्थापित करतहैं गहियो (मँझाइयो) वालिवलिको जो वरवलहै ताहिवर कहे वट वृक्षसो पेरचो कहे मर्दैउ औ शूलरूपी जोमूल जर रह्यो त्यहि सहित लवणासुरको वृक्षसो इतिशेषः ॥ उखारिलीन्हों जैसे वृक्ष मूलके आधारसों सवल रहत है तैसो शूलसों लवणासुर सवल रह्यो तासों मूलसम कह्यो ॥ २८ ॥ पतंग (पांखी) ॥ २९ ॥ निरंकुश (निर्भय) कलेवर (देह) है ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मिताया रामभक्तिप्रकाशिकायां पंचत्रिंशःप्रकाशः ॥ ३५ ॥

मू०--छत्तीसयेंप्रकाशमें, लक्ष्मणमोहनजानि ॥ आयसुलहिश्रीरामको, आगमभरतबखानि ॥ १ ॥ रूपमालाछन्द ॥ यज्ञमंडलमेंहुतेरघुनाथजूतेहिकाल ॥ चर्मअंगकुरंगकोशुभस्वर्णकीसँगबाल ॥ आसपासऋषीशशोभितशूरसोदरसाथ । आइभग्गुललोगवरणैयुद्धकीसबगाथ ॥२॥ भग्गुल--स्वागताछन्द वालमीकिथलवाजिगयोजू ॥ विप्रबालकनघेरिलयोजू ॥ एक बांचिपट्टुघोटकबाँध्यो । दौरिदीहधनुसायकसाँध्यो ॥ ३ ॥ भाँतिभाँतिसबसैनसँहारचो । आपुहाथजनुईशसँवारचो ॥ अस्त्रशस्त्रतबबंधुजोधारचो । खंडखंडकरिताकहँडारचो ॥ ४ ॥ रोषवेपवहबाणलयोजू । इन्द्रजीतलगिआपुदयोजू ॥ कालरूपउरमाँहहयोजू । वीरमूर्छितबभूमिभयोजू ॥५॥ तोमरछन्द ॥ वहवीरलैअरुबाजि । जबहींचल्योदलसाजि ॥ तबऔरबालक

आनि । सगरोकियोंतजिकानि ॥६॥ तेहिमारियोतुवबंध। तब ह्वैगयोसबअंध॥वहबाजिलैअरुवीर ॥ रणमेंरह्योरुपिधीर ॥७॥

टी०-॥ १ ॥ २ ॥ घोटक (घोडो) ॥३॥४॥ पैंतीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि "रिपुहा कर वाण वहै कारि लीन्हें ॥ लवणासुरको रघुनंदन दीन्हों" । औ इहाँ कह्यो है कि "इंद्रजीतलगि आप दयोजू" तहाँ या जनायो कि वहै वाण इन्द्रजीतके मारिवेको लक्ष्मणको दियो रहै औ वहै लवणासुरके मारिवेको शत्रुघ्नहूको दियो रहै अथवा इन्द्रजीत लवणासुरहीको नाम जानो इन्द्रको वाणासुरहु जीत्यो है सो चौंतीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि॥ "देव सबै रण हारिगये जू"॥ भूमि भयो कहे भूमिमें परचो कानि (मर्यादा)॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

मू०-बुधिबलविक्रमरूपगुण, शीलतुम्हारेराम ॥ काकपक्षधरिबालद्वै, जीतेसबसंग्राम ॥ ८ ॥ राम-चतुष्पदीछंद ॥ गुणगणप्रतिपालकरिपुकुलघालकबालकतेरनरंता। दशरथनृपकोसुतमेरोसोदरलवणासुरकोहंता ॥ कोउद्वैमुनिसुतकाकपक्षयुतसुनियतहैंजिनमारे ॥ यहिजगतजालकेकरमकालकेकुटिलभयानकभारे ॥ ९ ॥

टी०-काकपक्ष (जुलुफ) ॥ ८ ॥ बालक ते बाल अवस्थाही सों रणरंता कहे रणमें रमत रह्यो है यह जो जगज्जाल कहे संसार समूह है अथवा जगत्रूपी जाल (फांस) हैं औ काल कहे समयहै तिनके जे कुटिल कहे टेढे कर्म हैं ते भारे कहे अति भयानक हैं या जगतमें समयके फेरसों ऐसी अनुचित वात ह्वै जाति है जाको देखिकै बडो भय होतहै इत्यर्थः ॥ ९ ॥

मू०-मरहट्टाछंद ॥ लक्ष्मणशुभलक्षणबुद्धिविचक्षणलेहुबाजिकोशोधु । मुनिशिशुजनिमारेहुबंधुउधारेहुक्रोधनकरेहुप्रबोधु ॥ बहुसहितदक्षिणादैप्रदक्षिणाचल्योपरमरणधीर । देख्योमुनिबालकसोदरउपज्योकरुणाअद्भुतवीर ॥ १० ॥ कुशदोधकछंद ॥ लक्ष्मणकोदलदीरघदेख्यो । कालहुतेअतिभीम-

विशेख्यो ॥ दोमैंकबैसोकहालवकीजे । आशुधलैहौकिचोट-
कदीजे ॥ ११ ॥

टी०-प्रवोध (क्षमा) मुनि वालकनको लघुवेश देखि करुणारस भयो औ सोदर शत्रुघ्नको मूर्च्छित देखि आश्चर्य भयो कि एतो वडो वीर ताको वालकन मूर्च्छित करयो है तासों इनको मारो चाहिये यासों वीररस भयो ॥ १० ॥११॥

मू०-लव॥बूझतहौतौयहैप्रभुकीजे।मोअसुदैवरुअश्वनदीजै॥
लक्ष्मणकोदलसिंधुनिहारो । ताकहँबाणअगस्त्यतिहारो ॥
॥ १२ ॥ कौनयहैघटिहैंअरिघेरे । नाहिंनहाथशरासनमेरे ॥
नेकुजहींदुचितोचितकीन्हों । शूरवडोइषुधीधनुदीन्हों॥१३॥
लैधनुबाणबलीतबधायो । पल्लवज्योंदलमारिउडायो ॥ यों-
दोउसोदरसैनसँहारैं । ज्योंवनपावकपौनविहारैं ॥ १४ ॥
भागतहैंभटयोंलवआगे । रामकेनामतेज्योंअघभागे ॥ यूथ-
पयूथयोंमारि भगायो । बातबडेजनुमेघउडायो ॥ १५ ॥
सवैया ॥ अतिरोषरसेकुशकेशवश्रीरघुनायकसोंरणरीतिरचैं ।
त्यहिंबारनबारभईबहुबारनखङ्गहनैंनगणैंविरचैं । तहँकुम्भ-
फटैंगजमोतिकटैंतेचलेबहुश्रोणितरोचिरचैं । परिपूरणपूरपना-
रेनतेजनुपीककपूरनकीकिरचैं ॥ १६ ॥

टी०-बूझत कहे पूंछत असु (प्राण) ॥ १२ ॥ कौन कहे कहा अरिके घेरेमें याही वात घाटि है कि, हमारे हाथमें शरासन धनुष नहीं: है यां प्रकार कहत लव नेक चित्तको दुचित्तो करयौ अर्थ युद्धहुको विचार विचारत रहे औ सूर्यकी स्तुतिहूमें चित्तको लायो तव सूर कहे सूर्य वडो इषुधी (तरकस) औ धनुष दीन्हों यथा जैमिनिपुराणे (जैमिनिरुवाच) "स्तोत्रेणानेन संतुष्टो रविर्दिव्यं शरासनम् ॥ ददौ लवाय शौरं च जयतिश्रेयउत्तमम् ॥ १ ॥ सुवर्णपट्टैरुचिरैर्निबन्धं सगुणं दृढम् ॥ धनुष्प्राप्य महावाहुर्लवः कुशमथाब्रवीत् ॥ २ ॥ उपदिष्टं हि यत्स्तोत्रं मुनिना करुणात्मना ॥ शौरंतज्जापितं भ्रातस्तस्माल्लब्धं मया धनुः" ॥ १३ ॥ १४ ॥ रसे कहे युक्त तेहिवार कहे समयमें वार कहे वेर ना भई

अर्थ थोरीही वेरमें बहुत वारण जे हाथी हैं तिनको खड्ग तरवारिसों हनत हैं औ काहूको गनत नहीं हैं औ चिरचैं कहे विरुझात है पीकके पूर कहे धार सम रुधर है कपूर किरच सम मोती हैं ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू०-नाराचछंद ॥ भगेचपेचमूचमूपछोड़िछोड़िलक्ष्मणै । भगेरथीमहारथीगयंदवृन्दकोगणै॥कुशैलवैनिरंकुशैविलोकिबंधुरामको।उछ्योरिसाइकैबलीबँध्योसोलाजदामको॥ १७॥ कुश मौक्तिकदामछंद ॥ नहौंमकराक्षनहौंइंद्रजीत । विलोकितुम्हैंरण होहुँनभीत ॥ सदातुमलक्ष्मणउत्तमगाथ । करौजनिआपनि मातुअनाथ ॥१८॥ लक्ष्मण ॥ कहौकुशजोकहिआवतिबात । विलोकतहौंउपवीतहिगात ॥ इतेपरबालवहिक्रमजानि।हियेकरुणाउपजैअतिआनि ॥ १९ ॥ विलोचनलोचतहैंलखितोहिं। तजौहठआनिभजौकिनमोहिं ॥ क्षम्योंअपराधअजौंघरजाहु । हियेउपजाउनमातहिदाहु ॥ २० ॥ दोधकछंद ॥ हौंहतिहौंकबहूंनहिंतोहीं । तूवरुबाणनबेधहिमोहीं । बालकविप्रकहाहनियेजू । लोकअलोकनमेंगनियेजू ॥ २१ ॥

टी०-"एकादशसहस्राणि योधयेद्यस्तुधन्विनाम् ॥ शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च स महारथ उच्यते" ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ हमारे लोचन तुम्हारे देखिबेको लोचन कहे चाहत हैं भजौ (मिलौ) ॥ २० ॥ २१ ॥

मू०-हरणीछंद ॥ लक्ष्मणहाथहथ्यारधरौ ॥ यज्ञवृथाप्रभुकोनकरौ । हौंहयकोकबहूंनतजौं ।पट्टलिख्यौसोइबांचिलजौं ॥ ॥ २२ ॥ स्वागताछंद ॥ बाणएकतबलक्ष्मणछंड्यो । चर्मवर्मबहुधातिनखंड्यो ॥ ताहिहीनकुशचित्तहिमोहै । धूमभिन्नजनुपावकसोहै ॥ २३ ॥ रोषवेषकुशबाणचलायो । पौनचक्रजिमिचित्तभ्रमायो॥मोहमोहिरथऊपर सोये।ताहिदेखिजड़जंगमरोये ॥ २४ ॥ नाराचछंद ॥ विरामरामजानिकैभरत्थसोंक-

थाकहैं । बिचारिचित्तमांझवीर वीर वे कहाँरहैं ॥ सरोपदेखिल-क्ष्मणैत्रिलोक्यतौविलुप्तहै । अदेवदेवतात्रसैंकहातेबालदीन्है । ॥ २५ ॥ राम-रूपमालाछंद ॥ जाहुसत्वरदूतलक्ष्मणहैंजहांय-हिबार । जाइकै यह बातवर्णहुरक्षियोमुनिबार ॥ हैंसमर्थसना-थवैअसमर्थ और अनाथ । देखिबेकहँल्याइयोमुनिबालउत्तम गाथ ॥ २६ ॥ सुंदरीछंद ॥ भग्गुलआइगयेतवहींबहु । वारबु-कारतआरतरक्षहु ॥ वेबहुभांतिनसैनसँहारत । लक्ष्मणतौति-नको नहिंमारत ॥ २७ ॥ बालकजानितजैंकरुणाकरि । वेअ-तिढीठभयेदलसंहरि ॥ केहुँनभाजतगाजतहैंरण । वीरअनाथ भये विनलक्ष्मण ॥ २८ ॥ जानहुजैउनको मुनिबालक । वेको-उ हैं जगतीप्रतिपालक । हैंकोरावणकेकिसहायक । कैलव-णासुरकेहितलायक ॥ २९ ॥

टी०-या छंद को सारवतीहू कहत हैं ॥ २२ ॥ तिनको कुशको धूम सम चर्मवर्म खंडित ह्वैगयो क्रोध औ प्रतापसों अग्नि सम कुशकेअंग शोभितहैं॥२३॥ पवन चक्र (बौंडर) ॥ २४ ॥ विराम वेर त्रैलोक्यके अदेव दैत्य औ देवता विलुप्त ह्वै कहे लुकिके त्रसैं कहे डेरावतहैं अर्थ लुकिहु रहत हैं ताहूपर भय नाहीं मिटत यासों अतिभय जानो ॥ २५ ॥ २६ ॥ वारवार ॥ २७ ॥ २८ ॥ जै कहे जनि जगती प्रतिपालक (ईश्वर) अथवा राजा सहायक कहे वली ॥ २९ ॥

मू०-भरत॥बालकरावणकेनसहायक । नालवणासुरकेहित लायक ॥ हैंनिजपातकवृक्षनकेफल । मोहतहैंरघुवंशिनकेव-ल ॥ ३० ॥ जीतहिकोरणमांझरिपुघ्नहि । कोकरैलक्ष्मणकेब-लविघ्नहि ॥ लक्ष्मणसीयतजीजबतेबन ॥ लोकअलोकनपूरिर-हेतन ॥ ३१ ॥ छोडोइचाहततेतबतेतन । पाइनिमित्तकरेउम-नपावन ॥ शत्रुघ्नतज्योतनसोदरलाजानि । पूतभयेताजिपापप्ल-साजानि ॥ ३२ ॥ दोधकछंद ॥ पातककौनतजीतुमसीता ।

पावनहोतसुनेजगगीता ॥ दोषविहीनाहिदोषलगावै । सोप्रभुये फलकाहेनपावै ॥ ३३ ॥ हमहूंत्यहितीरथजाइमरैंगे । सतसंगतिदोषअशेषहरैंगे ॥ वानरराक्षसऋक्षतिहारे । गर्वचढ़ेरघुवंशहिभारे ॥ तालगिकैयहबातविचारी।हौप्रभुसंततगर्वप्रहारी ॥ ॥ ३४ ॥ चंचरीछंद ॥ क्रोधकैअतिभरतअंगदसंगसंगरकोचले । जामवन्तचलेबिभीषणऔरबीरभलेभले ॥ कोगनैचतुरंग सेनहिरोदसीनृपताभरी । जाइकैअवलोकियोरणमेंगिरेगिरिसे करी ॥ ३५ ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायांभरतसमागमोनामषट्त्रिंशः प्रकाशः ॥ ३६ ॥

टी०–मोहतकहे मूर्छित करत हैं अर्थ हीनो करत हैं ॥ ३० ॥ लोकमें वातक करिकै अलोकन (दोषन)सों पूरि रहे हैं ॥ ३१ ॥ जबते अलोक प्राप्त भयो तबते ता अलोकके मिटिबेको यतनको छोडोई चाहत रहे सो युद्धरूपी निमित्त कारण पाइके तनको छोडि मनको पावन करचो शत्रुघ्नके बंधु लक्ष्मण सीताको वनमें छोडि आये या विधि लोकापवाद लाजनसों शत्रुघ्न तनको छोड्यौ पूत (पवित्र) छंद उपजाति है ॥ ३२ ॥ पातक कौन एतौ भरतसों रामचन्द्रको प्रश्न है ॥३३॥ तेहि तीरथ अर्थ युद्धतीरथमें छंद उपजाति गाथा है ॥ ३४ ॥ संगर (युद्ध) रोदसी कहे भू आकाश नृपता कहे नृपसमूहनसों भरी ॥ "द्यावाभूमीचरोदसी इत्यमरः ॥ ३५ ॥

इति श्रीगज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां पट्त्रिंशः प्रकाशः ॥ ३६ ॥

सू०–दोहा ॥ सैंतीसयेंप्रकाशमें, लवकहुबैनबखान ॥ मोहनबहुरिभरत्तको, लागेमोहनबान ॥ १ ॥ रूपमालाछन्द ॥ जामवंतविलोकिकैरणभीमभूहनुमंत । श्रोणकीसारिताबहीसुअनंतरूपदुरंत ॥ यत्रतत्रध्वजापताकादीहदेहनिभूप । टूटिटू-

परेमनोंबहुबातवृक्षअनूप ॥ २ ॥ पुंजकुंजरशुभ्रस्यंदनशोभि सुठिशूर ॥ ठेलिठेलिचलेगिरीशनिपेलिश्रोणितपूर ॥ ग्राह तुंगतुरंगकच्छपचारुचर्मविशाल ॥ चक्रसेरथचक्रपैरतगृद्धवृद्ध मराल ॥३॥ केकरेकरबाहुमीनगयंदशुंडभुजंग । चीरचौरसु-देशकेशशिबालजानिसुरंग ॥ बालकाबहुभाँतिहैंमणिमालजा-लप्रकाश । पैरिपारभयेतेद्वैमुनिबालकेशवदास ॥ ४ ॥

टी०-॥१॥ जामवंत औ हनुमन्त दुरंत कहे दुःख करिकै पाइयत है अंत(पार) जिनको अर्थ अति बडी औ अनंत कहे अनेक श्रोण(रुधिर)की सरिता वही हैं जामें ऐसी जो रणकी भीम भयानक भू है ताको विलोक्यो वडे पताका ध्वजा कहावत हैं छोटे पताका कहावत हैं ॥ २ ॥ सुठि शूर अर्थ अतिशूर जे सन्मुख घाव सहि मरेहैं ठेली कहे टारि पेलि कहे दबाइके जैसे शिलनको टारि नदीनको पूर प्रवाह चलतहै तैसे इहां पर्वतसम जे गज रथहैं तिनको टारिकै श्रोणितके पूर चले यासों अतिगंभीरता औ वेगता जो नदीहूके तीरगृध्र रहतहैं इहांऊ हैं औ श्वेत है रहे हैं अंगलोम जिनके ऐसे जे वृद्ध पाणीहैं तेई हंस हैं ॥ ३ ॥ केकरे (गेंगटा) भुजंग (सर्प) ॥ ४ ॥

दोहा ॥ नामबरणलघुवेषलघु, कहतरीझिहनुमन्त ॥ इतो-बडोविक्रमकियो, जीतेयुद्धअनंत ॥ ५ ॥ भरत-तारकछंद ॥ हनुमंतदुरंतनदीअबनाघौ । रघुनाथसहोदरजीअभिलाघौ ॥ तबजोतुमसिंधुहिनाँघिगयेजू।अबनांघहुकाहेनभीतभयेजू ॥६॥ हनुमान्-दोहा ॥ सीतापदसंमुखहुते, गयेसिंधुकेपार ॥ विमुखभयेक्योंजाहुँतरि, सुनोंभरतयहिबार ॥७॥ तारकछंद॥ धनुबाणलियेमुनिबालकआये । जनुमन्मथकेयुगरूपसुहाये॥ रघुनायकमानहुँद्वैवपुकीने ॥ ८ ॥ करिबेकहँशूरनकेमदहीने । सुकियौं बरबाजिहिबां-धनधावो ॥ मुनिबालकहोतुमयज्ञकरावो । बरबाजितजौजिय भरत ॥ अपराधक्षमौसबआशिषदीजै ।

रोपनकीजै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ बांध्योपट्टजोशीशयह, क्षत्रिनका-जप्रकाश ॥ रोषकरेउबिनकाजतुम, हमविप्रनकेदास ॥ १० ॥

टी०—वर्ण कहे नामके अक्षर ॥ ५ ॥ रघुनाथ सहोदर जे शत्रुघ्न औ लक्ष्मण हैं तिनको जीमें अभिलाषौ अर्थ या नदी नांघि लक्ष्मण, शत्रुघ्नको देखो जाइ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ८ ॥ मुनिनके बालकनको यज्ञ कराइबो उचित है अश्व बांधि यज्ञ रोकिबो उचित नहीं है इति भावार्थः ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

मू०—कुश-दोधकछंद ॥ बालकवृद्धकहौतुमकाको । देहनि-कोकिधौंजीवप्रभाको ॥ हैजडदेहकहैसबकोई ॥ जीवसो-बालकवृद्धनहोई ॥ ११ ॥ जीवजैरनमरैनहिंछीजै । ताकहँ-शोककहाकरिकीजै ॥ जीवहिविप्रनक्षत्रियजानौ । केवलब्रह्म-हियेमहँआनौ ॥ १२ ॥ जोतुमदेहुहमैंकछुशिक्षा । तौहमदेहिंतुम्हैं हयभिक्षा ॥ चित्तविचारपरैसोइकीजै । दोषकछूनहमैंअबदीजै ॥ १३ ॥ स्वागताछंद ॥ विप्रबालकनकीसुनिवानी ॥ क्रुद्धसूरसुत-भोअभिमानी ॥ १४ ॥ सुग्रीव ॥ विप्रपुत्रतुमशीशसँभारो । राखिलेहिअबताहिपुकारो ॥ १५ ॥ लव-गौरीछंद ॥ सुग्री-वकहातुमसोंरणमांडौ । तोअतिकायरजानिकैछांडौ ॥ वालि-तुम्हैंबहुनाचनचायो । कहारणमंडनमोसनआयो ॥ १६ ॥

टी०—भरत मुनिबालकपद कह्योहै तासों कुश यह कहत हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥ शिक्षा दै हमारो बोध करौ इत्यर्थः ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ छंद उपजाति है ॥ १५ ॥ फल कहे गांसी ता बाणके लागे वात सम अर्थ औ बवंडरसम बहुत भ्रमत भये औ मुरझात भये ॥ १६ ॥

मू०—तामरछंद ॥ फलहीनसोताकहँबाणचलायो । अति बातभ्रम्योबहुधामुरझायो ॥ तबदौरिकैबाणविभीषणलीन्हो । लवताहिविलोकतहींहँसिदीन्हो ॥ १७ ॥ सुंदरीछंद ॥ आउविभी-षणतूरणदूषण । एकतुहींकुलकोकिलभूषण ॥ जूझजुरेजेभले

भयजीके । शत्रुहिआइमिलेतुमनीके ॥ १८ ॥ दोधकछंद ॥ देववधूजबहींहरिल्यायो । क्योंतबहींतजि ताहिनआयो ॥ योंअपनेजियकेडरआयो । क्षुद्रसबैकुलछिद्रबतायो ॥ १९ ॥ दोहा ॥ जेठोभैयाअन्नदा, राजापितासमान ॥ ताकीपत्नीतूकरी, पत्नीमातुसमान ॥ २० ॥ कोजानैकैवारतू, कहीनह्वैहैमाइ ॥ सोईतैंपत्नीकरी, सुनुपापिनकेराइ ॥ २१ ॥ तोटकछन्द ॥ सिगरैजगमाँझहँसावतहैं । रघुवंशिनपाप नशावतहैं ॥ धिकतोकहँतूअजहूंजोजियै । खलजाइहलाहलक्योंनपियै ॥ २२ ॥

टी०-जूझ जुरे पर भले जीके भयसों शत्रुको आइ मिले ॥ १७ ॥ १८ ॥ देववधू (सीता) ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥

मू०-कछुहैअबतोकहँलाजहिये । कहिकौनविचारहथ्यार लिये ॥ अबजाइकरीषकीआगिजरौ । गरुबाँधिकैसागरबूडिमरौ ॥ २३ ॥ दोहा ॥ कहाकहौंहौंभरतको, जानतहैसबकोय । तोसोपापीसंगहै, क्योंनपराजयहोय ॥ २४ ॥ बहुतयुद्धभोभरतसों,देवअदेवसमान ॥ मोहिमहारथपरागिरे, मारेमोहनबान ॥ २५ ॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिंद्रजिद्विरचितायां भरतमोहनंनाम सप्तत्रिंशःप्रकाशः ॥ ३७ ॥

टी०--करीष (सूख्योगोबर) विनुआं कंडा कारि प्रसिद्धहै ॥२३॥२४॥२५॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायां सप्तत्रिंशः प्रकाशः ॥ ३७ ॥

मू०—दोहा ॥ अड़तीसयेंप्रकाशमें, अंगदयुद्धबखान,॥ व्याजसैनरघुनाथको, कुश-लव-आश्रमजान ॥ १ ॥ भरतहिभयो विलंबकछु, आयेश्रीरघुनाथ ॥ देख्योवहसंग्रामथल, जूझिपरे सबसाथ ॥ २ ॥ तोटकछंद ॥ रघुनाथहिआवतआइगये । रणमेंमुनिबालकरूपरये ॥ गुणरूपसुशीलनसोंरणमें । प्रतिबिंबमनोनिजदर्पणमें ॥३॥ मधुतिलकछंद ॥ सीतासमानमुखचंद्रविलोकिराम।बूझ्योकहाँबसतहौतुमकौनग्राम॥मातापिताकवनकौन्यहिकर्मकीन।विद्याबिनोदशिषकौन्यहिअस्त्रदीन॥४॥

टी०—॥ १ ॥ २ ॥ गुण औ रूप औ शील स्वभाव सहित रणमें अर्थ रण करनेमें मानों दर्पणमें आपने प्रतिबिंबही आइ गये हैं जैसे दर्पणके निकट जातही दर्पणमें आपनेही स्वभावादिसों युक्त आपने प्रतिबिंब आइजात हैं ता विधि रणभूमिरूपी दर्पणके निकट रामचन्द्रके आवतही रामचन्द्रहीके स्वभावादिसों युक्त प्रतिबिंब सम लवकुश आये इत्यर्थः ॥ ३ ॥ भाग्यवान् पुत्रको सुख माताको ऐसो होत है ॥ "धन्यो मातृमुखः सुतः ॥ इति प्रमाणात् ॥ कहो कहे कौन स्थानमें कर्म (जातकर्मादि) ॥ ४ ॥

मू०—कुश०—रूपमालाछंद ॥ राजराजतुम्हैंकहाममवंशसों अबकाम । बूझिलीन्हेहुईशलोगनजीतिकैसंग्राम ॥ राम ॥ हौं नयुद्धकरौंकहेविनाविप्रवेषविलोकि । बेगिवीरकथाकहौतुमआपनीरिसरोकि ॥ ५ ॥ कुश ॥ कन्यकामिथिलेशकीहमपुत्र जायेदोइ । वालमीकिअशेषकर्मकरेकृपारसभोइ ॥ अस्त्रशस्त्रसबैदयेअरुवेदभेदपढ़ाइ।बापकोनहिंनामजानतआजुलौंरघुराइ। ॥ ६ ॥ दोधकछंद ॥ जानकिकेमुखअक्षरआने । रामतहींअपने सुतजाने ॥ विक्रमसाहसशीलविचारे । युद्धकथाकहिआयुध डारे ॥ ७ ॥ राम ॥ अंगदजीतिइन्हैंगहिल्यावो । कैअपने

बलमारिभगावो ॥ वेगिबुझावहुचित्तचिताको ॥ आजुतिलो-
दकदेहुपिताको॥८॥अंगदतौअँगअंगनिफूले। पौनकेपुत्रकह्यो
अतिभूले॥जाइजुरेलवसोंतरुलैकै।बातकहीशतखंडनकैकै ॥९॥

टी०-॥ ५ ॥ ६ ॥ जानकीको नाम लीन्हों तासों औ अपने सदृश विक्रम साहस शीलहूसों विचारयो कि हमारेही पुत्र हैं ॥ ७ ॥ हम तुमसों कहि राख्यो है कि कोऊ हमारे वंशमें तुमसों युद्ध करिहै सो ये हमारेही पुत्र हैं तासों इनको जीतिकै ता समयसों क्रोधाग्निसों जरत चित्तरूपी जो चिता है ताको बुझावो औ रघुवंशिनसों युद्ध करि पिताको तिलोदक देन कह्यो है सो देउ अथवा हमारे ही पुत्र ह्वैकै हमारो अश्व बाँधि वृथा युद्ध करयो ता क्रोधसों जरत चित्तरूपी जो चिताहै ताको बुझावो औ पिताको तिलोदक देहु ॥ ८ ॥ ९ ॥

मू०-लव ॥ अंगदजोतुमपै बलहोतो । तौवहसूरजकोसुत-
कोतो ॥ देखतहीजननीजोतिहारी।वासँगसोवतिज्योंवरनारी ॥
॥ १० ॥ जादिनतेयुवराजकहाये । विक्रमबुद्धिविवेकबहाये ॥
जीवतपैकिमरेपहँजैहै । कौनपिताहितिलोदकदैहै ॥ ११ ॥
अंगदहाथगहेतरुजोई । जाततहींतिलसोकटिसोई ॥ पर्वत
पुंजजितेउनमेले । फूलकेतूललैबाणनझेले ॥ १२ ॥ बाणनवे-
धिरहीसबदेही । बानरतेजोभयेअबसेही ॥ भूतलतेशरमारिउ-
ड़ायो । खेलिकेकंदुकक्कोफलपायो ॥ १३ ॥ सोहतहैअधऊ-
रधऐसे । होतबटानटकोनभजैसे ॥ जानकहूंनइतैउतपावै ॥
गोबलचित्तदशोंदिशिधावै ॥ १४ ॥ बोलघट्योसोभयोसुर-
भंगी । ह्वैगयोअंगत्रिशंकुकोसंगी ॥ हारघुनायकहौंजनतेरो ।
रक्षहुगर्वगयोसबमेरो ॥ १५ ॥ दीनसुनीजनकीजबवानी ।
जीकरुणालवबाणनआनी॥छांड़िदियोगिरिभूमिपरयोई।विह्व-
लह्वैअतिमानोंमरयोई ॥ १६ ॥

टी०-वरनारी अर्थ विवाहिता स्त्री ॥ १० ॥ जो रामचंद्र कह्यो कि इनको जीतकै आजु पिताको तिलोदक देहु सो सुनिकै लव कहत हैं कि हमको जीतिकै

जो तिलोदक तुम देहौ सो जीवत पिता जे सुग्रीव हैं तिनको प्राप्तह्वै है कि मरे पिता जे वालिहैं तिनको प्राप्त ह्वैहै ॥ ११ ॥ खेले (दूरी) किये ॥ १२ ॥ सेही शल्लकीनामा वनजंतु विषेश ॥ १३ ॥ १४ ॥ त्रिशंकुको संगी अर्थ त्रिशंकुसम शीश नीचे चरण ऊपर भये ॥ १५ ॥ १६ ॥

मू०–विजयछंद ॥ भैरवसेभटभूरिभिरेबलखेतखडेकरतार-करेकै । भारेभिरेरणभूधरभूपनटारेटरेइभकोटिअरेकै । रोषसों खड्गहनेकुशकेशवभूमिगिरेनटरेहुगरेकै । रामविलोकिकहैंरस अद्भुतखायेमरेनगनागमरेकै ॥ १७ ॥ दोधकछंद ॥ वानर ऋक्षजितेनिशिचारी । सेनसबैइकबाणसँहारी ॥ बाणविंधेसब हीजबजोये । स्यंदनमेंरघुनंदनसोये ॥ १८ ॥ गीतिकाछंद ॥ रणजोइकैसबशीशभूषणसंग्रहेजेभलेभले । हनुमंतकोअरुजा-मवंतहिंवाजिसोंग्रसिलैचले ॥ रणजीतिकैलवसाथलैकरिमातु-केकुशपाँपरे । शिरसूंघिकंठलगायआननचूमिगोदढुवौधरे ॥ १९ ॥

इति श्रीमतसकललोकलोचनचकोरचिन्तामणिश्रीरामचन्द्रचन्द्रिकायामिन्द्र-जिद्विरचितायां कुशलवजयवर्णनं नामाष्टत्रिंशः प्रकाशः ॥ ३८ ॥

टी०–भैरव ऐसे जे भूरिभट हैं ते बलसों भिरेहैं सो इन भटनको कहे कैधौं याही परे कहे अति विकट खेत कहे युद्धके लिये कर्त्तार विधातैं करे कहे बनायो है अर्थ त्रिकालज्ञ विधाता यह अति विकट युद्ध भावी जानिकै ताके लिये ऐसे प्रबल वीर आपने हाथसों बनायोहै या युद्धमें एई वीर भिरेहैं और वीर न भिरि सक्ते इतिभावार्थः ॥ अथवा बलसों खड़े जे खेतहैं तिनके कर कहे कर्त्ता अर्थ जिन रावणादिसों रण कीन्हेंहै ऐसे जे भैरव ऐसे भूरि भटहैं ते करे कहे अति कठोर मारु मारु इत्यादि तार कहे उच्चस्वर कै कहे करिकै रणमें भिरे हैं कोऊ कादरस्वर नहीं बोलत इति भावार्थः औ भूधर (पर्वत) सम अचल जे भारे भूप हैं अथवा भूधर कहे भूमिके धरनहार अर्थ जेती भूमि धरें तेती कैसेहू न छांडें ऐसे जे भारे भूपहैं ते कोटिन इभ जे हाथीहैं तिनको अरे कहे हठे करिकै

अर्थ पगनमें जंजीरादि डारि जामें टरैं नहीं ऐसे करिकै युद्धमें भिरैहैं ते भट औ भूप मरेकै कटेहू अर्थ शिर कटिगयो है ताहू पर भूमिमें न गिरे अर्थ जिनको कबंधहू लरत रह्यो औ तिन हाथिनको परे देखिकै अद्भुत रसयुक्तहै रामचन्द्र कहत हैं कि नग जे पर्वतहैं तिनके खायें कहे खामी मारेहैं कि नाग कहे हाथी मरेहैं अर्थ ऐसे मरे हाथिनके कतारे परे हैं मानौ पर्वतनके खावाँ मारेहैं अथवा नाग नग जे गजमुक्ताहैं तिनके खाये सम मारि गयेहैं अर्थ यह जहाँ गजमुक्तन-के खावाँ मारि गयेहैं तहाँ हाथिनकी कौन कहै ॥ १७॥ तेतीसयें प्रकाशमें कह्यो है कि रामकी जय सिद्धिसों सियको चले वन छाँडि सो जय सिद्धिरूप जे सीता हैं तिनको तौ वनमें छोंड्यो जय सिद्धि कैसे प्राप्त होय सो त्रिकालज्ञ जे रामचन्द्र हैं ते यह विचारिकै सोइ रहे ॥ १८ ॥ १९ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादाय जनजानकीप्रसाद-निर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायामष्टत्रिंशः प्रकाशः ॥ ३८ ॥

मू०-दोहा ॥नवतीसयेंप्रकाशसिय, रामसँयोगनिहारि ॥ यज्ञपूरिसबसुतनको, दीन्होराजविचारि॥१॥ रूपमालाछंद ॥ पुत्रहौंविधवाक-चीन्हिदेवरकोविभूषणदेखिकैहनुमंत ॥ बापकोरणमारियोअरुपितृभ्रातृसँहारि। रीतुमकर्मकीनदुरंत॥ आनियोहनुमंतबाँधिनआनियोमोहिंगारि ॥ २ ॥ दोहा॥ मा तासबकाकीकरी, विधवाएकहिबार ॥ मोसेऔरनपापिनी जायेवंशकुठार ॥ ३ ॥ दोधकछंद॥पापकहाँहतिबापहिजैहो ॥ लोकचतुर्दशठौरनपैहौ॥ राजकुमारकहैनहिंकोऊ। जारजजाइ कहावहुदोऊ ॥ ४ ॥ कुश ॥ मोकहँदोषकहासुनुमाता । बाँधि लियोजोसुन्योउनिभ्राता ॥ हौंतुमहींतेहिबारपठायो । रामपि-ताकबमोहिंसुनायो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मोहिविलोकिविलोकिकै, रथपरपौढेराम ॥ जीवतछोंड्योयुद्धमें, माताकरिविश्राम॥६॥

टी०-॥ १ ॥ दुरंत (अनुत्तम) गारि (कलंक) ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ विश्राम (क्षमा) ॥ ६ ॥

मू०-सुंदरीछंद ॥ आइगयेतबहींमुनिनायक । श्रीरघुनंदनकेगुणगायक ॥ बातविचारिकहीसिगरीकुश । दुःखकियेमनमेंकलिअंकुश ॥७॥ रूपवतीछंद ॥ कीजैनाविडंबनसंततसीते । भावीनमिटैसुकहूं जगगीते ॥ तूतोपतिदेवनकीगुरुबेटी ॥ तेरीजगमृत्युकहावतिचेटी ॥ ८ ॥ तोटकछंद ॥ सिगरेरणमंडलमांझगये ॥ अवलोकतहींअतिभीतभये ॥ दुहुँबालनकोअतिअद्भुतविक्रम ॥ अवलोकिभयोमुनिकेमनसंभ्रम ॥ ९ ॥

टी०-कैसे हैं मुनिनायक कलि जो कलियुग है ताके अंकुशहैं ॥ ७ ॥ विडंबन (दुःख) हे बेटी ! तू पतिदेव कहे पतिव्रतनकी गुरु है चेटी (दासी) तेरी आज्ञासों मृत्यु मरे वीरनको जियाइ है इतिभावार्थः॥८॥ छन्द उपजाति है ॥९॥

मू०-दंडक ॥ श्रोणितसलिलनरवानरसलिलचरागिरिवालिसुतविषबिभीषणडारेहैं । चमरपताकागुडीबड़वाअनलसमरोगरिपुजामवंतकेशवविचारेहैं । वाजिसुरवाजिसुरगजसेअनेकगजभरतसबंधुइंदुअमृतनिहारेहैं । सोहतसहितशेषरामचंद्रकुशलवजीतिकैसमरसिंधुसाँचेहूसुधारेहैं ॥१०॥सीता-दोहा॥ मनसावाचाकर्मणा,जोमेरेमनराम।तौसबसेनाजीउठे,होहिघरीनविराम ॥११॥ दोधकछंद ॥ जीयउठीसबसेनसभागी । केशवसोवततेजनुजागी ॥ स्योसुतसीतहिलैसुखकारी । राघवकेमुनिपाँयनपारी ॥ १२ ॥ मनोरमाछन्द ॥ शुभसुंदरिसोदरपुत्रमिलेजहँ । वर्पावर्पैसुरफूलनकीतहँ ॥ बहुधादिविदुंदुभिकेगणबाजत । दिगपालगयंदनकेगणलाजत ॥ १३ ॥

टी०-कविजन समरको सिंधुसम कहतईं हैं औ कुश लव समर जीतिकै अंगन सहित साँचो सिंधु सँवारयो इत्यर्थः ॥ सो कहत हैं सलिलचर (ग्राहादि) गिरि

(मैनाक) रुधिररंगसो अरुण चमर जानौ रोगरिपु (धन्वंतरि) अडतीसयें प्रकाशमें कह्योहै कि हनुमंतको अरु जामवंतहि वाजिसों ग्रसि लै चले ॥ तासों इहाँ दूसरे जामवंत जानो अथवा प्रथम ग्रसि लै गये हैं फेरि छोड़ि दिये हैं तेऊ तहाँहैं भरत चंद्रमा हैं शत्रुघ्न अमृत हैं ॥ १० ॥ विराम (वेर) ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

मू०-अंगद-स्वागताछंद ॥ रामदेवतुमगर्वप्रहारी । नित्य तुच्छअतिबुद्धिहमारी ॥ युद्धदेवभ्रमतैंकहिआयो । दासजानिप्रभुमारगलायो ॥ १४ ॥ रूपमालाछंद ॥ सुंदरीसुतलैसहोदरवाजिलैसुखपाइ । साथलैमुनिवालमीकिहिदीहदुःखनशाइ॥ रामधामचलेभलेयशलोकलोकबढ़ाइ । भाँतिभाँतिसुदेशकेशवदुंदुभीनबजाइ ॥ १५ ॥ भरतलक्ष्मणशत्रुहापुरभीरटारतजात । चौंरढारतहैंदुवौदिशिपुत्रउत्तमगात ॥ छत्रहैकरइन्द्रकेशुभशोभिजैबहुभेव।मत्तदंतिचढ़ेपढ़ैंजयशब्ददेवन्नृदेव॥१६॥ दोधकछंद॥यज्ञथलीरघुनंदनआये॥धामनिधामनिहोतबधाये॥श्री मिथिलेशसुताबडभागी । स्योसुतसासुनकेपगलागी ॥१७॥

टी०-पचीसयें प्रकाशमें अंगद कह्यो है कि, देवहौ नरदेव वानर नैर्ऋतादिक वीरहौ ॥ ता वातको ते कहत हैं कि हे देव ! तव जो हमसों युद्ध करिवेको कहि आयो रहै अर्थ हम युद्ध करिवेको कह्यो रहै सो भ्रमसों कह्यो रहै सो दास जानिकै हमारो गर्व दूरि करिकै हमको मारग (राह) लगायो रामचंद्रहूको वचन रह्यो कि कोऊ मेरे वंशमें तोसों युद्ध करिहै तव तेरो मन मोसों शुद्ध ह्वैहै सो इहाँ अंगदको मन शुद्ध भयो जानौ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

मू०-दोहा ॥ चारिपुत्रद्वैपुत्रसुत, कौशल्यातबदेखि ॥ पायोपरमानंदमन, दिगपालनसमलेखि ॥१८॥ रूपमालाछंद॥ यज्ञपूरणकैरमापतिदानदेतअशेप । हीरनीरजचीरमानिकवार्षै

वर्षवेष ॥ अंगरागतडागवागफलेभलेबहुभाँति। भवनभूषणभूमिभाजनभूरिवासरराति ॥ १९ ॥ दोहा ॥ एकअयुतगजवाजिदै, तीनिसुरभिशुभवर्ण ॥ एकएकविप्रहिदई, केशवसहितसुवर्ण ॥२०॥ देवअदेवनृदेवअरु, जेतनेजीवत्रिलोक॥ मनभायोपायो सबन, कीन्हेंसबनअशोक ॥ २१ ॥ अपनेअरुसोदरनके, पुत्रविलोकिसमान ॥ न्यारेन्यारेदेशदै, नृपतिकरेभगवान ॥ ॥ २२ ॥ कुशलवअपनेभरतके, नन्दनपुष्करतक्ष ॥ लक्ष्मणकेअंगदभये, चित्रकेतुरणदक्ष ॥२३॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ भलेपुत्रशत्रुघ्नद्वै दीपजाये । सदासाधुशूरेबडेभागपाये ॥ सदा मित्रपोपीहनैंशत्रुछाती । सुबाहैबडोदूसरोशत्रुघाती ॥ २४ ॥ दोहा ॥ कुशकोदईकुशावती, नगरीकोशलदेश ॥ लवकोदईअवंतिका, उत्तरउत्तमवेष ॥ २५ ॥ पश्चिमपुष्करकोदई, पुष्करवतिहैनाम ॥ तक्षशिलातक्षहिदई ॥ लईजीतिसंग्राम ॥ ॥ २६ ॥ अंगदकहँअंगदनगर, दीन्होंपश्चिमओर ॥ चंद्रकेतुचन्द्रावती, लीन्होंउत्तरजोर ॥ २७ ॥

टी०–॥ १८ ॥ नीरज (मोती) वासर राति कहे रातोंदिन देत कहे देत भये ॥ १९ ॥ अयुत (दशहजार) सुवर्ण दशमासेकी स्वर्णमुद्रा सुवर्ण (दशमासिक) ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

मू०–मथुरांदईसुबाहुको, पूरणपावनगाथ ॥ शत्रुघातकोनृपकरचौ, देशहिकोरघुनाथ ॥ २८ ॥ तोटकछंद ॥ यहिभाँतिसोंरक्षितभूमिभई । सबपुत्रभतीजनबाँटिदई ॥ सबपुत्रमहाप्रभुबोलिलिये । बहुभाँतिनकेउपदेशदिये ॥ २९ ॥ चामरछन्द ॥ बोलियेनझूठईठिमूढपैनकीजई । दीजियेजोबातहाथभू-

लिहूनलीजई ॥ नेहुतोरियेनदेहुदुःखमंत्रिमित्रको। यत्रतत्रजा-
हुपै पत्याहुजेअमित्रको ॥ ३० ॥ नाराचछंद ॥ जुवानखेलि-
येकहूंजुवानवेदरक्षिये। अमित्रभूमिमाहजैअभक्षभक्षभाक्षिये॥
करौ न मंत्रमूढसोंनगूढमंत्रखोलिये। सुपुत्रहोहुजैहठीमठीनसों
नबोलिये॥३१॥ वृथानपीड़ियेप्रजाहिपुत्रमानपारिये। असा-
धुसाधुबूझिकैयथापराधमारिये ॥ कुदेवदेवनारिकोनबालवित्त
लीजिये। विरोधविप्रवंशसोंसोस्वप्नहूनकीजिये ॥ ३२ ॥

टी०-देशहिको अर्थ अयोध्याके समीप देशको ॥ २८ ॥ २९ ॥ इति मित्रता जो वस्तु वात करिकै अथवा हाथ करिकै दीजिये ताको फेरि ना लीजै ॥ ३० ॥ वेदको जुवान कहे वचन भूमि कहे स्थान ॥ ३१ ॥ पुत्रमान कहे पुत्र-सम असाधु (सदोष) साधु (निर्दोष) कुदेव (ब्राह्मण) ॥ ३२ ॥

मू०—भुजंगप्रयातछंद ॥ परद्रव्यकोतौविषप्रायलेखौ। प-
रस्त्रीनसोंज्योंगुरुस्त्रीनदेखौ ॥ तजौकामक्रोधौमहामोहलोभौ।
तजौगर्वकोसर्वदाचित्तक्षोभौ॥३३॥ यशैसंग्रहौनिग्रहौयुद्धयो-
धा ॥ करौसाधुसंसर्गजोबुद्धिबोधा ॥ हितूहोइसोदेइजोध-
र्मशिक्षा। अधर्मीनकोदेहुजैवाकभिक्षा ॥ ३४ ॥ कृतघ्नीकु-
वादीपरस्त्रीविहारी। करौविप्रलोभीनधर्माधिकारी॥ सदाद्रव्य
संकल्पकोरक्षिलीजै। द्विजातीनकोआपुहीदानदीजै ॥ ३५ ॥
सवैया ॥ तेरहमंडलमंडितभूतलभूपतिजोक्रमहीक्रमसाधै।
कैसैहुताकहँशत्रुनमित्रसुकेशवदासउदासनबाधै॥ शत्रुसमीप-
परेतेहिमित्रसेतासुपरेजोउदासकैजोवै। विग्रहसंधिनदाननि-
सिंधुलैलैचहुँओरनितौसुखसोवै ॥ ३६ ॥

टी०—काम क्रोध मोह लोभ औ गर्व कहे मद औ क्षोभ कहे [मात्सर्य] ये जे छः हैं तिनको त्याग करियो ॥ ३३ ॥ योधा शत्रु अथवा जो लरिवेको उन्मुख

होइ भीतादिको ना मारियो इति भावार्थः ॥ बुद्धि बोधा बुद्धियुक्त जो धर्मशिक्षा देइ सोई तुम्हारो हित होइ अर्थ ताहीको हितू करियो अधर्मिनसों बोलियो ना इत्यर्थः ॥ ३४ ॥ ये जे पांच हैं तिनको धर्म्माधिकारी ना करियो संकल्पको द्रव्य जे दिये ग्रामादि हैं तिनकी रक्षा करियो आपुही अर्थ आपनेही हाथसों ॥ ३५ ॥ आपने देशके समीपको जो राजा है ताको शत्रुताके आगेको मित्र-ताके आगेको उदासीन जावै देखैं जानौं इति ॥ याही भाँति चारिहू ओर तीनि तिनि राजमंडल सब द्वादश राज मंडल जानौं औ मध्यमें आपनों राजमंडल जोरि सब तेरह मंडल प्रसिद्ध हैं तिनसों युक्त जो भूतलहैं ताको या प्रकार क्रमही क्रम साधै तौ ताको शत्रु मित्र उदासीनता बांधे कैसे साधै सो कहतहैं कि शत्रुको विग्रह कहे दण्ड उपायसों औ मित्रको साधि कहे साम उपायसों उदासीनको दान उपायसों युक्त करै इति शेषः ॥ तो सिन्धु पर्य्यन्त चारों ओर लैकै सुखसों सोवै ॥ "विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतःपरम् ॥ उदासीनः परतरः इत्यमरः" ॥३६॥

मू०-दोहा ॥ राजश्रीवशकैसेहूँ, होहुनउरअवदात ॥ जैसे तैसेआपुवश, ताकहँकीजैतात ॥ ३७ ॥ यहिविधिशिषदैपुत्र सब ॥ विदाकरैदैराज ॥ राजतश्रीरघुनाथसँग, शोभनबंधुस-माज ॥ ३८ ॥ रूपमालाछंद ॥ रामचंद्रचरित्रकोजोसुनै सदासुखपाइ । ताहिपुत्रकलत्रसम्पतिदेतश्रीरघुराइ । यज्ञदान अनेकतीरथन्हानकोफलहोइ । नारिकानरविप्रक्षत्रियवैश्यशू-द्रजोकोइ ॥ ३९ ॥ रूपक्रांताछंद ॥ अशेषपुण्यपापकेकलाप आपनेबहाइ । विदेहराजज्योंसदेहभक्तरामकेकहाइ ॥ लहैसु-भुक्तिलोकलोकअंतमुक्तिहोहिताहि । कहैसुनैपढैगुनैजोराम-चन्द्रचन्द्रिकाहि ॥ ४० ॥

इति श्रीमत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायामिन्द्रजि-द्विरचितायांकुशलवसमागमो नामैकोनचत्वारिंशःप्रकाशः ॥ ३९ ॥

टी०-॥ ३७ ॥ शोभन (सुंदर) ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ कलाप (समूह) पुण्य-पापके नाशसों मुक्ति होतिहै॥"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभमिति प्रमा-

णात्" । अथवा याके धारणसों प्राप्त जो यज्ञादिको अशेष (सम्पूर्ण) पुण्य है तासों पापके कलाप बहाइकै ॥ ४० ॥ कवित्त ॥ कैधौं शुभसागर विराजमान जामें पैठि पाइयत परम पदारथकी राशिका । कण्ठमेंकरतशोभधरतसभाकेमध्यकै-धौंसोहै मालउरविमलउजासिका ॥ सेवतहीजाकोलहेसुमन प्रवीणताईजानकीप्रसादकैधौंभारतीहुलासिका । ज्ञानकीप्रकाशिकामुकुतिप्रदकाशिकाहै सेइयेसुजनराम-भगतिप्रकाशिका ॥ १ ॥ दोहा ॥ रामभक्ति उर आनिकै, रामभक्तजनहेतु ॥ रामचन्द्रिकासिंधुमें, रच्योतिलकको सेतु ॥ २ ॥ जोसुपंथतजि सेतुको, चलहि औरमगजोर ॥ रामचन्द्रिकासिंधुको, लहहिंकौनविधिओर ॥ ३ ॥

इति श्रीमज्जगज्जननीजनकजानकीजानकीजानिप्रसादायजनजानकीप्रसादनिर्मितायां रामभक्तिप्रकाशिकायामेकोनचत्वारिंशःप्रकाशः ॥ ३९ ॥

टी०-कवित्त ॥ तूरयोशम्भुधनुभ्भृगुनाथकोगरवचूरयोऊरयोनिजराज पूरयो-पितुकोपरनहै । वनवरवासकीन्हेनिशिचर नाशकीन्हेरविसुतआशकीन्हेआवतशरण है ॥ कपिकरलंकजारयोपारयोसेतुसिंधुमहँमारयोदशशीशबंधुधारयोनृपधनहै । ख्यालसमकीन्हेजिनअद्भुतकामबन्दियतअभिराम नृपरामके चरनहै ॥ १ ॥

इतिश्रीरामचन्द्रिकासटीकासमाप्ता ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाड़ी-मुंबई.